प्रकीर्णक पुस्तकमाला का प्रथम पुष्प

बाँसरी बज रही

[रुतु सड़ितना]

मुण्डा-लोक-गीत

श्रीजगदीश त्रिगुणायत, साहित्यरत्न

बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद्
पटना-३

प्रकाशक
बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद्
पटना—३

बिहार-सरकार के जन-कल्याण-विभाग के आर्थिक अनुदान से प्रकाशित

प्रथम संस्करण, वि० सं० २०१३, सन् १६५७ ई०

मूल्य—६'७५) : सजिल्द—८)

मुद्रक
हिन्दुस्तानी प्रेस
पटना-४

वक्तव्य

बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद् की ओर से प्रकाशित होनेवाली प्रकीर्णक पुस्तक-माला का यह प्रथम पुष्प है। लोक-साहित्य के विकासशील क्षेत्र में इसका नवीन रंग और सौरभ विशेष आकर्षक सिद्ध होगा।

इस पुस्तक के प्रकाशन के लिए बिहार-सरकार के जन-कल्याण-विभाग से परिषद् को अतिरिक्त धनराशि मिली थी। अतः प्रकीर्णक-पुस्तकमाला में यह गुम्फित हुई। इस पुस्तकमाला को आगे और भी पुस्तक-स्तवक सुशोभित करेंगे।

इसमें आदिवासी-क्षेत्र के विशेषत. मुण्डा-लोकगीतों का सानुवाद संग्रह है। साथ ही, अनुसन्धान-परायण लेखक ने अपने व्यापक अनुशीलन के आधार पर, मुण्डा-भाषा और उसके साहित्य का जो अध्ययन उपस्थित किया है, वह हिन्दीपाठकों के लिए एक नई दिशा का संकेत देता है।

'बाँसरी बज रही' के रचयिता पण्डित जगदीश त्रिगुणायत, साहित्यरत्न उत्तर-प्रदेश के देवरिया-जिले के निवासी हैं। आप बहुत दिनों से बिहार-राज्य के राँची-जिले में हाईस्कूल के अध्यापक हैं। राँची-जिला-हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन के प्रचार-मंत्री के रूप में आप वहाँ साहित्यिक और सांस्कृतिक आयोजनों के सफल बनाने में निरन्तर तत्पर रहे हैं। आदिवासी क्षेत्र के लोक-साहित्य-संकलन और उसके स्वाध्याय में लीन रहकर अपने समय का सदुपयोग करने में ही आपकी अभिरुचि रही। आपकी लगन सार्थक भी हुई। मुण्डा-लोकगीतों पर आपने जो पुस्तक लिखी, उसपर बिहार-सरकार ने आपको ढाई हजार रुपये से पुरस्कृत भी किया।

आदिवासी-क्षेत्र में राष्ट्रभाषा हिन्दी का प्रचार और उस जनपद के लोकसाहित्य का उद्धार ही आपके जीवन का मुख्य व्रत एवं दृढ संकल्प है। आप हिन्दी के कवि भी हैं, तथा अँगरेजी और बँगला की कविताओं का हिन्दी-पद्यानुवाद भी किया है। 'अरुणोदय' और 'छायागान' नामक पुस्तकों में मौलिक और अनूदित कविताएँ प्रकाशित हैं। आदिवासी-लोकसाहित्य-सम्बन्धी आपकी रचनाएँ प्रायः पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होती रहती हैं और तद्विषयक कई पुस्तकें भी आपने तैयार की हैं, जो प्रकाशित होने पर हिन्दी के लोकसाहित्य को समृद्ध करेंगी।

सन्तोष का विषय है कि आप बरसों से वही काम कर रहे हैं जो पहले विदेशी विद्वान् किया करते थे। ऐसी प्रवृत्ति के लेखक ही हिन्दी के अभावों की पूर्त्ति कर सकते हैं। आपके उत्साह और अध्यवसाय को भगवान् सफल करें।

रंगभरी एकादशी
फाल्गुन संवत् २०१३ वि०

शिवपूजन सहाय
(परिषद्-संचालक)

बाँसरी बज रही



लेखक

पूर्वाभास

भारत के विशाल जन-समुदाय में आदिवासियों का महत्त्वपूर्ण स्थान है। उन्होंने भारत के जंगलों और पहाड़ों में जितनी बड़ी संख्या में अपने मूल अस्तित्व की रक्षा की है, उससे भी बड़ी संख्या में, हिन्दू-वर्ण-व्यवस्था में सम्मिलित होकर उसे, प्राग्वैदिक युग से लेकर आजतक अनेक रूपों में प्रभावित किया है। कृषि, आविष्कार, वस्तुओं के नाम, देव-कल्पना, भावना, विचार आदि सभी क्षेत्रों में, भारतीय संस्कृति पर आदिवासियों के प्रभाव की खोज हो चुकी है। वे मान्यताएँ कल्पना के आकाश से अब धरती पर उतरती आ रही हैं, जिनकी धारणा है कि भारत का महान् अभिजात-साहित्य जिस-जिस लोक-साहित्य का विकसित, संस्कृत और परिष्कृत रूप है, उसके सृजन में निस्सन्देह उनलोगों का भी हाथ है जो मूलरूप में आदिम परिवार के हैं और जिनकी धाराएँ कालान्तर में भारत के विशाल जन-महासागर में समाकर विलीन हो चुकी हैं।

आदिवासियों की जिन शाखाओं ने राजगद्दी के लिए लड़ने की अपेक्षा वनवास पसन्द किया, उन्होंने जंगलों और पहाड़ों की पंचवटी में अपनी पर्णकुटी बसा ली। उनके जीवन में सरलता और निश्छलता थी। उनका जीवन विकेन्द्रित और स्वावलम्बी था और उसमें एक प्रकार का प्रारंभिक साम्ययोग था। सीमित साधनों के भीतर आवश्यकताएँ भी सीमित थीं और उनमें थोड़ा-सा खा-पीकर अधिक सन्तुष्ट रहने की वृत्ति थी। आदिवासी अपनी उसी सांस्कृतिक परम्परा का आजतक निरन्तर निर्वाह करते आ रहे हैं। गीत और नृत्य उनकी संस्कृति के मूल तत्त्व हैं।

इस वन-वासी शाखा के ढाई करोड़ आदिवासियों में मुण्डा-जाति का महत्त्वपूर्ण और विशिष्ट स्थान है। इस जाति की शक्ति-सामर्थ्य और सांस्कृतिक महत्ता का एक प्रमाण यह है कि विश्व-भाषाओं के विशाल 'आस्ट्रिक' परिवार की जो भाषाएँ भारत की विभिन्न आदिम जातियो द्वारा बोली जाती हैं, वे सब-की-सब 'मुण्डा-भाषाएँ' कहलाती हैं।

उस बहादुर और जीवन्त जाति के लोक-गीतों के इस प्रारंभिक अध्ययन को अपने पाठकों के सम्मुख रखते हुए हमें बड़ी प्रसन्नता हो रही है। इस संग्रह के द्वारा मुण्डा-जीवन के सौन्दर्य और आनन्द को समझने का प्रयास किया गया है।

यह पुस्तक यदि जन-जीवन के अध्येताओं को मुण्डाओं के जीवन से कुछ भी परिचित करा सकी और शिक्षा तथा विभिन्न सम्पर्कों से प्रभावित हो रहे मुण्डा युवकों के हृदय में अपनी कला, कविता और संस्कृति के प्रति तनिक भी अभिरुचि पैदा कर सकी तो मैं अपना प्रयास सफल समझूँगा।

यह संग्रह केवल प्रारंभिक प्रयत्न है। मैं अपने साधनों की कमी को भली-भाँति जानता हूँ और अनुमान कर सकता हूँ कि इस कार्य के लिए कितनी कठिन साधना और आस्था की आवश्यकता है। युग आ रहा है, जब उपेक्षा के दिन समाप्त होंगे। आदिम

जातियों के जीवन और उनकी आकांक्षाओं को भली-भाँति समझने के लिए विद्वानों द्वारा बड़े-बड़े शोध किये जायेंगे। भ्रमात्मक मतवाद बदलेंगे और जो दृष्टिकोण ठीक होंगे, उनके भी विश्लेषण (Interpretation) की सीमाएँ अधिक व्यापक और विस्तृत बनेंगी।

लोक-वार्त्ता-शास्त्र के महान् विद्वान् 'जेम्स फ्रेज़र' ने एक जगह लिखा है कि "एक प्रमाण के विरुद्ध दूसरे प्रमाण के मिलने पर मैंने सदैव अपनी सम्मतियों को बदला है और भविष्य में भी ऐसा ही करने का निश्चय कर लिया है।"

जन-जीवन के शोध-कार्य में लगा हुआ प्रत्येक व्यक्ति इस विकासोन्मुख लोकवार्त्ता-शास्त्र के बारे में, उस महान् लेखक के उपर्युक्त कथन में, जिस सच्चाई का अनुभव करेगा, उसके प्रति मैं भी अपना हार्दिक विश्वास प्रकट करता हूँ।

गीतों के संग्रह के सिलसिले में, मुझे अनेक बार मुण्डा-क्षेत्र के जंगलों के झुरमुट में छिपे और पहाड़ों की छाया में बसे हुए गाँवों में जाने का अवसर प्राप्त हुआ है। मैं इस विषय में भाग्यशाली रहा हूँ कि इन गीत-पुष्पों को प्रकृत-रूप में जीवन की डालों पर झूमते हुए देख सका हूँ। इस क्षेत्र के प्रायः सभी सार्वजनिक कार्यकर्त्ता मेरे मित्र हैं। अपने कार्यक्षेत्र में पारिवारिकता का इतना प्रसार होना किसी भी अध्येता के लिए सौभाग्य की बात है।

इस स्थिति के कारण मेरे अध्ययन-क्रम में एक विशेष बात उपस्थित होती रही है। मेरे लिए यह सम्भव नहीं रहा है कि इस क्षेत्र से केवल गीतों को लेकर और जीवन की अन्य समस्याओं से अपनेको अप्रभावित रखकर अपने अध्ययन-कक्ष में वापस आ जाऊँ।

इससे मैं एक विशेष खतरे से भी बचा हूँ। सभ्यता और शिक्षा की बाढ़ में बह जाने से बचाने के लिए आदिवासियों के सांस्कृतिक उपकरणों—गीतों, कहानियों आदि—को ले भागने की प्रवृत्ति मेरे मन में कभी नहीं आई। मुझे लगता है कि यदि आदिवासियों के हृदय में अपने सांस्कृतिक उपकरणों के प्रति मिली हुई आस्था को बचाया नहीं जा सका, तो केवल उन उपकरणों को मृतक की भाँति स्पिरिट की बोतलों में बन्द कर रखने का कोई विशेष महत्त्व नहीं है। इसलिए, केवल अनुलेखन की अपेक्षा उन्हें समुचित ढंग से प्रस्तुत कर सकने की प्रवृत्ति ने मुझे अधिक प्रेरित किया है। अनेक नृतत्त्वशास्त्रियों का यह मनोभाव कि जो हो रहा है, वह होकर रहेगा ; सशक्तता का चिह्न नहीं है। कठिनाइयों के साथ समझौता करके मानव-विज्ञान की विद्याएँ मानवता का अधिक उपकार नहीं कर पायेंगी। यदि इन विद्याओं का काम वस्तुओं की यथातथ्य विवेचना-मात्र कर देना है, तो फिर मानव के उज्ज्वल भविष्य के प्रति विश्वास और बेचैनी लेकर जीवन के उन मूलभूत तत्त्वों की रक्षा करना किसका काम है, जिनके जीवित रहने पर जंगलों में फूल खिलते हैं, डालों पर कोयल कूकती है, बाँसुरी से स्वर फूटता है, मनुष्यों में प्रेम जगता है और जिसके मिट जाने पर धरती बाँझ हो जाती है तथा उसके स्तनों का दूध सूख जाता है।

पुस्तक के अन्त में गीतों में सामान्यतः व्यवहृत विभिन्न प्रकार के मुण्डा-शब्दों की एक सूची भी दे दी गई है, जिससे भाषा-शास्त्र आदि की दृष्टि से अध्ययन करनेवाले भी कुछ लाभ उठा सकें।

बिहार राज्य के महामहिम राज्यपाल श्री रंगनाथ-रामचन्द्र दिवाकर जी ने मुझे आज्ञा दी थी कि इसमें संगृहीत गीतों की स्वर-लिपि मैं बना दूँ। यही सम्मति प्रसिद्ध नृतत्त्व-शास्त्री श्री निर्मलकुमार बोस की भी थी। किन्तु खेद है, संगीत-शास्त्र की अनभिज्ञता के कारण यह आवश्यक काम मैं नहीं कर सका। उन अमूल्य सुझावों को मैं अपनेसे अधिक समर्थ अध्येता बन्धुओं की ओर नम्रता के साथ बढ़ा दे रहा हूँ।

इसके संग्रह, अनुवाद आदि में जिन मित्रों का सहयोग मिला है, उनके प्रति मैं कृतज्ञता प्रकट करता हूँ। मेरे अनन्य मित्र श्री भइयाराम मुण्डा ने अपनी सहृदयता और जागरूक प्रतिभा से इसे तैयार करने में मुझे हर प्रकार की सहायता दी है। उनके अतिरिक्त वैसे ही स्नेही श्री मुचिराय मुण्डा बी० ए०, बी० एल्०, श्री मानकी सिंह, राज सिंह, श्री बिरसा मुण्डा, श्री बलदेव सिंह मुण्डा आदि मित्रों तथा श्री चमरा मुण्डा बी० ए०, श्री सोहराई भगत, श्री लेमसा टुटी, श्री लोहर सिंह टुटी, श्री लेदो नाग, श्री विनय सिंह मुण्डा, श्री कुंजल सिंह टुटी, श्री चन्दा मुण्डा, श्री बिसू लकड़ा, श्री करम सिंह सोय, श्री बड़ाय नाग, श्री लखन सिंह मुण्डा, श्री वालीनाग, श्री नेहमिया मुण्डू, श्री जाने सुरीन, श्री मदनलाल कुण्डू, श्री महेन्द्र माझी, श्री लक्ष्मीकान्त मिश्र आदि छात्रों ने संग्रह, अनुवाद और इस मोटी पुस्तक की तीन-तीन पाण्डु-लिपियाँ तैयार करने में एवं श्री रामदयाल मुण्डा और श्री साऊ मुण्टरी ने प्रूफ-संशोधन में जो सहायता प्रदान की है, उसके लिए मैं उन्हें हार्दिक धन्यवाद देता हूँ। इस पुस्तक में प्रकाशित कुछ चित्र मुझे राँचीस्थित जैफिर स्टुडियो के सौजन्य से प्राप्त हुए हैं। मैं उनका भी अत्यंत आभारी हूँ।

इस पुस्तक को तैयार करने में जिन महान् लेखकों की कृतियों से सहायता ली गई है, उनके प्रति मैं कृतज्ञता ज्ञापन करता हूँ।

अपनी अकिंचन कृतज्ञता का कोष खाली हो जाने पर क्या लेकर बिहार-सरकार के कल्याण-विभाग और बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद् की सेवा में जाऊँ, जिनमें से प्रथम पारस के स्पर्श के बिना मेरी मिट्टी सोना नहीं बनती और दूसरी की जादुई माया के बिना उसमें सुगन्ध नहीं आती।

खूँटी
वसन्त-पंचमी—२०१३ } जगदीश त्रिगुणायत

महाकवि श्री सुमित्रानन्दन पन्त की सम्मति—

श्री 'त्रिगुणायत जी' का मुण्डा-लोक गीतों का संग्रह और उनकी लिखी हुई उसकी विस्तृत भूमिका को मैंने ध्यानपूर्वक इधर-उधर पढ़ा है। श्री त्रिगुणायत जी ने अत्यन्त अध्यवसाय के साथ इस कार्य का सम्पादन किया है। ऐसे प्रयत्नों का महत्त्व आज के युग में किसी से छिपा नहीं है। मैं लेखक को उनके इस सत्प्रयत्न के लिए हार्दिक बधाई देता हूँ। बिहार-सरकार या वहाँ की स्थानीय कोई साहित्यिक संस्था इस अमूल्य संकलन का प्रकाशन कर देश और साहित्य का बड़ा उपकार करेगी। इन लोक-गीतों को पढ़ने से अवश्य ही एक नई प्रेरणा का स्रोत आज के काव्य-जगत् में प्रवाहित हो सकता है, जिससे हिन्दी की काव्य-चेतना में नवीन स्फूर्त्ति, हार्दिकता, माधुर्य तथा स्वाभाविकता आ जायगी। मुझे आशा है, त्रिगुणायत जी का यह संग्रह शीघ्र ही प्रकाश में आ सकेगा।

महाकवि श्रीसूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' की सम्मति—

मैंने 'जगदीश त्रिगुणायत' जी का संग्रह राँची के इर्दगिर्द के आदिम निवासियों के गीतों को देखा। कुछ उनसे सुना। अनुवाद से भाषा समझ में आ जाती है। भाव बड़े हृदयहारी हैं। इतने परिश्रम का पुरस्कार पूर्वपर्वानुरूप होना चाहिए। पाठक-पाठिकाओं का बड़ा मनोरंजन होगा। मैं संग्राहक की श्रमसारिता से सन्तुष्ट हूँ। इसका हिन्दी में प्रचार और आदर हो, मैं हृदय से कामना करता हूँ।



बिरसा भगवान

विषय-सूची

प्रथम खण्ड

द्वितीय खण्ड

(गीत, सानुवाद)

परिशिष्ट भाग

बाँसुरी बज रही

आदिवासी लोक-साहित्य का अध्ययन

विश्व-नृतत्व-शास्त्र में लोक-वार्ता

इतिहास के राज-सिंहासन पर जन-देवता के बैठ जाने के बाद भी विज्ञान ने जितनी उसकी शव-परीक्षा की है, उतनी उसके जीवन की परीक्षा नहीं की। नृतत्त्व-शास्त्र के विद्वानों ने जन-जीवन के खण्डहर को बहुत खोदा, उसके गड़े मुर्दों को बहुत उखाड़ा, मानुषमिति के पैमानों से उसकी बहुत नाप-जोख की, उसके रक्त की रासायनिक परीक्षा की, उसकी ध्वनियों, भाषाओं और साँसों का ताश के पत्तों की तरह वर्गीकरण किया और अपने शिविर के पर्दे उठा-उठाकर मनुष्य की लाश के रंगमंच से विद्या-विलासी दर्शकों को अपने जादू के खेल दिखाते रहे। समाज ने चकित होकर इन खेलों को देखा, विस्मय-विमुग्ध होकर ताली बजाई और फिर सारे तमाशे जादूगरों की झोली में बन्द हो गये।

वास्तव में नृतत्त्व-शास्त्र की आत्मा अभी तक पुस्तकालयों, प्रयोगशालाओं, डाक-बंगलों और शिविरों के तरु-कोटर में भूत के कलेजे की तरह बन्द रही। उसने लोक-जीवन की साँसों को छूकर और उसके संगीत में अपना स्वर मिलाकर चलने का प्रयास नहीं किया। सत्यं-शिवं-सुन्दरम् की खोज की, ये विद्याएँ सरकारों की प्रेरणा से चलने लगीं तथा विशेषकर शासन की सुविधा के लिए, नहीं तो फिर विद्या-विलासी पाठकों के बुद्धिविलास के लिए तटस्थ और नीरस 'अध्ययन' की सामग्री प्रस्तुत करने लगीं।

इसीलिए लोक-जीवन के कलात्मक और सरस पक्ष की ओर उतना ध्यान नहीं दिया गया। विश्वास और प्रेरणा के जिन रेशमी हिंडोलों पर लोक-जीवन झूलता है और मान्यता के जिन सावन-घनों की छाँव में जीवन की कजरी गाता है, उनसे जन-विज्ञान के विद्वान् बहुधा अनजान रहे। उन हिंडोलों पर बैठकर उन्होंने उस आनन्द को नहीं समझा और उन गीतों के स्वर में स्वर मिलाकर लोक-जीवन की धड़कनों को पहचानने का प्रयत्न नहीं किया।

यों तो लोक-वार्ताओं के अध्ययन की नींव १८१२ ईसवी में ही 'जैकब ग्रिम' नामक एक जर्मन विद्वान् ने डाल दी थी और यूरोप के सभी देशों में इस अध्ययन के लिए समितियाँ बन गई थीं, ऐण्ड्र्यू लैंग, ग्राण्ड एलेन, मैक्समूलर, हर्बर्ट स्पेन्सर, वेस्टर मार्क, और गोमे जैसे विद्वानों ने महत्त्वपूर्ण काम किये, तथा जे० जी० फ्रेजर ने अपनी वह प्रसिद्ध पुस्तक 'गोल्डेन-बाउ' बारह जिल्दों में प्रस्तुत की, जो लोकवार्ता-शास्त्र की बाइबिल समझी जाती है। फिर भी नृ-शास्त्र, समाज-शास्त्र, भाषा-शास्त्र, इतिहास, पुरातत्त्व-जैसे अन्य शास्त्रों की तुलना में लोक-साहित्य के अध्ययन का विकास यूरोप में भी अभी तक

बाल्यावस्था में ही रह गया। इसका कारण शायद यह है कि जहाँ अन्य शास्त्रों के अध्ययन के लिए सूक्ष्म-बुद्धि, वैज्ञानिक-दृष्टि और विश्लेषण-शक्ति की आवश्यकता है, यहाँ लोक-साहित्य के अध्ययन के लिए—विशेषकर लोक-वार्ता के उस अंश के लिए जो जीवन की रागात्मक-वृत्तियों से सम्बन्ध रखता है, सच्चे प्रेम और सहानुभूति की आवश्यकता है। यह अध्ययन का रस पीकर शान्त हो जानेवाली कौतूहल वृत्ति नहीं, सदा प्रज्वलित रहनेवाली भक्ति-वृत्ति है। यह धर्मवृत्ति मस्तिष्क से अधिक हृदय की वस्तु है। यद्यपि लोक-साहित्य के अध्ययन में सहृदय अध्येता के लिए वैज्ञानिक दृष्टि अपेक्षित है। तथापि कोरे बुद्धिवादी वैज्ञानिक की दृष्टि से यह काम नहीं हो सकता। मगर कौतूहल और जिज्ञासा-वृत्तिवाले बुद्धि-विलासी विद्वानों की तुलना में जन-जीवन से सच्चा प्रेम रखनेवाले व्यक्ति दुर्भाग्यवश संसार में कम हैं।

नृ-तत्त्व शास्त्र के विद्वानों द्वारा लोक-गीतों की उपेक्षा की चर्चा करते हुए 'आर्थर वेली' ने लिखा था[1] —"नृ-तत्त्व शास्त्र-सम्बन्धी अध्ययन की अभिरुचि लहरों में प्रकट होती है। कभी खोपड़ी, तो कभी पारिवारिक शब्दावली, तो कभी विशिष्ट आकृति-वाले मनुष्यों के अध्ययन की धूम रहती है। पर अभी तक गीतों के अध्ययन की परम्परा नहीं चली। इस धारणा को प्रमाणित करना सहज है। उदाहरणत: अभी हाल में बोआस ने आदिम-जीवन पर जो अपना व्यापक-अध्ययन 'जनरल-इन्थ्रोपोलोजी' प्रस्तुत किया है, उसमें गीतों पर केवल चार-पाँच पृष्ठ ही हैं, जबकि आर्थिक व्यवस्था पर एक सौ पृष्ठ हैं। विश्व के विभिन्न भागों में प्रचलित काव्य-प्रणाली का या तो वर्णन ही नहीं किया गया है या फिर गलत किया गया है। इसी तरह लोक-गीतों की उपेक्षा का दूसरा प्रमाण १९३४ में लंदन में होनेवाले नृ-तत्त्व-शास्त्र के अन्तरराष्ट्रीय कांग्रेस के अधिवेशन में वर्त्तमान है जिसमें लगभग १०० निबन्ध पढ़े गये; किन्तु उनमें से एक भी गीत के सम्बन्ध में नहीं था। यह अवश्य कहा जा सकता है कि गीत स्वयमेव पृथक् और स्वतन्त्र सत्ता नहीं रखते और संगीत-नृत्य तथा अन्य क्रियाओं से सम्बन्धित हैं; किन्तु उस कांग्रेस में ऐसे बीसों निबन्ध पढ़े गये थे, जिनमें उससे भी सीमित विषयों का विवेचन था। यथा—'दाँत उठने सम्बन्धी विचारों के विभिन्न पहलू।'

"एक तीसरा प्रमाण लीजिए—मेरे पास नृ-तत्त्व-शास्त्र पर प्राय: डेढ़ सौ पुस्तकें हैं, उनमें से केवल तीन या चार में ही गीतों की कुछ चर्चा है; किन्तु एक भी ऐसी नहीं, जिसमें गीतों की पूर्ण विवेचना की गई हो।"

भारत में—जब यूरोप के स्वतंत्र और उन्नत देशों का यह हाल था तब भारत-जैसे परतंत्र देश में यह उपेक्षा स्वाभाविक ही थी। यहाँ तो सारे ज्ञान-विज्ञान शासन के ही साधन बने रहे और शासकों की सुविधा के लिए गजेटियर छापते रहे। टेम्पेल महोदय ने सन् १८८४ में अपने प्रसिद्ध ग्रंन्थ 'लीजेण्डस आफ दी पंजाब' में लिखा था[2] —"किन्तु गत पचास वर्षों में—अर्थात् जब से कि टाड ने अबतक प्रामाणिक माना जाने-वाला ग्रंथ राजस्थान पर लिखा, स्लेवों के गीतों और लोक-वार्त्ताओं का बृहत् अनुलेखन

1. डब्ल्यू० जी० आर्चर—दी ब्लू-ग्रोव-भूमिका, पृष्ठ—१।
२. डाक्टर सत्यम—ब्रजलोक साहित्य का अध्ययन, पृष्ठ—४३।

लेखकों के बाद लेखकों ने कर डाला है। रूसी, पोली, श्वेत, क्रोशीय, सर्वी, मोरावी, वैडी, रूथेनी तथा अन्यों पर पूरा-पूरा काम हुआ है। भारत में—जहाँ के शासक अपनी ऊँची बुद्धि पर, अपने भेजे हुए प्रतिनिधियों की ऊँची शिक्षा पर तथा शासन के ऊँचे लक्ष्यों पर गर्व करते हैं, वहाँ—यह कार्य अभी आरम्भ ही हुआ है।"—यों तो भारतीय लोकवार्त्ता के संग्रह का आरम्भ कर्नल टाड का 'एनल्स एंड एंटिक्विटीज ऑफ राजस्थान' से ही होता है।·····किन्तु, सच पूछिए तो टेम्पेल महोदय ने ही लोक साहित्य के वैज्ञानिक अध्ययन की नींव भारत में डाली। पीछे वह काम बढ़ा। विद्वानों ने यहाँ शास्त्रीय और वार्त्ता विषयक खोज और अनुसन्धान के बहुत काम किये ; फिर भी उनमें लोकगीतों की उपेक्षा ही रही। वैरियर एलविन ने आचर के नाम एक अपील में लिखा था[1]—"पुरानी कविता में एक भी लोकगीत का विश्लेषण नहीं किया गया। मैंने थर्स्टन, रिज़ले, इन्थोमेन, अनन्तकृष्ण ऐयर, रसल और हीरालाल की समाज-शास्त्र-सम्बन्धी बड़ी-बड़ी पुस्तकों के हजारों पृष्ठ उलट डाले। ये कृष्णपक्ष के अन्धकार की पुस्तकें हैं। इनके द्वारा छंद और लय की चाँदनी उद्भासित नहीं होती।"

वास्तव में इन विद्वानों की साधना का पानी अंगरेजी राज की जड़ों के पोषण के लिए था, लोक-जीवन को हरा-भरा बनाने के लिए नहीं था। यद्यपि भारतवासियों की सेवा के लिए इन विद्वानों के भी आदर्श उतने ही ऊँचे थे, जितने अँगरेजी राज के आदर्श !

तो भी यहाँ लोकवार्त्ताओं और लोकगीतों का जो अध्ययन हुआ है, उसे हमें महत्त्व देना चाहिए। इससे कम-से-कम भविष्य का मार्ग प्रशस्त हो चुका है। भारत के विभिन्न भागों में लोक-गीतों के क्षेत्र में जी० सी० गोवर की 'फोक सांग्स आफ सदर्न इण्डिया'; टेम्पेल की 'लीजेण्डस आफ दी पंजाब'; सन्तराम बी० ए की 'पंजाबी लोकगीत'; क्षितिमोहन सेन की 'दारामणि'; झवेरचन्द्र मेघाणी की 'रढ़ियाली रात' आदि के अतिरिक्त मारवाड़ी, राजस्थानी, कश्मीरी आदि में भी बहुत-से गीत-संग्रह निकल चुके हैं। अब तो भारतीय भाषाओं में बहुत-से लेखक इस विषय में काम कर रहे हैं। हिन्दी में लोक-साहित्य के संग्रह का आरम्भ श्रीमन्नन द्विवेदी ने ही १९१३ में किया था। किन्तु, श्री रामनरेश त्रिपाठी ने सबसे महत्त्वपूर्ण काम किया है। उनकी 'कविता-कौमुदी' (पाँचवाँ भाग) और 'ग्राम-साहित्य'; श्री रामइकबाल सिंह 'राकेश' के 'मैथिली लोकगीत', श्री श्यामाचरण दूबे के 'छत्तीसगढ़ी लोकगीत' आदि के अतिरिक्त अन्य जन-पदीय लोकगीतों का अध्ययन भी अब राष्ट्र-भाषा में आरम्भ हो चुका है। डाक्टर सत्येन्द्र को 'ब्रज-लोक साहित्य का अध्ययन' नामक खोज और विवेचनापूर्ण पुस्तक पर आगरा-विश्व-विद्यालय ने डाक्टरेट दिया है। हिन्दी में आज लोक-गीतों के सबसे बड़े साधक श्री देवेन्द्र सत्यार्थी हैं, जिन्होंने भारत भर में घूम-घूमकर इसी साधना में अलख जगाया है। और हिन्दी संसार को न केवल अनेक जातियों के मानस से परिचित कराया है, वरन् नये लेखकों के लिए सजीव प्रेरणा-प्रदान किया है।

१. डाक्टर वैरियर एलविन—अपीलग—टू डब्ल्यू जी आर्थर (मैन-इन-इण्डिया—जिल्द-२३—मार्च ४३-अंक १।

आदिवासी लोकगीत का अध्ययन

यों तो सारे भारत में नृ-तत्त्व शास्त्र की इस शाखा का जिसे लोक-वार्त्ता कहते हैं, उतना विकास नहीं हुआ ; किन्तु आदिवासियों में यह विषय और भी उपेक्षित रहा। जहाँ आदिवासियों के खँडहर को पुराना और जंगल-झाड़ से ढँका हुआ पाकर नृ-तत्त्व-शास्त्रियों ने इसपर सबसे अधिक धावा बोला, वहीं इनकी अशिक्षा पिछड़ेपन और विकट परिस्थितियों के कारण इनकी वार्त्ताएँ अपेक्षाकृत अधिक रहस्यमयी बनी रहीं।

आदिवासी कविता—जब आदिवासियों के क्षेत्र में जाति, परिवार, रक्त, भाषा, स्वभाव आदि बहुत-से रहस्यों का उद्घाटन हो चुका था, तब भी उनकी अन्य-वार्त्ताओं की तरह आदिवासी कविता भी रहस्यमय और अछूती ही बनी रही। श्री डब्ल्यू० जी० आर्चर ने १९४३ में लिखा था कि—"दस[1] वर्ष पहिले तक भारतीय जन-जातियों की कविता सभी जिज्ञासुओं के लिए एक वर्जित प्रदेश थी। 'बौडिंग' बहुत-सी संथाल कविताओं को खालिस बकवास समझता था। 'ब्राउन' को विश्वास था कि तांगखुल (आसाम) की नागा जाति अपने अधिकांश उन गीतों को, जिसे वह गाती थी, समझती नहीं थी। और 'ग्रिनगार्ड' ने उराँव गीतों के सम्बन्ध में अपनी धारणा प्रकट की थी कि किसी भी उराँव गीत के विभिन्न पदों में जो विचार चलते हैं, उनको पकड़ सकना कठिन है। प्रथम दर्शन में ही आँख प्रकाशों एवं रंगों के प्रदर्शनों से चौंधिया-सी जाती है, कान वार्त्तालाप के असम्बद्ध टुकड़ों का वस्तुतः सिर-पैर नहीं ढूँढ पाता। पाश्चात्य पाठक कुछ क्षुब्ध हो जाता है।"

और हेमन्डोर्फ[2] ने आसाम के 'कोयोंक नागाओं' के गीतों के सम्बन्ध में लिखा था—"बहुत-से गीत एक अत्यन्त सीमित क्षेत्र में ही पूर्णतया समझे जाते हैं। यहाँ तक कि गायक भी बहुधा प्रत्येक शब्द का अर्थ नहीं बता पाता। गायक कहता है कि हम योंही गाते हैं ; किन्तु साधारण बातचीत में इन शब्दों का प्रयोग कभी नहीं करते और नहीं कह सकते कि इनका ठीक-ठीक अर्थ क्या है ?"

वास्तव में जहाँ मनुष्य ने मनुष्य को ही नहीं समझा, और संसार के बहुत-से देशों में आदिवासी जब सामान्य मानव की जगह 'अलिफलैला की कहानी समझे गये, विचित्र लोक के जीव माने गये, जिनके सिर नीचे और पैर ऊपर हैं, जो हवा में उड़ते और आग खाते हैं, ऐसी दुनिया में उनके गीतों के सम्बन्ध में उपर्युक्त धारणाएँ कोई आश्चर्य की बात नहीं है।

लेकिन, अध्ययन और सम्पर्क से इन धारणाओं में परिवर्त्तन हुआ। श्री बैरियर-एलविन और शामराव हिवाले के सम्मिलित प्रयत्नों ने मध्य प्रदेश की जन-जातियों के मानस में प्रवेश करके उनकी कलाओं और गीतों के विस्तृत अध्ययन का द्वार पहली बार खोला। आदिवासी गीतों के सम्बन्ध में इस महत्त्वपूर्ण युग-परिवर्त्तन की चर्चा करते हुए आर्चर ने

१. श्री डब्ल्यू० जी० आर्चर—बैगा-पोयट्री (मैन इन इण्डिया—जिल्द-२३, मार्च १९४३ पृष्ठ ४७)।

२. फ्यूरर हेमन्डोर्फ—"दी रुल आफ सांग्स इन कोयोंक-कल्चर" (मैन इन इण्डिया—जिल्द २३—मार्च १९४३ न० १)।

लिखा है—"लेकिन[1] सन् १९३५ में 'सांग्स आफ दि फारेस्ट'[2] के प्रकाशन ने स्थिति को बिलकुल बदल दिया; क्योंकि उसमें गोंड कविताओं को पारदर्शी और भाव-मूलक बताया गया था। चार वर्षों के बाद 'दि बैगा'[3] ने अन्तिम रूप से रहस्यात्मक तत्त्वों को पूर्णतया हटा डाला, क्योंकि इसमें न केवल आदिवासी कविता को विस्तृत रूप में प्रस्तुत किया गया था, वरन् उसमें जातीय-जीवन के आधार-भूत तत्त्वों को भी प्रकट किया गया था। जहाँ आदिवासी कविता आदिवासी जीवन की सारी मनोवृत्तियों और विचारों की कुंजी के रूप में दिखाई गई, वहीं उनके जीवन से इनकी सारी कविताओं का समाधान और उत्तर मिल गया। 'दि बैगा' के प्रकाशन के बाद ही यह समझना सम्भव हो सका कि एक जाति को कविता से क्या लाभ है एवं कविता के प्रति उसकी स्वाभाविक प्रवृत्ति क्या है?"

जन-जातियों की कविता के अध्येताओं में एलविन के समान ही शामराव हिवाले, डब्ल्यू० जी० आर्चर और फ्यूरर हेमण्डोर्फ के नाम भी महत्त्वपूर्ण हैं। 'सांग्स ऑफ दि फारेस्ट' एलविन और हिवाले की सम्मिलित रचना है। 'दि ब्लू ग्रोव' उराँव गीतों पर आर्चर की महत्त्वपूर्ण पुस्तक है। और 'सांग्स आफ दि फारेस्ट' तथा 'दि बैगा' के विषय में जो आर्चर की सम्मति है, वह स्वयं उनकी पुस्तक पर भी उतनी ही चरितार्थ होती है। आर्चर ने मुण्डा, उराँव, खड़िया, हो, सन्थाल आदि जातियों के हजारों-हजार गीतों का मोटी-मोटी जिल्दों में संग्रह भी किया है, यद्यपि वह कोरा संग्रह ही है।

अध्ययन के भिन्न-भिन्न उद्देश्य

लेकिन आदिवासी लोक-गीतों के अध्ययन के दृष्टिकोण भिन्न-भिन्न रहे हैं। बहुधा इनमें विशुद्ध मानवी दृष्टिकोण का प्रयोग कम किया गया है और वैसा ही परिणाम भी कम निकला है। जैसे बहुत-से नृ-तत्त्व-शास्त्री जन-जातियों को अपनी उसी आरम्भिक दशा में इसलिए रहने देना चाहते हैं, जिससे वे उनके और उनके उत्तराधिकारियों के अध्ययन और शोध की सामग्री बनी रहें।[4] वैसे ही बहुत-से लेखक इनकी लोकवार्त्ताओं का केवल मनोरंजन के लिए उपयोग करते रहे हैं। उन्होंने इनकी सारी कलाओं और गीतों को म्यूजियम की सामग्री समझा है, जिन्हें पढ़-सुनकर विद्या-विलासी पाठकों को कौतूहल हो और फुरसत की घड़ियों में उनका मन बहले। आर्चर ने आदिवासियों के समाज से कई हजार गीतों को बटोरकर रख लेना इसलिए आवश्यक समझा; जिससे वे सभ्यता और शिक्षा की बाढ़ में बह न जायँ और नृ-वंश तथा पुरातत्त्व की विद्याएँ अपने अध्ययन के लिए इस महत्त्वपूर्ण सामग्री से वंचित न हो जायँ। हालाँकि आर्चर के आदर्श ऊँचे थे और उसके पास ऐसी उच्चकोटि की प्रतिभा थी कि यदि उसने इन संगृहीत गीतों अध्ययन भी प्रस्तुत कर दिया होता, तो लोकगीतों के क्षेत्र में उसके पद-चिह्न बहुत महत्त्वपूर्ण हुए होते।

१. डब्ल्यू० जी० आर्चर—बैगा पोयट्री (मैन इन इण्डिया) जिल्द २३ मार्च, १९४३।

२. प्रस्तुत कर्त्ता—वैरियर एलविन और शामराव हिवाले।

३. लेखक एलविन।

४. यह ग्रियर्सन और हटन का विचार है।

दूसरा दृष्टिकोण सुधारवादी था। इनमें से एक वर्ग-विशेष ने, इसका भेद-बुद्धि द्वारा, सुधार की दृष्टि से अध्ययन किया। इन्साइक्लोपिडिया की खोज है :—

"वर्तमानकाल में हो, मुण्डा, उराँव, भूमिज आदि कई जातियाँ ही कोल कहलाती हैं। उनमें 'हो' या 'लड़का कोल' प्रकृति-कोल जैसे जान पड़ते हैं।

× × ×

"सम्भवतः अतिपूर्व काल में मुण्डा, उराँव और हो तीन श्रेणियाँ एकत्र और एक परिवार युक्त होकर रहती थीं।.........

"मालूम पड़ता है, छोटानागपुर में कोलों के संस्कृत 'मुण्डा' नाम ग्रहण करने से पहिले ही 'हो' लोग पृथक् हो गये। मुण्डा आदि श्रेणियों का आचार-विचार कितना भ्रष्ट होते हुए भी लड़का कोल प्राचीन रीति-नीति बराबर समान भाव से पालन करते आ रहे हैं।"

स्पष्टतः ही मुण्डाओं पर इस नाराजी का कारण उनके "संस्कृत 'मुण्डा' नाम ग्रहण करने" के अतिरिक्त अन्य कोई तथ्य नहीं है।

फिर इन्साइक्लोपीडिया ऐसे ही किसी 'सुधारक' द्वारा प्रस्तुत की हुई एक लोक-कथा का उद्घाटन करती है।

"लड़का कोलों का कहना है कि सिंगबोंगा ने एक बालक और एक बालिका को बनाया। उनमें काम की प्रवृत्ति न देखकर धान की शराब बनाना सिखाया। कामेच्छा हुई और वंशवृद्धि होने लगी। प्रथम नर-नारी से बारह पुत्रों और बारह कन्याओं ने जन्म लिया। सिंगबोंगा ने तरह-तरह का मांस और शाक-भाजी पकाकर उन्हें भोज दिया। एक एक भाई-बहन को मिथुन कराकर एक-एक चीज खिलाई थी। प्रथम और द्वितीय भाई-बहन ने बैल और महिष का मांस लिया। उन्हीं से कोल और भूमिज जाति की उत्पत्ति है। शाक-भाजी खानेवालों से ब्राह्मण-क्षत्रिय और छाग-मांसाहारियों से शूद्र जाति की उत्पत्ति हे। उसी समय एक जोड़ा सूअर-माँस खाने से संथाल हो गया। कोल अपनी भाँति यूरोपियों को भी प्रथम मिथुन से उत्पन्न बताते हैं।"[1]

यूरोपियनों से इनका अलौकिक सम्बन्ध स्थापित करना ही इस अभिनव कथा का उद्देश्य है।

उपर्युक्त मनोवृत्तियों को छोड़ देने से जो कुछ मानवीय समवेदना की दृष्टि शेष रह जाती है, उस दृष्टि से आदिवासियों के लोक-साहित्य के लिए काम लगभग नहीं हुआ है। लेकिन वेरियर एलविन का नाम इसका अपवाद है। उसने मानवीय समवेदना की आत्मीय दृष्टि से मध्यप्रदेश के आदिवासियों की जीवन-कलाओं के समझने का सच्चा प्रयत्न किया है और गोंड, बैगा आदि जातियों के साहित्य-संगीत आदि के बारे में अपने महत्त्व पूर्ण अध्ययन प्रस्तुत किये हैं। हाँ, एलविन का यह मानवतावाद कुछ पृथक्करण की ओर झुका हुआ है! ठीक वैसे ही, जैसे बहुत-से भारतीय सेवकों और सुधारकों का मानवता-वाद अन्धाधुन्ध सम्पर्क का समर्थक है। भीलों, संथालों, सवरियों आदि में और भी कुछ सच्चे कार्यकर्ता छिटफुट प्रयत्न कर रहे हैं; किन्तु उनका परिणाम सामने आना अभी शेष है।

१. इन्साइक्लोपिडिया इण्डिका, ४—४५७

भारतीय लोकगीतों की अध्ययन-प्रणाली

लोक-गीतों के अध्ययन के सम्बन्ध में एक प्रकार की और भी कठिनाई रही और यह अध्ययन बहुत दिनों तक प्रयोग की भूल-भुलैयों में चक्कर काटता रहा। विद्वानों की अपनी सीमाओं और मर्यादाओं ने लोक-गीतों की समुचित मर्यादाओं का निर्धारण नहीं होने दिया। संग्रह, लिपि, अनुवाद सभी बहुत दिनों तक विवाद के विषय बने रहे।

बहुत-से विद्वानों ने मौलिक गीतों के संग्रह की उपयोगिता पर सन्देह प्रकट किया और उनके अनुवादों का ही संग्रह सम्पूर्ण अध्ययन के लिए पर्याप्त समझा। जी० सी० गोवर ने—'फोक-सांग्स आफ् सदर्न इण्डिया' (१८७१ में प्रकाशित) में मौलिक गीतों को छोड़ दिया। उसका कहना था कि बहुत कम पाठक इन्हें समझ सकते हैं और इससे बहुत अधिक कागज बरबाद होता है। तथा एक मुख्य साहित्य को थोड़े से उदाहरणों द्वारा प्रस्तुत करने की जगह अच्छा यही होगा कि उसके पूरे गीतों को ही उपस्थित किया जाय। अगर इस हालत में गीतों का मूल भी उपस्थित किया जाय[1] तब तो इससे कागज की बरबादी और बढ़ जायगी।

स्पष्ट है कि यह प्रयत्न पाश्चात्य तथा अँगरेजी पढ़े-लिखे पाठकों की ही दृष्टि से किया गया था। इस कारण इसका यह अर्थ हुआ कि यदि अपनी सीमाओं में बँधे हुए विद्वान् उन्हें समझ न सकें तो एक जाति के हृदय की सारी भावनाओं की और कोई उपयोगिता ही नहीं है!

अनुवाद के विषय में कुछ पूर्ववर्त्ती विद्वानों का आग्रह रहा कि छन्द का अनुवाद छन्द में ही होना चाहिए। सो भी अँगरेजी के छन्द में। इसमें भी गीतों की ठीक अभिव्यक्ति से अधिक पाठकों का ही खयाल था। अँगरेजी छन्द प्रणाली में कहीं संकुचित और कहीं विस्तृत होकर भारत के लोक-गीत न केवल अपना सरल सौन्दर्य खोते रहे, वरन् अपने भाव और अर्थ भी खोते रहे। ऐसे प्रयत्नों में भारतीय लोक-गीत कहीं विकृत हो गये और कहीं अनुवादकों के अपने संस्कारों के आवरण में संस्कृत होकर अपना प्रकृत रूप खो बैठे। रूप और अर्थ दोनों में लोक-गीत या तो कम हो गये या अधिक हो गये; किन्तु कम-से-कम वैसे नहीं रह पाये, जैसे पहिले थे। ऐसे अनुवादक दुर्भाग्य वश इस तथ्य को भूल गये कि लोक-गीतों का सौन्दर्य उनकी सरल अभिव्यक्ति में है, उनकी निरीह निःसंकोचता में है, और उनके भोलेपन में है। किन्तु महान् अनर्थ तो तब हुआ, जब उन्होंने अपनी विद्वत्ता पर लांछन लगने के डर से, जिनमें रुखड़ापन मिला, उनपर पालिश लगाई और गीतों के (अपनी समझ में) रिक्त कलेवर को नवीन अर्थों से जबरदस्ती भर दिया। श्री शरत्चन्द्र राय ने 'मुण्डाज एण्ड देयर कंट्री' के एथनाग्रोफी खण्ड में लगभग बीस-बाईस गीत मूल और छन्दोबद्ध अनुवाद-सहित प्रस्तुत किये हैं। उनमें से केवल दो-तीन को छोड़कर प्रायः सभी उपर्युक्त कथन के ज्वलन्त प्रमाण हैं। एक उदाहरण पर्याप्त होगा—

बोतमा रिसा रिसा
सुपिद केदम रांगा नाचा

1. वैरियर एल्विन—अपीलग टू डब्ल्यू० जी० आर्चर—(मैन इन इण्डिया—जिल्द २३, मार्च ४३—नं० १)।

निदा सिंगी बागेम गुतूतना
नामा नांगेन जीगे लो-तना !
आन्दू तदम, सकोम तदम,
होटो रेदो हिसिर मेना,
पोला तदम दो चिलका सड़ीतना,
नामा नांगेन जीगे लो-तन।

अनुवाद :—

How lovely thy head with wealth o? waving hair,
It looks with red twine tied in round knot fair !
O ! day and night, thou wrealthes of flowers dost, weave,
For thee my heart doth burn and bosom heave,
How bracceletes and armlets those fair arms bedeck,
And neck lace bright adorns thy beauteous neck !
Sweet sounds the jingling pola on they feet,
For thee my heart, doth burn and anxious beat.

मूल का अर्थ :—तुम्हारे सिर के बाल रुखड़े बिखरे हैं। लाल फीते से तुमने चोटी बनाई है। तुम रात-दिन फूल गूँथा करती हो। तुम्हारे लिए (हमारा) हृदय जल रहा है। तुम्हारे (पैर में) पैरी और (हाथ में) पहुँची है (और), गले में माला है। तुम्हारी (पैर की) अंगूठी कैसी बज रही है। तुम्हारे लिए हृदय जल रहा है।

अनुवाद का अर्थ :—

"घुंघराले बालों से भरा हुआ तुम्हरा सिर कितना सुन्दर है ! उसका खोंपा लाल सुतली से बँधा हुआ बड़ा सुन्दर है। तुम रात-दिन फूलों की माला गूँथा करती हो। तुम्हारे लिए मेरा हृदय जलता है और गहरी साँस लेता है। चूड़ियों से और भुजबन्दों (बाजू) से तुम्हारा हाथ कितना सुशोभित लगता है। तुम्हारे सुन्दर गले में तुम्हारा 'नेकलेस' चमकता हुआ सुशोभित हो रहा है। तुम्हारे पैरों में बजती हुई 'पोला' (पैर की अंगूठी) कितनी मधुर आवाज कर रही है। तुम्हारे लिए मेरा हृदय जल रहा है और दुख से धड़क रहा है।"

मूल और अनुवाद दोनों पाठकों के सामने हैं। रुखड़े-बिखरे बालों की जगह घुंघराले लहराते बाल लाये गये हैं। हृदय जलने के साथ 'गहरी साँस लेना' ऊपर से लाया गया है। पैरी (पैर में पायल के स्थान पर पहना जानेवाला गहना) की जगह चूड़ियाँ और पहुँची की जगह (कलाई में) बाजू (बाँह का गहना) पहनाया गया है। गले और माला दोनों शब्दों के लिए ऊपर से विशेषण लगाये हैं और मुण्डा प्रेमी की सरल अभिव्यक्ति को कृत्रिम विशेषणों में परिवर्त्तित कर दिया गया है। और अन्तिम पंक्ति में जहाँ मुण्डा का हृदय केवल जलता है, वहाँ शरत राय के अनुसार हृदय धड़कता भी है।

लेकिन, प्रयोगों ने पीछे सिद्ध कर दिया कि यह प्रणाली दोषपूर्ण है और प्रत्येक पंक्ति के अलग-अलग गद्यात्मक और सरल अनुवाद की वैज्ञानिक प्रणाली प्रचलित हुई।

---

१. श्री शरतचन्द्र राय—मुण्डाज् एण्ड देयर कंट्री—पृष्ठ २११-२१२।

संग्रह-कर्त्ताओं ने उस समय हद कर दिया जिस समय गीतों के विषयों का सूँघ-सूँघकर चुनाव किया। एलविन लिखता है कि "वैज्ञानिकों और साहित्यिकों के द्वारा भारतीय लोकगीतों की उपेक्षा आश्चर्य की बात है। बहुत दिनों तक उपदेशात्मक और धार्मिक गीतों का ही संग्रह होता रहा। 'गोवर' ने स्वीकार किया है कि उसे यौन-भावात्मक गीतों के अनुवाद का साहस नहीं हुआ, क्योंकि उसने एक प्रतिष्ठित और विद्वान् पादरी को सार्वजनिक रूप से वहिष्कृत होते देखा था, जिसपर एक गीत के—जिसमें नारी के स्तन की उपमा अनार से दी गई थी, सच्चाई और ईमानदारी से अनुवाद करने के लिए अभियोग लगाया गया था[1]।"

लिपि के सम्बन्ध में भी ऐसे ही विवाद रहे। अँगरेज विद्वानों ने रोमन लिपि में इनका संग्रह किया, जो भारतीय ध्वनियों की अभिव्यक्ति में स्वाभाविक रूप में असमर्थ रही। किन्तु, अँगरेजी भाषा के कारण वे ऐसा करने को लाचार थे। उन्होंने रोमनलिपियों की असमर्थता को समझा; किन्तु इसका समाधान ढूँढ़ने के बदले मौलिक गीतों को पाठकों की समझ से परे होने के कारण अनुपयोगी कहकर प्रायः उन्हें छोड़ दिया और उनके अनुवादों से ही काम चला लिया। नागरी लिपियों से वे या तो अपरिचित थे, या उसकी उन्होंने उपेक्षा की, इससे उसकी परीक्षा नहीं हो सकी और वे सम्भावनाएँ रहस्य ही बनी रह गईं जो इन लिपियों में भारतीय लोक-कविता के लिपिबद्ध होने से प्रकट होतीं। और, अंगरेज विद्वानों पर इसकी उपयोगिता के परदे नहीं खुल पाये। केवल इतना ही हुआ कि रोमन लिपियों में भारतीय गीतों के लिपिबद्ध करने की कोशिश से उस लिपि की अशक्तता समझ में आ गई।

मगर अब भारत के अन्य लोकगीतों का संकट भारतीय विद्वानों की जागरूकता से—देर से ही सही—दूर हो रहा है। फिर भी आदिवासी लोकगीतों का भाग्य उलझन में ही है। जितना कुछ अध्ययन हुआ है, उससे बहुत अधिक अछूता पड़ा है। इस विषय के सबसे बड़े आचार्य एलविन और आर्चर भी निश्चित राह नहीं बना सके हैं। दोनों की विश्लेषण प्रणाली अभी रास्ते में है। शुद्ध वैज्ञानिक पद्धति की मंजिल उनसे भी दूर है। सबसे बड़े दुर्भाग्य की बात है कि वे आपस में भी बहुत बातों में भिन्न हैं। विशेषकर मौलिक गीतों के संग्रह, अनुवाद और विश्लेषण जहाँ तीनों के सन्तुलन की आवश्यकता है, इन विद्वानों का महान प्रयत्न भी अधूरा ही रह जाता है। एलविन ने अपने संग्रहों में गीतों के अनुवादों को ही स्थान देना पर्याप्त समझा है और सिद्धान्ततः मौलिक गीतों के संग्रह की आवश्यकता स्वीकार करके भी उनका वैज्ञानिक पीछे पड़ गया है। उधर आर्चर ने मुण्डा, उराँव, हो, सन्थाल आदि के हजारों-हजार गीतों के मूल रूप का संग्रह किया और नागरी लिपियों में किया; मगर अनुवाद और व्याख्या से उन मोटी जिल्दों को वंचित रक्खा। केवल उराँव गीतों के लिए उनकी एक अलग पुस्तक 'दि ब्लू-ग्रोव' है, जिसमें थोड़े से गीतों का अनुवाद है और सुन्दर विश्लेषण है; मगर वहाँ गीतों का मूल ही गायब है। आदिवासी गीतों के ये सबसे बड़े दो आचार्य राहु और केतु के समान

---

1. वेरियर एलविन—अपीलग-टू डब्ल्यू० जी० आर्चर (मैन इन इण्डिया—जिल्द २१ मार्च। ४१ अंक १)

दो टुकड़ों में बँटे हुए हैं और इनमें प्रत्येक इस प्रकार अधूरा है जो आपस में मिलकर भी पूर्ण नहीं हो सकते। आश्चर्य तो तब होता है जब हम देखते हैं कि ये दोनों वैज्ञानिक भी हैं और कलाकार भी। मगर विदेशी होने के कारण इनके हृदय और मस्तिष्क का भारतीय लोक-मानस के साथ उचित सन्तुलन नहीं स्थापित हो पाता और उस दृष्टिकोण का अभाव रह जाता है, जिसके होने से एक अध्येता, गीत, अर्थ और जीवन—तीनों में समान सौन्दर्य देखता है और तीनों को समान महिमा प्रदान करता है।

फिर भी ये आदिवासी गीतों के निश्चित रूप से सब से बड़े आचार्य हैं और इनका पथ-प्रदर्शन अमूल्य है। हमें सच्चे हृदय से इनका कृतज्ञ होना चाहिए। यह तो भारतीय विद्वानों का काम है कि वे न केवल इनके अधूरे काम को पूरा करें, वरन् इनकी अपूर्ण प्रणाली को भी पूर्णता प्रदान कर उसे पूर्ण कलात्मक, वैज्ञानिक तथा जीवनानुकूल बनावें।

अध्ययन का शुद्ध उद्देश्य

वास्तव में लोक-जीवन को समझने के लिए लोक-वार्त्ताओं का बड़ा महत्त्व है। विशेषकर आदिवासियों के विषय में तो सबसे पहली आवश्यकता यही है कि उन्हें ठीक से समझा जाय। अब तक आदिम जातियों की दुनिया में जो भी सेवक, सुधारक या लेखक गये, एक बँधी हुई धारणा लेकर गये और अपने-आपको कुछ भिन्न और कभी-कभी विकृत संस्कारों में लपेटकर गये और सबसे बड़ा अनर्थ तो तब हुआ, जब वे कोई अपना विशेष उद्देश्य लेकर गये। स्पष्ट है कि उन्होंने अपने रंगीन चश्मों से आदिवासी जीवन को देखा और यह दर्शन सत्य से कभी कभी बहुत दूर रहा।

जन-जातियों के बीच जानेवालों को चाहे वे सेवा के लिए जायें या अध्ययन के लिए, उनके प्रति प्रेम और सहानुभूति का भाव लेकर जाना चाहिए। मन में उनकी सभी बातों के प्रति आत्मीयता का भाव होना चाहिए। हमारी दृष्टि ऐसी हो कि हम शहरी संस्कारों के ऊँचे कोठे पर चढ़कर दूर से उनके जीवन की अवघट घाटियों पर दृष्टि न डालें, वरन् उनकी विशेष परिस्थितियों के निकट जाकर उन्हीं की परिस्थितियों में उनके जीवन का अध्ययन करें। आदिम जातियाँ समाज की अविकसित अवस्था में मानी जाती हैं। यदि यह बात सच हो, तो भी हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि शिशु का विकास धूल के घरौंदों और काठ के घोड़ों पर ही होता है। जो अभिभावक शिशु की अभिरुचियों और ममताओं को सहानुभूतिपूर्वक नहीं समझता और केवल अपनी ही इच्छाओं को सर्वदा शिशु के सिर पर लादा करता है, वह मूर्ख उसके साथ अत्याचार करता है। हमें अपने आदर्शों को उन्हें समझाने और उसी कसौटी पर उनके जीवन को कसने के बदले उनके आदर्शों को समझने का प्रयत्न करना चाहिए। आदिम जातियों की बहुत-सी बातों को बुरी, निरर्थक और हीन समझनेवाले बुद्धिमानों को इस बात को नहीं भूलना चाहिए कि ये पिछड़े कहलानेवाले लोग भी वैसे ही उन सभ्यों की भी बहुत-सी बातों को हीन और निरर्थक समझते हैं जो सब-की-सब केवल ऊँची और महत्त्वपूर्ण ही नहीं हैं।

लोक-वार्त्ताओं में जनता के प्राण बसे रहते हैं। विशिष्ट वर्गों के साहित्य और

कलाएँ अधिक संस्कृत होती हैं। उनमें आडम्बर, कृत्रिमता और सजावट होती है, इसलिए मन-बहलाव और फैशन में ही उनकी अधिक उपयोगिता है। किन्तु जनता और विशेषकर पिछड़ी जातियों की वार्त्ताएँ केवल मन-बहलाव और फैशन की ही सामग्री नहीं होतीं; वरन् वे साँसों की तरह महत्त्वपूर्ण होती हैं। उनके दुखी और पिछड़े जीवन के सारे रस और आनन्द उन्हीं में बिखरे होते हैं।

लोक-वार्त्ताएँ और लोक-कविताएँ आदिम-जीवन के पंछी के लिए जंगल की डाल हैं, जिसके रसमय और उन्मुक्त वातावरण में उनके पंख स्पन्दित होते हैं और स्वर फूटते हैं। आदिम-प्राणों की मछली के लिए निर्मल धारा है जिसमें उनके प्राण गतिशील होते हैं। गीत और नृत्य उनके प्राणों की सूखती हुई खेती के लिए सावन की काली घटा हैं और उनकी मुरझाई हुई कलियों के लिए वसन्त की ठंडी हवा हैं। जैसे पंछी की मस्ती को वन से हटाकर और मछली की जिन्दगी को पानी से अलग करके नहीं देखा जा सकता, वैसे ही गीत-नृत्य से हटा लेने पर आदिवासी-जीवन टूटी हुई टहनी की तरह मुरझा जाता है। वन-पर्वत, नृत्य-संगीत तथा उमंग और मस्ती की पृष्ठभूमि के बिना आदिवासी जीवन का चित्र भरपूर नहीं उभरता और सफेद दीवार पर उजली रेखाओं के समान निर्जीव जान पड़ता है।

प्रकृति से संस्कृति की ओर विकासशील आदिम जातियों के जीवन की हर अवस्था के लिए उनकी कलाओं और कविताओं का समान महत्त्व है। परिवर्त्तन की जिस अवस्था में उनका सम्बन्ध इन कलाओं से टूट जाता है, वह या तो उनके ह्रास की अवस्था है अथवा तथाकथित 'संस्कृति' के नाम पर उनमें विकृति आ रही है। प्रकृति को ही विकसित, संयमित, मर्यादित और उपयोगी बनाने का नाम संस्कृति है। जो विकास प्रकृति को मिटाकर या उसका गला घोंटकर किया जाता है, उस पीछे हटी हुई ऋण-प्रकृति का नाम विकृति है। इनके सेवकों, शुभ-चिन्तकों और लेखकों को इस विषय में भी सावधान होना है और इस खतरे को समझना है। खतरा इसलिए जैसा कि एलविन ने लिखा है—"सारी दुनिया में यह बात पाई गई है कि जब आदिम जातियाँ किसी दूसरी सभ्यता के सम्पर्क में आती हैं तब वे इस नई सभ्यता की बुरी बातें अपना लेती हैं और अच्छी बातों की ओर ध्यान नहीं देतीं। इससे भी अधिक बुरी बात यह होती है कि ऐसे सम्पर्क से उनमें एक ऐसी मनोवैज्ञानिक स्थिति पैदा हो जाती है कि वे अपनी पुरानी और सुन्दर बातों को छोड़ देती हैं। आज भारत के आदिवासियों में भी यही हो रहा है और इनमें अपनी कला और संस्कृति की उपेक्षा करने की प्रवृत्ति बढ़ रही है।[1]"

एलविन इसी स्थिति के लिए उदाहरण प्रस्तुत करते हुए 'दि ट्राइबल आर्ट ऑफ मिडिल इण्डिया' की भूमिका में कलात्मक वस्तुओं के अपने संग्रह के प्रसंग में लिखता है—"मुझे भय है कि अब संग्रह करने योग्य अधिक नहीं बचा है। हम बहुत देर से काम शुरू कर पाये। भारतीय आदिवासी का स्वर्ण युग बीत चुका है। अब तो

1. डा० वैरियट एलविन—आदिवासियों की कला ('आजकल'—आदिवासी अंक—जून 1952—पृ० 21)।

हम मलवे में से प्रेरणा और सौन्दर्य खण्डित अंश ही ढूँढ़ सकते हैं।[1]" और आर्चर ने भी 'मुण्डा-सांग्स' की भूमिका में यही स्थिति स्पष्ट की है—"ट्राइवल समाज में ऐसी भी परिस्थिति उपस्थित होती है जब उस जाति की मौखिक कविताओं का संग्रह आवश्यक हो जाता है। सबसे स्पष्ट परिस्थिति उस समय आती है जब शिक्षा उनके जातीय जीवन को नष्ट कर रही हो तथा उनके विश्वास जातीय जीवन के स्तर को दुर्बल बना रहे हों।"[2]

वास्तव में भारतीय आदिवासियों की विकास प्रणाली में ऐसे विरोधाभास आये हैं और ऐसे मौलिक दोष रहे हैं, जिनसे विकृति के ही खतरे अधिक उपस्थित हुए हैं। सम्पर्क की जिस वैज्ञानिक स्थिति की चर्चा एलविन ने की है, वह तो उसके लिए उत्तरदायी है ही; किन्तु अपनी कला के प्रति उपेक्षा—भाव को प्रोत्साहन देनेवाले ईसाई मिशन और अपने शोषण के द्वारा इनके जीवन का ह्रास करनेवाले विभिन्न प्रकार के शोषक भी कम जिम्मेवार नहीं हैं।

लेखक, सेवक और सुधारक सभी प्रकार के शुभ-चिन्तकों को इस स्थिति को समझ लेना आवश्यक है। आदिवासियों का विकास इस ढंग से हो कि उनके प्राणों के फूल जिस मिट्टी की सोंधी गन्ध में विकसित हुए हैं, उनसे इन पृथ्वी पुत्रों का सम्पर्क न टूटे। कला और संगीत की अपनी प्राकृतिक अभिरुचियों को ये परिमार्जित करें, उनमें इनकी लगन और गहरी हो और मानव की नैसर्गिक प्रवृत्तियाँ ही इनके विकास की आधार-शिला बनी रहे। आदिवासियों के सेवकों और उनके गीतों के व्याख्याकारों की यह जिम्मेवारी है कि वे अपने सरल संस्कारों से दूर न होने पावें, उनके जीवन की वीणा के तारों में उनके चिर-परिचित संगीत बन्द न हों, उनके प्राणों की बाँसुरी अपने मधुर स्वरों को भूल न जाय, और वे अपनी प्रकृति के कोमल प्रसूनों को विकृत सभ्यता के बाजार में कागजी फूलों से बदल लेने का प्रयास न करें।

इसके लिए ऐसा सहानुभूतिपूर्ण हृदय होना चाहिए, जिसकी आँखें इनकी कला की मनोहरता को देख सकें, जिसके कान इनकी कविता के रागों की मिठास सुन सकें और जिसके कंठ से आदिम गीतों की वह स्वर-लहरी उठे जो वन-जीवन को झंकृत करती हुई इनके सूखे प्राणों पर बरस कर उन्हें नई हरियाली से लहलहा दे!

मुण्डा-भाषा

नृतत्त्व-शास्त्रियों के मतानुसार मुण्डा जाति प्रोटोआस्ट्रेलाइड परिवार की भारतीय शाखा से सम्बन्धित है। डाक्टर गुहा ने भारत के निवासियों को छः मानव-वंशों में बाँटा है[3]—

१. निग्रिटो, २. प्रोटो आस्ट्रेलाइड, ३. मंगोलाइड, ४. भूमध्य सागरीय (मेडिटेरेनियन), ५. पश्चिमी वृत्त कपालक (वेस्टर्न ब्रेसीशिफाल्स), ६. नार्डिक।

इनमें भारत की आदिम जातियाँ निग्रिटो, प्रोटो-आस्ट्रेलाइड और मंगोलाइड, तीन बड़े आदिम परिवारों से सम्बन्ध रखती हैं, जिनमें सबसे प्राचीन 'निग्रिटो' जातियाँ

१. एलविन-ट्राइवल आर्ट ऑफ मिडिल इंडिया—भूमिका।
२. डब्ल्यू जी आर्चर—मुण्डा-सांग्स,—भूमिका—पृ० १।
३. डाक्टर गुहा—रेस एलिमेन्ट्स इन दि इण्डियन पापुलेशन।

अब भारत में बहुत कम रह गई हैं। त्रावणकोर की 'कादन' और 'पलियन' तथा राजमहल पहाड़ियों की 'बागड़ी' जातियाँ' विशाल निग्रिटो परिवार का समाप्त-प्राय अवशेष हैं। दक्षिण भारत की कुछ अन्य जातियों में भी निग्रिटो विशेषताएँ मिलती हैं। अण्डमन-नीकोबार के आदिवासियों का सम्बन्ध विद्वान् इसी वर्ग से जोड़ते हैं।

मंगोलाइड वर्ग की जातियाँ भारत के उत्तरी-पूर्वी भागों में, विशेषकर आसाम में बसी हैं। वैसे तो मध्य भारत में भी उनके रक्त के कुछ अंश पाये जाते हैं।

शेष तीसरी प्रोटो-आस्ट्रेलाइड वर्ग की जातियाँ भारत में सबसे अधिक हैं। डाक्टर गुहा ने लिखा है—"मध्य और दक्षिण भारत की सभी जन-जातियाँ निश्चित रूप से इसी परिवार से सम्बन्ध रखती हैं। यद्यपि इनकी भाषाओं का विभिन्न भाषा-परिवारों से सम्बन्ध है। पश्चिम भारत की सभी जातियाँ; गंगा के मैदान की वे जातियाँ जो हिन्दू-समाज का वाह्य अंग बन गई हैं, मध्य भारत के पहाड़ों में रहनेवाली भील, कोल, बडगा, कोरवा, खरवार, मुण्डा, भूमिज, माल पहाड़िया जातियाँ; दक्षिण भारत के चेंचू, कुरम्बा, मलय, येरू आदि भी इसी जाति की प्रतिनिधि समझी जा सकती हैं। यद्यपि उनमें अन्य परिवारों का सम्मिश्रण विशेषतः निग्रिटों का एक ही समान नहीं है, तथापि यह निश्चित है कि दक्षिण भारत की जातियों में मध्य भारत की अपेक्षा यह सम्मिश्रण अधिक है।"[1] यह वर्गीकरण जातिगत है।

भाषा की दृष्टि से भारत के इस परिवार के आदिवासियों ने विभिन्न आदिवासी भाषाओं के अतिरिक्त—अन्य भाषा परिवारों की भाषाओं को भी अपनाया है।

मुण्डा भाषाएँ आस्ट्रिक परिवार की भाषाएँ हैं। मुण्डाओं के लिए यह गौरव की बात है कि आस्ट्रिक परिवार की जो भाषाएँ भारत की विभिन्न जातियों द्वारा बोली जाती हैं, वे सब-की-सब मुण्डा-भाषाएँ कहलाती हैं। भाषाओं का आस्ट्रिक परिवार एक बहुत विशाल परिवार है, जो मध्य भारत से लेकर आस्ट्रेलिया तक फैला हुआ है। "मुण्डाओं की भाषा, छोटानागपुर पहाड़ियों की संथाल, हो तथा अन्य जातियों द्वारा बोली जानेवाली भाषाओं के साथ भाषाओं के उस परिवार से सम्बन्ध रखती हैं जिसे आस्ट्रो-एशियाटिक कहते हैं और जिसमें मोन-ख्मेर, वा; पालंग, निकोबारी, खासी और मलक्का की आदिवासी भाषाएँ सम्मिलित हैं। भाषाओं का एक दूसरा परिवार भी है जिसे आस्ट्रोनेशियन कहते हैं, जिसमें इन्डोनेशियन, मालेनेशियन और पालेनेशियन सम्मिलित हैं। ये दोनों परिवार—आस्ट्रो एशियाटिक और आस्ट्रो-नेशियन एक बड़े परिवार में सम्मिलित हो जाते हैं, जिसे आस्ट्रिक कहते हैं।[2]

भारतीय विद्वानों ने इन दोनों परिवारों का नाम "आग्नेय-देशी और आग्नेय द्वीपी दिया है।"[3]

---

१. डाक्टर बी० एस० गुहा—ऐन आउट लाइन आफ दी रेसियल एथनालोजी आफ इण्डिया—१२१।

२. ई० ए० गेट – इण्ट्रोडक्शन (मुण्डाज एन्ड देयर कंट्री) पृष्ठ ४।

३. श्यामसुन्दर दास—भाषा-विज्ञान।

मुण्डा भाषाओं के मूल और परिवार के बारे में श्री शरत्‌चन्द्र राय लिखते हैं—"प्रसिद्ध पाश्चात्य भाषा-वैज्ञानिकों ने अनुसन्धान करके इस बात का पता लगाने में सफलता प्राप्त की है कि बृहत्तर-भारत, कोचीन चाइना, मलाया-प्रायद्वीप, निकोबार, फिलीपाइन द्वीप-समूह, मलक्का और आस्ट्रेलिया में जो असभ्य जातियाँ (Rude Tribes) बसती हैं, उनकी भाषाओं में प्रत्यक्ष सम्बन्ध है। क्या शब्दकोष, क्या व्याकरण के नियम, क्या भाषा की रचना के तत्त्व—सभी बातों में, भारत की कोलेरियन, मुण्डारी, संथाली, भूमिज, हो, बिरहोर, कोडा, तूरी, असुरी, कोरवा, कुरकू खड़िया, जुवांग, सवर, गड़वा आदि भाषाएँ, मलाया प्रायद्वीप की सकई और सेमंग ; अनामी बरसीसी, मोन-ख्मेर तथा खासी; मलक्का द्वीप समूह के आदिवासियों की भाषाएँ; आस्ट्रेलिया की दिप्पिल, तुरुवल, कमिलरोव, ओडी-ओडी, किंकी वैलुवन, तोंगुरोग तथा अन्य भाषाएँ और निकोबार की कार-निकोबार, चोवरा, तेरेसा. शोम्पेन आदि भाषाएँ आपस में बहुत घनिष्ठ सम्बन्ध रखतीं हैं।"[1]

प्रोटो-आस्ट्रेलाइड परिवार की कुछ जातियों ने अपने से अधिक उन्नत मेडिटरेनियन भूमध्यसागरीय) परिवार की द्राविड़-जातियों के सम्पर्क में आने से अपनी मौलिक भाषाओं को भूलकर द्राविड़ भाषाओं को ही अपना लिया है। जिसमें छोटानागपुर के उराँव प्रमुख हैं। इन बातों के कारण विद्वान् बहुत दिन तक जातियों के वर्गीकरण के सम्बन्ध में भ्रम में पड़े रहे ; क्योंकि तब तक भाषाएँ ही वर्गीकरण का सबसे मुख्य आधार थीं। किन्तु जब नृतत्व-वेत्ताओं ने वैज्ञानिक मापदंड—१. मनुष्य के शरीर-वर्ण के भेद, केशों के प्रकार, नेत्रों का रंग ; २. सिर का आकार-प्रकार ; ३. मानव-शास्त्र की सहायता से विभिन्न समूहों की जातिगत योग्यता, स्वभाव, का अध्ययन ; ४. रक्त-वर्गों का विश्लेषण आदि—निर्धारित कर लिये, तब भाषाओं का आधार महत्त्वपूर्ण नहीं रह गया और रक्तवर्गों का विश्लेषण सबसे प्रमुख बन गया।

उपर्युक्त भ्रम में पड़कर विद्वान् उराँव आदि जातियों को द्रविडियन मानते रहे। एक ही प्रोटो आस्ट्रेलाइड जातियों को दो समझकर उनका 'कोलेरियन' और 'द्रविडियन' परिवारों में वर्गीकरण किया। श्री शरतचन्द्र राय का भी यही मत था ; किन्तु इससे भी आश्चर्यजनक भ्रम इन्साइक्लोपीडिया का था, जिसने पता नहीं किस आधार पर स्वयं मुण्डाओं को द्रविड़ परिवार का माना है। उसने लिखा है—"मुण्डा = छोटानागपुर अंचल में रहनेवाली द्रविड़-असभ्य जाति विशेष।"[2]

डाक्टर गुहा ने इस महत्त्वपूर्ण सिद्धान्त की स्थापना करके कि जब कोई जाति अपने से अपेक्षाकृत अधिक सभ्य जाति के सम्पर्क में बहुत दिनों तक रहती है तब वह प्राय: अपनी भाषा को भूलकर सभ्य जाति की भाषा को अपना लेती है। इस भ्रम का निराकरण कर दिया है। दुनिया की बहुत-सी जातियों में यह बात हुई है। छोटानागपुर के उराँव और मुण्डा स्वयं इसके उदाहरण हैं। मुण्डा क्षेत्र में जो दो-चार घर उराँव जहाँ-तहाँ आ बसे हैं। वे मुण्डा भाषा और उराँव क्षेत्र के मुण्डा उराँव भाषा बोलते हैं।

---

१. श्री शरत्‌चन्द्र राय—मुंडाज एण्ड देयर कन्ट्री, पृ० १८-२१।

२. इन्साइक्लोपीडिया-इंडियका, भा० १८—पृ० १।

आस्ट्रिक परिवार की जो भाषाएँ भारत के आदिवासियों द्वारा बोली जाती हैं उनका नाम ग्रियर्सन ने कोलेरियन (या कोल भाषा परिवार) दिया है।[१] ग्रियर्सन ने इस नाम को प्रचारित करना चाहा; परन्तु पीछे चलकर फेडरिक मिलर ने इन भाषाओं को 'मुण्डा भाषाओं' की संज्ञा दी।[२] इन मुण्डा भाषाओं का प्रचार भारत की आदिम जातियों में बहुत पहिले से था और इन्हीं जातियों के द्वारा भारत में पाषाण-युग की सभ्यता का निर्माण हुआ था।

इन मुण्डा भाषा भाषी जातियों के नाम बहुत दिनों से अलग-अलग हो गये हैं, रस्म-रिवाज बदल गये हैं और उनकी भाषाओं में काफी अन्तर पड़ गया है। उनमें कहीं-कहीं तो इतना अन्तर पड़ गया है कि भाषा शास्त्र की सूक्ष्म और वैज्ञानिक दृष्टि से देखे बिना उनमें एकता नहीं मालूम हो सकती। हम इस अन्तर के कारणों को समझने का प्रयत्न करें। बहुत दिनों से ये जातियाँ काल की आँधियों में पड़कर बिखर गई हैं। और एक-दूसरी से इतनी दूर पड़ गई हैं कि उनमें आपस में कोई सम्बन्ध नहीं रह गया है। जैसे आज ज्ञान, विज्ञान और सम्पर्क बड़ी-बड़ी दूरियों को भी निकट बना रहे हैं। वैसे ही अज्ञानता और असम्पर्कता ने इनकी निकटता में भी लाखों कोस की दूरी भर दी है। पहले इनमें शिक्षा की वह सूक्ष्मदर्शी और दूर-दर्शी दृष्टि भी नहीं रही है, जिससे ये भूतकाल में प्रवेश करके अपनी एकता को समझते। इसलिए एक ही जाति की एक-एक शाखा को अलग-अलग जाति मान लेना इनके लिए स्वाभाविक था।

दूसरी बात यह है कि जातियों का वर्गीकरण दो प्रकार से होता है। एक तो कोई जाति स्वयं अपना नाम रखती है, जिसमें औरों से अपनी विशेषता सूचित करती है। दूसरे, अन्य लोग किस जाति का नाम रखते हैं, जिसमें इस जाति के बारे में अपने विचारों को ध्वनित करते हैं और उनके बारे में अपनी हीनता या उच्चता की भावना प्रकट करते हैं। बहुधा ऐसे नामों में जातीय घृणा और तिरस्कार के कारण हीनता की भावना ही प्रकट होती है। पीछे ये दोनों प्रकार के नाम रूढ़ि बन जाते हैं। मुण्डा जातियों ने बहुधा अपना नाम मनुष्यवाची रक्खा है। जैसे संथाल—'होड़', मुण्डा—'होड़ो को', हो—'हो' और यह स्पष्ट है कि वे जितनी बार बिखरीं उतनी बार अपना नाम रक्खा। हर शाखा ने अपना और एक ने अपने निकट सम्पर्क की दूसरी शाखा का भी नाम रखा। बहुत-से पुराने नाम लुप्त हो गये और नये प्रकट हुए। संथाल, हो, जुवांग खड़िया, आदि नाम हाल के रक्खे हुए नाम हैं। मुण्डा का अर्थ है सिर या प्रमुख! गाँव के प्रधान को पहिले मुण्डा कहा जाता था। पीछे और जातियों से अपनी प्रमुखता दिखाने के लिए यह जाति का नाम बन गया और फेडरिक मिलर के द्वारा पूरे परिवार की भाषाओं के लिए अपनाया गया।

शब्द साँप के केंचुल की तरह अपने पुराने अर्थ छोड़कर नये अर्थ ग्रहण कर लिया करते हैं। 'हो' जाति ने मुण्डाओं से अलग होने पर अपना नाम 'हो' रक्खा। 'हो' 'होड़ो' का संक्षिप्त रूप है जिसका अर्थ है मनुष्य। ये 'ड़' का उच्चारण नहीं कर सकने के कारण हो जातिवाले उसे छोड़ देते हैं। जैसे-'ओड़ा' को 'ओवा' (घर) 'पिड़ी' को 'पी'

१. सर जार्ज ग्रियर्सन-लिंग्विस्टिक सर्वे आफ इण्डिया, भाग ४, पृष्ठ—२।

२. डाक्टर वी० एस० गुहा—आजकल (आदिवासी अंक), पृष्ठ—६।

(मैदान) और 'कुड़ी' को 'कुई' (स्त्री) कहते हैं। संताल अपनेको 'होड़ो-को' कहते हैं। दूसरे लोग उन्हें संथाल या संताल कहते हैं।

इससे पहिले इन जातियों का 'कोल' और 'शबर' नाम मिलता है। 'शबर' कोई घृणा सूचक शब्द नहीं है। यह शब्द संस्कृत ग्रन्थों में प्रायः वहाँ आया है जहाँ इन जातियों से अच्छे सम्बन्ध के प्रसंग में चर्चा है। विंध्य प्रदेश की 'सहरिया', बिहार की 'सौरिया', और उड़ीसा, मध्य-प्रदेश, मद्रास तथा बिहार की 'सावरा' आदि जातियों के नाम इसी शब्द से सम्बन्धित हैं। इन्हीं शब्दों को संस्कृत में 'शबर' रूप प्रदान किया गया है।

इस प्रकार 'मुण्डा' आस्ट्रिक परिवार की सारी भारतीय भाषाओं का नाम होने के साथ ही अपनी एक स्वतंत्र उपजाति और उसकी भाषा का नाम भी है। सारी मुण्डा भाषा-भाषी जातियों की कुल जनसंख्या चालीस लाख है। और खास मुण्डा जाति जो मध्यप्रदेश, उड़ीसा, बिहार और बंगाल में बसी; है उसकी जन-संख्या १६४१ की जन-गणना के अनुसार—बिहार—५१६७४३, बंगाल—१०३१४८, उड़ीसा—७१५५४१, मध्यप्रदेश—६३३८ कुल है।

प्रस्तुत पुस्तक का जिनसे सम्बन्ध है, वे विहार के राँची जिले में बसे हुए 'मुण्डा' है, जो मुण्डा भाषा बोलते हैं।

मुण्डा जाति के बहुत दिनों से अन्य भारतीय जातियों के सम्पर्क में रहने के कारण उनकी भाषा पर उच्चारण, शब्दों के आदान-प्रदान आदि के रूप में अन्य भारतीय भषाओं का काफी प्रभाव पड़ा है। मुण्डा भाषा में बहुत-से शब्द संस्कृत, प्राकृत तथा अरबी-फारसी के भी सम्मिलित हुए हैं। उन्होंने मुण्डा उच्चारण के अनुरूप अपना रूप बदल लिया है। उदाहरणार्थ कुछ शब्द यहाँ दिये जाते हैं—

संस्कृत	मुण्डा	हिन्दी
दारू	दारू	लकड़ी
तुला	तुला	तराजू
अंजली	अंजली	अंजली
दात्रोम	दात्रोम	हंसुवा
पालंक	पालंक	पलंक
पाण्डुर	पाण्डू	पीला
शर	सार	तीर
कदली	कदल	केला
स्वर्ण	समड़ोम	सोना
काष्ठफल	कन्टड़ा	कटहल
कोम्पाट	कुम्पाट	श्रेष्ठ
फारसी	मुण्डा	हिन्दी
जोर	जोर	शक्ति
खूब	खूब	पूरा
जुहार	जोहार	नमस्कार

मुण्डा भाषा की मौलिक शब्दावली में वन-पर्वत-सम्बन्धी वस्तुओं के शब्दों की भरमार है, पशु-पालन, ग्राम व्यवस्था तथा खेती-बारी-सम्बन्धी मौलिक शब्द इस जाति की मूल संस्कृति पर प्रकाश डालते हैं। धातु के बर्त्तन, कपास के वस्त्र, वाणिज्य-व्यवसाय, कर्ज, सूद, महाजन, आदि सम्बन्धी शब्द मुण्डा भाषा के अपने नहीं है। मुण्डारी में इन बातों के लिए आर्य भाषाओं के शब्दों को देखकर पता चलता है कि मुण्डाओं की मूल संस्कृति में ये बातें विद्यमान नहीं थीं; किन्तु नृत्य, गान, वाद्य, बाँसुरी आदि के उनके अपने शब्द हैं।

शिक्षा के प्रचार के साथ ये नयी वस्तुओं, नये विचारों, नये भावों और नयी विद्याओं के सम्पर्क में आते जा रहे हैं, जिससे मुण्डा भाषा में बहुत-से नये शब्दों की वृद्धि होती जा रही है। पढ़े-लिखे लोग मुण्डा व्याकरण-क्रियापदों, प्रत्ययों और विभक्तियों आदि को छोड़कर अपनी बोल-चाल में हजारों अन्य शब्दों का प्रयोग कर रहे हैं। और अपनी भाषा की शक्ति को बढ़ा रहे हैं। यह एक जीवित भाषा का लक्षण है। आज इस भाषा में हर प्रकार के भाव और विचार व्यक्त करने की शक्ति पैदा होती जा रही है। और सच पूछा जाय तो किसी भाषा की मौलिकता उसके क्रियापदों, विभक्तियों और प्रत्ययों आदि में ही है। आप जिन नयी वस्तुओं को अपनाते जा रहे हैं उनके रूपक शब्दों को तो अपनाना ही पड़ेगा। जिस दिन साबुन की बट्टी आपके काम में आयी उस दिन 'साबुन' आपका शब्द हो गया और जिस दिन आपकी जाति ने लालटेन का व्यवहार करना प्रारम्भ किया 'लालटेन' आपके शब्द-कोष में सम्मिलित हो गया। क्या जिस लालटेन को आपने खरीदा है उसे दूसरे की चीज समझते हैं? यदि नहीं, तो फिर वह शब्द दूसरे का कैसे है? लेकिन मुण्डा भाषा इस विषय में काफी उदार है, यह शुभ लक्षण है।

शब्दों की ही भाँति उच्चारण पर भी अन्य भाषाओं के उच्चारण का प्रभाव पड़ा है। पहले मुण्डा परिवार की जातियों के मानुष्यमिति के सिद्धान्तों के अनुसार, स्वर-रन्ध्रों की बनावट में कुछ ऐसी विभिन्नता थी कि वे महाप्राण अक्षरों का उच्चारण नहीं करती थीं। धीरे-धीरे वह कठिनाई अब मिट रही है। 'हो' जाति के लोग अब भी सभी महाप्राण वर्णों के लिए अल्पप्राण वर्णों का ही प्रयोग करते हैं।

शब्द		हो-उच्चारण
दूध	—	दुद
छड़ी	—	चड़ी
मिठाई	—	मिट्टई
झगड़ा	—	जगड़ा
भात	—	बात—इत्यादि।

इस भाषा में विसर्गों की प्रधानता है; किन्तु शहरों के सम्पर्क में रहनेवाले मुण्डा विसर्गों को छोड़ते जा रहे हैं और उच्चारण को सीधा-सपाट बनाते जा रहे हैं। जैसे 'दअ:' (पानी) को सीधे 'दा' कह देते हैं। 'सेत:' (विहान) को 'सेता' और 'कोत:' (कहाँ) को 'कोता' कह देते हैं। मुण्डा भाषा पर बँगला के उच्चारण का भी प्रभाव पड़ा है। जैसे 'रोकोम-रोकोम' (तरह-तरह), 'ओनेक' (अनेक) इत्यादि।

मुण्डा भाषा का व्याकरण बहुत महत्त्वपूर्ण है। संस्कृत व्याकरण की ही भाँति इसके

नियम इतने कठोर हैं कि कोई भी व्यक्ति व्याकरण के नियमों से एक इंच भी बाहर नहीं जा सकता। छोटे बच्चे भी शुद्ध भाषा ही बोलते हैं। विना किसी पाणिनि-पतंजलि के किसी भाषा का इतना नियमित और संयमित होना आश्चर्य की बात है और उससे भी बढ़कर आश्चर्य की बात यह है कि मुण्डारी का व्याकरण संस्कृत व्याकरण से मिलता-जुलता है।

१. संस्कृत की ही भाँति मुण्डा में भी तीन वचन होते हैं। एकवचन, द्विवचन और बहुवचन।

२. तीन लिंग होते हैं। प्राणीवाचक शब्दों के लिए पुंलिंग तथा स्त्रीलिंग और अप्राणीवाचक शब्दों के लिए क्लीब लिंग व्यवहृत होता है।

३. लिंग और वचन के कारण क्रिया का रूप नहीं बदलता।

४. मुण्डा में भी समास होते हैं। जैसे—केचो:-ओड़ा, राजा-होन (राज-पुत्र) मेरोम-होन (बकरी का बच्चा)।

५. कारक आठ होते हैं।

६. मुण्डा भाषा की एक प्रधान विशेषता यह है कि जो सर्वनाम शब्द कर्त्ताकारक के रूप में आते हैं वे प्राय: वाक्य के प्रधान शब्द क्रिया, कर्म, क्रिया-विशेषण आदि शब्दों के अन्त में जोड़ दिये जाते हैं। बहुधा उनका रूप संक्षिप्त बना लिया जाता है। (कुछ अंश तक ऐसा संस्कृत में भी होता है।) जैसे—

(क) आइं सेनो तना—सेनोतनाइं—(क्रिया में)

(ख) अइं ओड़ा: ते सेनोतना—ओड़ा:तेइं सेनोतना—(अपादान कारक में)

(ग) ओड़ा:ते गपाइं सेना आ:।

(घ) मांडी जोम-ए सेनो:तना।

मुण्डा में शब्द-भंडार कम होने के कारण प्रत्यय लगाकर बहुत से शब्द बना लिये जाते हैं। इस प्रकार इस भाषा में एक धातु के सैकड़ों रूपों का व्यवहार होता है। और, संज्ञा शब्द भी प्रत्ययों की मदद से क्रिया, विशेषण, क्रिया-विशेषण आदि के रूप में व्यवहृत होते हैं।

७. प्राणीवाचक और अप्राणीवाचक सर्वनामों के रूप में (पुरुषवाचक को छोड़कर) अन्तर होता है—ओकोए (कौन) प्राणीवाचक, ओकोवा (क्या) अप्राणीवाचक।

८. प्राणीवाचक और अप्राणीवाचक के लिए क्रिया के मौलिक धातु एक ही होते हैं। पर उनके रूपान्तर में थोड़ा अन्तर हो जाता है।

फल गिरा है—जो उयु—अकना।

बैल गिरा है—उरी: उयु—अकना-ए।

९. 'मुण्डा' में आदर प्रकट करने के लिए बड़ों, बराबरवालों और छोटों के लिए सम्बोधन अलग-अलग होते हैं। बड़ों में स्त्री-पुरुष के लिए एक ही किन्तु बराबरवालों और छोटों के लिए स्त्री और पुरुष के लिए भी अलग-अलग सम्बोधन होते हैं।

१. बड़ों के लिए—पुरुष स्त्री दोनों के लिए—दुबमेगा—बैठिये

२. बराबरवालों के लिए—पुरुष के लिए—दुबमेहो

दुबमे-हले

स्त्री के लिए—दुबमेगो

३. छोटों के लिए—पुरुष—दुबमेया
स्त्री— देबमेना

१०. श्रोता को अलग करके बोलने में सर्वनाम का रूप पृथक् और उसे सम्मिलित करके बोलने में रूप पृथक् होता है। जैसे—

द्विवचन—श्रोता को छोड़कर—अलिं सेनो: तना (हम दोनों जाते हैं)
श्रोता को सम्मिलित करके—अलं सेनो: तना। हम दोनों जाते हैं।

बहुवचन—श्रोता को छोड़कर—अले सेनो: तना
श्रोता को सम्मिलित करके—अबु: सेनो तना

मुण्डा में खतरनाक या अशुभ चीजों के लिए कभी-कभी दूसरा नाम बोला जाताहै। जैसे—जंगल में यदि कोई हाथी मौजूद हो तो उसे 'हती' के बदले 'मरंहोड़ो' बोलते हैं।

चित्रात्मक, गुणात्मक और अनुकरणात्मक शब्दों की मुण्डा-भाषा में भरमार है, जो इनकी अभिव्यक्तियों को सरल, सुबोध और प्रभावशाली बना देते हैं।

साहित्य—मुण्डा भाषा में लिखित साहित्य बहुत कम है। इधर मिशनरियों के प्रयत्न से कुछ रचना हो रही है। आर० सी० मिशन की ओर से मुण्डा भाषा का एक व्याकरण बनवाया गया है। बहुत-सी कमियों के होते हुए भी वह प्रयत्न सराहनीय है। आर० सी० मिशनवालों ने ही० मुण्डारिका-इन्साइक्लोपिडिया का प्रकाशन कराया है, जो एक बहुत बड़ा काम है।

श्री डब्ल्यू जी० आर्चर ने १६४१ मुण्डा-गीतों का एक संग्रह किया है, जिसकी चर्चा—'गीत-संग्रह के प्रयत्न' शीर्षक के अन्तर्गत की जायगी। उसमें बहुत से गीत खण्डित और अधूरे हैं, फिर भी यह महान् कार्य है। मौखिक परम्परा के कोष से हजारों गीतों को एकत्र कर लेना बहुत बड़ी बात है।

मुण्डा भाषा में ईसाइयों की धर्मपुस्तक 'बाइबिल' का अनुवाद किया गया है, जिससे मिशनरियों को धर्मप्रचार में काफी सफलता मिली है। मिशनरियों ने नये राग और नये लय में बहुत से धार्मिक और बाईबिलकल भजन मुण्डा भाषा में तैयार कराये हैं।

१६३६-३८ की मिनिष्टरी में प्रोफेसर हेवड द्वारा प्रौढ़-शिक्षा-समिति, बिहार (एडल्ट एडुकेशन बोर्ड) को बहुत से पैम्फलेट मुण्डा भाषा में दिये गये थे।

इधर हाल में लूथरन मिशन द्वारा 'जगर-साड़ा' नामक एक मासिक पत्रिका प्रकाशित हो रही थी, जिसके सम्पादक श्री एस० के० बागे थे।

सरकार की ओर से भी जंगल-कानून आदि की एक-आध पुस्तिकाएँ प्रकाशित कराई गई हैं। बिहार-सरकार के आदिमजाति-कल्याण-विभाग की ओर से विभिन्न आदिम-जातियों के लिए सांस्कृतियाँ-समितिक (कल्याण-बोर्ड्स) बनाई गई हैं, जिनका उद्देश्य उनके लोक-गीतों, लोक-कथाओं, रस्म-रिवाजों, कला, साहित्य, संस्कृति आदि का संग्रह, शोध तथा प्रकाशन है। कुछ संग्रह हुए भी हैं; किन्तु उनके प्रकाशन की प्रतीक्षा की जा रही है।

समाज-शिक्षा-बोर्ड की ओर से भी आदिम-जातियों के लोक-साहित्य के प्रकाशन तथा उनकी भाषाओं में बाल-साहित्य के निर्माण कराने का विचार किया जा रहा है। क्या ये योजनाएँ कार्यरूप में भी परिणत होंगी ?

संग्रह की आवश्यकता

सचमुच मुण्डा-भाषा के मौखिक परम्परा के कोष में पड़े हुए सारे साहित्य के संग्रह और प्रकाशन की बड़ी आवश्यकता है। लोक-वार्त्ताएँ जन-जीवन के वास्तविक रूप को प्रकट करनेवाली होती हैं। अभिजात साहित्य के समान चमक-दमक नहीं होने पर भी जीवन-शक्ति उसी में अधिक होती है। उसके द्वारा जन-जीवन का सच्चा रूप प्रकट होता है। इसलिए, आज सारे संसार में लोक-साहित्य और लोक-वार्त्ताओं की ओर लोगों का ध्यान बड़ी तेजी से जा रहा है। और, उनके अध्ययन, प्रकाशन और उनके द्वारा निकाले हुए निष्कर्षों के माध्यम से लोक-जीवन के पुनर्निर्माण का काफी प्रयत्न किया जा रहा है।

किन्तु, आदिवासियों में जहाँ कोई विशिष्ट या अभिजात-वर्ग नहीं है, वहाँ तो लोक-वार्त्ताओं का और भी महत्त्व है। उनके यहाँ तो जो कुछ है, मौखिक है। और, उसीमें उनकी सारी अभिव्यक्तियाँ बिखरी हैं। ऐसी दशा में इनकी ओर ध्यान देना तो और भी आवश्यक है। इनके गीतों, कहानियों, लोकोक्तियों, पहेलियों, सामाजिक और धार्मिक कृत्यों और अनुष्ठानों आदि सभी बातों के संग्रह की आवश्यकता है। इनके संसार में पाये जानेवाले पशु-पक्षी, पेड़-पौधे, वनस्पतियाँ इत्यादि सभी के शब्दों का संग्रह होना चाहिए। इससे इनके जीवन के विभिन्न पक्षों पर प्रकाश पड़ेगा। इससे पता चलेगा कि इनके जीवन का आकाश कितना विस्तृत है। जगत्, जीवन और प्रकृति से इनका क्या सम्बन्ध है। इनकी कहानियों और वार्त्ताओं से पता चलेगा कि उनमें इनका क्या विश्वास है तथा किन विश्वासों, आस्थाओं तथा मान्यताओं पर ये अपना जीवन बिताते जा रहे हैं। इनके गीतों से पता चलेगा कि कौन-सी प्रेरणाएँ इनके प्राणों को जीवन की धारा में बहाती आ रही हैं। और सब कुछ जान लेने पर पता चलेगा कि इनके विकास की इमारत किस धरती पर, किस आधारशिला पर और कौन-से उपादानों से खड़ी की जाय ?

इसी प्रकार 'मुण्डा' में तथा इस प्रकार की सभी भाषाओं में इन जातियों के लिए सरल साहित्य के निर्माण की आवश्यकता है। समाज को शिक्षित करने के लिए जीवन-सम्बन्धी सारा साहित्य जन-भाषाओं में ही रचा जाना चाहिए। कृषि, जंगल, सहयोग-समिति, ग्राम-पंचायत, आदमी और जानवर की बीमारी, कथा-कहानी आदि के बारे में मुण्डा भाषा में छोटी-छोटी पुस्तिकाओं का प्रकाशन नितान्त आवश्यक है।

इसी सिलसिले में एक महत्त्वपूर्ण प्रश्न बच्चों की शिक्षा का और उनके लिए पाठ्य पुस्तकों का है। आज सारे संसार के शिक्षा-शास्त्री यह स्वीकार कर रहे हैं कि छोटे बच्चों की शिक्षा उनकी मातृभाषा में ही होनी चाहिए। यदि शिक्षा को अनिवार्य बनाना है और उसकी किरणों को जंगल, पहाड़, मैदान और रेगिस्तान के जन-जन तक पहुँचाना है तो इसके अतिरिक्त और कोई उपाय नहीं है। बच्चे प्रारम्भिक ज्ञान की बातों को माँ की गोद में सीखी हुई तुतली बोली में जिस सरलता से सीख सकते हैं, वैसी किसी साहित्यिक भाषा में नहीं। अन्य साहित्यिक भाषा में तो उन्हें विषय और भाषा दोनों का दुहरा भार ढोना पड़ता है। निश्चय ही देश के प्रत्येक बच्चे के लिए राष्ट्र-भाषा की शिक्षा भी आवश्यक है और उन्हें माध्यमिक तथा उच्च शिक्षा के साथ राष्ट्र-भाषा भी सिखाई जानी चाहिए। किन्तु, प्रारम्भिक वर्गों में तो उन्हें

अपनी मातृभाषा में ही शिक्षा मिलनी चाहिए। कुछ आगे बढ़ने पर उन्हें राष्ट्र-भाषा भी सिखाई जाय तथा और आगे जाने पर वही सारी शिक्षा का माध्यम बना दी जाय। इसलिए आवश्यक है कि मुण्डा भाषा में बाल-साहित्य की रचना हो। इतिहास, भूगोल, समाजशास्त्र, स्वास्थ्य, सामान्य-विज्ञान, गणित, किस्से-कहानियों, रामायण, महाभारत की कहानियों, देश-प्रेम, सच्चरित्रता और नैतिकता की कहानियों आदि की मुण्डा भाषा में रचना होनी चाहिए और इस विषय में मुण्डा नवयुवकों को आगे आना चाहिए।

एक प्रश्न शेष रह जाता है कि मुण्डा साहित्य की लिपि क्या हो? यह प्रश्न सभी आदिम भाषाओं के सम्बन्ध में है। आदिम भाषाओं के पास कोई लिपि नहीं और उनका कोई लिखित साहित्य नहीं है। यदि उनकी कोई लिपि होती तब तो यह प्रश्न ही नहीं उठता। लेकिन जैसी परिस्थिति है यह स्पष्ट बात है कि उनका सारा साहित्य राष्ट्रलिपि या उनके क्षेत्र की प्रान्तीय लिपियों में लिखा जाय। लेकिन, कुछ लोग सारी बातों की तरह इसमें भी झमेला खड़ा करते रहे हैं। कुछ लोग नागरी लिपि से चिढ़ते हैं। और, इन भाषाओं के लिए रोमन-लिपि का सुझाव पेश करते हैं। अन्य आदिम जातियों की तरह ही मुण्डा लोगों को हिन्दी में अपनी सारी शिक्षा प्राप्त करनी है और राज्य के सारे कार्यों से जो सम्बन्ध स्थापित करना है वह राष्ट्र-भाषा और राष्ट्र-लिपि के द्वारा ही करना है। यह कितनी उपयोगी बात होगी कि वे बाल-वर्गों में मुण्डा भाषा में साहित्य पढ़ते हुए उस नागरीलिपि को भी सीखते रहें, जिसके द्वारा आगे उन्हें बहुत दूर तक शिक्षा प्राप्त करनी है। जो लिपि-विहीन जातियाँ नागरी के अतिरिक्त अन्य—जैसे बँगला, गुजराती, तमिल, तेलुगु आदि लिपियों के क्षेत्र में रहती हैं वे उन्हीं लिपियों में अपने साहित्य को लिपिबद्ध करें।

आदिवासी भाषाएँ भारत के उसी जलवायु में उच्चरित होती हैं, जिस जलवायु ने भारतीय उच्चारणों के अनुकूल वर्णमाला और स्वर-संकेतों की रचना की है। यद्यपि मुण्डा या अन्य भाषाओं के लिपिबद्ध नहीं होने से यह परीक्षा नहीं हो पायी है कि नागरी वर्ण-माला कहाँ तक उनके लिए उपयुक्त है; (हाँ, संथाली की कुछ पुस्तकें नागरी में प्रकाशित की गई हैं और उनके अच्छे नतीजे निकले हैं।) फिर भी यह निश्चित है कि नागरी लिपि हर प्रकार से उन उच्चारणों को लिखने के लिए उपयुक्त होगी। नागरी लिपियों की वैज्ञानिकता सारे संसार ने स्वीकार की है। संसार में एक मात्र यही लिपि है, जिसमें कोई भी भाषा यथा उच्चारण लिखी जा सकती है और फिर वैसी ही पढ़ ली जा सकती है। वैदिक साहित्य से बढ़कर 'स्वराघात' संसार में और कहीं नहीं मिलेगा। मनुष्य के उच्चारण-अवयव जितनी कलाबाजी दिखा सकते हैं नागरी वर्णमाला सबसे परिचित है और मुण्डा भाषा तो भारत भूमि की ही बेटी है। हिन्दी ध्वनियों ने जिन आभूषणों को छोड़ दिया वे कोष में सुरक्षित रखे गये हैं। उसी की बहन मुण्डारी यदि चाहे तो उनका सहर्ष उपयोग कर सकती है। मुण्डारी के उच्चारण में कहीं-कहीं विशेषता है। नागरी वर्णमाला में उसके लिए ह्रस्व-दीर्घ तथा प्लुत के संकेत निश्चित कर लिये जा सकते हैं। मुण्डारी में 'ए' और 'ओ' दीर्घ 'ए' और 'ओ' भी होते हैं। उनके लिए संकेत निश्चित करना कोई कठिन काम नहीं है। इस प्रकार हम देखते हैं कि मुण्डा भाषा के लिए नागरीलिपि हर प्रकार से उपयुक्त है। और इसी में 'मुण्डा' का सारा साहित्य लिपिबद्ध होना चाहिए।

मुण्डा भाषा और साहित्य भारतीय-संस्कृति के महान् कोष की एक अमूल्य पेटिका है। नवीन जीवन और नवीन जागरण के लिए प्रयत्नशील इस प्राणमयी जाति की अमर भारती की रक्षा होनी चाहिए और उसे फूलने-फलने का अवसर दिया जाना चाहिए।

गीत-संग्रह के प्रयत्न

मुण्डाओं की सभी प्रकार की वार्त्ताओं में स्वभावत: ही गीतों की संख्या सबसे अधिक है, जो मौखिक परम्परा में पता नहीं, कब से चले आ रहे हैं। किसी-किसी मुण्डा युवक को सैकड़ों गीत याद हैं, और ऐसा कोई नहीं होगा जो थोड़े-बहुत गीत नहीं जानता हो। फिल्मी गीतों के बड़े-बड़े शौकीनों और कालेजों के प्रतिभाशाली स्नातकों से भी अधिक गीतों को इनके द्वारा याद रखा जाना आश्चर्य की बात है।

किन्तु, गीतों के विषय में स्मृति के समान ही विस्मृति की भी परम्परा है। मुण्डा अपने गीतों को किसी पाठशाला में नहीं सीखते। नृत्य के अखाड़ों के मस्त वातावरण में ही नये-नये गीत सीखे जाते हैं। कभी-कभी अखाड़ों में विभिन्न गाँवों के नवयुवक सम्मिलित होते हैं। और किसी के द्वारा यदि कोई नया गीत गाया जाता है तो दूसरे नौजवान उसे तुरन्त सीख लेते हैं। फिर मस्ती तथा नशे के वातावरण में वहाँ से अलग होने पर गीत के कुछ अंशों को भूल भी जाते हैं। किन्तु, इसकी उनको कोई चिन्ता नहीं।

आप यदि मुण्डा युवक और मुण्डा गीतों की प्रकृति को समझ जायँगे तो पता चल जायगा कि उन टूटी हुई कड़ियों को फिर से जोड़ लेना उनके लिए कितनी आसान बात है। एक तो यह जाति ही कवितामय है, प्रत्येक व्यक्ति भावुक और स्वर-पूर्ण है; दूसरे उनकी काव्यकला इतनी सरल और सुपरिचित है जिसके संस्कार प्रत्येक व्यक्ति पर पड़े हुए हैं। ऐसी दशा में किसी नये गीत की सम्पूर्ण रूप-रेखा की कल्पना भले ही प्रत्येक व्यक्ति न कर सके; किन्तु कुछ भूली हुई पंक्तियों को मिला लेना थोड़ी-सी भी प्रतिभावाले गायकों के लिए कठिन नहीं होता।

इस प्रकार सारे गीत कुछ न्यूनाधिक रूपान्तर के साथ मुण्डा के कंठ में बिखरे हुए हैं। कठिनाई से एक गीत भी ऐसा नहीं मिलेगा जो अगर तीन-चार जगहों से लिया जाय तो उसके रूप में कहीं न कहीं अन्तर न हो। गीत वही है, स्वर और लय वही है; किन्तु कहीं-कहीं दो-चार पंक्तियाँ बदल गई हैं।

मुण्डा गीत साधारणत: तीन पदों के होते हैं[1]। तीन पदों में से कभी-कभी दो और कभी-कभी एक पद पूरे के पूरे बदल जाते हैं। ऐसे परिवर्तन बहुधा अर्थों में भी मोड़ पैदा कर देते हैं।

एक-आध पंक्तियाँ इतनी लोकप्रिय हो गई हैं, जिनका कई गीतों में प्रयोग हुआ है और वे श्रोता को कभी-कभी भ्रम में डाल देती हैं।

संग्रहकर्त्ता की समस्याओं को समझने के लिए मुण्डा-गीतों की इस प्रकृति को जान लेना आवश्यक है। वैसे भी मुण्डा-गीतों की संख्या बहुत अधिक है; किन्तु इस तथ्य को जान लेना चाहिए कि इस रूपान्तरित वेश में उनकी संख्या और भी अधिक हो गई है।

---

१. देखिए—'छंद-विधान' शीर्षक।

इनके संग्रह का प्रयत्न, जहाँ तक पता है, सबसे पहले फादर-हाफ मन ने किया। उन्होंने २०० गीतों का संग्रह किया था और 'दी मेमोरीज आफ दी एशियाटिक सोसाइटी आफ बंगाल' में मुण्डा-गीतों की विशेषताओं पर प्रकाश भी डाला था।

श्री शरत्चन्द्र राय की पुस्तक 'दी मुण्डाज एड देयर कण्ट्री' में यों तो प्रमाण और उद्धरण के लिए जगह-जगह बहुत-से गीत आये हैं; किन्तु गीतों की व्याख्या के लिए लगभग २०-२२ गीत प्रस्तुत किये हैं। विद्वान् लेखक ने उनका अँगरेजी छन्दों में अनुवाद किया है जहाँ अधिकांश मुण्डागीतों का कायाकल्प हो गया है। उनमें मुंडा-गीतों के सरल सौन्दर्य से अधिक शरत् बाबू की विद्वत्ता प्रकट होती है। उन अनुवादों में शरत् बाबू ने अपनी ओर से नये भाव, नये प्रयोग और नये अर्थ जोड़े हैं और अँगरेजी के बड़े-बड़े कवियों—फ्रांसिस सैम्पेल, जेम्स रसल लावेल, टेनिसन और वर्ड्सवर्थ आदि की कविता से मुण्डागीतों की भावभूमि की तुलना की है।

विद्वान् लेखक ने उनके विश्लेषण का भी प्रयत्न किया है और जबरदस्ती खींच-तान कर उनमें ऐसे भोंड़े और बेहूदे[1] अर्थ पैदा किए हैं, जिनका उन गीतों में कहीं भी अस्तित्व नहीं है।

व्याख्या के लिए देखिए—इसी पुस्तक का प्रथम अध्याय (अध्ययन-प्रणाली)।

शरत् बाबू ने किस भावना से और कैसा अर्थ निकाला है इसकी बानगी एक गीत में देखिए—

वे गीत का प्रसंग उपस्थित कर रहे हैं।

अनुवाद—जहाँ मुण्डा अपने सगे-सम्बन्धियों से मिलने पर उदार और संतुष्ट होता है वहाँ अपने उत्पीड़कों और शत्रुओं को देखकर अकथनीय घृणा और नफरत से आगबबूला हो जाता है। उसके गाँव में आनेवाले हिन्दू और मुसलमान व्यापारिक और महाजन तथा बाहरी ठीकेदार, जागीरदार या नीलामदार मुण्डाओं की आँख में अत्यधिक खटकनेवाले हैं। व्यापारी और साहू-महाजन अपने स्वास्थ्य के लिए उनका सिर मूड़ा करते हैं और बाहरी 'दिकू' उनको अपने गाँव की जमीन की मिलकियत से पदच्युत करके उन्हें केवल लकड़हारा और पनभरा बना छोड़ते हैं। जैसा कि हम देख चुके हैं मुण्डा-गीतकार घृणापूर्वक उनकी तुलना खून चूसनेवाले बाज', 'लोभी गृद्ध', 'गोपशकुनी कौवे', 'हठी जिद्दी उल्लू' और छद्मवेश वाले मोर से करते हैं।

मूल— नाकु नाकुजा दारोमदा[2]
कुड़िद को लपालुडिया गा
नाकु वाकुजा आगामारी को
गेयोन गेयोना।
उदूबाकोपे जोजो को जुम्बलाए

१. श्री शरत् राय—मुंडाज एण्ड देयर कण्ट्री—२११।
२. श्री शरत् राय—मुण्डाज एण्ड देयर कण्ट्री—२३६।

उदूबा कोपेगा ।
चुण्डूलाकोपे उली को अम्बरांए
चुण्डूलाकोपेगा ।
काको सुकु जान
जो जो को जुम्बलाए
काको सुकुजान गो ।
उली को अम्बरांए

अनुवाद—

These kites have hither wing'd Their way
A thirst for water clear,
The greedy geese with graceful swing,
Thus wend their way up hear
Oh ! take them where yon tam'find tope
Doth stand—do take them theer;
Point out to them you mango grove,
O let them there repair
The tam'rind tope they do not like
It does not please them so
Yon mango grove these geese mislike,
Ill-pleas'd are they, I trow.

मूल का अर्थ—देखो, देखो, पानी का स्वागत करनेवाले चील पंख हिला रहे हैं। देखो देखो, घाँटों के दल उड़े जा रहे हैं। इमली का झुंड बता दो (जहाँ जाकर बैठें)। आम का बाग दिखा दो (जहाँ जाकर उतरें)। उन्होंने पसन्द नहीं किया। इमली का झुंड उन्होंने पसन्द नहीं किया।

अनुवाद का अर्थ—ये चील यहाँ पर अपने रास्ते से उड़कर आये हैं। साफ है कि पानी के लिए प्यासे हैं। ये लोभी हंस सुन्दर उड़ान के साथ ऊपर चक्कर काट रहे हैं। उन्हें वहाँ पर जहाँ इमली का पेड़ खड़ा है, ले जाओ वहाँ उन्हें पहुँचा दो। उन्हें उस अमराई को बता दो जहाँ वे आश्रय प्राप्त करें। इमली का सिरा उन्हें पसन्द नहीं आया, वह उन्हें प्रसन्न नहीं कर सका। उस अमराई को इन हंसों ने नापसन्द किया। मुझे विश्वास है कि वे अप्रसन्न हैं।

वास्तविकता यह है कि इस गीत का शरत् बाबू की व्याख्या से कोई सम्बन्ध नहीं है। यह एक साधारण प्रकृति का वर्णन मात्र है और है, उन पक्षियों के स्वभाव का



मुण्डा-लड़कियाँ—जदुर नृत्य की भावमयी मुद्रा में



मुण्डा-युवक—जदुर-नृत्य की प्रसन्न मुद्रा में

चित्रण ! चील के बारे में मुण्डाओं की कोई बुरी भावना नहीं और घाँटो तो सारी मानवजाति की तरह उन्हें भी प्रसन्न करनेवाले पक्षी हैं।

पहली पंक्ति में 'दोरोम-दा' का अर्थ है पानी की अगवानी करनेवाले। चील का उड़ना पानी आने की सूचना समझा जाता है। लेकिन, श्री राय लिखते हैं—"साफ है कि वे पानी के लिए प्यासे हैं!" आगे की पंक्ति में सीधे घाँटों पक्षियों की सीधी उड़ान का वर्णन है; किन्तु श्रीराय घाँटो को हंस बनाते हैं, उनके साथ लोभी का विशेषण लगाते हैं और 'चक्कर काटने' की क्रिया प्रदान करते हैं। मजा यह कि 'हंस' मुण्डाओं की किसी नफरत का पक्षी नहीं है।

इस संकेतों के बाद पाठकों को अपना निर्णय करने में कठिनाई नहीं होगी।

कुछ पढ़े-लिखे व्यक्तियों ने विशेषकर बुदू बाबू के गीतों और कुछ दूसरे गीतों को अपने व्यक्तिगत उद्देश्यों की पूर्त्ति के लिए संगृहीत कर रखा है।

सबसे बड़ा प्रयत्न डब्ल्यू० जी० आर्चर का है। उन्होंने १९४३ में मुण्डा भाषा के १६४१ गीतों का संग्रह और प्रकाशन कराया। कलेवर के हिसाब से निस्सन्देह वह मोटी पुस्तक है और उन बहुसंख्यक बिखरे हुए गीतों को बचाकर लिख रखने का प्रयत्न सराहनीय भी है; किन्तु इसके अतिरिक्त और किसी उद्देश्य की पूर्त्ति उससे नहीं होती। उस विद्वान् और प्रतिभाशाली लेखक के लिए दो पृष्ठ की छोटी-सी भूमिका पर सन्तोष कर लेना। उचित प्रतीत नहीं होता।

अधिकांश गीत टूटे-फूटे हैं। बहुधा तीन पदों के ही गीतों की रचना करनेवाले मुण्डाओं के गीतों के एक या डेढ़ पद हरप्पा की खुदाई में मिले हुए ठीकरों के संग्रह के समान जान पड़ते हैं। निस्सन्देह यह बड़ा काम हुआ; किन्तु यदि इतना महत्त्वपूर्ण काम केवल उन कर्मचारियों के भरोसे ही नहीं छोड़ दिया गया होता तो, सम्भवतः कुछ और अच्छे परिणाम सामने आये होते!

इन प्रयत्नों के सिवा मुण्डा-गीतों पर पत्र-पत्रिकाओं में कुछ छिटफुट लेख आदि निकलते रहे हैं जो कभी तो केवल गीतों की बानगी पर ही सन्तोष करते थे और कभी-कभी थोड़ा-बहुत विश्लेषण भी प्रस्तुत कर दिया करते थे।

मुण्डाओं की संगीत-प्रियता के रहस्य

मुण्डा जाति बहादुर परिश्रमी और स्वतंत्रताप्रेमी तो है ही। साथ ही बहुत-सी आदिम-जातियों की तरह इनके जीवन में हम कला, सुरुचि और सौन्दर्य का भाव ओत-प्रोत पाते हैं। यह कला-प्रियता और मस्ती आदिवासियों को प्राकृतिक जीवन की देन है। इसी वरदान को पाकर वे जातियाँ अपने को दुखों-अभावों की प्रखर-धारा में बहाती और संघर्ष की भीषण ज्वाला में जलने से बचाती रही हैं। यह मस्ती वह काली घटा है जिसने इनके विपत्तियों से झुलसे हुए मन को सींचा है और अपने प्यार की थपकी से इनके थके मन को शान्ति की गोद में सुलाया है। मुण्डाओं के सौन्दर्य-बोध और संगीत-प्रियता का रहस्य समझने के लिए उनके प्राकृतिक जीवन का तात्पर्य समझना आवश्यक है।

प्रकृति की रंगस्थली—सबसे पहली बात यह है कि ये प्रकृति की मनोहर रंगस्थली में निवास करते हैं। राँची जिले के जिस अंचल में ये निवास करते हैं वह पहाड़ों और

जंगलों से भरा हुआ है। इसी उन्मुक्त रंगीन और रसमय वातावरण में उनका जीवन व्यतीत होता है। हरियाली और फूलों से भरे हुए जंगल, रहस्यमय गुफाओं से भरे हुए पहाड़, कलकल गाते हुए निर्भर, प्राणों में उन्माद भरनेवाली हवाएँ और मधुरस्वरों से जंगल को गुंजित रखनेवाले पंछी, यही मनोहर चित्रसारी मुण्डाओं की दुनिया है।

किसान हल जोतने गया है और उसकी आँखों के सामने घाटी फैलती जा रही है। एक लड़की धान की निकाई कर रही है और उधर पहाड़ों की ओट में मेघ की परियाँ अपना शृंगार कर रही हैं। एक छोकरा गाय चराने गया है और वहाँ सालू की मंजरियाँ अपने रूप और गन्ध से उसके मन को बेचैन कर देती हैं, और एक लड़की को माँ ने पत्तियाँ तोड़ लाने के लिए जंगल में भेजा है और वहाँ कोयल कूक-कूक कर उसके प्राणों में उन्माद भर देती है। इस आफत से कोई अपने को कैसे बचावे? आदिवासी अपनी सारी इन्द्रियों से प्रकृति के इस मधुर सौन्दर्य का उपभोग करते हैं और उनकी चेतना इस अमर तृप्ति से सदा अभिभूत रहती है। इसीलिए वे सौन्दर्य और संगीत के प्रेमी हैं।

एकान्त और सूनापन—रूप और छवि के ये मनोहर दृश्य मुण्डाओं के सदा के संगी हैं। इन दृश्यों के साथ इनका आत्मीय भाव स्थापित हो चुका है। जंगल के एकान्त और सूनापन में भी ये अपने को कभी अकेला नहीं पाते। उनके मन की लहरें कहीं भी किनारा पा जाती हैं। चाहे सुख हो या दुख, किसी भी अवस्था में ये मनोहर दृश्य आकाश से वह शून्यता नहीं बरसने देते जो जीवन को नीरस और निस्पन्द कर देनेवाला विधाता का सबसे निष्ठुर अभिशाप है। सुख और दुख भाव और अभाव, क्रीड़ा और पीड़ा हर परिस्थिति इनके मन में हिलोर उठाती है और अपनी उँगलियों से छूकर इनके हृदय के तारों को झंकृत करती रहती है।

सच पूछिए तो जो सूनापन जीवन का अभिशाप समझा जाता है वह मुण्डाओं के लिए वरदान बन जाता है। उस एकान्त में दुश्चिन्ताओं के छिद्र उनके प्राणों के पात्र को जितना रिक्त करते हैं, छटाएँ उससे अधिक भर देती हैं। जंगल के वातावरण का सूना एकान्त मुण्डाओं के लिए भावों का उद्दीपक बन जाता है। जैसे एकान्त की सूनी राह में राही के लिए गीत ही सहारा बनते हैं वैसे ही एकान्त मुण्डा के कंठों में स्वर का सृजन करता है। निर्भर का किनारा, कोई सूनी चट्टान, एकान्त खेत, सुनसान रास्ता ये ऐसे वातावरण प्रस्तुत कर देते हैं, जिनसे गीतों का फूट पड़ना स्वाभाविक है।

स्वतंत्रता—इनके कला और संगीत-प्रेम का तीसरा कारण इनकी स्वतंत्रता है। ये अपने मन की प्रत्येक लहर के साथ बहने के लिए स्वतंत्र हैं। अपने अन्तर्लोक में उठनेवाली किसी भी लहर को वे दम घोंटकर मार नहीं डालते। वे सुखी होनेपर जी खोलकर हँसते हैं और दुखी होने पर सारा भार हलका होने तक रोते हैं। अपने ही बनाये माया-जाल में इन्होंने अपने पंखों को फाँस नहीं रखा। और अपने पैरों में अपनी ही बनाई हुई गुलामी की बेड़ी नहीं डाल ली है। आज की सभ्यता का 'सभ्य' मनुष्य इस विषय में कितना लाचार है। 'ड्यूटी' और 'रूटीन' की जड़ मशीन का गुलाम होने के कारण उसे न तो किसी को प्यार करने का अवकाश है न किसी की स्मृतियों से मन बहलाने की फ़ुरसत है। वह न जी खोलकर हँस सकता है, न भारी से भारी विपत्ति में आँसू बहा सकता है; किन्तु इसका यह अर्थ नहीं कि वह जितेन्द्रिय हो गया है और उसे वह आत्म-

ज्ञान प्राप्त हो गया है, जिसे पाकर मनुष्य सुख-दुख की अनुभूतियों से परे हो जाता है। इसका कारण तो सभ्यता की जड़ता और गुलामी है; किन्तु प्रकृति के ये पुत्र मानव प्रकृति की इन आवश्यकताओं के लिए उन्मुक्त हैं। इसी स्वतंत्रता के कारण ये मनुष्य के अन्तर्लोक के सौन्दर्य को पहचानते हैं, जी खोलकर उसका उपभोग करते हैं और इस अक्षय निधि को उन्मुक्त हाथों लुटाते हैं।

परिश्रम—इनकी मस्ती का चौथा कारण इनका सरल और सच्चा परिश्रम है। इनके कठोर परिश्रम में कोई छल-प्रपंच नहीं, वरन् ईमानदारी है। वह परिश्रम जीवन की स्वाभाविक आवश्यकताओं की पूर्त्ति के लिए बड़े स्वाभाविक ढंग से किया जाता है। उनके परिश्रम में किसी को ठगने की धूर्त्तता नहीं, किसी के शोषण की दुर्वृत्ति नहीं और किसी का सर्वस्व हरण कर लेने की स्पृहा नहीं है। उनका परिश्रम सरल हृदय का वह उद्वेग है, जो प्रकृति की निर्झरी में अपनी अंजलि से दो चुल्लू जल पीकर तृप्त हो जाता है। वहाँ परिग्रह और अपहरण की वासना लेकर नरपशु परेशान नहीं रहता। उनका परिश्रम हवा में मिलकर उसे विषाक्त कर देनेवाला जहरीला और काला धुँआ नहीं, उसमें मिलकर उसे शीतल कर देनेवाला पवित्र स्वेदकण है। उस शीतल वायु की लहरें उन्हें भी छूती हैं और उनके समाज के दूसरे व्यक्तियों के प्राणों को भी छूकर आनन्द और मस्ती का एक वातावरण बनाती हैं। अवकाश और सद्भाव के यही स्रोत जंगल की ठंडी हवाओं में मिलकर समाज के लिए, गीत और मस्ती की लहर बन जाते हैं।

विकास का शैशव—पाँचवीं बात यह है कि यह जाति विकास की शैशवावस्था में रही है। और एक व्यक्ति तथा समाज के विकास की प्रक्रिया एक ही प्रकार की है। जिस प्रकार एक व्यक्ति की प्रौढ़ावस्था में जब उसके ज्ञान और अनुभव परिपक्व हो जाते हैं तब भावनाओं की लहर सूखने लगती है और कल्पना के पंख झड़ जाते हैं; किन्तु बचपन और जवानी ऐसी अवस्थाएँ हैं जब उसके भाव प्रबल होते हैं, मन के आकाश में सतरंगी घटाएँ घिरती हैं और उमंगों की धारा में स्वप्नों के फूल खिलते हैं। यही दशा जातियों के विकास की भी है।

सभ्यता के विकास के साथ मनुष्य की बुद्धि क्रमशः विकसित हुई है और उसकी अभिव्यक्ति अधिक रंगीली, चिंतनपूर्ण, और आडम्बरपूर्ण बनती गयी है; किन्तु मनुष्य की भावना की दशा इसके प्रतिकूल है। जब मनुष्य की सभ्यता का पूरा विकास नहीं हुआ था तब उसका हृदय अधिक समवेदन-शील था और उसमें स्पन्दन अधिक था। जीवन सुख-दुख के पालने पर उसे अधिक झुलाता, जवानी उसके हृदयाकाश में स्वप्नों के अधिक फूल खिलाती और प्रकृति अपने सौन्दर्य की किरणों से उसके मन को अधिक रंगती थी। बाहर का रूप मानव के हृदय में आज से अधिक रागों का सृजन करता और वे रागविह्वल स्वरों में फूट-फूटकर वायु की लहरों को आज से अधिक झंकृत किया करते थे।

आदिवासियों की प्रकृति को समझने के लिए मानव-विकास की उस प्रक्रिया को समझना आवश्यक है। सभी आदिम जातियों की तरह मुण्डा जाति भी ज्ञान विज्ञान की प्रारंभिक अवस्था में रही है जिससे उसके जीवन की आवश्यकताएँ सरल और सीमित बनी रहीं। उसके कन्धे पर बड़े-बड़े उत्तरदायित्व नहीं आये और अपने प्रकृत-भावों से उसके

आदिम सम्बन्ध नहीं टूटे। अस्तु, स्वभावत: ही उसके हृदय में बचपन की अल्हड़ भावनाओं और जवानी की उमंगों की अठखेलियाँ होती रहीं। मुंडा जाति की क्रीड़ा और संगीतप्रियता का सबसे बड़ा रहस्य यही है।

मुण्डाओं की प्रकृत भावना, सरलता, सौन्दर्यप्रियता और स्वतंत्रता ने मिल-जुलकर उसके सारे जीवन को सुरुचिपूर्ण और कला-पूर्ण बना दिया है। अस्तु वे अपने साधन और सामर्थ्य की सीमा में जीवन को सुन्दर-से-सुन्दर बनाकर जीना पसन्द करते हैं और पूरी तन्मयता के साथ जीवन का उपभोग करते हैं।

उनकी संगीतप्रियता इसी सुरुचि और तन्मयता की स्वरित अभिव्यक्ति है। इसे हम उनके शेष जीवन से अलग करके नहीं देख सकते। उनका सारा जीवन ही संगीत-मय है। वह संगीत जब मौन होता है, तब भी उनके प्राणों की गत बजाता है। वह उनके कर्मों में सुरुचि और लगन भरता है, उनके जीवन की प्रत्येक साँस को अपनी सुरभि से संवारता है, और उनकी संतानों के लिए अनुराग बनकर उन्हें विह्वल बनाये रखता है। वह संगीत उनके मेलों और 'जतराओं' (यात्राओं) के लिए आतुर प्रतीक्षा बनकर उनके मन में उमंग भरता है, तन्मयता बनकर एक-एक अनुष्ठान को पूर्ण कराता है और वही संगीत ताल बनकर उनके नृत्यों की शिंजिनी बजाता है। और जब मुखर होता है तब आकाश में काली घटाएँ छा जाती हैं, वसन्त की ठंडी हवा में पत्तियों के पायल बज उठते हैं, वृक्षों की सूखी डालपर कलियाँ फूट पड़ती हैं और उसके स्वर की धारा में दुखों के पहाड़ डूब जाते हैं। मुण्डा का संगीत उसका जीवन-संगीत है और उसकी जीवन कला की डालपर खिला हुआ सबसे मनोहर फूल है।

आदिवासी के प्राणों में स्वर भरने में पर्वों ने भी योग दिया है। पर्व आदिवासी के जीवन के कर्म कोलाहल में रसमय क्षणों का नाम है। ये उसके जीवन के मरुस्थल में 'ओयसिस' की तरह होते हैं। आदिवासी बेचैन होकर पर्वों की प्रतीक्षा करते हैं और पर्व के आने पर अपने हृदय की सारी उमंग उसमें उड़ेल देते हैं। पर्व के अभिनन्दन में इनका रोम रोम गा उठता है।

मुण्डाओं के विह्वल संगीत के सारे रहस्य 'हड़िया' की महिमा बताये बिना अधूरे रह जायेंगे। 'हड़िया' इनका मादक पेय है जिसे वे प्रत्येक पर्व, आनन्द, और थकान के अवसर पर पीते हैं। कहा जाता है कि ये नशीले पदार्थ आदिवासियों के पिछड़ेपन के प्रधान कारण हैं। यह बात सच है। किन्तु, यह भी सच है कि इसी ने इनके महान् विपत्तियों से झुलसे हुए मन को सदा सींचा है, और जीवन के भीषण संघर्षों में इन्हें अपने प्यार की मादक थपकी से सुलाकर सान्त्वना दी है। कौन कह सकता है कि इसके अभाव में इन्होंने सभ्यता की दौड़ में अपने को आगे बढ़ाया होता या इतिहास से मिट जानेवाली अनेक जातियों की तरह ये भी मिट गये होते ?

आदिवासियों के पैरों में गति तथा कंठों में लय भरने में हड़िया का स्थान महत्त्वपूर्ण है। इसकी मादकता उस मस्ती को बढ़ाने में महत्त्वपूर्ण योग देती है, जिसके बिना मनुष्य जीवन भर की सारी चिन्ताओं को क्षणभर में भूलकर नाचने नहीं लग जाता। आदिवासियों के नृत्य और संगीत एक दूसरे के परिपूरक, प्रेरक और उद्दीपक होते हैं। यह विह्वलता की एक ही लहर का पगों और कंठों के बीच कलापूर्ण विभाजन है।

आदिवासियों की संगीतप्रियता में उनकी सामाजिक व्यवस्था का भी हाथ है। पुरुष और नारी की, जीवन में सहयोगिता और कर्मक्षेत्र में समानता भी उनके मन में आकर्षण अनुराग और मधुर भाव भरती रही है—जो गीतों के उद्दीपक बने हैं। नारी की स्वतंत्रता और पुरुष के साथ नृत्य स्वभावत: ही दोनों के मन के तारों में झंकार पैदा करनेवाले हैं। इस अनुराग की विह्वल पुकारों से मुण्डा गीत भरे पड़े हैं।

इस मस्ती और तन्मयता ने उनके जीवन की प्रत्येक सांस को ही कविता बना दिया है। जहाँ तक कि बकरी चराने से लेकर पत्ती तोड़ने तक सभी इनके गाने के विषय हैं।

गीतों के भेद—

मौसम के अनुसार मुण्डा-गीतों के बहुत से भेद हो गये हैं। और सब के लय ताल आदि अलग-अलग हैं। सभी गीत अपने ही मौसम-विशेष में गाये जाते हैं। एक मौसम का गीत दूसरे मौसम में गाया जाना वर्जित है और मुण्डा इस नियम का पालन बड़े अनुशासन के साथ करते हैं। मौसम के अनुसार ही उन गीतों से सम्बन्धित बाजों के ताल और नृत्य भी अलग-अलग हो गये हैं। गीतों के ये भेद निम्नलिखित हैं—१. जदुर, २. गेना, ३. ओर-जदुर, ४. करमा, ५. जरगा, ६ जापी, ७. जतरा, ८. शादी। और प्राय: प्रत्येक प्रकार का गीत किसी-न-किसी प्रमुख पर्व से सम्बन्धित है।

जदुर—मुण्डाओं का सबसे प्रमुख और प्राचीन गीत जदुर है, जो वसन्त गीत है। और इनका सबसे प्रमुख पर्व सरहुल है, जो वसन्तोत्सव है। इनके जीवन की चिर-सहचरी प्रकृति जब अपना अभिनव-शृंगार करती है और जब जंगलों में वसन्त की छटा छा जाती है तब ये भी प्रकृति के स्वर में स्वर मिलाकर गा उठते हैं। इनके मस्ती-भरे मन पर छाया हुआ सारा वातावरण ही पर्व बन जाता है। ये एक-एक फूल के पास जाकर उसकी निराली मुसकान का रहस्य पूछते हैं और पक्षियों के राग में अपने विह्वल मन की पुकार सुनते हैं। सरहुल वन-देवता के प्रति इनके कृतज्ञ हृदय का विनम्र अभिनन्दन है और इनके जदुर गीत प्रकृति की अर्चना में इनके विह्वल प्राणों का मधुर संकीर्त्तन है।

जब पलाश के फूलों और कुसुम की नयी कोपलों से सारा वन लाल हो जाता है और नये पल्लवों और फूलों से जंगल भर जाता है उस मोहक वातावरण में आप जाकर जदुर के गीत सुनिए। जैसे कोयल की मोटी बोली वसन्त के सरस वातावरण में रसीली और मीठी हो जाती है वैसे ही उस समय मुण्डा के स्वरों में भी एक दर्द भरी मधुर टेर समा जाती है। उसका हृदय आकुल आमंत्रण से विह्वल हो जाता है और वाणी करुण पुकार से भर जाती है। वन में छाये हुए रूप, रस, गन्ध और ध्वनि के मधुर वातावरण मुण्डा-प्राणों को मिलन की बेचैनी से भर देते हैं और विरह की व्यथा को और भी गहरी बना देते हैं। ऐसे वातावरण में दूर से सुनाई देनेवाले जदुर के छोटे-छोटे बोल ऐसे जान पड़ते हैं जैसे कोयल की दर्दभरी टेर रह-रहकर टूट-टूट जाती हो या बरसात की काली घटाओं के नीचे पपीहे की पी-पी की रटन थककर हार-हार जाती हो। एकान्त में गाये हुए

मुण्डाओं के इन 'जदुर गीतों' पर कविवर पन्त का यह कथन पूर्णरूप से चरितार्थ होता है—

वियोगी होगा पहला कवि,
आह से निकला होगा गान !
निकल कर आँखों से चुपचाप,
बही होगी कविता अनजान !

या प्रसिद्ध अँगरेज कवि शेली की यह उक्ति—

'Our sweetest songs are those that tell of saddest thought'

यदि वन में आपका मन लग सके तो आप अनुभव करेंगे कि इन सारे प्रकृति-पुत्रों, पक्षियों और मनुष्यों के स्वर एकान्त वातावरण में आपस में मिलकर और एक दूसरे के पूरक होकर इतने एकाकार हो जाते हैं जैसे वे एक ही अर्थ के विभिन्न शब्द हों, एक ही भाव के विभिन्न छंद हों, जैसे वे एक ही गीत के विभिन्न लय हों। दरअसल, फूलों से भरी हुई झाड़ियों में भौरों की गूँज का, वृक्षों की नयी कोंपलों में कोयल की कूक का और वसन्त की रंगीन छटाओं में मुण्डा की करुण पुकार का एक ही अर्थ है।

माघ में मनाये जानेवाले 'मागे' पर्व के बाद जदुर का मौसम प्रारम्भ होता है और वृक्षों की नयी कोपलों के साथ ही इस गीत की कलियाँ भी फूटने लगती हैं। और और फिर सरहुल मना लेने के बाद जदुर के भावमय गीत अगले वर्ष की प्रतीक्षा के लिए बन्द कर दिये जाते हैं।

इनके जदुर गीतों की संख्या सबसे अधिक है और मौसम के विस्तार भर में फैले होने पर भी इनका पर्व से अन्य सारे गीतों की अपेक्षा अधिक सम्बन्ध है।

गेना—गेना-गीत जदुर गीतों के ही पूरक हैं जो नृत्य की सुविधा के लिए बनाये गये हैं। बहुधा दो जदुर गीतों के बाद गेना गाया जाता है जो जदुर नृत्य की ताल को थोड़ी देर के लिए बदल देता है।

जदुर के कठिन आरोह-अवरोह के बाद गेना के सरल नृत्य में थोड़ा आराम मिलता है और वातावरण की एकरूपता में थोड़ा परिवर्त्तन आ जाता है, जो रात-रात भर चलनेवाले इन नृत्यों के लिए आवश्यक है। गेना-गीतों की संख्या जदुर-गीतों की अपेक्षा बहुत कम है और उनके आकार भी अपेक्षाकृत छोटे होते हैं। नृत्य की लहरों को लघुतर बनाने के लिऐ गेना गीतों की पंक्तियाँ भी छोटी छोटी रखी गई हैं।

ओर-जदुर—ये भी जदुर के पूरक हैं और जदुर के विशाल वृक्ष की बाहर निकली हुई टहनी के समान जान पड़ते हैं। इनके लय और छंद जदुर से कुछ भिन्न होते हैं, किन्तु गाने का समय, मौसम और उपयोग वही है।

करमा—जदुर के बाद सबसे प्रमुख स्थान करमा गीतों का है जो भाव, लय और लोक-प्रियता की दृष्टि से जदुर गीतों से भी आगे बढ़े हुए हैं। सरहुल की समाप्ति में से ही करमा गीतों का प्रारम्भ होता है। मुण्डा लोग सरहुल की अन्तिम सन्ध्या आने के पहले ही उसी दिन के धुँधले प्रभात में दो-चार करमा गीत गाकर करमा के महान् मौसम का स्वागत करते हैं। और फिर, इन गीतों का क्रम नित्य बदलते रहनेवाले वातावरण में अपना रूप बदलता हुआ आश्विन के अन्त तक चलता है। भादो की एकादशी को करमा-पर्व

मनाया जाता है और उस पर्व से भी सम्बन्धित बहुत-से गीत हैं; किन्तु दरअसल, करमागीत पर्व की सीमाओं में बंधे हुए नहीं हैं। अपने प्रकृत-रूप में वे एकान्त-संगीत हैं, जो गर्मी में वन-वृक्षों की शीतल-छाया में, असाढ़ की काली घटाओं में, बरसात के एकान्त खेतों में और भादों की सूनी राहों में समान रूप से गाये जाते हैं। वास्तव में बरसात के दृश्य इन पहाड़ी भागों में बड़े मोहक हो जाते हैं। पृथ्वी पर छायी हुई हरियाली, बादलों के गंगा-जल से धुले हुए जंगल, घास और झुरमुटों की चादर ओढ़े पहाड़, खेतों में कुलकुलाता हुआ पानी, रात की निस्तब्धता, झींगुरों की झनकार, पक्षियों की चहचह, धरती से आकाश तक के सारे दृश्य और क्षण-क्षण परिवर्त्तित प्रकृत के रूप बड़े प्रभावशाली होते हैं जो मुण्डाओं के मस्त-स्वभाव को छेड़े बिना नहीं रह सकते। यह तो संयोग कहिए कि बरसात का दिन गरीबी, परिश्रम और कार्य में व्यस्त रहने का दिन होता है नहीं तो प्रकृति की सारी रंगीनियाँ इनकी मस्ती से क्या आँखें मिला पातीं?

एकान्त के क्षणों में उन्हीं क्षणों के लिए बने होने के कारण करमा गीतों का प्रभाव बड़ा गहरा होता है। और उनके कम्पित स्वर तथा लय की लहरों का बड़ा मधुर-विकास हुआ है। सूनेपन की टेर उनके स्वरों को ऊँचा उठाती है और दर्द उनमें कम्पन पैदा करता है। वन के किसी एकान्त से खुलकर गाये हुए करमा गीत प्रकृति के चरणों में पुरुष की चिरन्तन पुकार के समान जान पड़ते हैं। मानो प्रणयातुर धरती, आकाश को अपने मिलन का विह्वल सन्देश सुना रही हो। करमा गीतों का अर्थ वही है जो दूर क्षितिज के ऊपर उठती हुई काली-घटाओं में बगुलों की पंक्ति का अर्थ है; जो ठंडी हवा के साथ खुली खिड़की से आकर बदन को सिहरा देनेवाली भाप की फुहारों का अर्थ है; जो असाढ़ के पहिले पानी को पाकर धरती से उठनेवाली सोंधी-सोंधी गन्ध का अर्थ है और जो सूनी रात के बेचैन कानों में दूर से आनेवाली बाँसुरी की करुण-पुकार का अर्थ है।

करमा-पर्व मुण्डाओं का बहुत पुराना पर्व नहीं है। इसे उन्होंने दूसरों से सीखा है। किन्तु, उसमें अपना रंग मिलाकर उसे और भी रसमय बना लिया है। अस्तु, पर्व के लिए भी बहुत से गीत बने हैं। करमा के अलग नृत्य हैं और बाजों के अलग लय-ताल हैं।

करमा-गीतों में कृष्ण-काव्य और रामायण की भी बहुत सी कथाएँ गाई जाती हैं। मुण्डा का कृष्ण-काव्य प्रीत-पला के नाम से और रामकथा रामायण के नाम से प्रसिद्ध हैं। ऐसे गीतों में पूर्णता है और भावों की अभिव्यंजना अधिक मार्मिक और कलापूर्ण है। ये शिक्षित गीतकारों द्वारा सिरजे हुए हैं। इन्हें 'बुदूबाबू' नामक एक पाँच-परगना[1] निवासी कवि ने बनाया है। इनमें चैतन्य महाप्रभु के कीर्त्तनों का प्रभाव, और बँगला गीतों की रसमयता है।

इन गीतों में जो 'लीरिक' (प्रगीत) हैं और जिनका एकान्त से अधिक सम्बन्ध है तथा असाढ़ तक गाये जाते हैं, 'चिटिद् करमा' कहलाते हैं। उनका नृत्य से सम्बन्ध प्रायः नहीं है। शेष करमा-गीतों का सम्बन्ध नृत्य से है जिनमें झूमर, लहसुआ आदि प्रमुख हैं।

---

१. खूँटी सब-डिवीजन का पूर्वी भाग पाँच परगना कहलाता है; बुदूबाबू का परिचय गीतकार शीर्षक के अन्तर्गत दिया जायगा।

अधिकांश करमा-गीतों की पंक्तियाँ लम्बी होती हैं जो गाते समय खींचकर और भी बढ़ा ली जाती हैं। उनके स्वरों का आरोह, अवरोह और कम्पन करमा-गीतों की सबसे बड़ी विशेषता है जो इन्हें अन्य गीतों से प्रमुखता प्रदान करती है।

जरगा—करमा के बाद जरगा गीतों का मौसम आता है जो कार्त्तिक से लेकर 'मागे' पर्व की सीमा तक गाये जाते हैं। 'मागे' फसली पर्व है। यह खेतीबारी के सारे काम समाप्त हो जाने के बाद—जब अनाज घर में आ जाता है और जब ये लोग काम-धाम से थोड़े दिनों के लिए छुट्टी पा जाते हैं तब मनाया जाता है। मागे पर्व अन्न की प्रसन्नता में तृप्ति का पर्व है और जरगा गीत अपने मौसम के अनुसार शान्त भावों के गीत हैं। उनके लय, ताल और नृत्य में एक शान्ति और सन्तोष की भावना पायी जाती है। स्वभावतः यह मुण्डा के जीवन की उमंगों का सबसे सुनहला समय है, पर दुर्भाग्यवश दर्द-भरे गीत ही मानव के सबसे मीठे गीत होते आये हैं और गीत के सबसे मनोहर फूल आँसू के खारे जल में ही खिला करते हैं, इसलिए जरगा-गीत दुख-दर्द के अभाव में मिठास के सौभाग्य से वंचित हैं और सूने दिनों को काट ले जाने के सिवा इनका और कोई महत्त्व नहीं है। इनकी संख्या जदुर और करमा-गीतों से बहुत कम है।

जापी—ये शिकार के गीत हैं और मुण्डा गीतों में इनकी संख्या सबसे कम है। ये उन शिकार के आयोजनों में, जो होली और सरहुल पर्वों के उपलक्ष में होते हैं, गाये जाते हैं। इन थोड़े से ही गीतों में प्रयाण की गतिशीलता, युद्ध की ललकार और सफलता की उमंगें तीनों भरी हुई हैं। इनके वाद्य और नृत्य भी तदनुकूल ललकार की ध्वनियों से भरे होते हैं। इन गीतों में अपनी कलाप्रियता को सम्मिलित करके मुण्डाओं ने शिकार को भी उत्सव बना लिया है। जापी-गीतों की पंक्तियाँ प्रायः लम्बी होती हैं। नृत्य जोरदार चक्र के कारण घुड़दौड़ के समान जान पड़ते हैं। लगता है, मानो स्वर द्रुतगामी कदमों का पीछा कर रहे हों।

जतरा[1]—प्रत्येक पर्व और आनन्द के अवसर पर इन नृत्यप्रेमियों के बहुत से गाँवों का जो सम्मेलन हुआ करता है उसे 'जतरा' कहते हैं। उन 'जतराओं' में ये बड़े उल्लास से दलबल के साथ—प्रायः अपनी नृत्य-मंडलियों के साथ जाते हैं। मानों कर्म-कोलाहल के बन्धनों से छूटकर ये मुक्त उमंगों के राज-महल पर धावा बोल रहे हों। युवक-युवतियों के लिए ये जतराएँ महापर्व हैं। जतराओं के लिए ये भी गीत बने हुए हैं। इनमें कभी-कभी नृत्यमंडलियाँ बाजे-गाजे के साथ जाती हैं और कभी-कभी बिना बाजे के ही उनके दल मुक्त रागों की लय पर नाचते हुए प्रयाण करते हैं। जतराओं के गीत रास्ते की थकान को भुलाने के लिए और पैरों में उमंग भरने के लिए बनाये गये हैं। इनकी संख्या अधिक नहीं है।

और, अब तो इनकी संख्या और भी कम होती जा रही है। जतरा के अवसर के लिए भी—चाहे रास्ते में या मेले में मौसिमी गीत ही अब प्रायः गाये जाने लगे हैं और जतरा के गीत स्वतंत्र गीतों का स्थान लेने लगे हैं।

---

१. मेले या नृत्य के सम्मेलन 'जतरा' कहलाते हैं। इसका सम्बन्ध बँगला के 'यात्रा' शब्द से है। बंगाल में पचासों तरह के सांस्कृतिक आयोजन को 'यात्रा' कहा जाता है। इन्साइक्लोपीडिया मुंडिका में उनकी एक लम्बी सूची प्रस्तुत की गई है।

विवाह के गीत—विवाह के गीतों में, सारे भारत में विवाह के अवसर पर गाये जानेवाले गीतों की तरह गाली भरी हुई है। दो कुटुम्बों के मधुर-मिलन के अवसर पर यह व्यंग्य-विनोद मीठा ही जान पड़ता है। लेकिन इन गीतों की संख्या बहुत कम है। कुछ गीत दूल्हा-दुलहिन के लिए आशीर्वाद स्वरूप भी हैं और कुछ सम्बन्धियों के स्वागत के प्रसंग में भी!

मुण्डा लोक-गीतों का अध्ययन

इनकी जिन्दगी को छूकर चलनेवाला कोई भी विषय इनके संगीत से अछूता नहीं है। जो भी बात इनकी भावना में तनिक भी लहर उठा देती है, उसी पर इनका कंठ फूट पड़ता है। मुण्डा भावुक होते हैं, इसलिए इनके मन की प्रत्येक बात इनकी मस्ती को छूकर गीत बन जाती है। इन्होंने विषया का चुनाव करके तैयारी के साथ कविता की रचना नहीं की है। अपनी आँखों को खोदकर पानी नहीं बहाया है, वरन् इनकी अनुभूति के सारे विषय गीत बनकर ही इनके प्राणों में समाते हैं और फिर स्वर बनकर इनके कंठों से फूट पड़ते हैं।

प्रकृति-प्रेम—अपनी चिर-संगिनी प्रकृति की आत्मीयता इनके गीतों में सब जगह दिखाई देती है। फूल और पंछी, वृक्ष और लता, पहाड़ और घाटियाँ तथा नदी और निर्भर इनके रात-दिन के साथी हैं। इनके साथ मुण्डा का आत्मीय भाव है, ये उसके सहचर हैं। इन्हीं से हँस-बोलकर उसका जीवन विकसित होता है। इसलिए उन्नत भाषाओं में प्रकृति-वर्णन का जो तात्पर्य समझा जाता है, वैसा प्रकृति-वर्णन आदिवासी कविता में नहीं है। दोनों में बड़ा स्पष्ट अन्तर है। उन्नत भाषाएँ बोलनेवालों का जीवन प्रकृति से दूर हो गया है। उनकी अपनी संस्कृति कहिए या विकृति, ह्रास कहिए या विकास, इस परिवर्त्तित दशा में उन्होंने अपनेको प्राकृतिक जीवन से हटा लिया है। इसलिए प्रकृति उनके लिए अपरिचिता हो गई है। वे कभी-कभी अपने वास्तविक जीवन से दूर हटकर प्रकृति को प्यार करने जाते हैं, उसकी छटाओं से मुग्ध होते हैं। किंतु इस अभियान में उनके प्राण अपनी सभ्यता के ऊँचे कोठे पर ही छूट गये होते हैं। वे प्रकृति के साथ घुल-मिलकर एक नहीं हो पाते। इसलिए वे प्रकृति के जिस रूप का चित्रण करते हैं, वह शहर के पार्क के बीच मन-बहलाव के लिए लगाई हुई जंगली-झाड़ी के समान जान पड़ता है। अभिजात वर्ग के कवियों का प्रकृति-प्रेम श्रीनगर के निशात-बाग का बनावटी निर्झर है; दिल्ली के बिड़ला-मन्दिर में बनी हुई मिट्टी की पहाड़ी है और जयपुर के कृत्रिम-नगर में चिड़ियाघर के लिए बना हुआ जंगल है। जो स्पष्टतः ही पाठकों के मन-बहलाव की वस्तु है। कालिदास चित्रकूट के पर्वत-शिखर पर से मेघ के द्वारा अलकापुरी सन्देशा भेज चुकने के बाद फिर उज्जयिनी के राजमहलों में लौट जाता है। वर्ड्सवर्थ पहाड़ी के नीचे धान के खेतों में गाती हुई लड़की की टेर से थोड़ी देर मन बहलाकर फिर क्लब की ओर चला जाता है। और अन्धासूर अपनी बन्द आँखों से वृन्दावन के करील-कुंजों में रास-लीला के दृश्य देखकर फिर अपने तानपूरे के स्वरों में खो जाता है।

किन्तु मुण्डा प्रकृति के आँगन में कहीं से चलकर नहीं आता और वहाँ से चलकर उसे अन्यत्र कहीं नहीं जाना है।

मुण्डा का प्रकृति-प्रेम रेशम के पर्दे पर जरी के तारों से बनाया हुआ गुलाब का फूल नहीं है। इसलिए उसमें कोई फैशन नहीं। अभिजात कविताओं में जीवन के रंगमंच पर जो व्यापार दिखाये जाते हैं, उनकी पृष्ठभूमि में ऐसे पर्दे होने चाहिए, जिनमें प्रकृति के चित्र उतारे गये हों। नकली जंगल और पहाड़; रंगों से बने हुए नदी-निर्झर और रेखाओं से बने हुए फूल-पत्ती। किन्तु मुण्डा-जीवन के रंगमंच पर इन छटाओं को कहीं से जोड़ने की आवश्यकता नहीं है। जिन छवियों के लिए अभिजात-कलाकार परेशान होते रहते हैं, वे मुण्डा-जीवन की पृष्ठभूमि में नैसर्गिक रूप से विद्यमान हैं।

मुण्डा कवि को प्रकृति के अंग-अंग के वर्णन की आवश्यकता नहीं। उसका फोटो खींचकर या चित्र बनाकर उसे कहीं ले नहीं जाना है। वह छवि तो उसके प्राणों में बसी हुई है। इसलिए उसका नाम भर ले लेना मुण्डा के सारे प्रकृति-प्रेम का परिचायक है। मुण्डा कविता में फूल या पक्षी का नाम ही उनकी सारी मनोहरता का प्रतिनिधि और प्रतीक है। इसलिए आदिवासी कविता में प्रकृति की छटा देखने के लिए आपको यह रहस्य समझ लेना पड़ेगा।

कहीं-कहीं रंग में आकर मुण्डा कवि ने प्रकृति के स्वतंत्र रूप का वर्णन भी कर दिया है। निम्नलिखित गीत वसंत के स्वागत में गाया गया है—

राबं तयोमेतेम-हिजाकना
राजा रानी लेकाम समपोड़ाकना
इसु दिनातेइं उड़ुकेना
मेन्दोम् मुलुः लेना बा चण्डु।

पुरना पण्डु सकम नोचोकेते
नवा सुड़ा सड़िम ओमेतदा,
बिरते दारुकोईं लेलउकेना
मोए-तना, बा-तना, जोहोतना।

हरोयली अरः सुड़ा पीड़िः लेका
चिकन सुनमेगोम गोसोः वा कदा
विरकोरे बा-बुगिन-सुगड़ा सोअन
कुड़म बितारेरे गुमुराव तना।

बिर-दारु सुबारे राम सोम्बदा कना
सिरीमारे सिमवोगा-ए जोवर तना
बाएले मेन्ते गोड़े रासिका तना
तरा कोतो सराजोम-बा असीतना ।

"जाड़े के बीत जाने पर तुम आये हो। तुम राजा-रानी के समान सजे हो। मैं बहुत दिनों से (तुम्हारी) चिन्ता कर रहा था ; मगर आज (जाकर) चैत का चाँद उगा।

"पुरानी-पीली पत्तियाँ झाड़कर (तुमने) नई कोंपलों की साड़ी को पहन लिया। मैंने जंगल के वृक्ष को कली लगते, फूलते और फलते देखा।

"(तुम्हारी) हरी और लाल कोंपलें चमक रही हैं, तुमने कौन-सा तेल लगा लिया है ? जंगल के सुन्दर फूलों की सुगन्ध—मेरी छाती में घूम रही है।

"राम वन-वृक्ष के नीचे झुका हुआ है (और) आकाश के प्रभु को प्रणाम कर रहा है। सरहुल मनायेगा यह सोचकर प्रसन्न हो रहा है (और) साखू के फूलों की एक डाली माँग रहा है।"

मुण्डा गीतों में सैकड़ों प्रकार के फूल और पक्षी कभी उपमान, कभी उद्दीपन और कभी प्रतीक बनकर आये हैं, जिनका प्रतीक शीर्षक के अन्तर्गत परिचय दिया गया है।

इनके अतिरिक्त वन-भूमि के बहुत-से वृक्ष, लता-गुल्म, कोंपलें, चींटी, मधुमक्खी, पहाड़, नदी, झरना, कन्दरा, घाटी, बेड़ा, पीड़ी (टाँड़), जोबेला (दलदल), बादल, सूरज, चाँद, आँधी, कुहासा, घने जंगल, झाड़ी, बरसात, शीत, धूप, रात, सन्ध्या, प्रभात आदि मुण्डा के जीवन, यौवन और प्रेम के रंगमंच पर आकर उसकी कविता की शोभा बढ़ाते हैं।

प्रेम—सौन्दर्य और प्रेम ये दो मानव-मात्र के मौलिक भाव हैं जो उसकी सारी कला के प्रेरक हैं। संसार की अन्य सारी कविताओं में जीवन की समस्याओं, चिन्ताओं और उलझनों ने स्थान बना लिया है ; किन्तु मुण्डा कविता अपने मौलिक भावों से दूर नहीं हो पाई है। मुण्डा गीत, सच पूछिए तो प्रेम की ही साधना है। उसमें 'गतिम्' और 'संगम्' (प्रिया-प्रियतम) हैं ; विरह की वेदना है, मिलन की उत्सुकता है। मुण्डा गीतों में प्रेम की वह मधुर व्यंजना है जो प्रकृति के उपादानों—वृक्षों, फूलों और पक्षियों आदि—में भी इसी विरह-मिलन के भावों का आरोप करती चलती है। मुण्डा का हृदय अपने और प्रकृति के जीवन में इसी प्रेम के बिम्ब-प्रतिबिम्ब भाव का दर्शन करता है। वहाँ निश्छल-प्रेम नाना रूपों में अपनी छटा दिखाता है ; किन्तु उस प्रेम का जीवन से सम्बन्ध है। मुण्डा-प्रेम की कोयल जीवन की ही डाल पर कूकती है। मुण्डा युवक की प्रेमिका बंगले में रहनेवाली वह फुलझरी नहीं जो केवल बाल सँवारती है, उपन्यास पढ़ती है और प्रेम करती है। जवानी की बहारों से भरी वह लड़की है, जिसके सिर पर मिट्टी

का घड़ा और होठों पर फूल की बहार है, जिसके हाथों में घास काटने का हँसुवा और कंठों में मिलन की पुकार है। मुण्डा युवती का प्रेमी भी वह मजनू नहीं जिसकी कमर नदारद है, जो सूखकर मृत्यु के बिस्तर से सटा जा रहा है और जो प्रेम के दर्द से पीड़ित होकर इटकी के सेनोटोरियम में स्वास्थ्य सुधार रहा है। वह जीवन-शक्तियों से भरा ऐसा आकर्षक जवान है, जिसके हाथों में बलुवा (फरसा) और अधरों पर वंशी की टेर है; पुष्ट कन्धों पर कुदाल और आँखों में, धान के खेतों की ओर, किसी की खोज है, मुण्डा गीतों के इस प्रसंग को, जिसमें जीवन प्रेम-मय और प्रेम जीवन-युक्त होता है, समझे रहने के बाद ही उनके प्रेम की पुकारों की मनोहरता समझी जा सकती है। आदिवासियों की कविता में सब कुछ नहीं कहा जाता; किन्तु उस कथन की मौन-पृष्ठ-भूमि को समझे रहने पर जो कुछ भी कहा जाता है, उसका बड़ा गहरा अर्थ निकलता है।

देश-प्रेम—इनके गीतों में देश-प्रेम की भावना भी है। यद्यपि ये राष्ट्रीयता की राजनीतिक और व्यापक परिभाषा जानकर गीत नहीं गाते; किन्तु देश प्रेम का जो मौलिक अर्थ है, वह इनके गीतों में बड़े सरल रूप में व्यंजित हुआ है। वह स्थान जहाँ ये रहते हैं और जिसकी मिट्टी ने इन्हें पैदा किया है, इन्हें बहुत प्यारा है। उसकी एक-एक वस्तु के प्रति इनके मन में आत्मीय भाव है। इन्हें दूसरों के धन-दौलत और समृद्धि से कोई प्रयोजन नहीं; पर अपने अधिकारों का हरण इन्हें दुखी बनाता है। उनकी यह सन्तुष्टि और उनका यह दर्द गीतों में स्पष्ट रूप से प्रकट हुआ है :—

नेते दुड़ा नेते जिलीमिलिया
दिसुमेदो लेसे-लेसेया
नेते दुड़ा नेते जिलिमिलिया
गमय दो जिरपी जलङ्

"यहाँ की धूल चमकीली है, यह देश बड़ा सुन्दर है। यहाँ की मिट्टी चमकीली है, यह इलाका बड़ा मनोहर है।"

सन्तान-प्रेम—मुण्डाओं का प्रेम व्यापक है जो यौन-सम्बन्धों तक ही सीमित नहीं होता। उनकी कविता में सन्तान के प्रति बड़ा निर्मल-प्रेम प्रकट हुआ है। इनके जीवन को निकट से जाननेवाले जानते हैं कि ये अपनी सन्तान को कितना प्यार करते हैं। विशेषकर बेटी जो अपने बचपन की मधुर-क्रीड़ाओं से इनके आँगन को रसमय बनाती है और फिर उसे सूना करके ससुराल चल देती है, इनकी भावनाओं का स्रोत है। पिता के घर लड़की को बड़ा प्यार और बड़ी स्वतंत्रता मिलती है। इसके अतिरिक्त इनकी सामाजिक व्यवस्था में भी कुमारी लड़की को नाच-गान मनोरंजन आदि की पूरी स्वतंत्रता दी गई है; किन्तु विवाह के बाद ससुराल में उसके जीवन पर बड़े संयम हैं और ससुराल के उत्तरदायित्वों में उसे अपने को कठोर बना लेना पड़ता है। यह स्थिति अपनी कोमल सन्तान के प्रति माता-पिता की ममता को और भी बढ़ा देती है। ममता और स्नेह के इन मधुर-भावों का चित्र मुण्डा गीतों में आप सर्वत्र देखेंगे। मुण्डा-जीवन से अपरिचित

पाठक भी, केवल गीतों में इनके जीवन के इस मनोहर पक्ष का दृश्य स्पष्ट रूप में देख सकता है। ससुराल के लिए विदा होनेवाली लड़की यों तो सारी दुनिया में करुणा का स्रोत है; किन्तु मुण्डा-गीतों की यह करुण ममता भूलने की वस्तु नहीं है।

छोटे-छोटे बालकों के प्रति भी इनके गीतों में ममता के भाव भरे हैं।

पर्व—मुण्डाओं के दुख और अभाव भरे जीवन में पर्व का बहुत महत्त्व है। समय-समय पर आनेवाले पर्व इनके जीवन के सूखते सोते को रसमय कर देते हैं। इनके अधिकांश गीत पर्वों से सम्बन्धित होते हैं और उनके केन्द्र में कोई-न-कोई पर्व होता है। इनके पर्व भी काल्पनिक और ऊपर से लदे हुए नहीं होते, वे जीवन की धरती में ही फूटते हैं। पर्वों के गीत भी जीवन के गीत होते हैं। मुण्डा गीतों में पर्वों के उल्ला समय पक्ष प्रतिध्वनित हुए हैं। पर्व की आतुर-जिज्ञासा, उसकी तैयारी, जीवन के मरुस्थल में पर्व की हरियाली, उल्लास के साथ पर्व का अभिनन्दन, गीत और नृत्य के रूप में पर्व के वरदान आदि विषयों में मुण्डा का स्वर मुखरित होता है। जैसा कि 'जदुर' गीतों के वर्णन के प्रसंग में कहा गया है, जिसमें स्पष्ट रूप से पर्व का वर्णन नहीं होता, उन 'जदुर' गीतों का अधिकांश भी पर्व के ही उपलक्ष में गाये हुए गीत हैं।

दुःख-विपत्ति—यद्यपि उल्लास और मस्ती ने इनके दुःखों को बहुत कुछ भुलाया है; किन्तु दुःखों को भूलने की भी एक सीमा है। गीतों के प्यार की थपकी से जो दुःख सो नहीं सके, वे गीतों में ही फूट पड़े हैं। जैसे पहाड़ी नदियों की उमड़ती हुई धारा में नदी के पेट के सारे पत्थर-टीले डूब जाते हैं; किन्तु बाढ़ उतर जाने पर वे उन धाराओं में दिखाई देने लगते हैं, वैसे ही मुण्डाओं के जीवन के दुःख-कष्ट जो उमंग की धाराओं में डूब जाते हैं—नशा उतरने पर अपना रूप प्रकट करते हैं।

ऐसे गीतों में गरीबी, भूख, ठंड आदि विकट परिस्थितियों का बड़ा करुण वर्णन है जो थोड़े ही शब्दों में यह भीषण तथ्य कह जाता है कि ऐसी मस्त रहनेवाली और जीवन के जहर को पी-पीकर भी सदा मुसकाती रहनेवाली जाति के मुँह से 'आह' का निकल जाना साधारण बात नहीं है।

नृत्य-गान—पर्वों के उपलक्ष्य में या उन अवसरों पर गाये जानेवाले गीतों में नृत्यों की भी बड़ी चर्चा है। उनमें नृत्य की उमंग, साथी को नाचने का निमंत्रण, अन्य गाँवों में चलने की तैयारी, वादकों और नाचनेवाले संगी साथियों के व्यवहार नृत्य की थकान और परेशानी, छोकरियों के प्रति मधुर उपालम्भ आदि बहुत-सी बातों का वर्णन है।

बाँसुरी—बाँसुरी के प्रभाव की मधुर चर्चाएँ भी इनके गीतों में हैं। वन के एकान्त में सबसे अधिक प्रभाव डालनेवाली, और सोई हुई पीर को जगानेवाली इस रसीली मोहिनी के जादू को भला मुण्डा-गीतकार कैसे भूल सकता है? बाँसुरी की करुण-टेर, बजानेवाले के हृदय की पुकार और सुननेवाले की तड़पन वंशी-गीतों के विषय हैं।

विरसा भगवान—मुण्डा-गीतकार अपने अमर क्रान्तिकारी और पथ-प्रदर्शक नेता विरसा भगवान को कैसे भूल सकता है? विरसा भगवान इनकी स्वतंत्रता के उज्ज्वल प्रतीक हो गये हैं तथा उनके त्याग, संघर्ष और बलिदान की कहानी से सारी मुण्डा जाति अपने को आज भी गौरवान्वित समझती है। विरसा भगवान के आन्दोलन, उनकी प्रचण्ड शक्ति, उनकी युद्ध-भूमि डुम्बारी पहाड़, उनका अमर बलिदान इन गीतों के विषय हैं।

गान्धी जी—कुछ गीतों में राष्ट्र-पिता की याद में भी मुण्डा-गीतकारों ने अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की है और भारतमाता के मन्दिर में अपनी जाति की वन्दना भी स्वरित की है।

इन महत्त्वपूर्ण विषयों के अतिरिक्त समय की महिमा, जीवन का आदर्श, अतिथि-सत्कार, घटनाओं में परोक्ष रूप से भाग लेनेवाले देवता, परदे के पीछे छिपा हुआ भाग्य, सिंगबोंगा (सूर्य), माता, पृथ्वी आदि विषयों पर भी छिटफुट गीत हैं।

कुछ गीत उन अन्य देशी-विदेशी लोगों के सम्बन्ध में भी हैं जिनका सम्पर्क इनसे होता रहा है और जिनके कारण इनके शान्त जीवन में हलचल और परेशानी आती रही है।

प्रतीक-उपमान-आलम्बन

मुण्डा-गीतों के भावों को ठीक से समझने के लिए प्रकृति के उन उपादानों का अर्थ समझ लेना आवश्यक है जिनके झुरमुटों में उनके भाव-पुष्प खिला करते हैं।

इन फूलों, पक्षियों और पर्वत-घाटियों के वातावरण से परिचित हुए विना हम गीत की भावना नहीं समझ सकते और गीतकार की अनुभूतियाँ हम से दूर रह जायेंगी। होना तो यह चाहिए कि इन उपादानों से हमारा भी मुण्डा के सदृश ही घनिष्ठ परिचय और आत्म-भाव हो; किन्तु यदि यह अपने आप सहज सम्पर्क से न हुआ हो तो कागजी विवरण से इसका होना असम्भव है। फिर भी आशा है, इस सूची से पाठकों को इस वातावरण का कुछ अनुमान हो सकेगा।

इनका प्रयोग मुण्डा-गीतों में कई तरह से किया गया है। कहीं-कहीं ये प्रतीक बनकर आये हैं। प्रेम के गुप्त संकेतों को खोलना जहाँ शिष्टता नहीं मालूम हुई, वहाँ इस रूप में इन्होंने गीतकार की सहायता की है। प्रकृति की मनोहर उपमाओं से तो मुण्डा-गीत भरे पड़े हैं। यत्र-तत्र से प्रेम-विरह या मिलन के भावों के उद्दीपन रूप में आकर गीत की पीर को बढ़ा देते हैं।

फूल—

साराजोम-बा (सखू)—लम्बा वृक्ष, आम की मंजरियों की तरह फूलों का गुच्छा होता है। बसन्त की बहारों में खिलकर बहार को बढ़ा देता है। धीमी-धीमी गन्धवाला यह फूल मुण्डा जाति का प्रिय और पवित्र फूल है। 'सरहुल' में वनदेवता की पूजा इसी फूल से होती है।

ईचा बा (धवई फूल)—छोटा झाड़ीदार पौधा, पतली लम्बी पत्तियाँ, लाल छोटा-छोटा फूल, फागुन में पौधा फूलों से लाल हो जाता है। फूल में मीठा रस, जिसे लोग चूसते हैं।

तोवा-बा (दुधी फूल)—मझले कद का वृक्ष, बड़ी लम्बी-लम्बी नुकीली पत्तियाँ, छोटे-छोटे सफेद फूलों का गुच्छा, जेठ में फूलता है, मीठी-मीठी गन्ध!

अटल-बा—यह दो प्रकार का होता है, एक लता—चमेली जैसा। दूसरा बड़ा-बड़ा पौधा—सफेद गुलाब जैसा गन्धहीन फूल, पत्ती लम्बी थोड़ी नुकीली, सदा फूलनेवाला।

मुरुद-बा—पलाश या टेसू का लाल फूल। गन्धहीन, वनस्थली को रंगीन बनाने वाला, वसन्त में खिलता है।

गुलइची-बा—गुलाइची का प्रसिद्ध फूल।

चम्पा-बा—चम्पक का प्रसिद्ध फूल।

केवड़ा-बा—केवड़ा का फूल।

सुकु-बा—कद्दू का फूल।

हुन्दी-बा—वृक्षों में लिपटी हुई लता, चमेली से जरा बड़ी पत्तियाँ, सफेद सुगन्धित फूल, गुच्छेदार फूलता है। पतझड़ के बाद चैत से जेठ तक फूलता है। गन्ध के लिए जगल का प्रिय फूल!

जम्बीरा—नीबू-विशेष।

हरि-बा—वृक्ष, छोटी-छोटी गोल नुकीली पत्तियाँ, फूल झब्बेदार लटकता हुआ, पीला, वृक्ष को ढके हुए। गन्धहीन, चैत से जेठ तक फूलता है। हिन्दी में इसे बन्दरलोरी और संस्कृत में अमलतास कहते हैं।

सिसि-बा—वृक्ष, २ × ३ लम्बी नुकीली पत्तियाँ, वसन्त में पत्र-हीन वृक्ष फूलों से भरा हुआ। फूल लाल, छोटे-छोटे गुच्छेदार, मीठी सुगन्ध, वृक्ष जंगल में दूर से ही दिखाई देता है।

गुड़लू-बा—पेड़, लम्बी नुकीली पत्ती, फूल आम की मंजरी के समान झीना-झीना, थोड़ी-थोड़ी गन्ध, वसन्त में साखू के साथ ही फूलता है। सरहुल की पूजा के लिए साखू के साथ ही यह भी काम में लाया जाता है और उतना ही महत्त्वपूर्ण माना जाता है।

बुड़जू—(कचनार) वृक्ष, घनी हरी दो दलवाली पत्ती, फूल-किनारे-किनारे सफेद और बीच में बैंगनी, फागुन में फूलता है, कचनार का फूल साग के रूप में खाया जाता है। लोग बीज को भी खाते हैं।

बांगुर-बा—झाड़ीदार बड़ा-बड़ा पौधा, लम्बे-लम्बे काँटे, पीला, गोल-गोल रेशेदार फूल।

कुटी-बा—वृक्ष, पत्ती लम्बी, नुकीली, फूल भूरा-भूरा गन्धहीन—मंजरी जैसा झब्बेदार!

लूदम-बा—पौधा, पत्ती-तेजपात के समान, फूल—सफेद सुगन्ध-युक्त।

बरांगू—बबूल जाति का, छोटे-छोटे काँटोवाला पौधा, पत्ती और फूल बबूल के समान।

वचल—कनेर की जाति का पौधा, जो पथरीली नदियों में पाया जाता है, लाल और सफेद फूल।

तुलसी—तुलसी का प्रसिद्ध पौधा।

काड़े—कास नामक प्रसिद्ध घास, शरद् ऋतु में सफेद फूलों से धरती भर जाती है।

लतायें—सुकू—कद्दू।

लताएँ—

सायर—खीरा

अटल—चमेली

सांगा—शकरकन्द

सेयाड़ी—लम्बी लता, छोटी-छोटी पत्तियाँ।

प्लाएडू—जंगली लता, बड़ी-बड़ी पलाश की पत्ती के समान पत्तियाँ।

लामा—वृक्ष में लिपटी हुई मोटी लता, पत्तियाँ मजबूत रेशोंवाली बड़ी-बड़ी। पत्तियों से आदिवासी अपनी प्रसिद्ध और उपयोगी कलाकृति गुंगू—(पत्तियों की ओढ़नी-छाता) बनाते हैं।

राजा-बा—लता, फूल छोटे-छोटे, अगहन में फूलती है। (राजा-बा नामक एक पक्षी भी होता है)

कुन्दरू—जंगली लता, काँटे, छोटी पत्तियाँ।

वृक्ष—

साराजोम—साखू।

मुरुद—पलाश।

कदल—केला।

बाड़े—बरगद।

हेसा—पीपल।

पपड़ा—एक उपयोगी लकड़ीवाला वृक्ष।

बारू—कुसुम का वृक्ष जिसमें लाह लगता है, बड़ा सुन्दर वृक्ष।

पक्षी—

लं-चेड़े—भुजंग पक्षी से जरा छोटा, लम्बी पूँछ नर के पूँछ का रंग सफेद, रंग हरा, च्वोंय-च्वोंय, की रुक-रुककर बोली। पूँछ के लिए प्रसिद्ध, पइकी नाच नाचनेवाले पूँछ को सिर पर खोंसते हैं।

बोचो-चेंड़े—मैना से जरा छोटा, हल्का पीला रंग, अपनी सुन्दरता के लिए प्रसिद्ध।

लिपी—(लवा—Sky-lark) गोरैया के बराबर भूरा-भूरा रंग, जमीन पर कुंबा (खलिहान की झोपड़ी) के समान खोंता बनाता है। लिप-लिप-लिप-लिप की जल्दी जल्दी बोली। ऊपर उड़ने के बाद नीचे उतरते समय आवाज करता है।

पूतम्—पंडुक।

मीरू—बड़ा सुग्गा, हरा रंग, ठोर लाल, चोंच और बोली के लिए प्रसिद्ध।

कारे—मीरू का पर्यायवाची।

केयाद्—(पतसुग्गी) सुग्गा की जाति का गौरैया के बराबर छोटा पक्षी।

लिटिया—छोटा भूरे रंग का पक्षी, टिक-टिक की आवाज, इसके बारे में विश्वास है कि यह गिद्ध से बाजी जीत गया था।

आसाकल—तीतर से बड़ा, लम्बा पक्षी। बोली उसी के समान, अपनी जोरदार आवाज के लिए प्रसिद्ध। जाड़े में जोर-जोर से सुबह-शाम बोलता है।

कुइली—कोयल।

दीदी—गिद्ध।

मर—मोर।

कोकोर—उल्लू।

केरकेटा—गौरैया से बड़ा लाल पक्षी, खिट-खिट की आवाज में बोलता है।

डिंचुवा—भुजंगा काला, कोयल से छोटा, बड़े पक्षी भी इससे घबराते हैं। 'ढंचू-ढंचू' की आवाज में बोलता है। बड़े सबेरे बोलना शुरू कर देता है।

जानवर—

जिकी—जिसे सेही कहते हैं, काँटोंवाला छोटा जानवर।

हरम्—रात को निकलनेवाला छोटा जानवर कछुए जैसा कड़ा चमड़ा, इसे सूर्यमुखी भी कहते हैं।

अन्य प्राकृतिक तत्त्व—

जोबेला—(झोभी) जहाँ हरदम पानी रहता है।

झीर या जिरकी—(दलदल) जहाँ हरदम कीचड़ रहे।

बेड़ा—(उपत्यका) पहाड़ के किनारे की ढाल या समतल स्थान।

पीड़ी—टाँड़—दोन के ऊपर के खेत या मैदान।

बूरू—पहाड़।

काव्य-कला

मुण्डा-गीतों की काव्य-कला की परीक्षा उन्नत कविताओं की मान्यताओं और निश्चित धारणाओं की कसौटी पर नहीं हो सकती। हमें अपने कृत्रिम आदर्शों के संस्कार से अलग हटकर प्रकृत-भाव से इनमें कला की खोज करनी होगी। विशाल और विस्तृत लोक-मानस की अनुभूतियों को अगर आधार बनाया जाय और कला की कसौटी माना जाय तो हमारी अभिजात कला की श्रेष्ठता स्वयं संकट में पड़ जायेगी और उसे अपनी कृत्रिमता तथा जीवन-भिन्नता के लिए जवाब देना पड़ जायेगा। कला का उद्देश्य अगर रूप-विधान के द्वारा आनन्द प्रदान करना है तो लोक-कविता में जन मानस श्रेष्ठ-साहित्यों की अपेक्षा अधिक आनन्द प्राप्त करता है और अगर कला का सम्बन्ध जीवन से है तब तो, जीवन-शक्तियों से ओत-प्रोत लोक-कविता अभिजात कविता को बहुत पीछे छोड़ देती है।

अभिजात-कविताओं में रस, छंद, अलंकार आदि की कृत्रिम मर्यादाएँ निश्चित की गई हैं; किन्तु लोक-कविता में इनका सरल सौन्दर्य होते हुए भी कोई निर्धारित मर्यादा नहीं है, लोक-जीवन ही उसकी मर्यादा है। जैसे बच्चे की तुतली बोली में 'फार्म', शिष्टता और कृत्रिमता नहीं होने पर भी सरल हृदय का सहज आनन्द कम नहीं होता वैसे ही लोक-कविता अपने सहज उद्‌गारों में रसमय और प्रभावपूर्ण होती है और जैसे कृत्रिम शिष्टाचार आडम्बर आदि होने पर भी बड़े लोगों के वक्तव्यों में कभी-कभी हार्दिकता के अभाव में कोई प्रभाव नहीं होता, वैसे ही अभिजात कविता अपने कृत्रिम वेश-विन्यास में भी कभी-कभी कुरूप लगती है।

मुण्डा-गीतों में ऐसे सरल और स्वाभाविक उद्‌गार हैं जो इनके हृदय के सारे रस और आनन्द को खोलकर रख देते हैं। कलाकार की अभिव्यक्तियाँ परिभाषाओं की घोड़ी पर चढ़कर नहीं चलतीं, वे अपने-आप स्वाभाविक रूप में प्रकट होती हैं। अभिव्यक्तियों

का कलामय होना किसी समाज के कलामय होने पर निर्भर है। जब जाति के जीवन से कला और शक्ति का ह्रास हो जाता है, तब उसकी अभिव्यक्तियाँ भी झूठी मर्यादाओं के ढाँचे में खोखली और निर्जीव बन कर रह जाती हैं।

मुण्डा जाति का जीवन कलामय है। उसमें सौन्दर्य का प्रेम और रस की प्यास है। अस्तु उसकी प्रत्येक अभिव्यक्ति के समान उसकी कविता भी कलामय है। मुण्डा की सुकुमार अभिरुचियों ने अपनी कविता के लिए छंद, अलंकार, रस, ध्वनि आदि के ऐसे अलिखित विधानों के संस्कार लोक-मानस में बैठा दिये हैं जिनकी सहायता से गीतकार रस की सृष्टि करता है, गायक और श्रोता रस का आस्वादन करते हैं, और पाठक तथा समीक्षक के लिए भी जिनको समझ लेना उतना ही आवश्यक है।

मुण्डा-गीतों में प्रतीकों, उपमाओं और आलम्बनों-उद्दीपनों का महत्त्वपूर्ण स्थान है। बहुत-से फूलों और पक्षियों का प्रतीक के रूप में प्रयोग हुआ है। मुण्डाओं के ये चिरसहचर जो कभी इनसे अलग नहीं होते, कविताओं में भी इनके पास आकर इनकी सहायता करते हैं। 'हरि-बा' और 'सिसि-बा' (दो फूल) जदुर खेलने जाते हैं। 'कारे' और 'मीरू' (दो पक्षी) पुरानी, कोंपलों के सूख जाने पर विलख-विलख कर रोते हैं। (दो मित्र अपनी हमजोलियों से बिछुड़ जाने पर रो रहे हैं)। 'सालू' और "सुग्गा" (दो पक्षी—दो मित्र) नाचने जाते हैं। तराई और टाँड़ के रहनेवाले 'दोवा' और 'आवाकल' पक्षी लासा लगाकर पकड़े जाते हैं। (दो युवतियाँ प्रलोभनों से फँसा ली जाती हैं।) मनुष्यों की एक कुरूप लगनेवाली जोड़ी एक बच्चे के लिए 'बंडा कुत्ता' और 'नटरी सूअर' बन जाती है। 'निशी' और 'चाडू' नाच देखने जाते हैं। लेकिन घर के पीछे 'बाज' और 'सिकरा' बैठे हुए हैं। दो लड़कियाँ नाचने जाना चाहती हैं; पर घर के पीछे माँ बाप बैठे हुए हैं।

उपमा और रूपक—

मुण्डा-गीतों में बड़ी सुन्दर उपमाओं का प्रयोग किया गया है और वैसे ही मनोहर रूपकों का भी, जो दृश्य के रूप-विधान में चार चाँद लगा देते हैं।

१. आलाकन-बा लेकन डिंडा-सोमय।

जवानी का समय खिले हुए फूल के समान है।

२. मरं-गाडा चिरपी लेका मइनम् विजिर-विजिरा।

बड़ी नदी की चिरपी (मछली-विशेष) के समान बेटी तुम फुदकती फिरती हो।

३. पुतम् लेका होलं जुड़ी-जना।

पण्डुक के समान हमारी जोड़ी हुई।

४. हेसा-सकम लेका सालू वियुरेन में हो।

हे सालू (सुग्गा) पीपल की पत्ती की तरह घूम-घूमकर नाचो।

५. हाय गति सोना हुन्दी-बा''''''।

हे प्रिय (यह) सोना के समान हुन्दी फूल।

६. समडोम लेका गेको जोगाव लेद् मेया।
तुमको सोना के समान छुगाकर रक्खा।

७. मैना लोकाते बाबुरे कजी इतुन में।
हे बाबू मैना के समान (बोल-बोलकर) बोली सीख लो।

८. चिलका कड़े-बा बातना एनका पुंजी हिजुतना।
चिलका कड़े-बा उरङतना एनका पुंजी सेनोतना।
जिस प्रकार कास फूलता है, उसी प्रकार धन आता है और जिस प्रकार कास झड़ जाता है, उसी प्रकार धन चला जाता है।

९. सुगड़ा मिरू-मोचारे चोवो-लेमा।
(आओ) तुम्हारे मिरू के समान सुन्दरमुख को चूम लूँ।

आलम्बन और उद्दीपन

वसन्त और प्रकृति के शृंगारों का वर्णन आलम्बन और उद्दीपन के रूप में किया गया है जो विरह-मिलन की अनुभूतियों को बढ़ाते हैं, रात-दिन नाचने को प्रोत्साहित करते हैं और अपने आकर्षण वातावरण में अटल-प्रेम की सौगन्ध दिलाते हैं।

चित्र-विधान

कुछ गीतों में मधुर उपमाओं की सहायता से सुन्दर दृश्य अंकित किये गये हैं और समूचा गीत ही एक मधुर-चित्र के समान जान पड़ता है।

एक युवक पानी भरने जाती हुई एक लड़की की छवि पर मुग्ध हो रहा है--

डिंडा सोमय तइकेना
फूलइ तेगेम चवाजना
पोलातम दो - ना
मइना निरल सड़ितन
मइनम् लन्दातन-गे।

बो-रेदो सुतम् बिन्डा,
बिन्डा चेतन हसा-नटु,
से न त द म ना—
मइना जिड़िब जिड़िबतन
मइनम् लन्दातन गे।

मयं रेदो नीले साड़ी
साड़ी तदम ओरे तनगे
लेलो: तनम - मा,

मइना कदल दारू लेका,
मइनम् लन्दातन - गे ।

"(तुम्हारा) कुंवारा समय है ।
तुम (रूप के) घमण्ड में फूल रही हो,
तुम्हारे पैर की अंगूठी बज रही है,
लड़की, तुम मुसका रही हो,
"(तुम्हारे) सिर पर सूत का विन्डा है
और विन्डा पर मिट्टी का घड़ा
तुम चली जा रही हो ।
(तुम्हारे पैर की अंगूठी) जिड़िब-जिड़िब बज रही है । लड़की तुम मुसका रही हो ।
"तुम्हारी कमर में नीली साड़ी है,
तुम केले के वृक्ष के समान दिखाई दे रही हो,
हे लड़की तुम मुसका रही हो ।

अत्युक्ति

मुण्डा-गीतकार ने कहीं-कहीं व्यंग्य-विनोद वश सुन्दर अत्युक्तियों का प्रयोग किया है । एक 'गेना गीत' में एक लड़की ने इतना बड़ा खोंपा बनाया है जिसको फाड़कर हल बनाया जा सकता है । और इतना बड़ा आँचल फहरा रक्खा है जिसमें गाड़ी-भर लकड़ी बाँधी जा सकती है ।

अमागा सुपिद् दोना माई
बन्डा नयलो पड़ा गोवा
अभागा पैला दोना माई
सगिड़ी सान थोलोवा ।

हे लड़की, तुमने इतना बड़ा खोंपा बनाया है जिसे फाड़कर हल बनाया जा सकता है । और इतना बड़ा आँचल फहराया है जिसमें गाड़ी भर लकड़ी बाँधी जा सकती है । लेकिन साधारणतः ऐसी कृत्रिम योजनाएँ मुण्डा-गीतकार के स्वभाव के अनुकूल नहीं हैं ।

अभिव्यंजना—मुण्डा-गीतों में बड़ी सुन्दर व्यंजनाओं का प्रयोग किया गया है । लेकिन उनमें उन्नत भाषाओं के अभिव्यंजना वादी कवियों की कविता की तरह उलझन और रहस्यमयता नहीं है, सरल सौन्दर्य है ।

एक प्रेमी अपनी प्रेमिका से जीवन की मझधार में सम्बन्ध तोड़ रहा है और उसे कठिन-विपत्तियों में डाल रहा है । वह जवानी के रंगीन दिनों की याद दिलाती है । फिर युवक उत्तर देता है ।

।—जीवन की कठिनाइयाँ और विपत्तियाँ ।

आटा माटा विरको तलारे
अलोहोम निरजा वागिङा
रा मे को मा रे चा रे
अलोहोम निरजा रड़ाइञा।

"इस घने जंगल में तुम मुझे छोड़कर मत भागो। इस कंटक-भरे मैदान में तुम मुझे छोड़कर मत भागो।

जवानी के रंगीन दिनों की याद--

काचीहोम लेलेलेदीङा
सेंगेल लेकाइं जुलेतन रे
काचीहोम चिना लेंङा
दः—लेकाइं लिंगीतन रे।

"क्या तुमने मुझे नहीं देखा था जब मैं आग के समान चमक रही थी?
क्या तुमने मुझे नहीं पहिचाना था जब मैं पानी की तरह उमड़ रही थी?

युवक--प्रेम अन्धा होता है।

कागे चोवाइं लेलेलेदेमा
दिसुमादो दुदुगर जन
कागे चोवाइं लेलेलेदेमा
गमय दो कोवांसी जन।

"मैंने नहीं देखा था, (क्योंकि) दुनिया आँधी की धूल से भरी थी।
मैंने नहीं पहिचाना था, (क्योंकि) दुनिया में कुहासा छाया हुआ था।

× × ×

एक लड़की किसी युवक द्वारा ठगी गई है।

होड़ो को तला-आते
इदि कीङम गड़ाते
आतु कीङम गतिं
आतु कीङम गतिं
इकिर दअः तला रे।

"तुम मुझे आदमियों के बीच से नदी में ले गये।
हे प्रिय, तुमने मुझे बहा दिया!
तुमने मुझे गहरे पानी में बहा दिया!

× × ×

एक लड़की प्रेम के उन्माद में माँ-बाप की मर्यादा को बरबाद कर रही है। माँ चेतावनी दे रही है।

बुरू रे-दो सेंगेल
निरे मइना निरेमे
खनची गड़ा होयो दुदुगर
नोजोर मइना नोजोरे-मे।

निरे मइना निरे मे
नेगाम चोवा लो-तना,
नोजोर मइना नोजोरे मे
अपुम ओड़ा बले तना।

नेगाम-चोवा लो तनरे
होरा-होराम नको सुपिदा
अपुम ओड़ा बलेतन रे
डारे-डारेम हुदमा पएला।

"पहाड़ पर आग है। भागो बेटी, भागो! काँची नदी में आँधी आ रही है भागो बेटी, भागो! भागो बेटी, भागो! तुम्हारी माँ का घर जल रहा है! भागो बेटी, भागो! तुम्हारे बाप का घर उड़ा जा रहा है!

तुम्हारी माँ का घर जल रहा है (और) तुम रास्ते-रास्ते बाल सँवारती फिरती हो! तुम्हारे बाप का घर उड़ रहा है (और) तुम रास्ते-रास्ते आँचल फहराती फिरती हो।"

बिम्ब-ग्राहिता या गुणात्मकता

मुण्डा गीतों की एक बड़ी विशेषता जो उन्हें अन्य साहित्यों से अलग कर देती है, उनका बिम्ब-ग्रहण है। यह प्रकृति के साथ इनकी निकटता और तादात्म्य सम्बन्ध का ज्वलन्त प्रमाण है। यह विशेषता प्रकट करती है कि बाह्य प्रकृति के नैसर्गिक सौन्दर्य के साथ इनकी इन्द्रियों का कितना सहज सम्बन्ध है। और इनकी ज्ञानेन्द्रियों के 'लेंस' पर बाह्य प्रकृति का कैसा स्पष्ट चित्र उभरता है। आज की सभ्य-भाषाएँ रूप, रस, गन्ध आदि के प्राकृतिक स्वाद को भूल चुकी हैं और जिस प्रकार अपने अप्राकृतिक आहार से स्वाद की शक्तियों को खोकर मनुष्य जीभ को छलने के लिए मिर्च-मसाला का प्रयोग बढ़ाता जा रहा है, उसी प्रकार सरल अनुभूतियों के अभाव में अभिव्यक्ति को प्राणवान् बनाने के लिए सभ्यता ने कृत्रिम-विशेषणों और अलंकारों का प्रयोग किया है।

मुण्डा-गीतों में वस्तुओं का यथातथ्य-गुणात्मक चित्रण बड़े सुन्दर ढंग से किया गया है। यदि अपनी आदत से लाचार होकर हम उनके इन गुणों का नामकरण करें तो उन्हें दृश्यात्मकता; ध्वन्यात्मकता, रसात्मकता, गन्धात्मकता, स्पर्शात्मकता, क्रियात्मकता, स्वभावात्मकता आदि नाम दे सकते हैं। मुण्डा-कविता के इन भाव-चित्रों को देखकर उन्नत भाषाओं का विधवापन समझ में आ जाता है।

दृश्य के लिए—

१. मरं बुरु दिया सेंगेल **जिलिब केन जिलिब केन**
हुड़ि बुरु मादि मारेसाल **जोलोब केन जोलोब केन**
बड़े पहाड़ पर दिया झिलमिला रहा है।
छोटी पहाड़ी पर ज्योति टिमटिमा रही है।

२. मरं गाड़ा दो **गुले गुलेया,**
हुड़ि गाड़ा दो **लेबे लेले,**
बड़ी नदी उफनाई हुई है।
छोटी नदी लबालब भरी है।

३. कुटी-बा रीबी-रीबो,
नरो-वा गासा-गासा।
घनाघन कुटी फूल!
गहगहाया हुआ नरी-फूल!

४. रिगि मिगी जोलो मोलो···
चमचमाता हुआ, झिलमिलाता हुआ।

ध्वनि के लिए—

१. सेके सेके रोलो रोलो
सक-सक की ध्वनि—रल-रल की आवाज।

२. रिबो रिबी तना,···गासा गासा तना···
टपटपा रहा है, झरझरा रहा है।

३. किता दारु सिले सिले—
लिटिया चेड़े टियुल-टियुल
मरमर करता खजूर का वृक्ष!
फुरफुराता हुआ लिटिया पक्षी!

४. ···पिसिर पिसिरा—जड़म जड़ामा।
(पानी) फिसफिसा रहा है,··झमझमा रहा है।

स्पर्श के लिए—

····चिरि बिरिया—

(काँटा) परपरा रहा है।

गन्ध के लिए—

१. गितिल गितिल सोवाना,

सेरेंग सेरेंग सिंडिया,

धुलियाया हुआ महकेगा

पथराया हुआ गमकेगा।

२. मोगो मोगो सुगड़ा-बा बुगिन-सोवन

मह-मह करती हुई, सुन्दर फूल की महक।

स्वभाव के लिए—

····गिपाल गोपोला,····केरो केचो।

···मनमौजी (मुर्गा)···कुड़कुड़ी (मुर्गी)।

क्रिया के लिए—

१. ····रुकुवलं मे,···दंसियलं मे—

···झरझरा दो,···भरभरा दो।

२. जिलिब जिलिबा—

चमका रहा है।

३. ····दिले दोगोबा,····तिंजर तोंजोरा—

···झमझमा कर फूल रहा है···गहगहा कर फूट रहा है।

पुनरावृत्ति—

अब हम उस प्रधान विशेषता की छटा देखें जो सारी मुण्डा-काव्यकला का आधार है। मुण्डा गीतों की प्रत्येक पंक्ति बड़ी सुन्दरता के साथ दुहराई गई है[1] जो गीत के सौन्दर्य में चार चाँद लगा देती है। अगर इस पुनरावृत्ति को हटा दिया जाय तो सारी मुण्डा-कविता परिमाण में आधी रह जाय और सौन्दर्य में उतनी भी शेष न रहे।

किन्तु यह पुनरावृत्ति कोरी और सीधी-सादी पुनरावृत्ति नहीं है। यह एक पंक्ति के प्रत्येक शब्द के लिए कभी समानार्थक और कभी विपरीतार्थक जोड़ा प्रस्तुत करती है। कभी पंक्ति के एक-दो शब्द को और कभी पूरी पंक्ति को मनोहर जोड़ों से बदल देती है। इस आवृत्ति में एक लय है, उसके कदमों में एक समगति है। मानो किसी वृक्ष की टहनी पर दो पक्षी सट-सटकर बैठे हुए चोंच मिला रहे हों या जंगल की झाड़ियों के बीच हिरनों की जोड़ी एक साथ छलांगे मार रही हो। किसी साँचे में ढले हुए समान रूप-रंग के उन

---

1. पुनरावृत्ति की समीक्षा छंद-विधान शीर्षक के अन्तर्गत देखें।

शब्दों के प्रयोग को देखकर मुण्डा-गीतकार की सुरुचि और प्रतिभा तथा मुण्डा-भाषा की शक्ति के सामर्थ्य का एक ही साथ पता चल जाता है।

यह आवृत्ति कर्त्ता, कर्म, क्रिया, क्रिया-विशेषण, विशेषण सबमें है। और जैसा ऊपर बताया गया है समानार्थक और विपरीतार्थक दोनों प्रकार की है। 'पहाड़' के साथ 'घाटी', टाँड़' के साथ 'जंगल', 'गति' के साथ 'संगम', 'हरिञा' के साथ 'सिसिया', 'सेके सेके' के साथ 'रोलो रोलो', 'रिबी रिबी' के साथ 'गासा गासा', 'लेलेमेया' के साथ 'चिनामेया' आदि अनेक रूपों में यह आई है। छवि की इस मनोहर छटा के जो प्रत्येक गीत में देखी जा सकती है, यहाँ कुछ उदाहरण प्रस्तुत किये जा रहे हैं।

१. हिजु सेनो राजा लेलेमेया—
गोसो गोसो राजा लेलेमेया,
वियुर नचुर राजा चिनामेया—
मोरसो मैला राजा चिनामेया,
हे राजा तुमको आते-जाते देखती हूँ,
हे राजा तुमको सूखा-सूखा देखती हूँ,
हे राजा तुमको घूमते-फिरते देखती हूँ,
हे राजा तुमको उदास-उदास देखती हूँ।

२. एलारे जुड़िरेन मिरुकि—
एलारे हड़ागुन बेन,
एलारे जोतारेन कारेकि—
एलारे नोसोरेन बेन।
हे मीरू की जोड़ी उतर आओ।
हे कारे की जोड़ी उतर आओ।

३. मरं गड़ा चिरपी लेका मइनम्—
बिजिरा विजिरामइना।
नुड़ि गड़ा नयरा लेका मइनम्—
वियान, वोयोना मइना।
हे बेटी, (तुम) बड़ी नदी की चिरपी
(एक मछली) के समान फुदकती फिरती हो।
हे बेटी, (तुम) छोटी नदी की 'नयरा'
(एक मछली) समान उछलती फिरती हो।

४. सोमय सेनो जन देयम कुबा जन
नुसड़ा विरद जन जोवाम रेपो जन

समय चला गया, कमर झुक गई।
दिन बीत गये, गाल पिचक गये।

कथनोपकथन—

लगभग सारे मुण्डा गीत वार्तालाप के रूप में प्रस्तुत किये गये हैं। जो प्रकृति के रंगमंच पर जीवन-नाटक के सजीव अभिनय के समान जान पड़ते हैं। वास्तव में इनका सृजन रंगमंच के लिए ही हुआ है। अधिकांश गीत नृत्य गीत हैं, नृत्य का अखाड़ा उनका रंगमंच है और गीतों में आकुल हृदय का विकल-निवेदन भरा हुआ है और अन्य गीत भी पठन-पाठन या अध्ययन के लिए नहीं, वरन् गाने के लिए बने हैं, जिनमें जीवन के विस्तृत रंगमंच पर दूर या पास के किसी संगी के प्रति पुकार भरी हुई है। इस सामाजिकता-प्रिय जाति के ये गीत न तो आध्यात्मिक आत्म-निवेदन हैं और न दूर के किसी 'अन्य पुरुष' के प्रति नीरस उपदेश हैं। ये सीमित जीवन की सीमाओं में क्षण क्षण उपस्थित होनेवाले भावावेग हैं, जो स्वाभाविक रूप से मध्यम पुरुष पर ही आश्रित हो सकते हैं और वहीं पर अपने मन का भार हलका कर देते हैं। मुण्डा के हृदयाकाश के इन बादलों को न समुन्दर का पता पूछना है न 'आक्सिजन हाइड्रोजन' का भेद समझना है, वे केवल सामने की धरती को पहचानते हैं।

ये गीत 'गति-संगम' (प्रिया प्रियतम), माँ-बेटी, पिता पुत्र, दादा-भाई, दीदी-बहन, किन्हीं दो व्यक्तियों के वार्त्तालाप हैं, इनमें 'हरिवा' और 'सिसिवा', 'मीरु' और 'कारे', 'निसी' और 'चाडू' कभी प्रकृति रूप में और कभी सहेली, मित्र या प्रेमी के रूप में बातचीत करते हैं। मित्र और प्रेमी गोपनीय अभियानों के लिए फूलों और पक्षियों के रूप में ही अधिकतर आये हैं। प्रायः सारे मुण्डा-गीतों में प्रश्न और उत्तर की सम्मिलित गत बज रही है।

इस प्रकार मुण्डागीत या तो पारिवारिक सम्बन्धों के मनोहर दृश्य हैं, या नर-नारी की शाश्वत प्रणय कहानी हैं या प्रकृति और पुरुष के चिरन्तन सम्मिलन हैं।

प्रधान-विशेषता—

मुण्डा-गीतों में यद्यपि प्रेम के भावों की प्रचुरता है; किन्तु जैसा पहले कहा जा चुका है, उसमें संयम और मर्यादा का यथेष्ट पालन किया गया है। गीतों के इस पारदर्शी स्वरूप में मुण्डा-जीवन का संयम और अनुशासन स्पष्ट रूप में दिखाई पड़ता है। यद्यपि इस समाज में बहुत दूर तक उन्मुक्त प्रेम की स्वीकृति है; किन्तु इतना होते हुए भी गीतों में यौन भावों या यौन शब्दावली का एक दम अभाव है। सभ्य और संस्कृत कहे जानेवाले सारे साहित्यों में हम जिन नख-शिख अंगों, उद्दीपक चेष्टाओं और कभी-कभी तो निर्लज्ज क्रियाओं आदि के शब्दों की भरमार पाते हैं, उनका इस पिछड़ी कही जानेवाली जाति के गीतों में अभाव देखकर आश्चर्य होता है और उससे भी बढ़कर आश्चर्य तब होता है जब हम अन्य आदिवासियों के गीतों को उनसे वंचित नहीं पाते। बहुत सी आदिवासी जातियों की कविता में इन शब्दों और भावों की छूट है। कभी-कभी तो प्रत्यक्ष रूप में और कभी-कभी प्रच्छन्न रूप में यौन कहावतों आदि के द्वारा इन शब्दों, भावों और क्रियाओं का प्रयोग किया गया है। एलविन ने अपनी 'दी बैगा' पुस्तक में बैगाओं द्वारा यौन भावों के लिए ऐसी कहावतों

के प्रयोग के बहुत-से उदाहरण प्रस्तुत किये हैं और गीतों के उस स्वरूप में उनके सामाजिक जीवन का प्रतिबिम्ब दिखलाया है।

किन्तु जब हम मुण्डा की सामाजिक व्यवस्था की दृढ़ता देखते हैं, तब न केवल यह रहस्य समझ में आता है, वरन् हमारा आश्चर्य भी श्रद्धा में परिणत हो जाता है।

नृत्य के अखाड़े में जहाँ अन्य आदिवासियों में लड़के लड़कियों की कतारें आपस में मिल जाती हैं, वहाँ मुण्डा-अखाड़ों में दोनों के बदन का स्पर्श वर्जित है। जहाँ लड़कियाँ केवल आपस में जुटकर नाचती हैं और वहीं लड़के उनको अछूता रख उछल-कूद मचाते हैं। जहाँ उच्छृंखल युवक अव्यवस्थित रूप में उछलते-कूदते हैं, वहाँ लड़कियाँ एक समगति से पैरों को उठातीं-गिरातीं और नारी की मर्यादा के अनुकूल अपनी आवाज को और भी बारीक बना लेती हैं। मानों स्वर की लजीली दुलहिन घूंघट की ओट से झाँक रही हो। विवाहिता युवतियाँ केवल पर्व के दिन नृत्य में सम्मिलित होती हैं; किन्तु तभी तक जबतक नाच देखने के लिए गाँव-भर के बूढ़े-बूढ़ियाँ वहाँ एकत्र होते हैं। और, वे उस समय से पहले ही अखाड़ों से विदा लेती हैं जब वृद्धजन अन्य लड़के-लड़कियों को रात भर उन्मुक्त रूप से नाचने के लिए छोड़कर घर लौट आते हैं।

मुण्डा गीतों पर इस संयम और मर्यादा के जातीय संस्कार का प्रभाव है, जिसके कारण उनमें यौन और अश्लील भावों का कोई स्थान नहीं है।

छंद-विधान—

मुण्डा-गीतों में काव्य और संगीत के तत्त्व मिलजुलकर इस प्रकार एकाकार हो गये हैं कि उनकी अलग विवेचना नहीं हो सकती। ये रस से भरे हुए गीत संगीत के साँचे में ढले हैं और संगीत के 'चाक' पर ही इनका सृजन हुआ है।

फिर भी इन गीतों में काव्योचित छंद और लय हैं और इनके चरणों में पद्यात्मक यति और गति है। मुण्डा-गीत साधारणतः तीन पदों के होते हैं। जैसे रेकार्डों पर नपे-तुले गीत ही चढ़ाये जा सकते हैं, वैसे स्वाभाविक रूप से ही मुण्डा-गीत इतने बड़े बनाये गये हैं, जो नृत्य के एक ताल में समाप्त हो जायँ। वास्तव में ये नृत्य-गीत हैं और परम्परा ने बहुत दिनों तक प्रयोग करके यह निर्धारित किया है कि इन्हीं तीन पदों की अवधि में नृत्य के उतार-चढ़ाव समाप्त होते हैं, भाव और उमंग 'क्लाइमेक्स' पर चढ़ते हैं और पैरों की गति क्षण-भर विश्राम लेने के लिए बन्द हो जाती है।

कुछ गीत जो बहुत कम हैं, चार-पदों के भी हैं, और एक आध पाँच पदों के भी।

इन गीतों में तुकान्त का विधान है और केवल तुकान्त में ही नहीं, वरन् गीत के प्रत्येक प्रधान शब्द में ऊपर और नीचे की पंक्तियों में एकरूपता होती है जैसा कि काव्य-कला के विश्लेषण में बताया गया है—दूसरी पंक्ति के अधिकांश शब्द पहली पंक्ति के शब्दों के समानार्थक या विपरीतार्थक प्रत्युत्तर होते हैं।

पंक्तियों की लम्बाई समान होती है और उनमें एक गति होती है। यद्यपि यह लम्बाई हिन्दी के मात्रिक या संस्कृत के वार्णिक छंदों के अनुसार नहीं होती, और अरबी, फारसी तथा उर्दू के छंदों की वजन की पद्धति भी इनमें नहीं होती, फिर भी काव्य की प्रधान वस्तु जो पद्य को गद्य से पृथक् करती है, इनमें बहुत अधिक होती है। और यद्यपि गीतों के लिए वृत्त की किसी निश्चित मात्रा या वर्ण का विधान नहीं है, किन्तु वाद्यों के

तालों और वाद्य-वृतों का विधान निश्चित बोलों द्वारा निर्धारित किया गया है। वाद्यों के यही बोल संगीत को निर्देशित करते हैं। गीतों की पदावली संगीत में बाजे के बोलों के ही समानान्तर चलती है और संकोच, प्रसार, ह्रस्व-दीर्घ और प्लुत के द्वारा अपने आकार-प्रकार घटा-बढ़ा लेती हैं।

पद बहुधा दो पंक्तियों के होते हैं और ध्यान से देखने पर इनमें भी संगीत का ही हाथ दिखाई देता है। भावों के स्पष्टीकरण के लिए स्वर को मर्यादा भर चढ़ाने के लिए, वाणी में सन्तुलन स्थापित करने के लिए और गीत की दूसरी डाल को उचक कर पकड़ने के लिए प्रत्येक गायक को पंक्तियों को दुहराने की आवश्यकता पड़ती है। मुण्डा-गीतों में पक्तियों की पुनरावृत्ति का रहस्य यही है। किन्तु अन्य गीतों में जहाँ यह पुनरावृत्ति कविता से अलग केवल गाने में ही स्थान पाती है—गीत से अलग संगीत में ही, वहाँ मुण्डा ने अपनी कविता में ही इसको स्थान दिया है। बहुधा दूसरी पंक्ति का कोई अलग अर्थ नहीं होता। साथ ही आवृत्ति के सिवा उसके प्रयोग की और कोई उपयोगिता नहीं है; किन्तु उसके परिवर्तित शब्द संगीत को बड़े कलात्मक ढंग से प्रभावशाली बना देते हैं और सुननेवाले पर एक बड़ा मोहक प्रभाव डालते हैं। वे एक ऐसे झंकार का वातावरण उपस्थित कर देते हैं कि पंक्तियों की कोरी-आवृत्ति में श्रोताओं को घबरा देनेवाला एक मनहूस दृश्य बन कर रह जाता है।

और, मुण्डा-गायक बड़े संयम और अनुशासन के साथ मौसम ताल और लय की मर्यादा का पालन करता है। वह समय-असमय उच्छृंखल ढंग से भैरवी, असावरी और विहाग की खिचड़ी नहीं पकाता।

बाजों में मुख्यतया माँदर, ढोल और नगाड़े बजाये जाते हैं जिनके बोल उनकी ध्वनियों के अनुरूप बनाये गये हैं। माँदर धीरे-धीरे अब कम हो रहा है और उसका स्थान ढोल ले रहा है।

इन बाजों और संगीतों के लय-ताल का विकास बहुत दिनों तक प्रकृति के वातावरण में, एकान्त और शून्यता की परिस्थितियों में, पक्षियों, नदी-निर्झरों आदि के स्वरों में स्वर मिलाकर मुण्डाओं ने किया है। एकान्त राह में राही की ऊँची टेर के समान वन के एकान्त में इन गीतों की टेर भी ऊँची चढ़ती है और फिर वनों-पर्वतों को ध्वनित प्रति-ध्वनित करके दिगन्त में खो जाती है।

गीतकार—

बहुधा लोकगीतकार का परिचय प्राप्त करना बड़ा कठिन होता है। लोकगीत कोई 'रचना' नहीं होते, और उनके पीछे कोई व्यक्तित्व नहीं होता। वे किसी व्यक्ति को केवल निमित्त बनाकर लोकमानस के स्वाभाविक भावों की अभिव्यक्ति होते हैं। 'साधारणीकरण' का सरल भाव अपने बड़े मनोहर रूप में लोकगीतों में व्याप्त होता है। लोकगीत में किसी व्यक्ति-विशेष के विशेष चिन्तन और भिन्न दृष्टिकोण नहीं होते, उनमें वही भाव होते हैं, जो सबके हैं और जिनमें अधिक-से-अधिक समानता है। अपने इस गुण के कारण लोकगीत बिना किसी प्रयत्न या प्रकाशन के सामान्यता के 'ईथर' में लहराकर लोकमानस के उन्मुक्त आकाश में फैल जाते हैं।

दूसरे, लोक-गीतकार किसी यश, नाम, अर्थ आदि की कामना के बिना ही गीतों में अपने स्वाभाविक उद्‌गारों को प्रकट करता है। उसे अपनी रचनाओं को किसी पत्र या पुस्तक में प्रकाशित नहीं कराना है। उसे इसकी भी चिन्ता नहीं है कि उसके गीतों को जनता ने अपनाया या नहीं। गीतों के पीछे गीतकार के सब जगह मौजूद रहने की स्थिति की कल्पना भी वह नहीं करता। लोक गीतकार अर्थ, धर्म, काम, मोक्ष, किसी भी प्रकार की आकांक्षा से मुक्त, व्यक्तित्व, नाम और रूप से रहित होकर, गीतों में खो जाता है और फिर गीतों के साथ जन-मन में घुलकर सर्वदा के लिए लुप्त हो जाता है।

तीसरे, गीतों के टिकने का सहारा मौखिक परम्परा है। लोकगीत अपने सरल-आकर्षण और गेयता के पंखों पर उड़ते हुए मौखिक परम्परा के आकाश में फैलते जाते हैं। अपने पंखों पर परिचय और इतिहास का बोझ बाँधकर उड़ना उनके लिए सम्भव नहीं है। गीत की मधुर लहरों के अतिरिक्त जो स्वयं बोझ बनने की जगह जीवन का बोझ हलका करने में सहायता करती हैं, जन-मन और किसी बोझ को ढोना पसन्द नहीं कर सकता। समीक्षक जिनके लिए माथा-पच्ची करता है, वे बातें जनता के लिए न तो सम्भव हैं न उनमें उसकी कोई दिलचस्पी हो सकती है। किन्तु अपने गीतकारों के प्रति जनता की मौन कृतज्ञता से बढ़कर और कोई कृतज्ञता नहीं हो सकती और हजारों गीतों को अपने कंठ में सुरक्षित रखने और इतनी तन्मयता से गाने से बढ़कर गीतकारों के प्रति श्रद्धांजलि और क्या हो सकती है?

अस्तु, सभी लोकगीतों की तरह मुण्डा-गीतकारों के भी परिचय का कोई साधन नहीं है। कहना मुश्किल है कि इनके हजारों की संख्या में बिखरे हुए गीत, जो अब जातीय धन बन चुके हैं, किनके-किनके और कब कब के सिरजे हुए हैं। गीतों में कुछ ऐतिहासिक संकेतों के आधार पर समय का अनुमान किया जा सकता है; पर गीतकार का पता लगाना सम्भव नहीं है।

शिक्षा के प्रचार के साथ कुछ नाम मिलने लगे हैं। वे या तो उन गीतकारों के हैं, जो शिक्षित रहे और जिन्होंने गीतों में नाम का सिक्का चालू करने का फैशन दूसरों से सीख लिया। नहीं तो फिर, जिनका शिक्षित लोगों से सम्पर्क रहा और उन्होंने उन नामों को याद रखा और थोड़ा बहुत प्रचारित किया। मगर ये नाम आधुनिक युग के व्यक्तियों के ही हैं।

मुण्डा-गीतों की यह परम्परा उतनी ही पुरानी है, जितनी मनुष्य के हृदय में अनुराग और मस्ती! इस आदिम जाति ने मानव इतिहास के आदिम युग से ही गीत सिरजे और गाये हैं। इसके गीतकारों का इतिहास इस जाति के समान ही प्राचीन है। दो-चार परिचित नाम उस इतिहास-शृंखला की केवल अन्तिम कड़ियाँ हैं। ऐसी दशा में उन अनाम और अरूप गीतकारों की आत्मा के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करने के सिवा उन्हें याद करने का और साधन नहीं है। मुझे केवल चार-पाँच नामों का ही पता मिला, जो निम्नलिखित हैं—

१. श्री बूढ़न सिंह— खूँटी से १४ मील पूर्व बूढाडीह के मानकी थे और खूँटी थाने के प्रसिद्ध सार्वजनिक कार्यकर्त्ता (आज थाना-कांग्रेस कमिटी के सभापति) मानकी जूरन सिंह के पितामह थे। उनका गाँव बुन्डू, तमाड़ और खूँटी के बीच सबसे ऊँचे

पहाड़—'सुकन वूरू' की गोद में स्थित है। वे प्रकृति प्रेमी और मस्त आदमी थे। मानकी थे ही, उनके रसिक स्वभाव के कारण उनके घर पर नवजवानों की जमघट लगी रहती थी और वे अपने रचे हुए गीत सुनाया करते थे। अपने मित्रों के साथ वे उत्साहपूर्वक अखाड़े में भी उतरते थे।

२. श्री विनन सिंह—इनका नाम श्री विनय सिंह है। ये तमाड़ इलाके के निवासी थे। इनके अधिक गीत नहीं हैं और इनके गीतों की पहचान भी कठिन है।

३. बुधू बाबू—बुधू बाबू मुण्डा-साहित्य को अपनी रचनाओं से समृद्ध करनेवाले सबसे बड़े गीतकार थे। तमाड़ से ढाई मील की दूरी पर 'बवाई कुण्डी' नामक ग्राम में इनका निवास था, जहाँ इनके दो पौत्र अपने परिवार के साथ रहते हैं।

बुधू बाबू के पूर्वज काशीपुर के महाराज से सम्बंधित और उनके आश्रित थे और इनके प्रपितामह तमाड़ के राजा द्वारा लाये गये थे। बवाई कुण्डी में उन्हें जागीर मिली। उनकी उपाधि 'साय' थी; किन्तु शिखर भूमि के निवासी होने के कारण उन्हें शिखर की उपाधि मिली। बुधू बाबू के पितामह का नाम 'माधव शिखर' और पिता का नाम 'गौर शिखर' था। गौर शिखर बलवान गुणी और मंत्र-तंत्र के ज्ञाता थे। कहते हैं कि उन्हें देवी की कृपा प्राप्त थी।

बुधू बाबू का पूरा नाम बुधनाथ शिखर था। इनका जन्म १८३० ईसवी के लगभग और मृत्यु १९१० और १९०० ईसवी के बीच में हुई थी। ये लगभग ८० वर्ष जीवित रहे। इनकी शिक्षा केवल बाल-वर्ग तक हुई थी। ये बड़े भक्त आदमी थे। नृत्य और गीत के बचपन से ही प्रेमी थे। इनके गीतों के वे भक्त, जो इनके जीवन की अन्तिम अवस्था में इन्हें देख चुके हैं, बड़ी श्रद्धा से इन्हें याद करते हैं। वे कहते हैं कि बुधू बाबू भावावेश में अखाड़े में नाचते समय नये गीत बनाकर गाया करते थे। बवाई कुण्डी ग्राम में एक बूढ़े ने, जिसने अखाड़े में बुधू बाबू के बूढे-कदमों के साथ अपने बचपन के कदम मिलाये थे, बड़ी भक्ति के साथ मुझे बताया कि वह जो कुछ बोल गया सो गीत बन गया।

पाँच-परगने की संस्कृति पर चैतन्य देव के कथा-कीर्त्तन का बड़ा व्यापक प्रभाव है। वहाँ के पाँच परगनिया लोकगीतों में वह प्रभाव व्याप्त है। बुधू बाबू ने रामायण नाम से १६ और प्रीतपला नाम से ६४ गीतों की रचना की थी, जो प्रायः सबके सब पाये जाते हैं। ये सभी करमा गीत हैं। 'रामायण' में सीता की खोज के लिए बन्दरों की लंका-यात्रा की कथा है। उनका पुल बनाने का उत्साह, अंगद का दूत-कर्म हनुमान का नेतृत्व, जामवन्त की सिखावन तथा राम-लक्ष्मण की झाँकी आदि विषय इन गीतों में आये हैं।

'प्रीत-पला' में कृष्ण का बचपन, यशोदा का प्यार, कदम्ब, मुरली, गोपियाँ, राधा का प्रेम, रासलीला आदि विषय हैं।

बुधू बाबू के भावपूर्ण और दर्द भरे गीत पाँच परगना के क्षितिज से काली घटा के समान उठकर अब सारे मुण्डा संसार पर छा गये हैं। ये ऐसी सरल और स्वाभाविक शैली में लिखे गये हैं और इनमें इतना प्रभाव है कि उन्होंने लोकमानस को अपनी हरियाली से भर दिया है। मुण्डा न होने पर भी बुधू बाबू का मुण्डा भाषा, शैली और अभिव्यक्ति की कला पर इतना व्यापक अधिकार देखकर स्वयं मुण्डाओं को भी आश्चर्य होता है। बुधू बाबू के गीतों ने मुण्डा-कंठ, राग, भाव और शैली सबको समान रूप से प्रभावित

किया है और करमा गीतों को अपनी कला और विशेषता में अन्य गीतों से बढ़कर बना दिया है।

कहते हैं कि हरी बाबू नामक एक पंचपरगनिया भाषा का गीतकार बुधू बाबू का साथी था। वह मुण्डा भाषा भी अच्छी तरह जानता था। बुधू बाबू ने अन्तिम समय में उससे अपनी 'रामायण' पूरी करने का अनुरोध किया था; किन्तु उनकी इच्छा पूरी न हो सकी।

गाँजा पीना, शतरंज खेलना और रातदिन गुनगुनाते रहना, बुधू बाबू की यही दिनचर्या थी और कहते हैं, मृत्यु के समय किसी अनजान शक्ति की आराधना में उनका सिर झुका हुआ था।

किष्टोमोहन शिखर उनके पुत्र थे। ववाई कुण्डी में बुधू बाबू के दो पौत्र जनार्दन शिखर और रुद्र शिखर अपने परिवार के साथ मौजूद हैं।

बुधू बाबू के गीतों में 'चिटिद्' करमा गीतों की विशेषता पाई जाती है। उनमें बड़ी लम्बी टेर और ऊँची पुकार है। यद्यपि पुनरावृत्ति कथनोपकथन आदि मुण्डा-गीतों की परम्परागत शैली वहाँ नहीं है; किन्तु गीतों की लहरों में वही करुणा और कम्पन मौजूद है, जो मुण्डा प्राणों को आन्दोलित करनेवाली बन-रागिनी की निजी विशेषता है। निम्नलिखित प्रसिद्ध गीत बुधू बाबू का ही है—

उरी गुपियाते गोपाल
हिजुः लेना अकल-वकल
अमनगेन दोवाकना
रोका तोवा लोटा रे—
चोओ—लेमा—
नामा सुगड़ मिरु मोचा रे—
चोओ लेमा—

राम—ये आधुनिक मुण्डा-भाषा के सबसे प्रमुख गीतकार थे। इनका घर रांगरोंग में था, जो खूँटी-तमाड़ रोड पर—थोड़ा बायें हटकर—खूँटी से १४ मील पर है। सन् १९४७ ईसवी में लगभग साठ वर्ष की अवस्था में लम्बी-बीमारी से इनकी मृत्यु हुई। ये शिक्षित थे और प्राइमरी स्कूलों में इन्होंने अध्यापन का कार्य किया था।

इनका गाँव रांगरोंग प्रकृति की मनोरम रंगस्थली है। गाँव से सटा हुआ उत्तर की ओर ऊँचा पहाड़, पहाड़ के ऊपर घनघोर जंगल, ऊपर की झाड़ियों और चट्टानों से घिरा हुआ एक स्मरणीय सरोवर, सरोवर से पानी की एक धारा बहाई गई है, जो एक ओर तो पहाड़ की मिट्टी को बहाकर लाती है और नीचे के खड्डों को भरकर उन्हें खेत बना रही है। दूसरी ओर नीचे कई धाराओं में बँटकर प्रत्येक आँगन में और सब्जी के प्रत्येक खेत में पहुँचती है। प्रत्येक घर के लोग उसी पानी से धोने-मांजने का सारा काम करते हैं। गाँव की दूसरी ओर धान के खेत होते हैं, जिनमें बरसात का पहाड़ी पानी सदा कुलबुलाता रहता है।

राम प्रकृति के बड़े प्रेमी थे। वे बहुधा पहाड़ के ऊपर सरोवर के किनारे जाकर बैठा करते थे और वन-देवता के चरणों में अपने मधुर कंठ से गीतों के फूल चढ़ाया करते थे।

वे स्वभाव के बड़े मधुर, कोमल और मिलनसार थे। इन पंक्तियों के लेखक को भी उनके घर पर उनसे मिलने और दो दिनों तक उनके सत्संग में रहने का सौभाग्य प्राप्त हो चुका है। वह साहचर्य मेरे जीवन की सबसे मधुर स्मृतियों में है।

उनके गीतों में प्रकृति का प्रेम और विरह की पुकार भरी हुई है। मानों फूलों के झुरमुट में कोयल कूक रही हो।

"कीताहातू-होरा रे..." (कोताहातू की सड़क पर...) नामक उनके प्रसिद्ध गीत की वनदेवी अब दुनिया में अकेली है और उसकी अर्चना में आकुल रहनेवाला ऋतुराज उसे छोड़कर सदा के लिए चला गया है।

इनके अतिरिक्त मुण्डा-गीतों के कोष में अन्य आधुनिक गीतकारों ने भी अपने गीत जोड़े हैं। विषय शैली आदि की दृष्टि से उनकी नवीनता और आधुनिकता स्पष्ट हो जाती है; पर उनमें कोई नाम विशेष उल्लेखनीय नहीं है।

वाह्य-प्रभाव—

अन्य जातियों के सम्पर्क से दूसरी सारी बातों की तरह मुण्डा-गीतों के विषय-शली आदि पर भी वाह्य प्रभाव स्पष्ट दिखाई देता है। यों तो रामकृष्ण-सम्बन्धी गीत-मुण्डा भाषा में पहले से थे; किन्तु करमा गीतों में रामकृष्ण-सम्बन्धी गीतों की प्रचुरता चैतन्य महाप्रभु के उस प्रभाव से है, जो पाँच परगने की संस्कृति, भजन-कीर्त्तन आदि पर छाया हुआ है।

शैली में कई तरह के वाह्य प्रभाव परिलक्षित होते हैं। रामायण और कृष्ण-सम्बन्धी गीतों के लिए और ऐसे ही अन्य करमा गीतों के लिए नये सिरजे हुए छंदों, उपमाओं आदि का प्रयोग हुआ है।

आधुनिक युग के उन गीतों में जो शिक्षित गीतकारों द्वारा सिरजे गये हैं, आवृत्ति या जोड़ा मिलाने की प्रवृत्ति का पूर्णतया अभाव है। यह शैली न तो मुण्डा गीतों के श्रेष्ठ गीतकार बुधू बाबू के हैं; और न वैसे ही श्रेष्ठ मुण्डा-कवि राम के गीतों में है। कथनोपकथन भी प्राय: कम ही मिलते हैं। आधुनिक गीत शुद्ध 'लीरिक'-से जान पड़ते हैं, जिनमें एक ही केन्द्रीय भाव तीन-चार पदों में पिरोया गया है। यह शैली बहुधा विवरणात्मक हो गई है। किन्तु यह शुभ लक्षण है। इससे मुण्डा-कविता को विभिन्न भावों के प्रकाशन की शक्ति प्राप्त हो रही है। और जीवन की व्यापक अनुभूतियों से मुण्डा-साहित्य का कोष भरा जा सकता है।

विभिन्न कृत्रिम विशेषणों को अपनाकर आज का मुण्डा-गीतकार अपनी चित्रात्मक और गुणात्मक अभिव्यक्तियों को छोड़ रहा है।

यद्यपि इस प्रकार की नई कविताएँ अपनी भावना में, उन परम्परागत विश्वासों और मान्यताओं से तथा अपनी कला में उन परम्परागत अभिव्यक्तियों से कभी-कभी अलग पड़ जाती हैं, जिनके कारण कोई साहित्य लोक-साहित्य या लोकवार्त्ता के अन्तर्गत आता है। किन्तु वे अब भी शिक्षित हो रहे लोक-मानस के सामान्य धरातल से अलग

नहीं हो सके हैं और फिर, मुण्डाओं के जीवन में अभी वह समय नहीं आया है जिसमें उनके साहित्य का 'लोक' और 'अभिजात' वर्गों में वर्गीकरण किया जाय तथा उनकी अलग-अलग विवेचना प्रस्तुत की जाय ! वहाँ लोक और अभिजात वर्ग की वार्ताएँ अलग-अलग नहीं हैं। वहाँ तो जो कुछ है लोक-वार्त्ता ही है। फिर भी लोकवार्त्ता की मर्यादा को बनाये रखने के लिए और इस जाति की मौलिक प्रवृत्तियों को समझने के लिए गीतों की विवेचना में इनके मौलिक और परम्परागत भावों पर ही ध्यान दिया गया है। और, जैसा कि पाठकों को स्मरण होगा, काव्य-कला आदि की विवेचना में ये नये और सुन्दर गीत भी समीक्षा-क्षेत्र से बाहर छोड़ दिये गये हैं। किन्तु ये गीत मुण्डा के प्राणों में इस प्रकार समा गये हैं कि इनकी मूल-प्रवृतियों पर ध्यान रखने के अतिरिक्त समीक्षा से उन्हें अलग रखने का और कोई औचित्य नहीं है।

राम और कृष्ण-सम्बन्धी गीत बड़े स्वाभाविक रूप से मुण्डा प्राणों में समाये हैं। ये गीत मुण्डा-जीवन के आदर्शों और अभिरुचियों के अनुकूल हैं। कृष्ण-सम्बन्धी गीतों में साँवले-सलोने, घने घुंघराले बालोंवाले, मोर-पंख खोंसे, और बाँसुरी बजानेवाले कृष्ण की मनोहर छवि; गोचारण, (वृन्दा) वन और गाड़ा (यमुना नदी) का किनारा, राधा की प्रेम-विह्वलता, और करुण पुकार, ये दृश्य मुण्डा के लिए नये नहीं हैं। आप इन जंगलों में जाकर देखें, हजारों कृष्ण अपनी मधुर बाँसुरी से स्वर्गीय अमृत की वर्षा कर रहे हैं और हजारों राधाएँ उन विह्वल रागिनियों पर अपना तन-मन न्यौछावर कर नृत्य-निरत हैं।

और, राम-कथा भी इनके आदर्शों के अनुकूल है। उसमें हनुमान, अंगद तथा जामवन्त की आई हुई कहानी, वीरों का लंका पर चढ़ाई करने का उत्साह, रावण-राज्य को मिटाकर राम-राज्य की स्थापना में सहयोग देना, इनके अपने ही पुर्वजों का इतिहास है। यद्यपि ये जिन्हें प्रत्यक्षतः भूल गये हैं; तथापि उन चरित्रों की सूक्ष्म-सत्ता इनके प्राणों में अनजान रूप से विद्यमान है। उस अनजान प्रेरणा से राम-सम्बन्धी गीतों की ओर प्रेरित हो जाना इनके लिए बिलकुल स्वाभाविक है।

लेकिन मुण्डा भाषा में पाये जानेवाले ईसाई भजनों की बात अलग है। इस भाषा में सैकड़ों की संख्या में ईसाई भजन भी गाये जाते हैं; किन्तु ये मुण्डा लोक-साहित्य के कोष से स्वाभाविक रूप से ही अलग हो जाते हैं। ये मुण्डा-लोक-मानस में खिले हुए कमल नहीं हैं। ये ईसाई बन जानेवाले मुण्डाओं पर धर्म-प्रचार के लिए ऊपर से लादे हुए भजन हैं। लोक-मानस की हत्या करके उसके खँडहर पर स्थापित होनेवाले इस माया-भवन को हम लोक-साहित्य की संज्ञा नहीं दे सकते, ईश्वर की महिमा में गाये जानेवाले इन सुरीले भजनों के सृजन में, मिशनरियों के बाएँ कन्धे पर सवार पृथक्करण का षड्यंत्र रचनेवाले शैतान का हाथ है! ईश्वर की खोज में भटकनेवाले ये भजन स्वयं अपने ही घर का पता नहीं जानते। इन भजनों में छंद, लय, बाजों की ताल आदि सारी बातें बल-पूर्वक अलग कर दी गई हैं। और सब-कुछ कृत्रिम रूप से नई बनाई गई हैं। यह परिवर्त्तन इस बात का स्पष्ट प्रमाण है कि धर्म-प्रचार के पीछे इन भोले-भाले आदिवासियों को अपनी वास्तविक वार्त्ताओं से अलग करके विदेशी रंग में ढालने का कितना घृणित उद्देश्य छिपा हुआ था।

धर्म-निरपेक्षता की दुहाई देनेवाले भारतीय शासन की समक्ष में अब जाकर मिशनरियों की यह विदेश-सापेक्षता आने लगी है।

ईसाई बन जानेवाले मुण्डाओं को उनके हृदय में उठनेवाले नाना भावों को मिटाकर केवल धार्मिक भाव सिखाये गये। और इस अप्राकृतिक व्यापार द्वारा उन्हें बगुला भगत बनाने की कोशिश की गई। क्रिश्चियन भी मनुष्य हैं और प्रेम, विरह, मिलन, हर्ष, विषाद आदि भावों के बादल मानव-मात्र की तरह उनके हृदयाकाश में भी अपनी छटा दिखाते हैं। प्रकृति के सौन्दर्य और जीवन के घात-प्रतिघात उनके हृदय-सरोवर में भी लहरें पैदा करते हैं। किन्तु उन्हें केवल धर्म के 'बाइबलिकल' गीत ही गाने पड़ते हैं। इन धर्म-प्रचारकों की इस घृणित मनोवृत्ति की चर्चा करते हुए श्री आर्चर ने लिखा है कि "उस इंगलैंड की लोक-कविता में भी, जहाँ शतप्रतिशत क्रिश्चियन हैं, 'बाइबलिकल'-भाव कुछ ही प्रतिशत हैं।"[1]

और यहाँ की हालत यह है कि अपने जीवन में मानव की सभी भावनाओं के घात-प्रतिघात से भरे हुए क्रिश्चियन गीतों में केवल भक्त हैं।

और यही हाल शैली का भी है। उनसे वे राग, ध्वनियाँ और लय-ताल छुड़ा दिये गये जिन्हें उनके पूर्वजों ने हजारों वर्षों में भारत के पक्षियों के मधुर कलरव से, यहाँ के जंगलों की गाती हुई वायु से, यहाँ के नदी-निर्झरों के अविरल प्रवाह से सीखकर तथा उनके सरगम से गति लेकर बनाया था, जिनके मधुर हिंडोलों पर इनकी जाति ने बचपन की लोरी सुनी थी, जवानी की बाँसुरी बजाई थी, और बुढ़ापे के सुख-दुःखों की सनातन कहानी सुनी-सुनाई थी और उन्हें यूरोप की अपरिचित, कर्ण कटु और अप्राकृतिक रागिनियाँ जबरदस्ती सिखा दी गईं।

इस प्रकार प्रचार के उद्देश्य से बनाये गये इन कृत्रिम भजनों का लोक-साहित्य में कोई स्थान नहीं है।

प्रभाव और उपयोगिता--

मुण्डाओं के जीवन पर इन गीतों का बड़ा व्यापक और गहरा प्रभाव है। ये गीत उनके जीवन की सूखी धरती पर हरियाली की तरह छाये हुए हैं। इतने दुःखों और विपत्तियों के जीवन में गीत-नृत्य का होना इनके लिए बड़े सौभाग्य की बात है। ये गीत-नृत्य इनके प्राणों में शक्ति और हाथ पैरों में काम करने का बल भरते हैं।

सच पूछिए तो जीवन में जितना महत्त्व बुद्धि, कर्म तथा अन्य साधनों का है, उससे अधिक महत्त्व आनन्द और मनोरंजन का है। जैसे आध्यात्मिक जगत में साधन रूप सत् और चेतना रूप चित् से युक्त होकर भी प्राणी आनन्द के बिना पूर्णता नहीं प्राप्त करता, वैसे ही भौतिक जीवन में भी विभिन्न साधनों तथा मानसिक शक्तियों से पूर्ण होने पर भी आनन्द और मनोरंजन के बिना मनुष्य अपूर्ण है। जीवन को रसमय और सुखी बनाने के लिए मनुष्य की रागात्मक वृत्तियों की तृप्ति आवश्यक है। मनुष्य चाहे जितना भी ज्ञानी और कर्मठ हो; किन्तु इस तृप्ति के बिना उसमें जीवन के प्रति श्रद्धा और अनुराग नहीं पैदा होते। मनुष्य अपनी इस प्यास के लिए लाचार है। अच्छे साधनों के अभाव

---

१. डब्ल्यू. जी. आर्चर—मुण्डा-सांग्स्-भूमिका—पृ० २

में वह या तो बुरे साधनों से ही इस प्यास को बुझाता है या जीवन की डाल से मुरझाकर गिर जाता है। जब यह प्यास सात्विक होती है और पवित्र गंगाजल से बुझाई जाती है तब मनुष्य ब्रह्मानन्द को प्राप्त करता है और जब यह गन्दी प्यास पनालों में मुँह लगाती है तब तरह-तरह के अनैतिक व्यभिचारों का जन्म होता है। बीच की मंजिल मानवता की है।

मुण्डाओं के आनन्द और मनोरंजन की मंजिल यही है। यद्यपि यह मनुष्य की उच्चतम वृत्तियों का आत्मिक आनन्द नहीं है, किन्तु यह आनन्द निकृष्ट कोटि का भी नहीं है। यह मानवता का सामाजिक आनन्द है। यह ऐसा उत्तम मनोरंजन है जो समाज की मर्यादा के भीतर रहकर चलता है, जो किसी से छिपाने की वस्तु नहीं और जिसके लिए लज्जित होने की आवश्यकता नहीं।

मुण्डाओं के गीत-नृत्य की, भारत के अन्य सभ्य समाजों के गीत्य-नृत्य से, तुलना कीजिए। अन्य समाजों में गायक, नर्तक और अभिनेता समाज के समझे ही न जाते हैं। तात्पर्य यह है कि हमारे मनोरंजन के साधन वे वस्तुएँ हैं जिन्हें हम हीन समझते हैं और जिन्हें स्वयं करने में मर्यादा-भंग होने और लज्जित होने की बात है। वह मनोरंजन कितना निकृष्ट है जो घृणित समझी जानेवाली वेश्या के नृत्य से प्राप्त किया जाता है। किन्तु मुण्डा उन गीत-नृत्यों से मनोरंजन करता है जिन्हें अपनी बहन-बेटी के सामने भी छिपाने की आवश्यकता नहीं समझता और जिनमें उनको भी सम्मिलित करता है। यह मुण्डाओं की जातीय संस्कृति उनके लिए गौरव की बात है।

यह ठीक है कि इस संस्कृति में कुछ विकृति के अंश में सम्मिलित हो गये हैं। 'हँड़िया' और शराब वैसी ही प्रवृत्ति है। इनके प्रभाव उनके आनन्द और मनोरंजन को निम्नकोटि का बना देते हैं। किन्तु इसे मुण्डाओं ने जान-बूझकर नहीं किया है। अज्ञानता और गरीबी ने इन नशाओं का अवलम्ब लेने के लिए उन्हें बाध्य किया है। ये बुराइयाँ जिनके लिए मुण्डा निरीह और निर्दोष है और जिनका उत्तरदायित्व सभ्य समाजों पर है, उनके आनन्द और मनोरंजन के सांस्कृतिक तत्त्व की महत्ता को घटा नहीं सकतीं। जीवन में आनन्द और मनोरंजन के तत्त्वों को स्वीकार कर लेने के बाद हमें यह समझने में आसानी होनी चाहिए कि स्वस्थ और कल्याणकारी मनोरंजन वही है जो विकेन्द्रित और स्वावलम्बी हो। जीवन में यदि स्वावलम्बन का महत्त्व है तो यह नहीं हो सकता कि हम कुछ बातों में स्वावलम्बी और कुछ बातों में परावलम्बी रहें। और उससे भी खतरनाक बात यह होगी कि आनन्द के तत्त्वों का केन्द्रीयकरण हो जाय। कुछ लोग आनन्द का उत्पादन करें और बाकी लोग उपभोग करें। तुम 'काम करने का' कार्य करो और हम 'खाने' का कार्य करें, यह कार्य-विभाजन (डिवीजन ऑफ लेबर) मानव-संस्कृति की आत्मा को ही खतरे में डाल देगा। गीत-नृत्यों ने मुण्डाओं को स्वस्थ, स्वावलम्बी और विकेंद्रित आनन्द प्रदान किया है।

तात्पर्य यह कि मुण्डाओं के गीत-नृत्य उनकी मानसिक शक्तियों की कमी और जीवनयापन के साधनों के अभाव में भी उनके उस आनन्द को बनाये रखने में समर्थ रहे हैं, जिसके विना उनकी जाति की जिन्दगी खतरे में पड़ गई होती।

अध्येताओं के लिए—

इनके जीवन के अध्येताओं के लिए इन गीतों की उपयोगिता दूसरी ही है। हम इनके गीतों में इनके सामाजिक जीवन, मानसिक अभिरुचि, और भावनाओं-आकांक्षाओं को स्पष्ट रूप में देख सकते हैं। इन गीतों के माध्यम से हम जितना इनके निकट जा सकते हैं, उतना अन्य किसी साधन से नहीं; अन्य साधनों से हम इनका इतिहास जान सकते हैं। इनका जातीय, सामाजिक या धार्मिक विश्लेषण कर सकते हैं; इनके चरित्र और स्वभाव को पहिचान सकते हैं; किन्तु गीतों से हम इनकी अनुभूतियों को पहिचानते हैं। हम मुण्डा गीतों में मुण्डा का हृदय देखते हैं। मगर इन कविताओं का केवल साहित्यिक मूल्य ही नहीं ऐतिहासिक और सांस्कृतिक महत्त्व भी है।

किन्तु सबसे बड़ा उपयोग इन कविताओं का यह है कि जाति-धर्म-रूप-रंग आदि की भिन्नताओं को भेद कर छोटे-बड़े और सभ्य-असभ्य कहे जानेवाले विभिन्न मानव समुदायों के भीतर जो एक आत्मा और एक हृदय है, ये उसका दर्शन कराती हैं। इन लोक कविताओं से हमें पता चलता है कि रूप-रंग की ऊपरी चट्टानों के भीतर जीवन की एक ही निर्मल धारा बह रही है। और विभिन्नता के ऊपरी छिलकों के भीतर एक ही रस छलक रहा है। गीतों की आँच में पड़कर हमारे घृणा, नफरत और अलगाव-विलगाव के संस्कार जलकर भस्म हो जाते हैं और गीतों के गंगाजल में हमारे मन की मैल धुल जाती है। जिन वाह्य और कृत्रिम आवरणों के कारण हमें प्रकृत मनुष्य दिखाई नहीं देता, उन्हें भेदकर ये गीत मानव के वास्तविक रूप का दर्शन कराते हैं। गीत वह तीर्थ-स्थल है जहाँ युगों के बिछुड़े हुए मानव-मानव का मिलन होता है।

श्री रवीन्द्र नाथ ठाकुर के शब्दों में यदि सभी देशों के लोक-गीत संकलित किये जायँ और उनका तुलनात्मक अध्ययन हो तो यह प्रत्यक्ष होगा कि उनमें एक ही मन और एक ही हृदय छिपा है, जो मनुष्य मात्र में समान है।

और श्री वासुदेवशरण अग्रवाल के शब्दों में—"इन असंख्य लोकगीतों की आत्मा अभिन्न है। भाषा का भेद होते हुए भी गीतों में व्याप्त भारतीय मानव का हृदय उसके सुख-दुःख की अनुभूति, उसकी आशा और निराशा एक जैसी ही है।"

उपसंहार—

मुण्डाओं के ये प्रकृत-गीत उनकी जाति के लिए गौरव की वस्तु है। उन्हें इस बात का अभिमान होना चाहिए कि इतने महान दुःखों और विपत्तियों को भी उत्साहपूर्वक काट लेने के लिए उनकी जाति ने इतने निश्छल, निरीह और पवित्र साधनों का निर्माण किया है। सभ्यता के भड़कीले आवरणों की चकाचौंध में पड़कर उन्हें इन नैसर्गिक और निर्दोष परम्पराओं के लिए लज्जित नहीं होना चाहिए। यह लज्जित होने की प्रवृत्ति एक निकृष्ट कोटि की गुलामी है, जो अनेक अनर्थों को जन्म देती है और दूसरों की बहुधा बुरी बातों में ही रुचि पैदा कराती है। मनुष्य को ऐसी मानसिक स्थिति में डाल देनेवाली मार्मिक घड़ी एक प्रबल धारा के समान है, जिसमें उसके पैर जम नहीं पाते और एक आँधी के समान है, जिसमें पड़कर उसे दिग्भ्रम हो जाता है। शिक्षित हो रहे मुण्डाओं और उनके सच्चे शुभ-चिन्तकों को इस बात में सावधान होना चाहिए।

तेजी से बदलते हुए इस वैज्ञानिक युग में जहाँ कुछ लोगों का यह कहना ठीक नहीं है कि आदिवासियों को अपने-आप प्राकृतिक रूप से सुधरने दिया जाय, वहाँ अन्धाधुंध सुधार के नाम पर अप्राकृतिक प्रणालियों को अपना लेना भी ठीक नहीं। इससे जो सुधार होगा, वह कृत्रिम और अस्वस्थ होगा। निस्सन्देह वह हर सुधार अस्वस्थ होगा, जिसमें आदिवासियों के अपने स्वभाव, अपनी पृष्ठभूमि और अपनी मनोदशा का ख्याल नहीं करके सुधारक अपनी इच्छाओं और आदर्शों को अधिक महत्त्व देंगे।

अज्ञानता और गरीबी ये दो आदिवासियों के सबसे बड़े शत्रु हैं। निश्चय ही इन्हें मिटना चाहिए। किन्तु वे कैसे मिटें? क्या यह मानकर कि जंगल और पहाड़ ही इसके लिए जिम्मेवार हैं, इसलिए सारे आदिवासी तथाकथित शिक्षा और सभ्यता के लिए शहरों में बस जायँ? क्या इन जंगलों और पहाड़ों की सारी बातों को घृणित समझकर छोड़ दिया जाय और शहरों की सारी बातों को अपना लिया जाय या सभ्यता और शिक्षा की ज्योति इन जंगलों-पर्वतों में जलाई जाय? आखिर आदिवासियों को क्या चाहिए, ज्ञान और विद्या या नगरों की सभ्यता का मादक नशा—जिसे पीकर मानव आज अपनी नैसर्गिक अभिरुचियों को कृत्रिम सभ्यता के बाजार में बेच रहा है? और मानवता दूसरों से स्वतंत्र होकर भी अपने ही बनाये हुए गुलामी के माया-जाल में दम तोड़ रही है या विद्या की वह पावन ज्योति जिसमें उनके जंगल रसमय हो जायँ, पहाड़ों में प्रेम की वंशी गूँज उठे, और उनके खेत-खलिहान जीवन की समृद्धियों से भर जायँ?

आदिवासियों के पिछड़ेपन के लिए ये जंगल और पहाड़ दोषी नहीं हैं और गाँवों तथा खेत-खलिहानों में विकेन्द्रित इनकी सभ्यता पर इसका उत्तरदायित्व नहीं। इन्होंने तो बहुत दूर तक इनकी रक्षा ही की है। वन-पर्वतों के प्राकृतिक जीवन में सभ्यता और संस्कृति के ऐसे नैसर्गिक तत्त्व निहित हैं, जिनको लेकर ही भविष्य की सारी मानवता निर्मित होगी। यह ठीक है कि वे तत्त्व-ज्ञान की किरणों के अभाव में विकसित नहीं होने पाये। अज्ञानता के हिम-तिमिर में उनके अंकुर दुबके पड़े रहे; किन्तु अब समय आ गया है कि ज्ञान की उष्ण किरणें उन्हें विकसित और पल्लवित-पुष्पित करेंगी, उनकी शीतल छाया में मानवता प्यार की वंशी बजायेगी और उनकी पावन गन्ध में सुख-चैन की साँस लेगी।

आज की सभ्यता को अपने इन विकृत प्रयोगों के रास्ते, बेकार बड़ी लम्बी दूरी तय करने के बाद, फिर पीछे लौटकर संसार को मिटने से बचाने के लिए मानवता की जिस मंजिल पर पहुँचना पड़ेगा, वह पवित्र मंजिल आदिवासियों के लिए अपेक्षाकृत निकट है। जंगलों और पहाड़ों की संस्कृति को जहाँ केवल आगे बढ़ना है, वहाँ शहरों की सभ्यता को अपने भ्रष्ट-पथ को छोड़कर ठीक राह पकड़ने के लिए काफी पीछे लौटना भी है। एक दिन हमें जिस मंजिल पर जाना है, मानवता का वह अनागत स्वप्न ऐसी व्यवस्था का सृजन करेगा, जिसमें शासन, न्याय, अर्थ-व्यवस्था, कला, संस्कृति, आनन्द और मनोरंजन सारी बातें विकेन्द्रित और स्वावलम्बी होंगी। जहाँ वायु में आज शोषण और प्रपीड़न की विषाक्त ज्वाला भरी हुई है, वहाँ सबके समान परिश्रम के स्वेद-कण उसे शीतल बनाकर रक्खेंगे। मानव-मुक्ति के उसी रामराज्य में एक दिन मानवता को पहुँचना है।

आदिवासियों ने आनन्द और मनोरंजन के विकेन्द्रित और स्वावलम्बी तत्त्व को गीत-नृत्य के रूप में पहले से ही पा लिया है। उनके जीवन का स्तर जैसे-जैसे ऊपर उठेगा, इन मनोरंजनों का स्तर भी उठेगा। और यदि, वे कहीं इस तत्त्व को भूल गये तो जंगलों की पत्तियाँ मुरझा जायँगी, पहाड़ों के झरने सूख जायँगे, वनों में पंछियों के पंख झड़ जायँगे और वृक्षों की छाया में बाँसुरी के स्वर मौन हो जायँगे। जब आदिवासियों के जीवन से प्यार का स्रोत सूख जायगा और उनके कंठों में गीत की टेर सो जायगी तब इन जंगलों-पहाड़ों में क्या शेष रह जायगा ?

नया युग मुण्डाओं को ज्ञान-कर्म और आनन्द के स्वर-लोक में जगा रहा है !

द्वितीय खण्ड

गीत

[सानुवाद]

जदुर-गीत

•

सुड़ाकन दारू चिगो
अलाकन - बा
अलाकन - बा लेका
डिंडा सोमय—

नव-पल्लवित वृक्ष अथवा खिला हुआ फूल !
जवानी का समय खिले हुए फूल के समान है।

*

होरा रे साराजोम बा
लेसेकेन·······लेसेकेन !
डारे रे हेन्दे नपायु
मोचोकेन मोचोकेन !

रास्ते में साखू का फूल लहरा रहा है !
मार्ग में कुँवारी लड़की मुस्कुरा रही है !

१

सिंगी लेका सिरिमारे जुलेतन प्रभु
ओते सिरिमाहोम मरेसल तदा
ओतेरे हुड़िङ मरंग सोबेन को
अमगा नुतुमको हियातिंगतना

कजी मेने गेहो मेन: मेया
मेन्दो हो कइङ ले ले दड़ी
दिसुम होड़ो को अयर तयोम
अमग: मंडागे को जारे तन

बुरु दिरी हटा हुटु
अइङ होइङ दंदागिड़ीजन
बुरु जनर सुड़ा संगेन
अइञ: जो राड़े जन

अयर रेदो अयरिङ में
गड़ा परोम दिसुम टुण्डू ते
दोला दो दोलाइङ में
इचा बा रासी चेपे: ते।

हे सूरज के समान आकाश में चमकनेवाले प्रभो!
तुमने पृथ्वी और आकाश को प्रकाशित कर दिया है।
धरती के सभी छोटे-बड़े (जीव) तुम को याद करते हैं।
तुम केवल कहने भर के लिए हो (लेकिन), आँख से दिखाई नहीं देते।
दुनिया के सभी आदमी कतार बाँधकर तुम्हारे ही पदचिह्नों पर चल रहे हैं।
हमको पहाड़ के ऊबड़-खाबड़ पत्थरों को (देखकर) आश्चर्य होता है।
घाटी के पेड़ों की कोमल पत्तियों को (देखकर) मेरा मन सन्तुष्ट होता है।
अगर हमें ले चलना है तो नदी के उस पार, देश की सीमा तक, ले चलो।
अगर हमें ले चलना है तो ईचा फूल का रस चूसने के लिए ले चलो।

२

सोतो जुगु कले जुगु
सोतो जुगु तैंकेना
सोतो जुगु कले जुगु
कले जुगु दवरदकन

सोतो जगु तैंकेनरे
बयर होको टोण्डोमकेन
कले जुगु दवरदकन
सिका होको नोले तन

बयर होको टोण्डोमकेन
दिसुम हो को टेकन लेद्
सिका होको नोले लन
दिसुम होको चेचः केद

सतयुग और कलियुग !
(पहले) सतयुग था ।
सतयुग और कलियुग !
(अब) कलियुग आ गया ।
(जब) सतयुग था (उस समय) लोग
रस्सी बाँधा करते थे । (रस्सी की
गाँठों से हिसाब जोड़ा करते थे ।)
(अब) कलियुग आ गया ।
(अब) लिखकर हिसाब करते हैं ।
(जब तक लोग) रसी बाँधा करते थे ।
(तब तक) दुनिया को टिकाये हुए थे ।
(जब लोग) लिखने लगे,
(तब) देश को बरबाद कर दिया ।

३

सुड़ा कान दारु चिगो अलाकान बा
अलाकान बा लेका डिन्डा सोमाए

सुअम जान कोतो चिगो इसिनजान इली
सुअम जान कोतो लेका बुड़िया हड़ाम

अलाकान बा लेका डिन्डा सोमाए
एनाची सुगाड़ोमम रासिका तना
सुअम जान कोतो लेका बुड़िया हड़ाम
एनाची अबेनेबेन उड़ुः तना

एनाची सुगाड़ाम रासिका तना
काचीम लेले जदा गोसो तना
एनाची अवेनेबेन उड़ुः तना
कारेबेन नमेयारे सीदा जोनोम

नई कोंपलोंवाला वृक्ष अथवा खिला हुआ फूल ! जवानी का समय खिले हुए फूल के समान है। वृक्ष पर उगा हुआ बंभा अथवा पकी हुई हड़िया[1] बुढ़ापा वृक्ष के बंभे के समान है।

जवानी का समय खिले हुए फूल के समान है। हे सुन्दरी, इसीसे क्या तुम प्रसन्न हो रही हो ? बुढ़ापा वृक्ष के बंभा के समान है। हे बूढ़े-बूढ़ियो, इसीसे क्या तुम चिन्ता करती हो ?

तुम उसके लिए क्यों प्रसन्न हो रही हो ? क्या नहीं देखती कि फूल मुरझा रहा है ? तुम लोग उसके लिए क्यों चिन्ता कर रही हो ? पहिले का समय फिर नहीं आता !

४

अइंञागः सोमय बोले तइ केन रेदो
पीतल टटी रेदो मानी सुनुम
अइञागः नुसाड़ा परिया रे
गमछा किचिरिरे ताबेन पीटोम

अइञागः सोयम सेनोः जना
पीतल टटी दोरे पोवः जना
अइञागः नुसाड़ा परिया चबा जना
गमछा किचिरि बोले केचः जना

1, हड़िया—चावल की शराब

हियातिगं मोनिङारे चकातिगं सनाइं
पीतल टटी बोले पोवः जना
हियातिगं मीनिङारे चकातिगं सनाइं
गमछा किचिरि बोले केचः जना

हियातिंगरेओ बोले चकातिंग रेओ
कारे नमेयारे सीदा सोमय
हियातिंग रेओ बोले चकातिंग रेओ
कारे नमेयारे डिण्डा सोमए

जब मेरा समय था तब (मैं)
पीतल के कटोरे में सरसों का तेल लिये फिरता था
जब मेरी जवानी थी तब (मैं)
कपड़ों की गठरी बनाये फिरता था ।
जब मेरा समय बीत गया (तब)
पीतल का कटोरा फूट गया ।
जब मेरी जवानी समाप्त हो गई (तब)
सब कपड़े लत्ते फट गये ।
मेरे मन में अफसोस और दुःख हो रहा है (कि)
पीतल का कटोरा फूट गया ।
मुझे सोच और चिन्ता हो रही है
(कि) कपड़े लत्ते फट गये ।
तुम दुख या अफसोस जो कुछ करो,
बीता हुआ समय लौटकर नहीं आयगा ।
तुम सोच या चिन्ता जो करो,
गई हुई जवानी फिर वापस नहीं होगी ।

५

निकु दोगा मोदे चण्डुः होने कोचि
निकु दोगा बराबरी गेया
निकु दोगा बरे चण्डुः गाड़ा कोचि
निकु दोगा सरासरी गेया
निकु दोगा मोदे चण्डु, होने कोगे
निकु दोगा बराबरी गेया

निकु दोगा बरोचण्डु: गाड़ा कोगे
निकु दोगा सरासरी गेया
निकु दोगा मोदे पिड़ी हुन्दी बादो
निकु गेगा बा चबा केदा
निकु दोगा बरे पिड़ी साराजोम बा
निकु गेगा डाली नियर केदा

क्या ये एक ही महीने के बच्चे हैं
कि (सब के सब) बराबर हैं ।
क्या ये एक ही महीने के लड़के हैं
कि (सब के सब एक समान हैं ?
(हाँ) ये एक ही महीने के बच्चे हैं
(इसलिए सब) बराबर हैं ।
हाँ ये एक ही महीने के लड़के हैं
(इसलिए सब) एक समान हैं ।
इन्होंने एक समूचे मैदान के हुन्दी फूल
(तोड़कर-खोंसकर) समाप्त कर डाले ।
इन्होंने दो पूरे मैदानों के साखू फूल,
(खोंसकर) खतम कर दिये ।

६

चिमिन चिमिन गोम डिण्डा लेदा
असकल लेका गोम खदोड़ीन जन
चिमिन चिमिन गोम डंगुवा लेदा
किकिर लेका गोम डबुरान जन
असकल लेका गोम खदोड़ीन जन
जुलेतन सेंसेगेल टेम खदोड़ीन जन
किकिर लेका गोम डबुरान जन
इकिर द:गे रेमे डबुरान जन
एगम अपुम बंको लेका
जुलेतन सेंगेलरेम खदोड़ीन जन
होनेम बारेम बंको लेका
इकिर दगेरेम डबुरान जन

एगइं अपुइं मेना कोरे बोले
उःरि लेका चिको हरे बेड़ाइं
होने बारें मेनः कोरे बोले
मेरोम लेका चिकी तिगेबेड़ाइं

"तुम्हारी जवानी कितनी-कितनी थी
(कि तुम) आसाकल पच्छी की तरह कूद पड़े !
तुम्हारी तरुनाई कितनी-कितनी थी
(कि तुम) पनडुब्बी की तरह डूब चले !
तुम आसाकल (पच्छी) की तरह कूद पड़े,
तुम धधकती हुई आग में कूद पड़े !
तुम पनडुब्बी की तरह डूब चले !
तुम गहरे पानी में डूब चले ।
तुम बिना माँ-बापवाले की तरह
धधकती आग में कूद पड़े !
तुम बिना भाई-बहन वाले के समान
गहरे पानी में डूब चले !"
"अगर माँ-बाप होते तो भी क्या वे
हमको बैल के समान हाँकते फिरते !
अगर भाई-बहन होते तो भी क्या वे
बकरी की तरह (हमारे गले में) रस्सी बाँधे फिरते !

७

नेया दोगा चिकन मँदुकम
नेया दोगा चोपा सिदा जन
नेया दोगा चिकन सराजोम
नेया दोगा मोय तयोम जान

नेयादोगा फागु मँदुकन
नेयादोगा चोपा सिदा जन
नेयादोगा चैंती सराजोम
नेयादोगा मोय तयोम जान

नेयादोगा चोपा सिदा जन
नेयादोगा पसी कटाते

नेयादोगा मोय तयोम जन
नेयादोगा पुतम लचोते

"माँ यह कैसा महुआ है जो पहले ही फूल गया ?
माँ यह कैसा साखू है जिसमें देर से कली निकली ?"
"बेटा, यह फागुन का महुआ है, इसीलिए यह पहले फूला।
बेटा, यह चैती साखू है, इसीलिए इसमें पीछे से कली निकली"
"माँ, यह पहले फूला है (इसलिए) यह बिल्ली की पैर के समान दिखाई देता है।
माँ, इसमें पीछे से कली निकली है, (इसलिए) यह पेडुकी के ठोर के समान है।

८

बा बादी रे नाले
बा बादी रे हो
सुड़ा बादी रे नाले
सुड़ाबादी रे

बा बादी रे नाले
मीरुबा हो
सुड़ा बादी रे
नाले कारे डाली

मीरु बा नाले
ओटाङो: लेका
कारे डाली नाले
दोपालियो लेका

हे मित्र। फूलों की वाटिका में (और) कोपलों के वन में,
फूलों की वाटिका में मीरु फूल (हैं) (और) कोपलों के वन में कारे की कोंपलें (हैं)
मीरु फूल मानों उड़ रहे हैं और कारे की कोंपलें मानो लहरें मार रही हैं।

होरा रे जुड़ी दारु लूदगवा
ओकोए मईना बा पेटे केद्

डारे रे पन्ती दारु अटल बा
चिमय मइना डाली चंगाड़ा केद्
सेन्देरा को जिलिब जिलिबा
सेन्देरा को बा पेटे: केद्
कारेंगा की जोलोब जोलोबा
कारेंगा को डाली चंगाड़ा केद्
सेन्देरा को बा पेटे: केदा मईना
चुटि रेकी पेटे: केदा
कारेंगा को डाली चंगाड़ा केदा मईना
सुबा रेको चंगाड़ा केद्
सेन्देरा को पेटे: केदा मईना
चुटि कोतौ गोसो जान
कारेंगा को डाली चंगाड़ा केदा मईना
सुबा धाड़ा मैला जान

रास्ते में एक जोड़ा जो लूदम फूल है, (उस फूल को) ऐ बेटी, किसने तोड़ लिया !
रास्ते में अटल फूल की जो कतार है (उसके फूल को) हे बेटी, किसने छिनगा लिया ?
(फूल को) चमकते हुए शिकारियों ने तोड़ लिया ?
(फूल को) चमकते हुए अहेरियों ने छिनगा दिया ?
शिकारियों ने जो फूल को तोड़ा, हे बेटी ! चोटी ही से तोड़ लिया ।
अहेरियों ने जो डाल को छिनगा दिया,
सो हे बेटी ! नीचे से ही छिनगा दिया !
शिकारियों ने (जो फूल को) तोड़ा,
हे बेटी ! उसकी फुनगी मुरझा गई ।
अहेरियों ने जो छिनगा दिया,
हे बेटी, उसका तना कुम्हला गया ।

१०

हतु तलारे गातिङ हुन्दी वा
हय गातिङ सोना हुन्दी वा
दिसुम तलारे संगइ जम्बिरा
हय संगइ रुपा जम्बिरा

गुतु लेकामे गातिङ हुन्दी बा
हय गातिङ सोना हुन्दी बा
गलङ लेकामे संगइ जम्बिरा
हय संगइ रूपा जम्बिरा

मोदे चरिः दो गातिङ हुन्दी बा
गातिङ-ओमइङ मे
बरे सुलम दो सगइ जम्बिरा
सगाइ ङ-चेदइङ में

हे प्रिय, गाँव के बीच में हुन्दी फूल है,
हुन्दी फूल सोना के समान है।
हे प्रिये, देश में जम्बिरा फूल है,
जम्बिरा फूल रूपा के समान है।
हे प्रिय, सोना के समान हुन्दी फूल!
हुन्दी फूल को गूथ लो।
हे प्रिय, रूपा के समान जम्बिरा!
जम्बिरा का हार बना लो।
हे प्रिय, हुन्दी फूल का एक गुच्छा
(हमको) अवश्य देना।
हे प्रिय, जम्बिरा फूल का दो हार
(हमको) अवश्य देना।

११

बा बदीरे हले बा बदी रे हो।
डाली बदीरे हले डाली बदीरे॥
बा बदीरे चीकन बा।
डाली बदीरे हले मेरे कोन डाली॥
बा बदीरे हले सराजोम बा हो।
डाली नदीरे हले सुड़ा संगेन॥

हे (मित्र)! फुलवारी में…!
हे (मित्र)! बागीचे में…!
हे (मित्र)! फुलवारी में कौन-सा फूल है!

हे (मित्र) ! बागीचे में कौन-सा प्रसून है ?

हे (मित्र) ! फुलवारी में साखू का फूल है !

हे (मित्र) ! बागीचे में (नई) कोंपलें हैं !

१२

होरा-होराते-सोना हुन्दी बा
दइगोरेंइ-सेन्देरा नमा ना
डारे-डारेते रूपा जम्बिरा
दइगोरेइं करेंगा न माना

दइगोरे मोदे सुताम बारे सुताम
दइगोरे गुतु लेकामे
दइगोरे-मोदे चरिः बारे चरिः
दइगोरे-गलङ-लेकामे

कइञा हो गतिङो बंगाइया
कइञाः हो कइं गुतु आ
कइञाः हो सगाङो बंगाइया
कइञाः हो ककइं गलङा

रास्ते में सोना के समान हुन्दी फूल है,
हे बहन, मैं (उसको) तोड़ दूँगा ।
मार्ग में रूपा के समान जम्बिरा फूल है,
हे बहन, मैं उसको गिरा दूँगा ।
हे बहन, एक दो हार
हे बहन, गूथ लो !
हे बहन एक दो गुच्छा,
हे बहन, गुच्छा बना लो !
नहीं मैं नहीं गूथूँगी,
नहीं, (क्योंकि) मेरा प्रेमी नहीं है ।
नहीं मैं गुच्छा नहीं बनाऊँगी
नहीं (क्योंकि) मेरा साथी नहीं है ।

१३

हाय गातिङरे गातिङ हुन्दी बा
हाय गातिङ सोना हुन्दो बा
हाय सगाइंरे सगाइं जम्बिरा
हाय सगइं रूपा जम्बिरा

हाय गतिङ उराय बराय:
हाय गातिङ सोना हुन्दी बा
हाय सगाइं तारे तासेया
हाय सगइं-रूपा जम्बिरा

हाय गतिङ गुतु लेका मे
हय गतिङ सोना हुन्दी बा
हय सगाइं गलङ लेका में
हय सगइं रूपा जम्बिरा

हे सखी, हुन्दी फूल (को देखो)
हे सखी, सोना के समान हुन्दी फूल !
हे सखी, जम्बिरा फूल (को देखो)
हे सखी, रूपा के समान जम्बिरा फूल !
हे सखी, ताजा फूला है,
हे सखी, सोना के समान हुन्दी फूल !
हे सखी, नया खिला है,
हे सखी, रूपा के समान जम्बिरा फूल !
हे सखी, हुन्दी फूल को गूथो
हे सखी, सोना के समान हुन्दी फूल !
हे सखी, जम्बिरा फूल को गूथो,
हे सखी, रूपा के समान जम्बिरा फूल !

१४

बुरु रेदो सेंगेल
निरे मइना निरेमे
खनची गड़ा होयो दुदुगार
नोजोर मइना नोजोर मे

निर मइना निरे मे
नेंगाम चोवा लो तना
नोजोर मइना नोजोर मे
अपुम ओड़ा बले तना

नेंगाम चोवा लो तना रे
होरा होराम नकी सुपिदा
अपुम ओड़ा बले तनरे
डारे-डारे हुदूमा पएला

पहाड़ पर आग (जल रही) है,
भागो बेटी, भागो !
काँची नदी में आँधी (आ रही) है,
भागो बेटी, भागो !
भागो बेटी, भागो !
तुम्हारी माँ का घर जल रहा है,
भागो बेटी, भागो !
तुम्हारे बाप का घर आँधी उड़ा रही है,
तुम्हारी माँ का घर जल रहा है,
(और तुम) रास्ते-रास्ते बाल सँवारती फिरती हो।
तुम्हारे बाप का घर बरबाद हो रहा है,
और तुम रास्ते-रास्ते आँचल फहराती फिरती हो।

१५

दः अगु तुड़ी रे ललिता
लेलाद मेया या ललिता
तीरे दो सबाना ललिता
रंगा रे-रुतु

तिरे दो सबाना ललिता
रंगा रे रुतु ललिता
कोदोम सुबा रे ललिताम्
ओरोङ - तना

हे ललिता, पानी लाते समय
हे ललिता, उसने (तुमको) देखा था ।
अपने हाथ में हे ललिता !
वह लाल वंशी पकड़े हुए हैं ।
हे ललिता, उसके हाथ में,
हे ललिता, लाल वंशी है ।
हे ललिता, कदम्ब वृक्ष के नीचे
वंशी बजा रहा है ।

१६

अलङा दिसुम रेलं हरा मता लेना
मोदे रे गतिङलङ इनुङ केना
जुड़ी जुड़ी होलं सेने बेड़ाए
पन्ती रे सगाइङलङ दूबे केना

चिकन काजी बोलेम आयुम लेदा
हड़ेद सुकु लेकम हड़देन जना
अमागा मण्डा गेहोइं चपद् तनिः
मेन्दो दुबीरः दुम्बू लेकम रिकाकिङा

चम्पा बा तिम्बुरुब जी रड़ेः तनिः
काहोइं हड़दाइं सिबिल गैया
चिलका ए मेन्ते होइं नेका केना
मेन्दो जीरेम केटेः केदा

हम लोग अपने देश में एक साथ बढ़े ।
और एक साथ हे प्रिय, हम लोग खेले ।
साथ-साथ हमलोग घूमें-फिरे,
(और) साथ-साथ बैठते रहे ।
(लेकिन) अब तुमने ऐसी कौन-सी बात सुनी
(जो) तीते कद्दू के समान कड़ुवे बन गये ।
मैं तुम्हारे ही पीछे चलनेवाली हूँ ।
(लेकिन) तुमने (मुझे) कतवार की तरह कर दिया,
(मुझ से घृणा की) ।

हे चम्पा ! फूल की गन्ध की तरह हृदय को
आनन्द देनेवाली,
मैं कड़ुआ नहीं हूँ मीठा हूँ।
तुम पर क्या प्रभाव पड़ेगा, यही देखने के लिए मैंने बहाना किया था,
लेकिन तुम सब-कुछ जान लेती हो।

१७

राबंग-तयो मेतेम-हिया कना
राजा-रानी-लेकम सम्पोड़ा कना
इसु दिना-तेइंङ उड़ु केना
मेन्दोम-मुलु: लेना बाँहा चण्डु:

पुरना पण्डु-सकम नोचो केते
नवा-सुड़ा-साड़ेम नोमे तदा
बिरते दारु कोइंङ लेलउ केना
मोएं-तना-वातना जोओतना

हरीयली अर: सुड़ा-पोड़ि: लेका
चिकान-सुनुमेगोम-गोसोवा कदा
बिरकोरे-बा बुगिन-सुगड़ा सोअम
कुड़म-बितारेरे-गुम्बराव तना

बिर दारु सुबारे राम सोम्बदाकना
सिरीमारे सिंग बोंगा जोवर तना
बा-भले-मेन्ते गोड़े रासिका-तना
तरा-कोतो-सराजोम वा असीतना

जाड़े के बीत जाने पर तुम आये हो।
तुम राजा-रानी के समान सजे हो।
मैं बहुत दिनों से (तुम्हारी) चिन्ता (प्रतीक्षा) कर रहा था।
मगर आज (जाकर) चैत का चाँद उगा।
पुरानी पीली पत्तियाँ झाड़कर—(तुमने)
नई कोपलों की साड़ी पहन ली।
मैं जंगल के वृक्षों की कली लगते,
फूलते और फलते हुए देखता आया।

(तुम्हारी) हरी और लाल कोंपलें चमक रही हैं।
तुमने कौन-सा तेल लगा लिया है ?
जंगल के सुन्दर फूलों की सुगन्ध
(मेरी) छाती में घूम रही है।
'राम' वन के वृक्ष के नीचे झुका हुआ है
(और) आकाश के देवता को प्रणाम कर रहा है।
सरहुल मनायेगा, यह सोचकर प्रसन्न हो रहा है।
और साखू के फूलों की एक डाली माँग रहा है।

१८

एलारे जुड़ीरेन मिरुकिन,
एलारे हड़ा गुन बेन।
एलारे जोतारेन कारे किन,
एलारे नोसोरेन बेन॥

एलारे निलेमा सुतामेते,
एलारे हड़ा गुन बेन।
एलारे बदीना बयारते,
एलारे नोसो रेन बेन॥

मरेहो टोन्डोम-टोन्डोमेते,
मरेहो हड़ा गुन बेन।
मरेहो कुतम कुतमेते,
मरेहो नोसोरेन बेन॥

एलारे निलेमा गुतामे दो,
एलारे सिदे जजन।
एलारे बदिमा बयरे दो
एलारे रोचोद जन॥

हे मीरु की जोड़ी, उतर जाओ।
हे कारे की जोड़ी, उतर जाओ।
हे (मीरु की जोड़ी), नीले सूत की सहायता से उतर जाओ।
हे (कारे की जोड़ी), बादामी रस्सी की सहायता से उतर जाओ।

है (!) उतरते-उतरते नीला सूत टूट गया ।
है (!) उतरते-उतरते बादामी रस्सी टूट गई ।
चलो नीले सूत को फिर से जोड़ लो ।
चलो बादामी रस्सी को फिर से जोड़ लो ।

१६

सोना लेकन दिसुमा लिपी
ओकोरेम लेलादा लिंपी
रूपा लेकन गमाया करे
चिमयरेम चिनाद्

सोना लेकन दिसुमा लिपी
बियुर तनाया लिपी
रुपा लेकन गमाया करे
सेकोर तना

चारेका लेकाया लिपी
बियुर तनाया लिपी
रेमटा लेकाया करे
सेकोर तना

हे लिपी, सोना के समान देश
हे लिपी, तुमने कहाँ देखा ?
हे कारे, रूपा के समान देश
हे कारे, तुमने कहाँ देखा ?
हे लिपी, (जो) सोना के समान देश (है)
घूम रहा है ।
हे कारे (जो) रूपा के समान देश (है)
घूम रहा है ।
हे लिपी ! सोना के समान देश
चरखा के समान घूम रहा है ।
हे लिपी, रूपा के समान देश
रहट के समान घूम रहा है ।

२०

जेटे सिंगी ओते लोलोरे
ओको दारु कगे उरुड़
जरगीदः जुरुकुण्डु रे
ओको चेड़े कगे ओटांङो

जेटे सिंगी ओते लोलोरे
किता दारु कगे उरुड़
जरगीदः होयो गमारे
लिटिया चेड़े कगे ओटांङो

किता दारु सिले सिले
किता दारु कगे उरुड़ु
लिटिया चेड़े टियुल टियुल
लिटिया चेड़े कगे ओटांङो

जेठ की गर्मी में (जब) धरती तप जाती है,
(तब) कौन पेड़ नहीं झड़ता ?
बरसात की मूसलधार वर्षा में
कौन पक्षी (हवा के झोंके में) उड़ नहीं जाता ?
जेठ की गर्मी में (जब) धरती तप जाती है,
(तब) खजूर का पेड़ (है जो) नहीं झड़ता।
बरसात के तेज आँधी-पानी में,
लिटिया पक्षी नहीं उड़ता !
मरमर करता हुआ खजूर का पेड़,
नहीं झड़ता।
फुरफुर करता हुआ लिटिया पक्षी
नहीं उड़ता।

२१

नोकोरेम लेलादा लिपी दिसुमादो बियुर तना
चिमय रेम चिनादा लिपी गमाया दो सेकोर तना

डड़ी दः रेइ लेलादा दिसुमादो बिपुर तना
सिद् दः रेइ चिना लेदा जमाया दो सेकोर तना

दिसु मादो बियुरे तना चर्खा लेका गे
गमाया दो सेकोर तना रेमटा लेकागे

हे लिपी, तुमने कहाँ देखा है कि देश घूमता है ?
हे लिपी, तुमने कहाँ देखा है कि देश चक्कर करता है ?
हे लिपी, मैंने देश को डाड़ी के पानी में
घूमते देखा है।
हे लिपी, मैंने देश को झरने के पानी में
चक्कर काटते देखा है।
देश चर्खा के ही समान घूमता है।
देश रहट के ही समान चक्कर काटता है।

२२

हाय गातिङ रे गतिङ हुन्दी बा
हाय गातिङ सोना हुन्दी बा
हाय सगाइंग रे सगाइंग जम्बिरा
हाय सगाइंग रूपा जम्बिरा

हाय गातिङ उराय बरायाः
हाय गातिङ सोना हुन्दी बा
हाय सगाइऊ तड़े तासेया
हाय सगाइङ रूपा जम्बिरा

हाय गतिङ गुतु लेकामे
हाय गातिङ सोना हुन्दी बा
हाय सगाइँग गलंङ लेकामे
हाय सगाइँग रूपा जम्बिरा

हे प्रिय, यह हुन्दी फूल।
हे प्रिय, हुन्दी फूल सोना के समान है।
हे प्रिय, यह जम्बिरा,
हे प्रिय, जम्बिरा रूपा के समान है।
हे प्रिय, यह सोना के समान हुन्दी,

हे प्रिय, फूलों से लदा है।
हे प्रिय, यह रूपा के समान जम्बिरा,
हे प्रिय, फूलों से भरा है।
हे प्रिय, (यह, जो) सोना के समान हुन्दी फूल है
हे प्रिय, (उसे) गूँथ लो।
हे प्रिय, (यह जो) रूपा के समान जम्बिरा
हे प्रिय, (उसका) गजरा बना लो।

२३

उलाटी-पलाटी गोसाई
उलाटी-बहाया गोसाइ
उलाटी पलाटी या गोसाइ
पालाटी-डालीया गोसाइ

ओकोरेम-लेलादा गोसाइ
उलाटी बहाया गोसाइ
चिमयरेम-चिनादा गोसाइ
पालाटी डालीया गोसाइ

उलाटी बहाया गोसाइ
बिउर तनाया 'गोसाइ
पालाटी डालीया गोसाइ'
सेकोर तनाया गोसाइ

हे गुसाई ! वह अलाटी और पलाटी !
हे गुसाई ! वह अलाटी का फूल !
हे गुसाई, वह अलाटी और पलाटी
हे गुसाई ! वह पलाटी का फूल !
हे गुसाई ! अलाटी का फूल तुमने कहाँ देखा है ?
हे गुसाई ! पलाटी का फूल तुमने कहाँ देखा है ?
हाँ गुसाई ! वह घूमनेवाला अलाटी का फूल
हाँ गुसाई ! वह घूमनेवाला पलाटी का फूल !

२४

नेया दोगा नेया दो
चिकान दारू
नेया दोगा नेया दो
मेरे कौम नाड़ी

नेया दोगा नेया दौ
सिंदुरी दारू
नया दोगा नेया दो
कजोड़ा-नांड़ी

आलोपे उदुबेंया
सिंदुरी-दारू
आलोपे चुण्डुलेया
कजोड़ा-नांड़ी

अलं जोका जुड़ी रेलं
सिंदुरी तेया
अलंङ जोता रेलंङ
कजोड़ा तेया

यह कौन-सा वृक्ष है ?
यह कौन-सी लता है ?
यह सिन्दूर का वृक्ष है !
यह काजल की लता है !
इस सिन्दूर के वृक्ष को
(किसी को) नहीं बतावें !
इस काजल की लता को
उंगली नहीं दिखावें !
जब हम दोनों शादी करेंगे
तो सिन्दूर लगावेंगे !
जब हमारा विवाह होगा
तब (इसी से) काजल करेंगे ।

२५

बुर रेमा चिरे टिकुरारेमा
काजि तेगे होइं आयुममेया
गाड़ा रेमा चिरे जोबेला रेमा
बांकड़ा तेगे होइं आतेनमेया

काजि तेगे होइं आयुम मेया
गातिङ लेका होइं आयुममेया
बांकड़ा तेगे होइं आतेन मेया
सोंगोती लेका होइं आतेन मेया

सोंगोती लेका होइं आयुम मेया
एलारे गतिङ रेलं जगर कोआ
पिरीत लेका होइं आतेन मेया
एलारे सांगाइंग रेलं लापन्दा कोआ

एलारे रे गातिङ रेलं जगर कोआ
गति सोंगोतिलं जगर कोआ
एलारे सगाइं एलं लापन्दा कोआ
हिरिती पिरीतिलं लापन्दा कोआ

तुम पहाड़ पर हो या किसी टीले पर हो
(वहाँ से केवल) तुम्हारी आवाज ही सुनाई देती है।
तुम नदी में हो या किसी दलदल में हो
(वहाँ से केवल) बोली ही सुनाई देती है।
(उससे तुम) प्रियतम के समान जान पड़ते हो।
तुम प्रियतम जैसे लगते हो
हे प्रिय, आओ हमलोग बातचीत करें
तुम प्रिय, जैसे जान पड़ते हो
हे प्रिय, आओ हम लोग हंसें-बोलें
आओ प्रिय, हमलोग प्रिया और प्रियतम
के समान बातें करें।
आओ प्रिय, हमलोग प्रिय और प्रियतम की
तरह हंसें-बोलें।

२६

पिड़ी पिन्दार कोदोम बा चेड़े
ओको कोरे बोलेम अड़ागुन जन
गाड़ा जोवेला रे गाहड़ा पुतम
चिमय कोरे बोलेम नोसोरेन जन

हातु लतर रे डाड़ी दगे रे
डाड़ी दगे रे हड़ागून जन
झरिमा रेदो हो सुइलं दगे
सुइले दगे रे नोसोरेन जन

डाड़ी दगेरेम अड़ागून रेदो
मूसिग रे ओ चेड़ेइं आटामेया
सुइले दगे रेम नोसोरेन रे दो
वरासींग रे ओ चेड़ेइं जुड़ा अमेया

हे टांड़ में रहने वाले दोवा पक्षी !
तुम कहाँ पर उतरते हो ? (गरुड़ा)
हे नदी की तराई में रहने वाले गरुड़ा पंडुक !
तुम कहाँ पर उतरते हो ?
क्या तुम गाँव के नीचे डाड़ी के पास के पानी में उतरते हो ?
क्या तुम झरने के पास के साफ पानी में उतरते हो ?
(अगर) तुम डाड़ी के नीचे के पानी में उतरोगे तो एक दिन
तुमको लासा से पकड़ लेंगे ।
अगर तुम झरने के पानी में उतरोगे तो दो दिन में तुमको
फँसा लेंगे ।

२७

हेन्दे गुले गुले दो
नोकोए सदोमते
चौंरिया सदोमते
चिमय बीरिदे तन

हेन्दे गुले गुले दो
गातिम सेनोः तन
चौंरिया सदोमते
संगाम बीरिदे तन

मोयोद काजिते
गातिम् हरतिङ जन
वारिया बंकड़ा ते
संगाम हियातिङ जन

यह काला-काला कौन जा रहा है ?
यह चौंरिया घोड़े पर कौन जा रहा है ?
यह काला-काला तुम्हारा प्रियतम जा रहा है।
यह चौंरिया घोड़े पर तुम्हारा प्रियतम जा रहा है।
तुम्हारा प्रिय एक ही बात से हार गया
तुम्हारे प्रियतम की दो ही बातों से हार हो गई
(उसने अपने को समर्पित कर दिया।)

२८

चुटी मुली सराजोम रे
आलो मीरुम इयमा
बादी लतर ताड़ायेरे
आलो सगइंम कुदुमा

काची तेरड़ेइं इयमा
सुड़ा दोरे गोसो जान
काची तेरङेइं कुदुमा
सांगेन दोरे मोरसो जान

सुड़ा दोरे गोसो जान
काची तेरा सुड़ावा
सांगेन दोरे मोरसो जान
काची तेरा सांगेनो

सुड़ा दौरे सुड़ावा
सिदा सुड़ा लेकाचि
सांगेन दौरे सांगेनो
मन सागेन लेकाचि

'हे मीरु, (एक पक्षी) साखू की चोटी पर (बैठकर) सोच न करो
दोन की तराई में—
ऐ मित्र, तुम मत बिलखो।"
'हम सोच क्यों न करें (जब कि)—हमारी नई कोंपल मुरझा गई।
हम क्यों न बिलखें (जब कि), हमारी नई पत्तियाँ सूख गईं ?"
'कोंपल मुरझा गई, पर क्या फिर नहीं निकलेगी ?
पत्तियाँ सूख गईं, पर
क्या फिर नहीं पनपेंगी ?"
"नई कोंपल तो निकलेगी।
(पर) क्या वह पहिले के समान (होगी)।
पत्तियाँ तो फिर पनपेंगी,
(पर) क्या वे पहिले के समान (होंगी)।"

२६

समाड़ोम लेका गेको जोगाव लेद् मेया
बले-ए मुलु चण्डुः लेकम माता जना
पुर्नीमा चण्डुः लेकम मेद मुवड़जना
तुरे जान सिगी लेकम मरेसाल केदा

किता हातु तला तेदो हटिया होरा
पालः पालः गेगोम सेने बेडाए
हातुवाते सिगी तुरो गागरी डड़ी
चेले चेपेले गोम बुरा गेया

लंदा जगर आद होनोर नेड़ा
सिदा रेया टयदगो उड़ुः लेमे
गागरी डड़ी दोरे आमे रगा
अमागा बदाला दो ओकोए बुरागेया

गोड़मे दिने दोगो तेबः लेना
डिण्डा रेअः सुकु सोबेन सेनोः जना
अमागा मोनेरेआ उड़ुः आर मोने
सोबेन हासा रे जमा जना।

तुमको सोने के समान जुगोकर रक्खा
तुम दूज के चाँद के समान बड़ी हुई।
पूर्णिमा के चाँद के समान तुम्हारा मुख सुन्दर हुआ
(और) उगते हुए सूरज के समान तुम्हारी ज्योति फैली
'किता हातू' गाँव के बीच रास्ते से
तुम घूमती-फिरती रहीं
(और) गाँव के पूरब की गागरी डाड़ी से
तुम पानी भरती रहीं।
पहले का हँसना-बोलना और घूमना-फिरना
तुम याद करो।
गागरी डाड़ी तुमको पुकारती है
(अब) तुम्हारे बदले कौन (वहाँ से) पानी लेगा ?
अब तुम्हारी शादी का दिन निकट आ गया
और बचपन का सारा सुख चला गया,
अब तुम्हारे मन की सारी बातें
मिट्टी में मिल गईं।

३०

हिजुः सेनोः राजाइं लेले मेया
गोसो गोसो राजाइं लेले मेया
वियुर नचुर रानी चिना मेया
मोरोसो मैला रानी चिना मेया

ओते लोलो आद् सिरिमा जेटे
एना तेचि राजाम् गोसो तना
रेंगेः तेतं आर जीरेयः दुकु
एना तेचि रानीम मैला तना

ओते लोलो आद् सिरिमा जेटे
एना कोदो सोवेन रानीम सातितदा

रेगे: तेतङ आर जीरेय: दुकु
एना कोदो राजा सातितदा
निदा सिगी रानी प्रेम उङु:
कुम्बार हवा लेकाइ लो तना
होड़ो कोलो काजीबोंका बापई रानी
एना कोदोम टोरेया सेड़ां कानरानी

"हे राजा, मैं (जब) तुमको आते-जाते देखती हूँ,
हे राजा, (तब) मैं तुमको मुरझाया हुआ देखती हूँ।
हे राजा, (जब) मैं तुमको घूमते-फिरते देखती हूँ,
हे राजा, (तब) मैं तुमको सूखा-सूखा और मलिन देखती हूँ।
"धरती की आँच और आकाश की ज्वाला से
हे राजा, क्या तुम इस तरह मुरझा रहे हो ?
भूख-प्यास और हृदय की व्यथा से
हे राजा, क्या तुम इस तरह मलिन हो रहे हो !
"धरती की आँच और आकाश की ज्वाला
हे रानी, मैं ने सबको झेल लिया है।
भूख-प्यास और हृदय की व्यथा
हे रानी, मैंने सबको झेल लिया है।
हे रानी, प्रेम की आग रात-दिन
मुझे कुम्हार के आँवें (भट्ठी) की तरह जला रही है।
हे रानी, हृदय की बात और मन की चिन्ता
किसीसे कहते नहीं बन रही है।

३१

होरा रे सराजोम बा
लेसेकेन लेसेकेन
डारे रे हेन्दे नपाङु
मोचोकेन मोचोकेन

लेसेकेन लेसेकेन
तीते हो कागे तेबागो
मोचोकेन मोचोकेन
मोचाते हो कागे जगारो

तीते हो कागे तेबागो
बको: हो बाइयाईपे
मोचाते हो कागे जगारो
लिकाहो ओलाई पे

बको: होले बाइयाईया
बको: हो हुला: जान
लिका होले ओलाईया
लिका हो चेचा: जान

रास्ते में साखू का फूल लहरा रहा है।
रास्ते में कुँवारी लड़की मुसकरा रही है।
(जो फूल) लहरा रहा है
(वहाँ तक) हाथ नहीं पहुँचता।
(जो लड़की) मुसकरा रही है
(उससे) मुँह से कुछ (कुछ) कहते नहीं बनता।
(जहाँ) हाथ नहीं पहुँचता (उसके लिए) अंकुश बना दो।
(जिससे) कहते नहीं बनता (उसके लिए) चिट्ठी लिख दो।
अंकुश बना दिया (परन्तु)
वह भी टूट गया।
चिट्ठी लिखी गई (परन्तु)
वह भी नष्ट हो गई।

३२

अटा मटा बिरको तला रे
अलो होम निरजा बागिङा
रामे को मारेचा रे
अलो होम निरजा रड़ाइञा

काचो होम लेले दीङा
सेंगेल लेकाइ जुलेतानरे
काचो होम चिना लेदीङा
द: लेकाइ लिंगी तान रे

कागे चोवाइ लेलेलेदेमा
दिसुमादो दूदुगार जान
कागे चोवाइ चिना लेदेमा
गामाय दो कोवाँसी जान

इस घने जंगल में—
तुम मुझे छोड़कर मत भागो !
इस काँटा भरे मैदान में—
तुम मुझे छोड़कर मत भागो !
क्या तुमने मुझे नहीं देखा था,
(जब) मैं आग के समान चमक रही थी ?
क्या तुमने मुझे नही पहिचाना था
(जब) मैं पानी की तरह उमड़ रही थी ?
हाँ, मैं ने नहीं देखा था
(क्योंकि) दुनिया में आँधी (की धूल) भरी थी ।
हाँ मैं ने (तुम्हें) नहीं पहिचाना था,
(क्योंकि) दुनिया में कुहासा छाया हुआ था ।

३३

मागे फागुनरे जदुर सुसुन को
आसड़ सावन रे करम कोजोड़ो को
जदुर सुसुन को लिटिः लोपोङा
करम कोजोड़ो को लटं कोयङा

लिटिः लोपोङा सेनोगे मोनिङा
लंट कोयाङा बिरिदेगे सनाइङा
सेनो-रेदो सेनो मे सेनोः गेम काजीआ
बिरिदे रेदो बिरिदे मे बिरिदेगेम बंकाड़ा

अम बड़े सेनो जान रे तोवा बाइङ बा जोमा
अम बड़े बिरिद जनरे अटल बाइङ डली जोमा
तोवा बाइङ बा तारे सयतेम लेलिङा
अटल बाइङ डली तारे मोचो लेकम लन्दाया

माघ और फागुन में जदुर नाचते हैं
आसाढ़ और सावन में करम नाचते हैं।
जदुर नाचनेवाले लथ पथ हो गये,
करम नाचने वाले अस्त-व्यस्त हो गये।
मैं लथ-पथ हो गया, (अब) जाना चाहता हूँ।
मैं अस्त-व्यस्त हो गया, (अब) जाने की इच्छा होती है।
बार-बार जाने को कहते हो तो चले जाओ।
बार-बार भागना चाहते हो तो भाग जाओ।
(लेकिन) जब तुम चले जाओगे तब मैं दूधी फूल लगाऊँगी।
(लेकिन) जब तुम भाग जाओगे तब मैं अटल फूल खोसूँगी।
जब मैं दूधी फूल लगाऊँगी तब तुम कनखियों से (मुझे) देखोगे।
जब मैं अटल फूल खोसूँगी तब तुम मुसकाओगे।

३४

हाय धोनी सोना मुनी रे
ने लेकाइङ बलय तान
हाय धोनी रुपा मुनी रे
ने लेकाइङ कोसोटो तान

कचि होम लेले जदिङा
ने लेकाइङ बलय तान
कचि होम चिना जदिङा
ने लेकाइङ कोसोटो तान

हियातिङ हियातिङ ते
गोसो चबा तान
चकातिङ चकातिङते
मोरो सो मैला तान

हाय प्रिये, सोना मुनी,
मैं इस तरह दुःख सह रहा हूँ।
हाय प्रिये, रूपा मुनी
मैं इस तरह दुःख-विपत्ति भोग रहा हूँ।
क्या तुम नहीं देखती कि मैं
किस तरह दुःख भोग रहा हूँ?
क्या तुम नहीं देखती कि मैं

किस तरह विपत्ति भोग रहा हूँ !
सोच करते-करते
मेरा शरीर सूख गया
चिन्ता करते-करते
मैं मुरझा गया ।

३५

अलङ दिसुमरेलं जोनोम जना
पुतम लेका होलं जुड़ी जना
अलङ गमयरेलं माता जना
पारय लेका होलं माता जना

पुतम लेका होलं जुड़ी जना
मोदेर गतिङ रेलं सुसुन करम
पारय लेका होलं जोता जना
अलङ जी सोबेन मोदे जना

मोदे रे गतिङ रेलं सुसुन करम
कारे गतिङ रेलं बापा गेया
अइङ जी सोबेन मोदे जना
जिदन सुनुमलं आपा सुला

हम दोनों ने अपने देश में जन्म पाया
हम दोनों की पण्डुक के समान जोड़ी हुई ।
हम दोनों अपने देश में बढ़े
(और) हम दोनों कबूतर के समान साथी हुए ।
हम दोनों की (जो) पण्डुक के समान जोड़ी हुई
तो हम एक साथ नाचे-गायेंगे ।
हम दोनों जो कबूतर के समान साथी बने
(तो) हम दोनों का हृदय एक हो गया ।
हम दोनों एक साथ नाचे गायेंगे,
(और) कभी अलग नहीं होंगे ;
हम दोनों का मन एक हो गया है
(और) जीवन पर्यन्त एक दूसरे का पालन-पोषण करेगा ।

३६

गड़ा गितिल कोदम सुबा रे
तिरी रिरी रुतु साड़ी तान
हाय गतिङ हाय संगाइ रे
जेतारेओ कमे लेलोआ

तरा तिते रचाइं जोगा
तरा तिते मेदाइं गोसोः ना
हाय गतिङ हाय संगाइं रे
जेता रेओ कमे लेलोआ

नदी के किनारे की रेत पर, कदम्ब वृक्ष के नीचे,
तिरिरिरि की आवाज में बाँसुरी बज रही है।
(किन्तु) हे प्रिय, हे मित्र।
तुम कहीं भी दिखाई नहीं देते।
मैं एक हाथ से आँगन बुहारती हूँ
(और) दूसरे हाथ से आँसू पोंछती रहती हूँ।
हे प्रिय, हे मित्र !
तुम कहीं भी दिखाई नहीं देते।

३७

दो तइङ सालुरे दो तइङ सुगा
चेतन टोला रे जोमे लङ हेसः
दो तइङ सालु रे दो तइङ सुगा
लतर टोला रे नबे लङ बड़े

कलङ सालु रे कलङा सुगा
जोमे लङहेसः रेको अटा तदा
बलेः बलेः रे सालु को अटा तलं गेया
लिङं लिङं रे सुगा को जुड़ः तलं गेया

हे सालू चलो, हे सुग्गा चलो !
ऊपर टोले में पीपल (का फल) खाने चलें !
हे सालु चलो, हे सुग्गा चलो।

नीचे टोले में बड़ (का फल) खाने चलें ।
नहीं सालू , नहीं सुग्गा, हम लोग नहीं जायेंगे
जिस पीपल को खाने चलना है (उसमें) कम्पा रख दिया है
हे सालू , छुटपन में ही हम दोनों को (लोग) बझा लेंगे ।
हे सुग्गा बचपन में ही हम दोनों को (लोग) फँसा लेंगे ।

३८

अमाग: सुपिद् लेलेते
सोंगोतीन मोनिङा
अमाग: पैला चिनाते
पिरितीन सनाइञा

सोंगोतीन मोनिङा
सोंगोती कमे मोसाइञा
पिरितीन सनाइञा
पिरितीन कमे सेले दिङा

हियातिगे मोनिङा
सोंगोती कमे मोसाइञा
चकातिगे सनाइञा
पिरिती कमे सेले दिङा

तुम्हारी चोटी देखकर
तुमसे प्रेम करने की इच्छा होती है ।
तुम्हारा आँचल देखकर तुमको प्यार करने का जी चाहता है ।
तुम्हारा साथी बनने की इच्छा होती है
(लेकिन) तुम लोग साथी नहीं बनातीं ।
तुमसे प्रेम करने की इच्छा होती है
(लेकिन) तुम लोग अपना प्रेमी नहीं बनातीं ।
मुझे बड़ा दु:ख होता है
(कि) तुम लोग साथी नहीं बनातीं ।
मुझे बड़ा अफसोस होता है
(कि) तुम लोग प्रेमी नहीं बनातीं ।

३९

बाले: बाले: रेलं सोंगोती लेना
सींगोती गतीङरेम बागे किङा
लीडुं लीडुं रेलं पिरीती लेना
पिरिती संगइरेम राड़ा किङा

हियातिङ मोनिङा
सोंगोती गतिङरेम बागे किङा
चकातिङे सना इञा
पिरिती संगइंरेम राड़ा किङा

हियातिङ हियातिङ ते
जीराटी हायाद् जना
चकातिङ चकातिङ वे
कुड़म राटी ओड़े: जना

बचपन में ही हम लोगों की दोस्ती हुई,
(लेकिन) तुमने उस दोस्ती को तोड़ दिया।
छुटपन में ही हम लोगों ने प्रेम किया,
(लेकिन) तुमने उस प्रेम को छोड़ दिया।
मुझे बड़ा दुःख है
कि तुमने (बचपन की दोस्ती को) तोड़ दिया।
मुझे बड़ा खेद है
कि तुमने (बचपन के प्रेम को) छोड़ दिया।
सोच-सोचकर
मेरा हृदय सूख गया है।
चिन्ता करते-करते
मेरी छाती टूक-टूक हो गई है।

४०

लम: जाङ गतिङ चिरे बड़ुजु जाङ संगाइं
साँगिन दिसुमे रेम पाण्डिल जना
लम: जाङ्ग गातिङ्ग चिरे बुड़ुजु जाङ्ग सगाइं
जिलिङ गमयरेम चोलङ जना

सांगिन दिसुमेरेम पाण्डिल जना
ओको कोरे हौलङ लेपेल रुड़ा
जिलि गमयरेम चोलङ जना
चिमय कोरे होलंङ चिपना रुड़ा

हसा बुरु होको बुरुइ रेदो
हसा बुरु रेलङ लेपेल रुड़ा
बामनी यात्रा-होको यात्राए रेदो
बामनी यात्रा रेलङ चिपना रुड़ा

हसा बुरु रेलङ लेपेल रेदो
तीरे मुदामेलङ ओमामेया
बामनी यात्र रेलङ चिपना रेदो
होटो: रे काड़े मालालङ चदामेया

तीरे मुदामे दोइं ओमामेया
तीरे मूदामेइं जागारामेया
होटो: रे काड़े मालाइं चेदामेरे
होटो: रे कड़े मालाइं लापन्दा मेया

हे प्रिय, लामा (एक फल) के बीज की तरह अथवा
हे प्रिय, बुड़जू के बीज की तरह
तुम बहुत दूर चले गये
तुम बहुत दूर जा पड़े,
फिर अब कहाँ मुलाकात होगी
तुम बहुत अलग चले गये
फिर अब कहाँ हम (एक दूसरे को) देखेंगे।
जब हासा का जतरा होगा
तब फिर हमारी मुलाकात होगी
जब बमनी का मेला होगा
तब फिर हम (एक दूसरे को) देखेंगे।
अगर हासा जतरा में मुलाकात होगी
तो मैं तुम्हें एक अँगूठी दूँगा।
यदि बमनी मेले में मुलाकात होगी
तो मैं तुम्हें गले में पहनने के लिए काँसी की माला दूँगा।

मैं तुम्हें अँगूठी दूँगा
(और) वहीं हमारी बातचीत भी होगी
मैं तुम्हें माला पहनाऊँगा
(और) हम वहीं हँसे-बोलेंगे
[लामा एक फल जो पकने पर फट जाता है और
बुड़जू (कचनार) जिसका बीज पकने पर दूर छिटक जाता है]

४१

बुरु आतेइं लेले मेरे गातिङ
कम लेलो: लेलोगा गातिङ
बेड़ातेइं चिना मेरे संगाइं
कम चिनावो चिनावा संगाइं

हुन्दी बाइं गुतु लेदा गातिङ
कम लेलो: लेलोगा गातिङ
बगड़ी बाइं गलं लेदा संगाइं
कम चिनाव चिनावा संगाइं

कम लेलो: लेलोगा गातिङ
चरि: रेगे गोसो जान
कम चिनाव चिनावा संगाइं
सुतम रेगे मैला जान

चरि: रेगे गोसो जना गातिङ
अइञा जीवो गोसो जान
सुतम रेगे गोसो जना संगाइं
अइञा कुड़ामो मैला जान

हे प्रिय, मैं तुमको पहाड़ पर से देखती हूँ,
(किन्तु) हे प्रिय, तुम दिखाई नहीं देते।
हे प्रिय, मैं तुमको तराई में से देखती हूँ,
(किन्तु) हे प्रिय, तुम दीख नहीं पड़ते।
हे प्रिय! मैंने (तुम्हारे लिए) हुन्दी के फूल गूँथे हैं
(परन्तु) तुम दिखाई नहीं देते।
हे प्रिय मैंने (तुम्हारे लिए) बगड़ी (बकुल) का हार बनाया है।

(परन्तु) तुम दीख नहीं पड़ते ।
हे प्रिय ! तुम दिखाई नहीं देते
और (हुन्दी का फूल) गुच्छा मुरझा रहा है ।
हे प्रिय ! तुम नजर नहीं आते ।
(और, वकुल का गुच्छा) सूत में ही सूख रहा है ।
(इधर) फूलों का गुच्छा मुरझा रहा है
(और उधर) मेरा हृदय (भी) मुरझा रहा है ।
(इधर) सूत का हार सूख रहा है
(और उधर) मेरा दिल (भी) उदास हो रहा है

४२

अमगः नगेन तेइं
बोदोनाम जना दो
अमगः नगेन तेइं
सुबा नाम जना दो

मोचा जगर तेइं
बोदोनाम जना दो
मेदे लेपेल तेइं
सुबानाम जना दो

हियातिङ मोनिङ
बोदोनाम जना दो
चकातिङ सना इआ
सुबा नाम जना दो

तुम्हारे ही कारण हम बदनाम हुए ।
तुम्हारे ही कारण हम दोषी ठहराये गये ।
(केवल) बात करने के कारण हम बदनाम हुए
(केवल) आँख मिलाने के कारण हम दोषी बने
मुझे दुःख है कि हम बदनाम हुए
मुझे अफसोस है कि हम दोषी बने ।



मुण्डा-किसान—खेत की ओर



मुण्डा-युवती



कुछ वाद्य-यंत्र

४३

बाले: बाले: रेलं सोंगोतो गातिङ
मोदेरे गातिङ रेलङ इनुं केना
जुड़ी जुड़ी होलं सेने बेड़ाय
पन्ती रे गातिङ रेलं दुबे केना

मोयोद काजी गेलङ काजी केना
मोयोद काजी तेलङ बपागड़ाव जना
पन्ती रे संगाइ रेलङ दुबे केना
दुबी र: दुम्बु लेकाम रिकान जना

जीरेन उड़: चण्डाल का बुगिन तनि:
जुले, तान संगेलेरे खदीड़िन लेका
निदा सिंगी बोलेइं उड़: तना
अइञा ग: नसीब राम बंका जना

बहुत बचपन से ही हे प्रिय,
हम लोग एक साथ रहते और खेलते थे।
साथ-साथ चलते-फिरते थे
(और) हे प्रिय, एक साथ उठते-बैठते थे।
हम दोनों एक ही बात बोला करते थे
(लेकिन) एक ही बात के लिए हममें अनबन हो गई
हम दोनों एक ही साथ बैठते थे
(लेकिन) खर-कतवार की तरह हम लोग अलग हो गये।
दिलका दु:ख बहुत बुरा होता है
जी चाहता है कि जलती आग में कूद पड़ें
हम रात-दिन सोचा करते हैं
'राम' कहता है कि हमारा भाग्य बिगड़ गया।

४४

अम: रे जीदो बोले अइञारे कुड़ाम
दीदी लेका गेगोम जलातिङ तना
अइञारे जीदो बोले अमारे कुड़ाम
कुड़ीद लेका गेगोम बुलातिङ तना

दीदी लेका गेगोम जलातिङ तना
हातु हातु बोलेम् जलातिङ तना
कुड़ीद लेका गेगोम बुलातिङ तना
दिसुम दिसुम बोलेम बुलातिङ तना

हातु हातु बोलेम जलातिङ तना
जेता रे गतिङरे कइङ लेलेमेया
दिसुम दिसुम बोलेम बुलातिङ तना
चिमय रे संगइ रे कइङ चिना मेया।

हमारी छाती केवल यहाँ है, लेकिन दिल तुममें लगा है
(और) मैं गीध की तरह उड़ता फिरता हूँ।
हमारा हृदय जब यहाँ है तब मन तुम्हारे पास है
(और) मैं चील की समान घूमता-फिरता हूँ,
मैं गीध के समान उड़ता फिरता हूँ।
(और) गाँव-गाँव उड़ता फिरता हूँ।
मैं चील के समान घूमता-फिरता हूँ
और देश-देश घूमता-फिरता हूँ
मैं गाँव-गाँव उड़ता फिरता हूँ
किन्तु हे प्रिय ! तुमको नहीं देखता
मैं देश-देश घूमता फिरता हूँ
किन्तु हे प्रिय ! तुम दिखाई नहीं देते।

४५

चिकान काजो बोलेम आयुम लेदा
पेटे: गोसो पतड़ा लेकम गोसो तना
मेरे को बकड़ा बोलेम अतेन लेदा
गेरा गो-ए दरु लेकम् मैला तना।

सिदा रेन गतिमचिको नेयान जना
पेटे: गोसो पतड़ा लेकम गोसो तना
तयोम सगम चि बोरेन तना
गेरा गोए दरु लेकाम मैला तना।

बुलुङ सुनुम चिगोम ओमे लेदा
पेटे: गोसो पतड़ा लेकाम गोसोतना,
गोनोड़ सती चिगोंम-चेदे-लेदा
गेरा गो-ए दरु लेकाम मैला तना ।

तुमने कौन-सी बात सुन ली है ?
(जो) तोड़ी हुई डाली की पत्तियों के समान मुरझा गये !
तुमने कौन-सी चर्चा सुन ली है
(जो) छीले हुए पेड़ के समान सूख गये !
क्या तुम्हारे पहिले के प्रेमी की शादी हो गई ?
(जो तुम) तोड़ी हुई डाल की पत्तियों की तरह मुरझा गये ।
क्या तुम्हारे पीछे के प्रेमी का विवाह हो गया ?
(जो तुम) छीले हुए पेड़ के समान सूख गये ।
क्या तुमने (उसके लिए) नमक-तेल खर्च किया था ।
(जो) तोड़ी हुई डाल की पत्तियों की तरह मुरझा गये
क्या तुमने (उसके लिए) दाम चुकाया था ?
(जो) छीले हुए वृक्ष के समान सूख गये ।

४६

कोदोम दारु बंका दड़ा रे
किष्टो जी रुतुई ओरोङ
ओ गातिङ ओ संगाइ
जेता रेओ कमे लेलोगा

ओङा तेइङ उडुङ लेना
बो: रे तीइङ आगु केद
ओ गातिङ ओ संगाइ रे
जेता रेओ कमे लेलोगा

तरा तीते मण्डी जोमेया
तरा तीते मेद:इ गोसो: ना
ओ गातिङ ओ संगाइ रे
जेता रेओ कमे लेलोगा

कदम्ब वृक्ष की टेढ़ी डाल पर
कृष्ण वंशी बजा रहे हैं ।

हे प्रिय, हे संगी !
तुम (कहीं) नहीं दीखते हो ।
मैं घर से निकली
और सिर पर हाथ रक्खा
हे प्रिय, हे मित्र !
तुम कहीं नहीं दीखते हो ।
मैं एक हाथ से खाना खाती हूँ
और दूसरे हाथ से आँसू पोंछती
हे प्रिय हे मित्र !
तुम कहीं नहीं दिखाई देते हो ।

४७

आयर रे गातिङ रेम
तुंगुर-मुंगुरा
बापारे संगम-रेम
डाले कालेया
तुगुरे मुगुरा
दासी तलाङ में
डाले कालेया
गुतीन तलाङ में
दासिन दासिन दो
लेपेल सडिमारे
गुतीन गुतीन दो
चिपना चंदाए रे
सेंगेल असी रेइङ
असी नमे मा
सकम मंगानी रेइङ
मंगानी खोजरमा
सेंगेल असी रे
ती तेइङ चुण्डु लामा
सकम मंगानी रे
मेद तेइङ रपीदामा

हे प्रिय, (तुम तो) पहले ही आगा-पीछा कर रहे हो !
हे प्रिय, (तुम तो) आगे ही इधर-उधर हो रहे हो !
तुम जो आगा-पीछा कर रहे हो, (सो) कहीं चाकरी कर लो ।
तुम जो इधर-उधर भटक रहे हो, (सो) कहीं धांगर बन जाओ ।
तुम चाकरी करो तो ऐसी चाकरी करो (जिससे ; एक दूसरे को देखें ।
तुम धांगर बनो तो ऐसी जगह (जिससे) एक दूसरे को पा सकें ।
आग मांगते हुए मैं तुमको खोज लूँगी,
पत्ती मांगते हुए मैं तुमको पा लूँगी,
आग मांगते हुए मैं तुमको उँगली से इशारा कर दूँगी ।
पत्ती मांगते हुए मैं तुमको कनखी मार दूँगी ।

४८

बिरे सेंगेल दो
जिलिब जिलिबा
राजा पुकुरी दो
गुले गुलेया

जिलिब जिलिब रे
सतीन मोनिङा
गुले गुले रे
डबुरान सनाइङा

अलोगोम सतीना
गातिम हिजु: तान
अलोगोम डबुरान
संगाम सेटेर तान

गातिम हिजु: तान
डुगु मुगु चौडलते
संगाम सेटेर तान
गजा बजा बजुडियाते

"जंगल में धाँय-धाँय आग जल रही है ।
राजा का तालाब लबालब भरा हुआ है ।
धाँय धाँय-जलती हुई (आग) में

जल भरने की इच्छा होती है।
लबालब भरे हुए (पानी) में
डूब मरने का जी चाहता है।"
"तुम मत जल-मरो
(तुम्हारा) प्रिय आ रहा है।
तुम मत डूब मरो
(तुम्हारा) प्रेमी पहुँच रहा है।
(तुम्हारा) प्रिय डुग-मुग डोली पर
आ रहा है।
(तुम्हारा) प्रेमी गाजा-बाजा के साथ
पहुँच रहा है।"

४६

सण्डी सिम गिपाल गोपोल
ओकोती जना
कलुटी सिम केरो केचो
चिमय ती जना

सण्डी सिम गिपाल गोपोल
चेड़ें टोटे तीया
कलुटी सिम केरी केचो
ए-को हलङ तिया

उतु तले- बनोगा
चेंड़े टोटे तीया
बुलुङ तले बनोगा
ए-को हलङ तीया

वह मनचला मुर्गा कहाँ चला गया।
वह कुड़कुड़ाती हुई मुर्गी किधर गई।
वह मनचला मुर्गा चुपके-से चिड़िया मारने गया।
वह मनचली मुर्गी लाह बटोरने गई।
सालन नहीं है, (इसलिए) चिड़िया मारने गया।
नमक नहीं है, (इसलिए) लाह बटोरने गई।

५०

सिदा सिमको रन:
अयुमलङ गातिङ
तयोम मर: नेयोन
अतेन लङ—संगाइङ

सिदा सिमको रन: रे
ओको कोते लङा
तयोम मर: नेयोन रे
चिमय कोते लङा

सिदा सिम को रन: रे
एंगम कोते लङा
तयोम मर: नेयोन रे
अपुम कोते लङा

एंगम कोते मेनेरे
जीगे लिटिब-लिटिबा
अपुम कोते मेनेरे
कुड़ाम दोपोल-दोपोला

हे प्रिय, हम मुर्गे की पहली बाँग सुन लें।
हे प्रिय, हम मोर की पिछली आवाज पहिचान लें।
मुर्गे की पहली बोली सुनकर हम कहाँ चलें?
मोर की पिछली आवाज जानकर हम कहाँ जाँय?
मुर्गे की पहली बाँग सुनकर हम माँ के घर (चलें)।
मोर की पिछली आवाज जानकर हम बाप के घर (जायें)।
'माँ का घर' कहने से जी धक-धक करने लगता है।
'बाप का घर' का नाम सुनकर छाती काँपने लगती है।

५१

नेते दुङा नेते जिली मिलिया
दिसुमेदो लेसे लेसे या

नेते दुड़ा नेते जिली मिलिया
गमाय दो जिरिपी जलङा

दिसुमेदो लेसे लेसेया
दिसुमेदो बागे जदा
गमाय दो जिरिपी जलङा
गम य दोम राड़ा जदा

मोदे किया सिन्दुरी ते
दिसुमेदो बागे जदा
बार थाड़ी सासङ्गते
गमाय दोम राड़ा जदा

दिसुम दो बियुर तान
अमः जीदो बियुर तान
गमाय दो सेकोर तान
अमः जीदो सेकोर तान

यहाँ की धूल चमकीली है
यह देश बड़ा सुन्दर है !
यहाँ की मिट्टी चमकीली है
यह इलाका बड़ा मनोहर है !

ऐसा सुन्दर देश !
ऐसे सुन्दर देश को तुम छोड़ रही हो !
ऐसा मनोहर इलाका।
ऐसे मनोहर इलाके से तुम अलग हो रही हो !

तुम एक 'कीया' (सिन्धोरा) भर सिन्दूर से
यह देश छोड़ रही हो
तुम केवल दो थाली हल्दी से
इस इलाके से अलग हो रही हो।

देश घूम (बदल) रहा है
(और) तुम्हारा हृदय (भी) घूम रहा है।
इलाका घूम (बदल) रहा है
(और) तुम्हारा दिल (भी) घूम रहा है।

५२

बा चण्डु: मुलु: लेना माई
सिम होन दोए चियब-चियबा
लोगोन दोको तोले केदा माई
कुड़ी होन दोए चलु दुबा कना

सिम होन दोए चियब चियबा माई
खलोम केन खलोम केन
कुड़ी होन दोए चुलु दुबा कना माई
सतोम केन सतोम केन

अङ जुड़ी मेनाईयाना माई
तयर नड़ी दिले दोंगोब
अङ जुड़ी मेनाईयाना माई
सुकु बरे सेपेड़ेद्

चैत का चाँद उग गया
मुर्गी का बच्चा चीं-चीं बोल रहा है।
लगन (निश्चित) हो गया
लड़की सिकुड़ी बैठी है।
मुर्गी का बच्चा चीं-चीं बोल रहा है
कि हमारा बलिदान अगले वर्ष हो।
छोटी लड़की बैठी हुई सोच रही है
कि हमारी शादी तीसरे वर्ष हो
हमारा जोड़ा ककड़ी की लता के समान—
खिला हुआ एक जवान है।
हमारा जोड़ा कद्दू के फूल के समान—
प्रफुल्लित एक युवक है।

५३

तीरे दो तोले उली सकम
तीरे दो कईङ तोलेना
मोलों रे टिका सिन्दूरी
मोलों रे काइङ टिका ना

अइङ लो:ते जुड़ी बंगाइया
अइङ दो हो काइङ तोलेना
अइं लो:ते जोता बंगाइया
अइं दो हो काइङ टिकाना

अइङ लो:ते जुड़ी किनि:
जूड़ीन जना दो
अइङ लो:ते जोता किनि:
जोतान जान दो

हाथ में बाँधी जानेवाली आम की पत्ती
मैं हाथ में नहीं बाँधूँगी।
माथे पर लगाया जानेवाला सिन्दूर
मैं माथे पर नहीं लगाऊँगी।

मेरा जोड़ा नहीं है
मैं नहीं बाधूँगी
मेरा साथी नहीं है
मैं नहीं लगाऊँगी।

मेरे साथ जोड़ा होने वाला
दूसरे के साथ हो गया।
मेरा साथी बननेवाला
दूसरे का साथी बन गया।

५४

होरा दुड़ाव को सेने केदा
चिरे गातिङ चिलङ मेने
राइसी बोरोसो को साला केदा
मेरे रे मोचो कुली मेरे लङ मेने

मोदे अराँड़ाँ उरि: ओड़ो बारो टका
मोड़े होड़ो तला रेको लेका केदा
सुकु रेओ मैना दूकु रेओ
अमाग: नुतुम तेको साकी केदा

धोरोजा ओङ रेदो इसिटि कुटुम्ब
मोड़े होड़ो तला रेदो बंमाड़े गोसाइ
सुकु रेओ मैना दुकु रेओ
अड़ान्दी लोगो ने को तोले केदा

मेरेल पताड़ा को बकिड़ी तदा
गितिल मण्डोवाको दुला केदा
सुकु रेओ मैना दुकु रेओ
नेवो तरी कोदो रेको हिजुआ कना

मण्डोवा तला रेदो किया सिन्दुरी
अमागः नागेन गे दोरोपोन नकीः
सुकुरेओ मैना दुकु रेओ
एला रे नकिः लेमा समड़ोम सोना

रास्ते की धूल पार की जा चुकी (शादी की) बात तय हो चुकी
हे प्यारी बेटी, अब क्या कह सकते हैं !
राशि-लगन सब चुन लिया गया
हे मुसकानेवाली, अब हम लोग क्या कह सकते हैं !
एक जोड़े बैल और बारह रुपये
पाँच-पंचों के बीच गिने जा चुके हैं।
तुम राजी हो या न हो
तुम्हारा नाम लिया जा चुका है।
धर्म के घर में इष्ट, मित्र, कुटुम्ब (सब आ गये हैं)।
पंचो के बीच ब्राह्मण और गोसाईं बैठे हैं।
तुम चाहो या न चाहो
शादी की लगन ठीक हो चुकी है।
आँवले की पत्ती का मण्डप बन गया है
और बालू का मड़वा (वेदी) बनाया जा चुका है।
तुम्हें सुख हो या हे बेटी, दुःख हो
निमंत्रित व्यक्ति भी आ चुके हैं
मंडप के नीचे सिंधोरा और सिन्दूर रख दिया गया है
(और) तुम्हारे लिए आईना और कंघी भी रख दी गई है।
हे बेटी, अब तो चाहे तुम्हें सुख हो या दुःख हो
हे सोने सी बेटी, आओ तुम्हारे बालों को संवार दें।

५५

बुरू दोको बुरू चबा केदा माई
अमदो माई कम जुड़ीन जान
जतरा दोको जतरा चेबा केदा माई
अमदो माई कम जोतान जान

अमाते दुपुड़ीं कोनामाई
अमाते मपारं को
सोबेन को जूड़ीन जना माई
सोबेन को जोतान जान

सभी बुरू (पर्वत पर लगनेवाले मेले) बीत गये,
हे लड़की तुमने अभी तक अपना साथी नहीं चुना !
सभी जतराएँ खतम हो गईं (किन्तु)
हे बालिका, तुमने अभी तक (किसी को) अपना मित्र नहीं बनाया ।
तुमसे सारी छोटी लड़कियों ने भी
तुमसे सभी बड़ी लड़कियों ने भी,
सब ने अपना साथी चुन लिया ।
सब ने अपना संगी बना लिया ।

५६

नेना माई डुबा लेका तोवा बा
नेना माई बा लेका मे
नेना माई ताड़ी लेका अटल बा
नेना माई डाली लेका लेमे

नेना माई जुगुतु जुगुतु ते
नेना माई को गोङ मेया
नेना माई बिचारे आचारे ते
नेना माई को चले जाद मेया

नेना माई को गोङे मेरे
नेना माई काको ओमामा

नेना माई चले केमाते
नेना माई कको चेदामा

हेला माई मोदे पिड़ी गतिमेको
हेलां माईम बागे जाद् कोआ
हेला माई बारे सेकारी संगामे को
हेला माईम राड़ा जाद् कोआ

हे बेटी, यह कटोरा के समान दूधी फूल है !
हे बेटी, यह फूल पहन लो !
हे बेटी, यह थाली के समान अटल फूल है ।
हे बेटी, यह फूल पहन लो !
हे बेटी, तुम्हारी शादी की
बातचीत चल रही है
हे बेटी, तुम्हारे विवाह के बारे में
सोच-विचार हो रहा है ।
हे बेटी, यह फूल ले लो
हे बेटी, शादी के बाद यह कोई नहीं देगा ।
हे बेटी, यह फूल ले लो !
हे बेटी, विवाह के बाद कहीं नहीं मिलेगा
हे बेटी, तुम अपने बहुत-से साथियों को
हे बेटी छोड़ रही हो ।
हे बेटी, तुम अपनी बहुत-सी सहेलियों से
हे बेटी, अलग हो रही हो ।

५७

हातु तलेम मेनेया मड़ना
हातु दोम बगे जदा
दिसुम तलेम मेनेया मड़ना
दिसुम दोम रड़ा जदा

मोदे किया सिन्दुरी ते
हातु गोम बगे जदा
बरे थड़ी ससांङ ते
दिसुम गोम रड़ा जदा

हातु गोम बगे जदा
हातु गो ले ले रुड़ा लेम
दिसुम गोम रड़ा जदा
दिसुम गो हेता रुड़ा लेम

हातु गो ले ले रुड़ा लेम
अम: जुड़ी गातिमेको लेल कुलतन
दिसुम गो हेता रुड़ा लेम
अमः जोता संगा मेको चिना कुलतन

हे बेटी, तुम जिसको अपना गाँव कहती थी,
उस गाँव को (तो) छोड़ रही हो।
हे बेटी, तुम जिसको अपना देश कहती थी,
उस देश से (तो) अलग हो रही हो।
तुम एक कीया (सिंधोरा) सिन्दूर से
अपना गाँव छोड़ रही हो।
तुम दो थाली हल्दी से
अपने देश से अलग हो रही हो।
गाँव को (तो) छोड़ रही हो
(लेकिन, उस) गाँव को मुँह फेरकर एक बार देख लो।
देश तो छोड़ रही हो,
(लेकिन) देश को घूम कर फिर एक बार देख लो।
तुम गाँव को फिर एक बार देख लो
तुम्हारी सहेलियाँ (तुमसे) मिलने के लिए आई हैं
तुम देश को फिर लौट कर एक बार देख लो।
तुम्हारी सखियाँ (तुमको) देखने के लिए आई हैं।

५८

बा तइङ मेगा नेयङ बा तइङ मे हो
डाली तइङ मेगा नपंङ डाली तइङ मे
बा दोरेइङ बा मेया चिकन बा
डाली दोरेइङ डाली मेया मेरेकन डाली
बा तइङ मेगा नेयाङ सराजोम बा
डाली तइङ मेगा नपङ सूड़ा सांगेन

हे मा, मुझे फूल पहना दो !
हे पिता, मुझे कोमल पल्लवों से सजा दो।
फूल तो पहनाऊँगी किन्तु कौन-सा फूल ?
कोंपलों से तो सजा दूँगा, किन्तु किन कोंपलों से ?
हे मा, मुझे साखू का फूल पहना दो
हे पिता, मुझे साखू की नई कोंपलों से सजा दो।

५९

आरे-चण्डू: आते-उड़ु: केना
मेन्दो हिजु: लेना बा लेका
जी रेया: दुकु सोबेन राड़े: जना
अमगे तइञ: माई जीरेय: लन्दा

बा लेका-मईनाम् हिजुआ-कना
पुनिमा चण्डु: लेकाम मेद-मुड़ा कना
पुनिमा चण्डु: लेकाम-मेद-मुड़ा कना
तुरे तान सिगीं लेकाम मरे साल केदा

इसी चाँद की (के दर्शन की) मैं प्रतीक्षा कर रहा था,
लेकिन अब यह फूल के समान आया है।
(इसे पाकर) मेरे हृदय की सारी ज्वाला शान्त हो गई,
हे चाँद, तुम्हीं मेरे हृदय की सारी प्रसन्नता हो।
हे बालिका, तुम फूल के समान आई हो
और पूर्णिमा के चाँद के समान तुम्हारा मुख है।
तुम उगते हुए सूरज के समान
अपना प्रकाश फैला रही हो।

६०

गोङ मे दिने मुण्डी तेबा लेना
डाड़ी दगे रेगेम इयम तना
चले मे बोचोर नेंडा पूरा लेना
सुइले दगे रेगेम सयाद तना

डाड़ी दगे रेगेम इयम तना
एंगम आपुम कोम उड़ु: तना

सुइले दगे रेगेम सयाद तना
होनेम बारेम कोम सायद तना

एंगाम आपुम कोम उड़ु: तना
उरि: लेका गेको आकरिङ मेया
होनेम बारेम कोम सयाद तना
आड़ाअ: लेकागे गेको खेजा मेया

उरि: लेका गेको आकरिङ मेया
बारो टका तेको आकरिङ मेया
आड़ाअ: लेका गेको खेजा मेया
कॉड़ाँ पोयसा तेको खेजा मेया।

तुम्हें देने (शादी करने) का दिन पहुँच गया,
तुम डाड़ी के पानी में रोती रहती हो
तुम्हें भेजने का वर्ष पूरा हो गया,
तुम झरने के पानी में आह भरती रहती हो।
तुम जो डाड़ी के पानी में रोती रहती हो
(सो) माँ बाप को सोचती रहती हो,
तुम जो झरने के किनारे आह भरती रहती हो
(सो) अपने भाई-बन्धुओं के लिए कलपती रहती हो
(तुम जिन) माँ-बाप को सोच रही हो
(वही) गाय-बैल की तरह तुम्हें बेच देंगे
(तुम जिन) भाई बन्धुओं के लिए कलप रही हो
(वही) साग-पात के समान तुम्हें बेंच देंगे।
बारह रुपये पर गाय बैल के समान
तुम्हें बेंच देंगे।
दो-चार पैसों के लिए साग-पात के समान
तुम्हें बेच देंगे।

६१

सोमय बारी होम
दिले दोंगोबा
नुसड़ा बारी होम
लङ चेंड़े बोंडोला

सोमय सेनो जान
देयम कूबः जान
नुसड़ा बिरिद जान
जोवाम रेपो जान

जोजो लेकागे
देयम कूबा जान
सोसो लेकागे
जोवाम रेपोजान

जब तक समय था
(तब तक तुम्हारे) दिल में उमंग थी।
जब तक दिन थे
(तब तक) लं-पक्षी के समान तुम्हारा पिछौटा था।
समय चला गया
(और) पीठ झुक गई।
दिन बीत गये
(और) गाल पिचक गये।
इमली के समान
(तुम्हारी) कमर झुक गई
भेलवा के समान
(तुम्हारी) गाल पिचक गये।

६९

अमागाः कजिया सिसिबाइङ
आयुम लेदाया सिसिबा
अमागाः बकँड़ाया हरीबाइङ
आतेनलेद

चेतन टोलारे सिसि बाईङ
आयुम लेदाया सिसिबा
लतर टोला रे हरीबाइङ
आतेन लेद

गोङ मेयाको सिसिबाईङ
आयुम लेदाया सिसिबा
चले मेया को हरीबाइं
आतेन लेद
साँगोन दीशुमेरे सिसिबा को
गोङ मेयाको सिसिबा
जोलि गमयरे हरीबा को
चले मेया

ऐ सिसिबा, मैंने तुम्हारे बारे में एक बात सुनी है।
ऐ हरिबा, मैंने तुम्हारे बारे में एक चर्चा सुनी है।
ऐ सिसिबा, मैंने (उस बात को) ऊपर टोले में सुना है।
ऐ हरिबा, मैंने (उस बात को) नीचे टोले में सुना है।
ऐ सिसिबा, मैंने सुना है कि तुम्हें विवाह कर ले जाएँगे।
ऐ हरिबा, मैंने सुना है कि तुम्हें (दूसरे को) दे देंगे।
ऐ सिसिबा, तुम्हें दूर देश में विवाह देंगे।
ऐ हरिबा, तुम्हें दूर देश में देंगे।

६३

एते सोम्बारी, ओकोरेको बाईताना
एते सोम्बारी, सोना समड़ोम
एते बुधनी, चिमयरेको बड़ ई ताना
एते बुधनी बुबूकूमुनी
एते सोम्बारी बुण्डूरेको बाई ताना
एते सोम्बारी सोना सामड़ोम
एते बुधनी टमाँड़ा रेकोबड़ ई ताना
एते बुधनी बुदूकुमनी

ऐसे सोम्बारी सोना (का गहना) कहाँ बनाते हैं।
ऐसे बुधनी बुदू कुमनी (बुदू मछली को पकड़ने की कुमनी) कहाँ बनाते हैं।
ऐसे सोम्बारी सोना का गहना बुण्डू में बनाते हैं।
ऐसे बुधनी बुदूकूमनी तमाड़ में बनाते हैं।

नोट—इसमें सोम्बारी तथा सोना समड़ोम में और बुधनी और बुदूकूमनी में में अनुप्रास की छटा प्रदर्शित की गई है।

६४

लेलेसी सिसिपीड़ी हो
लेलेसी लो ताना ।
लेलेसी तिलाई बादी हो
लेलेसी बलेतना ।।

सिसिपिड़ी लो तना मनाजू
ओकोरेम आतिङा मनाजू ।
तिलई बादी बलेतना असकल
चिमयरेम सुसुना ।।

तरा तेदो लो ताना मनाजू
तरा रेम आतिङा मनाजू ।
तरा तेदो बबले तना असकल
तरा रेम सुसुना ।।

[एक बार राँची के पास मुण्डाओं की किसी से लड़ाई हुई थी, वही सिसिपिड़ी और तिलई बादी के मैदान हैं । नाच-गानवाले अपने आनन्द की चिन्ता कर रहे हैं ।]

हे मैना, सिसिपिड़ी तो जल रही है ।
हे मैना, तुम कहाँ चरोगे ?
हे आसाकल तिलई बादी तो बर्बाद हो रही है
कहाँ नाचोगे ?
हे मैना, सिसिपिड़ी आधा जल रही है
(तो) तुम आधे में चरना !
हे आसाकल, तिलईबादी आधा बरबाद हो रही है,
(तो) तुम आधे में नाचना !
सिसिपिड़ी धधक कर जल रही है
तिलईबादी तेजी से बर्बाद हो रही है ।

६५

बुरु रे बुरु रे मनीदागो
बेड़ारे बेड़ारे राई
ओकोए हेरलेद् मनीदोमो
चिमय पसिर लेदराई

मुण्डा कोगे हेरे लेद् मनीदोगो
सन्ता कोगे पसिर लेदराई,

लिम लोम मनीदोगो
गिदर गोदोर गई

सिदे लेगे मोनिंग्ा मनी दोगो
टोटाः लेगे सनाइङा राई

अलोकुड़ी किग् वेनसिदेयामनी दो
आलोकोड़ा किग् बेन टोटाः राई

तिरे मुदम गोनों ते मनी दो
जंगरे पोला सतीतेराई

पहाड़-पहाड़ पर सरसों है
(और) घाटी-घाटी में राई
सरसों को किसने लगाया है ?
राई को किसने बोया है ?
सरसों को मुण्डाओं ने लगाया है
कोमल-कोमल सरसों को।
राई को सन्तालों ने लगाया है,
नरन-नरम राई को।
कोमल-कोमल सरसों बढ़ रही है
सरसों को तोड़ने की इच्छा होती है।
नरम-नरम राई खिल रही है,
राई को तोड़ने का जी चाहता है।
हे लड़कियो, इस सरसों को मत तोड़ो,
इस सरसों का दाम हाथ की अँगूठी के बराबर है।
हे लड़को, इस राई को मत तोड़ो
इस राई का मोल पैर के अँगूठियों के समान है।

६६

सिरमारे सिमबोंगा राजा
चिकन जोनोमेदोम ओमादिङा
ओतेरे बोसोमोती विधाता रानी
मेरे कन लिखानेदोय लिखादिङा ॥



धान की रोपनी



धान की कटाई

सिरमारे सिम बोंगा राजा
मनोवा जोनो मेदोम ओमाद दियाँ
ओतेरे बासो मोती बिधाता रानी
नोरे लिखाने दोम् लिखाद्दियाँ।

मनोवा जोनो मेदोम ओमाद्दियाँ
साँगिन दिशुमेरेम ओमाद दियाँ
नोरे लिखानेदोम लिखाद्दियाँ
जीलीं गामा एरेम लिखाद्दियाँ।

हे आकाश के देवता राजा,
तुमने हमको क्या जन्म दिया?
हे पृथ्वी की वसुमती रानी (देवी),
तुमने हमारे भाग्य में क्या लिख दिया?
हे आकाश के देवता,
तुमने मुझे मनुष्य का जन्म दिया।
हे पृथ्वी की देवी,
तुमने हमारे भाग्य में
मनुष्य जन्म लिख दिया।
तुमने मनुष्य का जन्म तो दिया,
लेकिन दूर देश में भेज दिया।
तुमने भाग्य में नर-जन्म तो लिखा,
पर दूर इलाके में (भेजकर) लिख दिया।

६७

गंगा तला चिरे समुदार तला
गेले बार गोसाईं को दुबाकना
गंगा तला चिरे समुदार तला
हिसी बार बामाँड़े को जारु अकना।

चिरे गतिङ को चिकातना
गेले बार गोसाईं को दूबाकाना
मेरे रे संगाईं को रिकातना
हिसी बार वा माँड़े को जारु अकना।

काची गातिडरे को उदूबाद्मेया
सिदा रेन गाति में को हरि बोलतना
काचो संगाई को चाण्डूलाद मेया
तायोमरेन संग में को रामे राम तना ।

गंगा के बीच या समुद्र के बीच
बारह गोसाई बैठे हुए हैं ।
गंगा के बीच या समुद्र के बीच
बाईस ब्राह्मण पहुँचे हुए हैं ।
हे मित्र, वे बैठे हुए बारह गोसाई
क्या कर रहे हैं !
हे साथी, वे आये हुए ब्राह्मण (बाईस)
क्या कर रहे हैं ?
क्या तुमको नहीं बताया गया है ?
(कि वे) तुम्हारे पहले के साथी की अन्त्येष्टि
क्रिया कर रहे हैं !
क्या तुमको नहीं बताया गया है
कि वे तुम्हारे पीछे के संगी का
अन्तिम संस्कार कर रहे हैं ?

६८

जिली मिली सेरेंरे किचिरी नुरा कुड़ी किं
चपा चूड़ी साड़ागीररे गमछा सोबोद कोड़ाकिं

किचिरी नुरा कुड़ी किङा: किचिरी आतु तान
गमछा सोबोद कोड़ा किङा गमछा बुअलतान

किचिरी आतु ताना विंग को ईकीर ते
गमछा बुअलताना तयन मंडोवाते ।

चमकती हुई चट्टान पर
कपड़ा धोनेवाली दो लड़कियाँ हैं ।
चमचम डाबर में,
गमछा साफ करनेवाले दो लड़के हैं ।

हे कपड़ा धोनेवाली लड़कियो,
(तुम्हारा) कपड़ा बह रहा है ।
हे गमछा साफ करनेवाले लड़को,
(तुम्हारा) गमछा उतरा रहा है ।
(तुम्हारा) कपड़ा (जो) बह रहा है
(वह) साँप की गहराई में बह रहा है ।
(उस गहराई में जहाँ साँप रहते हैं)
(तुम्हारा) गमछा (जो) उतरा रहा है
(वह) घड़ियाल के दह में चला जा रहा है ।

६६

बा बासी तदा-चिको बुरु बासी तदा
कुपुल चेतन कुपुल दोको हिजु: तना
हेसः जरोम तना चोरे बाड़े गदरतना
चेंड़े चेतन चेंड़े दोको हाड़ा गुन तना ।

चिका नंगेन गे कुपुल चेतन (कुपुल)
कुपुल दोका हिजु: तना
मेरे को नंगेनगे चेंड़े चेतन
चेड़े दो को हड़ागुन तना ।

बा बासीओ का गेबुरु बासीओ का
हिजु: मे ना गे कोहिजु: तना
हेसः ओ का गे बाड़ेओ का गे
हाड़ा गुन मेना गेको हड़ागुन तना ।

सरहुल के बासी का दिन है या किसी यात्रा के बासी का दिन है
मेहमान पर मेहमान आ रहे हैं ।
पीपल पक रहा है या बड़ गदरा रहा है
पंछी पर पंछी उत्तर रहे हैं ।

(ये) मेहमान पर मेहमान किस
लिए आ रहे हैं ?
(ये) पंछी पर पंछी
किस लिए उतर रहे हैं ?

सरहुल का बासी भी नहीं है, जतरा का बासी भी नहीं है
आना है (इसलिए) आ रहे हैं (योंही आ रहे है)
पीपल भी नहीं; बड़ भी नहीं (गदराया है)
उतरना है (इसलिए) उतर रहे हैं।

७०

अलंग् सोंगोती दो दाई का:ए उड़ँ जना
अलंग पोरिती दो ढाई क:ए पयरजना
चिका मेन्ते दाई क:ए उड़ँ जना
मेरे को मेन्ते दाई क:ए पयर जना।

अलंग सोंगोती दो दाई सेन्देरा जना
अलंग पीरिती दो दाई कारेंगा जना
एकासी को पीड़ी रे दाई सेन्देराजना
तेरा सी को बादी रे दाई कारेंगा जना।

अलंग् सोंगोती दाई सिदा गुलीजना
अलंग्: पीरिती दो दाई तयोम सरजना।

हे दीदी, हमलोगों का साथी नहीं निकला,
हे दीदी, हमलोगों का प्रेमी नहीं आया।
हे दीदी, (साथी) किस कारण नहीं निकला !
हे दीदी, (प्रेमी) क्यों नहीं आया ?
हे दीदी, हम दोनों के साथी को शिकार कर लिया गया,
हे दीदी, हम दोनों का प्रेमी मार डाला गया।
हे दीदी, एकासी के मैदान में शिकार किया गया,
हे दीदी, तेरासी के मैदान में मार डाला गया।
हे दीदी, हमारे साथीको पहली गोली लगी,
हे दीदी, हमारे प्रिय को पिछला तीर लगा।

७१

चिमिन सिरमागोम डिंडा लेदा
कोकोर लेका निदाम् आतींजना
चिमिन खलोमगोम डंगुआलेदा
हापु: लेका सिगिम दुङुमजाना।

हिसीबार सिरमागोम डिंडालेदा
कोकोर लेका निदाम आतींगजाना
गेले बार कलोमेगोम डंगुआलेदा
हापु: लेका सिंगिम दुड़ुम जना।

हियातिंगों मोनीं रे चकातीं गोसानाई
कोकोर लेका निदाम आतीं जना
हियातिंगो मानींरे चकातींगोसाँनाईं
हापु: लेका सिंगीमगीती: जना।

कितने वर्षों तक कुँवारी रही
कि उल्लू पक्षी की तरह रात में चरने निकलती हो ?
कितने वर्षों तक तुम अविवाहित रही
कि तुम हापू: पक्षी की तरह दिन में सोया करती हो ?
बाईस वर्ष कुँवारी रही
(जिसके कारण) उल्लू के समान रात में जागती रहती हो
बारह वर्ष तक अविवाहित रही
(जिस कारण)हापू के समान दिन में सोती हो।
मुझे आश्चर्य होता है कि तुम
रात में उल्लू के समान चरने जाती हो
मुझे दु:ख होता है कि तुमं
दिन में हापू की तरह सोया करती हो।

७२

चिमिन-चिमिन चेंड़ेंम चिरिगालतेमा
मुसिग रेओ चेंडेंइंग् आटा मेया
चिमिन—चिमिन चेंड़े बनिता तेमा
मुसिग रेओ चेंड़ेंइंग् जूड़ा: मेया।

मुसिग रेओ चेंड़ेंईंग् आटा मेया
चूटी अपरोब रेगेईंग आटा मेया
मुसिगरेओ चेंड़ेईंग् जूड़ा: मेया
सुबा कनसुल रेईंग् जूड़ा मेया।

आई'या: सोमय-बोले ताई केन रेदो
आपिर तान चेंडें सोबेनिं आटा केना
आई'ग़ा नोसड़ा बोलेताई केन रेदो
ए-या- बुरुपारोम रेन मरा: कोई' दाअ: केना ।

हे पछी, तुम कितनी चतुराई करोगे ?
एक दिन तुमको बझा ही देंगे !
हे पछी,तुम कितनी चालाकी करोगे ?
एक दिन तुमको फँसाही लेंगे !

हे पक्षी, एक दिन बझा लेंगे ,
तुम्हारे पंखों को बझा ही लेंगे ।
हे पछी, एक दिन फँसा ही लेंगे,
तुम्हारे पंखों को फँसा ही लेंगे ।

जब मेरा समय था
(तब मैं) उड़ती चिड़ियों को बझा लिया करता था ।
जब मेरी जवानी थी
(तब मैं) सात पहाड़ पार के मोरों को पकड़ लिया करता था ।

७३

ओते लिटी लिटी चिरे सिर्मा लोपों लोपों
सुतम रेको गुतुतदा सराजोम बा
ओते लिटी-लिटी चिरे सिरमा लोपों-लोपों
चरि: रेको गलं तदा सुड़ा साँगेन

मोदे सुतम बारे सुतम
सुतम रको गुतु तदा सराजोम वा
मोदे चारि: बारे चारि:
चारि: रेको-गला तदा सुड़सांगेन ।

सुतम रेको गतु तदा सराजोमबा
सुतम रेगे गोसोजना सराजोमबा
चरि: रेको गलंतदा सुड़ा साँगेन
चारि: रेगे मैला जना सुड़ा साँगेन,

धरती गीली-गीली है और आकाश दग-दग जल रहा है
लोग साखू के फूल गूँथे हुए हैं।
धरती भींगी-भींगी है और आकाश धाँय-धाँय तप रहा है
लोगों ने कोमल पल्लवों के गुच्छे बनाये हैं।
एक सूत दो सूत
सूत में साखू के फूल गूथे हुए हैं।
एक तीली दो तीली
तीली में गुच्छे बनाये हुए हैं।
सूत में जो साखू के फूल गूँथे हैं
(वे) सूत में ही सूख गये।
तीली में जो कोमल पल्लवों का गुच्छा बनाया है
वह तीली में ही कुम्हला गया।

७४

उरिः गुपी बुगिनाचि मेरोम गुपी बुगिन
मंदुकाम पीड़ी तेको नीरेमेया
उरिः गुपी बुगिनाचि मेरोमगुपी बुगिन
सराजोमबेड़ा तेको दौड़ी गेया।

मंदुकमपिडी तेको निरे गेया
मंदुकम होरा कुड़ी एँरातना
सरजोम बेड़ा तेको दौड़ी गेया
सराजोम जाँगी कोड़ा सेगेद तना।

मंदुकम होरो कुडीः एराँतना
जाति पाति होःए एराँतना
सरजोम जाँगी कोडा सेगेद् तना
किली-किली होःए से गेदतना।

बैल चराना अच्छा है या बकरी चराना
बकरियाँ महुए के टाँड़ में दौड़ रही हैं।
बैल चराना अच्छा है या बकरी चराना
बैल, तराई के साखू की ओर भाग रहे हैं।
(बकरियाँ जो) महुए के टाँड़ की ओर दौड़ रही हैं
(इसके लिए) महुए की रखवालिन स्त्री गाली दे रही है।

(बल जो) साखू की ओर भाग रहे हैं
साखू का रखवाला आदमी गाली दे रहा है।
महुआ की रखावालिन स्त्री
जाति-पाति का नाम लेकर गाली दे रही है।
साखू का रखवाला आदमी
कुल-गोत्र का नाम लेकर गाली दे रहा है।

७५

देनादाई अमलेका चुकुबुरु
देना दाई सुपिद ताई में
देना दाई अमलेका जिरपी जलड़
देना दाई पैला ताईं में।

देना दाई अम ले काईं लेलोर दो
देना दाई सुपिद् तईं में
देना दाई अमलेकाईङ चीना ओर दे
देना दाई पैलातई में।

देना दाई कइंङ हिरुमेना
देना दाई सुपिद तई मे
देना दाई कंइङ गोड़ो मेना
देना दाई पैला तईङ में।

आईंगाओ मेनः इयानादाई
सुकूवारे सेपेड़ेद
आइंगाओ मेनः आना दाई
तयर नाड़ी विजिर बलं।

हे दीदी, तुम भी मुझे अपने समान ऊँचा खोपा बना दो
हे दीदी, तुम मुझे भी अपने समान फहराता हुआ आँचल
(वाली साड़ी) पहना दो।
हे दीदी, तुम मुझे भी खोंपा बना दो
(जिससे) मैं भी तुम्हारी तरह दिखाई दूँ!
हे दीदी, तुम मेरा भी आँचल फहरा दो

(जिससे) मैं भी तुम्हारी तरह फबूँ !
हे दीदी, मैं तुम्हारी सौत नहीं बनूँगी (ऐसा न सोचो)
मुझे खोंपा बना दो ।
हे दीदी, मैं तुम्हारी सौत नहीं बनूँगी,
मेरा भी आँचल सँवार दो ।
हे दीदी, मेरा (प्रेमी) भी कद्दू के फूल के समान सुन्दर जवान है ।
हे दीदी, मेरा (प्रेमी) भी खीरे की लता के समान
सुन्दर जवान है ।

७६

जौ जदूर आखाड़ा रे मैना
फिरे फिरे वियूरेन मे,
जौ रुड़ंग सेरेङ रे मैना
रिले गुमें खेलाड़ी मे ।

ने डिण्डा सोमयरे मैना
फिरे फिरे बियुरेन में,
वे डंगूआ नुसाड़रे मैना
रिले गुमे खेलाड़ी मे ।

अम मैनाम् जुड़ी जान रे
डाड़ी दःरे नद् दःम् जोराया
अम मैनाम जोता कानरे
सुइदः रेम रः गेराङ ।

राः ए रेओ मैनाम गेराङ रेओ
कारेम नमायारे एंगा दुलाड़ा
उड़ूः रेओ मैनाम फिकिर रेओ
कारेम नामेयारे आपू दुलाड़ा ।

हे बेटी, जदुर के अखाड़े में
घूम-घूमकर नाच लो !
हे बेटी, चट्टान की ढेकी में
फटक-फटककर खेल लो !

इस कुँवारी समय में हे बेटी,
घूम-घूमकर नाच लो !
जबतक अविवाहित हो हे बेटी,
फटक-फटककर खेल लो !

(जब) तुम विदाइ दिये जाओगी
(तब) डाड़ी के पानी में आँसू गिराओगी,
(जब) तुम्हारी शादी हो जायगी
(तब) झरने के किनारे (बैठकर) रोओगी.

(लेकिन) तुम चाहे जितना भी आँसू गिराओ
माँ का प्यार नहीं पाओगी ।
(लेकिन) तुम चाहे रोओ- कलपो
पिता का प्यार नहीं मिलेगा ।

७७

रबङ तान रेदो बोले रेड़ा तान रेदो
मरे होइंङ बोलो आरे कुदा सुड़ा
रबङ तान रेदो बोले रेयाड़ा तान रेदो
मरे होईङ सोड़ोवारे बारुसुड़ा ।

मरे होईङ बोलो आरे कुदा सुड़ा
डुबा लेका सुपिद ने इकूईङ मेहो
मरे होइङ सोड़ोवारे बारु सुड़ा
जिरपि जलं पैलाते दनांईङ मेहो ।

डुबा लेका सुपिद तेहो उकुईङ मेहो
सांगिन दिशुम तेलंग सेनोवा
जिरपि जलं पैलाते दनाईङ मेहो
जीलीङ गमय तेलगू बीरीदा ।

जाड़ा लग रहा है, ठंड लग रही है
हे जामुन की कोंपल (के समान सखी)
मैं (घर में) घुसना चाहता हूँ
जाड़ा लग रहा है ठंड लग रही है ।

हे कुसुम की कोंपल (के समान संगिनी)
मैं (घर में) घुसना चाहता हूँ।
हे जामुन की कोंपल, मैं घर में घुस रहा हूँ
आँचल में छिपा लो।
हे कुसुम की कोंपल, मैं आ रहा हूँ
कटोरे के समान खोपा से ढँक दो।
मुझे आँचल में छिपा लो
हमलोग दूर देश मे चले जाएँगे।
मुझे खोंपा से ढँक दो (लो)
हमलोग दूर देश में चले जाएँगे।

७८

ददाया बुण्डू हातु दो
ददाया दिकुकाजी गेया।
ददाया सरगेया दो
ददाया बंगालिया गेया।

ददाया दीकू काजी दो (कईङ)
ददाया कईङ इतुवना
ददाया बंगालिया दो
ददाया कईङ सरियान।

बाबू रे मैनों लेका गे
बाबू रे काजी इतुन में
बचा रे शालु लेका गे
बचा रे बकँड़ा सरिन मे।

हे दादा,बुण्डू गाँव में तो
हे दादा, सदानी बोली बोली जाती है,
हे दादा, सरगेया गाँव में तो
हे दादा, बंगाली बोली बोली जाती है।
हे दादा, सदानी बोली तो मैं
हे दादा, नहीं जानता !
हे दादा, बंगाली भाषा तो
मैं नहीं जानता !

हे भाई, तुम मैना के समान (बोल-बोलकर)
सदानी बोली सीख लो !
हे भाई तुम सुग्गा के समान (बोल-बोलकर)
बंगाली बोली सीख लो !

७६

अमना माई बले: कनरे
बुण्डु बिर विरे लेना
अमना माइ लीन्डू कनरे
कुकुरु डड़ी दापेरे: लेन ।

अमना माई मता जना
बुण्डु बिर उजड़ा जना
अमना माई सेंड़ा जना
कुकुरु डाड़ी दः अन्जेदजना ।

अमना माई को गों केदेमा
बुण्डु बिर रुआड़ जना
अमना माई कोचले के देमा
कुकुरु दाड़ी दा: पेरु'जना

हे बेटी, जब तुम छोटी थी
(तब) बुण्डू में घना जंगल भरा हुआ था ।
हे बेटी, जब तुम छोटी थी
(तब) कुकरु डाड़ी का पानी भरा हुआ था ।

हे बेटी, जब तुम बड़ी हो गई
(तब) बुण्डू का जंगल उजड़ गया ।
हे बेटी, जब तुम बुद्धिमान हो गई
(तब) कुकरु डाड़ी का पानी सूख गया ।

हे बेटी, जब तुम्हारी शादी हो गई
तब) बुण्डू का जंगल फिर से घना हो गया
हे बेटी, जब तुम्हारा विवाह हुआ
(तब) कुकरु डाड़ी में फिर पानी भर गया ।

८०

बियुरेन मे जा सालू
बियुरेन मेहो
सेकोरेने मे जा सालु
सेकोरेन मे हो ।

हेसः सकम लेका सालू
बियुरेन मेहो
बडे सकम लेका सालू
सेकोरेन मेहो ।

हेसः सकम दो जा सालू
जीजि लाद गेया
बड़े सकम दोजा सालू
बोबो रोड़ो गेया ।

सुनुम चिको दुले तदा
बोबो रोड़ गेया
गोतोम चिको अरेः तदा
बोबो रोड़ गेया ।

हे सालू, घूम-घूमकर नाचो
हे सुग्गे, फिर-फिर कर नाचो !
हे सालू, पीपल की पत्ती की तरह
घूम-घूम कर नाचो !
हे सालू, बरगद की पत्ती की तरह
फिर-फिर कर नाचो ।
हे सालू, पीपल की पत्ती (कितनी)
चिकनी है !
हे सुग्गे, बरगद की पत्ती
(कितनी) पिच्छल है ।
हे सालू, पीपल की पत्ती इतनी चिकनी है
(मानो) उसपर तेल, उढेल दिया गया हो !
हे सुग्गे, बरगद की पत्ती ऐसी पिच्छल है
(मानो) उसपर घी छिड़क दिया गया हो ।

८१

एँगाम को वा कटव तना माई
कुँडम रेम तींगुआकान
अपुमेको गीड़ि तोरो:ए तना माई
सलन्दी रेम जापागा काना।

कुडाम रेम तींगुआ कना माई
कुडाम हसा हान्दिड़ी तान
सलिन्दों रेम जापागा काना माई
चंदय दः दो जोरो तान।

हिया तिगो मोनिञा
कुड़ाम हासा हान्दिड़ीतान
चका तींग सनाञा
चन्दय दः जोरो तान।

हे बेटी, तुम्हारी माँ सरहुल का उपवास कर रही है
और तुम पिछवाड़े खड़ी हो।
हे बेटी, तुम्हारा बाप गिड़ी तोरो:ए कर रहा है
(और) तुम ओरी के नीचे सटी हो!

हे बेटी, तुम पिछवाड़े खड़ी हो
और पिछवाड़े की मिट्टी धस रही है।
हे बेटी, तुम ओरी के नीचे सटी हो
(और) ओरी का पानी चू रहा है।

मुझे चिन्ता हो रही है
कि पिछवाड़े की मिट्टी धस रही है।
मुझे दु:ख हो रहा है
कि ओरी चू रही है।

कटव = सरहुल का उपवास।
गीड़ि तोरो:ए = दूसरे दिन का उत्सव जिसमें मछली पकड़ी जाती ह।

८२

मरंड गड़ा चिरपी लेका मईनाम
बिजिर बिजिरा मइना
हुड़िङ गड़ानयरा लेका मई नाम
बीयना बोयोना मइना ।

एंगम मेना:इ गुनमाँगे मईनाम
बिजिर बिजिरा मइना
अपूम मेना:इ परियागे मईनाम
बीयाना बोयोनाँ मइना ।

एंगाम बड़े गो:ए जानरे मइना
दिकु कमिड़ीना दो मइना
अपुम बड़े सेरजानरे मईनाम
सरगा टेका-ड़िना दो मईना

हे बेटी, तुम बड़ी नदी की चिरपी मछली के समान
चमकती फिरती हो !
हे बेटी, तुम छोटी नदी की अयरा मछली के समान
फुदकती फिरतीहो !
हे बेटी, जबतक तुम्हारी माँ है
(तभी तक) चमकती फिरती हो ।
हे बेटी, जबतक तुम्हारा बाप है
(तभी तक) फुदकती फिरती हो ।
हे बेटी, जब तुम्हारी माँ मर जायगी
तब तुम किसी दीकू की दासी बन जाओगी ।
हे बेटी, जब तुम्हारा बाप मर जायगा
तब तुम किसी सरगा की दासी बन जाओगी ।

८३

हाय रबङ जू रबङ
हाय रबङ सेनो: मे
हाय रेयाड़ मरे रेयाड़ा
मरे रेयाड विरिद मे ।

जू रबड़ सेनो मे
बैपारिको जुड़ी कमाड़ा
मरे रेयाड़ा विरिद मे
लाबेना को जुड़ी चाँवर।

सेनो: दोइङ सेनोआ
वामण्डी जोम लेयाते
बिरिदे दोइंङ बिरिदा
टेण्डा: इली नू केयाते।

हाय जाड़ा, तुम चले जाओ।
हाय ठंड, तुम उठ जाओ।

हे जाड़ा, तुम उन व्यापारियों के पास जाओ
जिनके पास जोड़ी कम्बल है।
हे ठंड, तुम उन सौदागरों के पास जाओ
जिनके पास मोटे कपड़े हैं

जाने को तो जायेंगे,
पर सरहुल का भात खा लेने बाद!
उठने को तो उठेंगे,
पर सरहुल का हंड़िया पी लेने के बाद!

८४

अङ नाम रेंगे चिगिति: नाम गोनो:ए
चिमिन चिमिन लं हिया तिङा
अङ नाम रेंगे:चि गिति:नाम गोनो:ए
चिमिन चिमिनलङ चकातिङ।

हियातिङ मोनिङारे चकातिङ सनइङ
चिमिन चिमिनलङ हिया तिङा
हियातिङ मोनिङारे चकातिङ सनइङ
चिमिन चिमिन लंङ चका तिङा।

चिमिन चिमिन लङः हिया तिङा
बन्दी बाबाओ चबा तना
चिमिन चिमिन लंङः चकातिङा
मण्डी मेरोमै को टुण्डु ताना।

भूखे-प्यासे (सवेरे) उठना और भूखे-प्यासे (रात में)
मुर्दे के समान सो जाना !
हाय, हमलोग कबतक दुःख काटें ?
भूखे प्यासे उठना और रात में मर जाना !
हमलोग कबतक कष्ट झेलें ?

अचरज की बात है कि हमलोगों को
इतना इतना दुःख काटना पड़े !
आश्चर्य है कि इतना-इतना
कष्ट भोगना पड़े !

हमलोग कितना-कितना सोचें,
बन्धा हुआ 'मोरा' भी खत्म हो रहा है।
हमलोग कबतक हाय-हाय करें,
भेड़ बकरियाँ भी खत्म होती जा रहीं हैं।

मोरा—पुवाल से बन्धा हुआ धान का गट्ठर

८५

एकासी पीड़ी चिरे तेरासी बादी
बालेः होन दोको तो तोले किया
एकासी पीड़ी चिरे तेरासी बादी
लिन्डुङ गन्ड़ा दोको नेवाड़ा किया।

बालेः होन दोको तोले किया
चनाः मेन्ते को तोले किया
लिण्डु गँडा दोको नेंवड़ा किया
चनः मेन्ते को नेवड़ा किया।

एंगाते जोमे लेदा:ए जेटे रिड़ी
जेटे रिड़ी तेको तोले किया
अपुते लेदा:ए जरगी काड़ी
जरगो कड़ी तेको नेवड़ा किया ।

एकासी के टाड़ (और) तेरासी के चंवरा में
नादान लड़के को पकड़ रखा है,
छोटे बच्चे को जो बाँध लिया है
(सो) किसलिए बाँध लिया है ?
नादान लड़के को जो पकड़ रखा है
(सो) क्यों पकड़ रखा है ?
उसकी माँ ने जेठ में ऋण लिया था
उसी ऋण के कारण बाँध लिया है ।
उसके बापने बरसात में कर्ज लिया था
उसी कर्जे के कारण पकड़ रखा है ।

[माँ बाप का कर्जा चुकाने के लिए छोटे बच्चे को नौकर बनकर खेत में काम करना पड़ रहा है]

८६

इसु दुकू सुकु तेबू तेब: नाम तदा
सोना लेकन बा चण्ड: मुलू:अकना
कामी उदम दुकुतेबू सेटेर नाम तदा
रुपा लेकन बाचण्ड: सेटेराकना ।

सोना लेकन वाचण्ड: मुलु: आकना
मुनु पोटोम बन्दी बाबा होदोड़ो जाना
रूपा लेकन बा चण्ड: सेटेरा कना
केरे बोर कलुटी डुवाओ जना ।

हियातिड मोनिङारे चकातिङ सनाई
मुनु पोटोम बन्दी बाबा होदोड़ो जाना
हियातिङ मोनिङारे चकातिङ सनई
केरे बारे कलटो डवाओजना ।

बहुत दिनों के सुख-दुख के बाद सरहुल पहुँचा है
और सोना के समान सरहुल चाँद निकल गया है
बहुत उद्यम काम और सुख दु:ख के बाद (यहाँ तक)
हम पहुँचे हैं। और रूपा के समान चैत का चाँद उगा है
सोना के समान सरहुल का चाँद उग गया है
(लेकिन) नये बाँधे हुए धान के मोरे खत्म हो गये।
रूपा के समान चैत का चान्द आ गया है
(लेकिन) कुड़कुड़ाती हुई मुर्गी खत्म हो गई।
हमें चिन्ता हो रही है कि नये मोरे का
सब धान खत्म हो गया।
हमें विस्मय हो रहा है कि
कुड़कुड़ाती हुई मुर्गियाँ खत्म हो गईं।

८७

बुरु मदुकामे हले बुरु मदुकामे हो
बेड़ा सरजोम हले बेड़ा सरा जोम
बुरु मदुकामे हले रिबीरिबी तना
बेड़ा सरजोम हले गसा-गसातना।

हलाँङ-ला गातिङ रिबि-रिबी तना
तुम्बाला संगईङ गसा गसा तना
रिंगा कोरे लङ तिकी जोमेतेया
अकल कारे लंङ तं नबे तेया।

हे मित्र, यह पहाड़ी महुआ है
हे मित्र यह तराई का सखू है।
हे मित्र, यह पहाड़ी महुआ
टपाटप गिर रहा है।
हे मित्र, यह तराई का सखू
झरझराकर झर रहा है।
(महुआ जो) टपाटप गिर रहा है,
(उसे) हमलोग बटोरने चलेंगे।
सखू जो झरझराकर झर रहा है,
(उसे) हम दोनों चुनने चलेंगे।

गरीबी के दिनों में हमदोनों
(उस महुआ को) उबाल कर खाएंगे।
अकाल के दिनों में हम दोनों
(उस साखू को) पकाकर खायेंगे।

८८

साँगिन दिशुमेरे सोंगूती गातिङ
बुरु सोसो लेकाईङ लेले मेया
जिलिंग गमायरे पिरिती संगईङ
हतुर जो जो लेकाईङ चिनामेया।

हियातिङ मोनिङा रे चकतिङ सनइङ
बुरुरा: सोसो लेकाइङ लेले मेया
हियातिंग मोनिङारे चकातीं सनइङ
हातुर जो जो लेकाइङ लेले मेया।

अमारे हियातिंग दोना माईं
दिरी लेका अटल जान
अमारे चकातींग दोना माईं
सकम लेका दोपाली जान।

हे प्रिय, तुम दूर देश में
पहाड़ी भेलवा के समान दिखाई देते हो।
हे प्रिय, तुम दूर देश में
गाँव की इमली के समान दिखाई देते हो।
मुझे बड़ा दु:ख है कि
तुम पहाड़ी भेलवा के समान दिखाई देते हो।
मुझे बड़ा अफसोस है कि
तुम गाँव की इमली की तरह दिखाई देते हो।
मुझे बड़ा दु:ख है कि
तुम चटान के समान बिखर गये हो।
मुझे बड़ा अफसोस है कि तुम
पत्ती के समान हवा में उड़ रहे हो।

८९

एला हो कुम्पाट मुण्डा को
एला हो दुबान पे
एला हो नाग वंशी राजा को
एला हो जारुआन पे ।

एला हो ने किता पाटी रे
एला हो दूबान पे
एला हो ने पपाड़ा गण्डुरे
एला हो जारु आनपे ।

एला हो ने चूना तमाकु
एला हो जो मान पे
एला हो ने इली सवः
एला हो नु आनेप ।

हे कुम्पाट (शुद्ध) मुण्डा लोगो,
आओ बैठो ।
हे नागवंशी राजाओ,
आओ - बैठो !
आओ और खजूर की चटाई पर
बैठो !
आओ और पपड़ा के पीढ़े पर बठो ।
आओ (बैठो) और चूना तम्बाकू खाओ
आओ (बैठो) और हंड़िया इत्यादि पियो !

९०

तिसीं दों सोंजोको, जोजो रेगेहाई को
गपा दो सोंजोको गोंटा रम्बड़ा

चिको मेनेगे जोजो रेगेहूई को
मेरे को मेनेगे गोटा रम्बड़ा ।

सरजोम बा नंगेन गे जो जो रेंगे हई को
सूड़ा संगेन नंगेनगे गोटा रम्बड़ा ।

आज सौभाग्य से इमली के रस में मछली
(और) कल संयोगवश (पूरे) उड़द की दाल
(पकाई जायगी)
किसलिए इमली के रस में मछली
और (पूरे) उड़द की दाल (पकाई जायगी) ?
साखू के फूल के लिए (उपलक्ष्य में)
इमली के रस में मछली और
नर्म कोंपलों के लिए (उपलक्ष्य में)
पूरे उड़द की दाल पकाई जायगी
[सरहुल पर्व के उपलक्ष्य में मछली बनती है और दूसरे दिन उड़द की दाल पकती है]

६१

बादोपे बातना मुण्डा को
बा कपे ओमया मुण्डा को
डाली दोपे डाली तना सन्ताको
डाली कापे चेंदे ।

बा तेपे रिंगा तना मुण्डा को
बा कपे ओमेया मुण्डा को
डाली तेपे अकलतना सन्ता को
डाली कापे चेंदे ।

अलेयः दीशुम तेपे सेनोः रेदो
सुपिद चुटि रेले बाकुलपेया
अलेयः गमय तेपे वीरिद रेदो
रोपोद सुबा रेले डाली कुल पेया ।

सुपिद चुटि रेले बाकुल पेया
लो दोब लेका गेले बाकुल पेया
रोपोद् सुवारे ले डाली कुल पेया
तिजर तोन्जोर ले डाली कुल पेया ।

हे मुण्डा लोगो, तुमलोग सरहुल तो मना रहे हो,
लेकिन फूल नहीं देते हो।
हे पाहुन लोगो, तुमलोग सरहुल तो मना रहे हो,
लेकिन फूल नहीं देते हो।

ऐ मुण्डाओ, तुमलोग फूल के भूखे हो,
इसलिए फूल नहीं देते हो।
ऐ पाहुनो, तुमलोगों को फूल की कमी है,
इसलिए फूल नहीं बाँटते हो,

ऐ मुण्डाओ, यदि तुमलोग हमारे देश में चलो
(तो) हमलोग फूल देकर बिदा करेंगे।
ऐ पाहुन लोगो, यदि हमारे देश में जाओ
तो हमलोग बिदाई के समय फूल देंगे।

ऐ मुण्डाओ, हमलोग तुम्हारी चोटी के ऊपर
फूल खोंस देंगे।
ऐ पाहुनो, हमलोग तुम्हारी चोटी के नीचे
फूल खोंस देंगे।

६२

सराजोम बारे कुइलीम
हड़ागू लेनाया कुइली
सुड़ा साँगने रे कुइलीम
नो सोर लेना।

इली माण्डीनगेनगे कुइलीम
हाड़ागू लेनाया कुइली
सिमकाटा नगेन कुइलीम
नोसोर लेना।

इलीमण्डी चबाजना कुइलीम
सेनोः जनाम कुइलीम
सिमकाटा टुण्डूजाना कुइलीम
हआडा लेन।

हे कोयल, तुम साखू के फूलों में उतरी थी
हे कोयल, तुम नई कोंपलों में आई थी।

हे कोयल, तुम भात और हड़िया के लिए उतरी थी
हे कोयल, तुम मुर्गी की टाँग के लिए आई थी।

हंड़िया और भात खत्म हो गया
(इसलिए) तुम चली गई।
मुर्गी की टाँग समाप्त होगई
(इसलिए) तुम लौट गई।

६३

बा दोगा एयङ
बा तेबा:तना
डाली दोगा अपुइँग
डाली सेटेर तान।

बोंगा बुरु एयङ
कईङ इतुआना
सेवा सुसार आपुइङ
कईङ सरियान।

इसु हेड़ेम जगरते
इतु ताइङ मे
इसु हेंडेम वाकँडाते
सारिताईङ मे।

हे माँ, बा-पर्व पहुँच रहा है
हे पिता, फूलों का बा पर्व पहुँच रहा है।

हे माँ, मैं पूजा करना नही जानता हूँ
हे पिता, मैं सेवा करना नहीं जानता हूँ।

अत्यन्त मीठी बातों से सिखा दो
(हे पिता) बहुत मीठे ढंग से मुझे बता दो

६४

बा चन्डू: मुलु: लेना
सरजोम बा बा तना
सुड़ा सांगेन बाले ओपद् नवा दड़ारे
सुड़ा साँगेन सुड़ा तना ।

सरजोम बा बा तना
दिले दोंगोबा
सुडा सांगेन सुड़ा तना
तिंजर तोंजोरा ।

दिले दोंगोबा
बा तेगे तोपाकना
तिंजर तोंजोरा
सुड़ा तेगे दोलोबा कना ।

चैत का महीना आ गया
साखू का फूल, फूल रहा है
नई डालों पर नई कोपलें
पल्लवित हो रही हैं ।

साखू झूम-झूमकर फूल रहा है
नई कोपलें गहगहाकर फूट रही हैं ।

साखू जो झूम-झूमकर फूल रहा है
(उससे) डालें ढक गई हैं ।
पत्तियाँ जो गहगहाकर फूट रही हैं
उनसे टहनियाँ ढक गई हैं ।

६५

साँगिन दीसुमतेईंग हिजु:कना
सोन्जोको होरा रेपे जदूरतना
गूने ज्ञान कङ सोबेन होड़ो
हड़म बुड़िया को लेलेतना ।

बुगिन लेकागे होईङ दूरंगलेदा
गुना तदलेका गेको गुदाआ जिञा
रूतन को दो हो निकू दो निकू
बोरे:ए लेका गेको बोतों जिञा ।

गुना तद्लेका गेको कूदव जिआ
पैला किचिरी को दोन्दो वाइन्ताना
बोरो:ए लेका गेको बोतों जिञा
दीरेन तना ओकाए दोमोंयेन तना ।

मैं बहुत दूर देश से आया हूँ
संयोगवश तुमलोग रास्ते में जदूर नाच रहे हो
सभी ज्ञानी और गुणवान,
बूढ़े और बूढ़ियाँ देख रही हैं ।
मैंने यहाँ अच्छे भाव से ही गाया
(लेकिन) तुमलोग अपराधी की भाँति मुझे दौड़ा रही हो
और तो और, बाजा बजानेवाले भी डरा रहे हैं,
मानो हम डर जायँगे ।
अपराधी की भाँति मुझे दौड़ा रही हो
और अपना आँचल तान रही हो
और (बाजा बजाने वाले) छाती तानकर इस प्रकार डरा रहे हैं,
मानो, हम डर जायँगे ।

९६

ओको कोरे होको सुसुन तना
बुरु रे लम: जो दो चटा: गो लेका
चिमय कोरे होको करम तना
वेड़ारे तिरिल तारोब गदारी लेका

बुण्डु कोरे होको सुसुन तना
बुरु रे लम: जो दो चट: गो लेका
तमाड़ा कोरे हो को करम तना
बेडारे तिरिल तरोब गदारो लेका ।

हि़या तिङ मोनिङ रे चका तिङ सनाइ',
बरु रे लमः जो दो चटः गो लेका
हि़यातिङ मोनिङः रे चकातिङ सनाइ',
बेड़ारे तिरिल तरोब गदारो लेका ।

लोग कहाँ पर नाच रहे हैं (जिसके प्रभाव से)
पहाड़ पर लामा (एक फल) फटने-जैसा हो गया है !
कहाँ पर लोग करमा नाच रहे हैं (जिसके कारण)
घाटी में 'तिरिल और तारोब' गदरा गये हैं ।
(लोग) बुरुडू में जदुर नाच रहे हैं (जिससे)
पहाड़ पर लामा फटने लगा है ।
(लोग) ताड़ में करमा नाच रहे हैं (जिससे)
'तिरिल और तौरोब' गदरा रहे हैं ।
मुझे आश्चर्य हो रहा है (कि कैसे) पहाड़ पर
लामा फल फटने लगा है ।
मुझे आश्चर्य हो रहा ' (कि कैसे) घाटी में
तिरिल और तौरोब गदराने लगे हैं ।

९७

सलुरे सुगाम नकीगेन तना
सलुरे सुगाम् जुरुड़ुन तना
सलुरे सुगा ओको तेम तना
सलुरे सुगा चिमय तेम तना ।
सलुरे सुगा सुसुन तेचिम सेनो तना
सलुरे सुगा करम तेचिम विरिद् तना
सलुरे सुगा को कुड़सु तम गेया
सलुरे सुगा को तिड़िसा तम गेया ।।

हे सालू सुग्गा, तुम कंघी लगा रहे हो ।
हे सालू सुग्गा, तुम शरीर को सँवार रहे हो ।
हे सालू सुग्गा, तुम कहाँ जा रहे हो ?
हे सालू सुग्गा, तुम कहाँ चल रहे हो ?
हे सालू सुग्गा, तुम क्या नाचने जा रहे हो ?
हे सालू सुग्गा, क्या तुम करम खेलने जा रहे हो ?
हे सालू सुग्गा, (वहाँ पर तुमको) लात जमा देंगे ।
हे सालू सुग्गा, (वहाँ पर तुमको) गिरा देंगे ।

९८

पाडिया रिगि मिगि हो
पाड़िया तम जलातिङ तान
डुरिया जोलो मोलो हो
डुरिया तम बुलातिङ तान ।

पाड़िया ओको कोरे हो
पाड़िया तम जला तिङ तान
डुरिया चिमय कोरे हो
डुरिया तम बुलातिङ तान ।।

पाड़िया सुमुन कोरे हो
पाड़िया तम जलातिङ तान
डुरिया करम कोरे हो
डुरिया तम बुलातिङ तान ।।

तुम्हारा कपड़ा चितकबरा है
तुम्हारा कपड़ा उड़ रहा है ।
तुम्हारा फीता झलमला है
तुम्हारा फीता फरफरा रहा है ।
तुम्हारा कपड़ा कहाँ पर उड़ रहा है ?
तुम्हारा फीता कहाँ पर फहर रहा है ?
तुम्हारा कपड़ा नाच में उड़ रहा है ।
तुम्हारा फीता करम में फहर रहा है ।

९९

दोलङ हिसी दोलङ चड़ूरे
सुसुन को लेले आगुते ।

दोलङ हिसी दोलङ चड़ूरे
करम को चिना आगुते
कइञा हिसी कइञा चाड़ूरे
गतिङो बंग इया ।

कइआ हिसी कइआ चाड़ू रे
संगाइङो रे बंगइया
दोलङ हिसी दोलङ चड़ू रे
सुसुन रेलङ नामीया ।

दोलङ हिसी दोलङ चड़ू रे
करम रेलङ चिनाइया
कुरी हिसी कुरी चाड़ू रे
काए लेलो लेलोः आ ।

कुरी हिसी कुरी चाड़ू रे
काय चिनाओ चिनावा ॥

हे 'निसी' चलो, और हे 'चाड़ू' चलो,
(चलो) हम लोग नाच देख आवें ।
हे निसी, चलो और हे चाड़ू, चलो ।
(चलो) हम लोग करम देख आवें !

हे निसी, मैं नहीं जाऊँगी ।
(क्योंकि) मेरा प्रिय नहीं है ।
हे चाड़ू, मैं नहीं जाऊँगी ।
(क्योंकि) मेरा प्रिय नहीं है ।

हे निसी, चलो, जहाँ नाच होगा ।
वहीं हम प्रिय को पा जायेंगे ।
हे चाड़ू, चलो जहाँ करम होगा ।
वहीं हम प्रिय को देख लेंगे ।

हे निसी, प्रिय नहीं दिखाई देता है
हे चाड़ू, प्रिय नहीं मिल रहा है ॥

१००

इसु होबु सुसुन जान
काली होबु करम जान
दोला होबु सेनो गा
मरे होबु बिरिदा ।

दोला होबु सेनोगा
होरा—सांगिना
मरे होबु बिरिदा
डारेन—जिलिङा ।

होरा—सांगिना
मण्डी रेंगे गा
डारेन जिलिङा
दगे तेतांङा ।

हे भाई, हम लोग बहुत नाच चुके ।
हे भाई, हम लोग, करमा खेल चुके ।
हे भाई, चलो, चलें
हे भाई, चलो, अब जायँ ।
हे भाई, चलो, रास्ता बहुत दूर है ।
हे भाई, चलो, रास्ता बहुत लम्बा है ।
रास्ता दूर है (इसलिए) भूख लग जायगी
रास्ता लम्बा है (इसलिए) प्यास लग जायगी ।

१०१

दोलङ हो हुन्दी बा
दोलङ सुसुन कोते लङ
दोलङ हो डाबाय बा
दोलङ हो करम कोते लङ ।

कइञा हो गतिङों बंगाइया
कइञा हो सुसुन कोते दो
कइञा हो संगइङो बंगाइया
कइञा हो करम कोते दो ।

दोलङ हो सुसुन रेलङ नामियाँ
दोलङ हो सुसुन कोते लङ
दोलङ हो करम रेलङ चिनाइयाँ
दोलङ हो करम कोते लङ ।

कुरी हो अयर रेचि तायोमरे
कुरी हो काए लेलोः लेलोः
कुरी हो तलारेचि माला रे
कुरी हो काय चिनाव चिनवं ।

कचि होम लेले जदिया
अयर रेगे-ए-गतिया कना
कचि होम चिना जादिया
तयोमरे-ए जपागा कना ।

कचा रोइङ— लेले जदिया
आते रेदो ओते दुदुगार
कचा होइङ चिन्ना जदिया
सिरमा रेदो सिरमा कोंवासी ।

हे हुन्दी फूल, चलो नाचने के लिए चलें ।
हे डबाय फूल, चलो करम खेलने के लिए चलें ।
नहीं, मैं नहीं जाऊँगा, मेरा प्रिय नहीं है ।
नहीं, मैं नहीं जाऊँगा, मेरा प्रेमी नहीं है ।

चलो, नाचने चलें, हम लोग उसे वहीं पा जायेंगे ।
चलो, करम खेलने चलें, हम लोग वहीं देख लेंगे ।
कहाँ है ? आगे पीछे कहीं तो दिखाई नहीं देता ।
किधर है ? (नाच के) बीच में कहीं तो नजर नहीं आता ।

क्या तुम नहीं देखते हो ? आगे (किसी के साथ) जुड़ा हुआ है ।
क्या तुम नहीं देखते ? पीछे (किसी के साथ) मिला हुआ है ।
नहीं, मैं नहीं देखता, जमीन से धूल उड़ रही है ।
नहीं, मैं नहीं देखता, आकाश में कुहासा छा गया है ।
(धुँआधार नाच हो रहा है)

१०२

सागिन दिसुम तेइङ हिजुः कना
सोंजोको नमानारे जदुर सुसुन ।
जिलिङ गमाय तेइङ सेटेर लेना,
सोंजोको नमानारे करम कोजोड़ों ।

सोंजोका नमानारे जदुर सुसुम,
ए ंगा सिम फना दपे फदा जदिञा
सोंजोको नमानारे करम कोजोड़ों
रुली मुई तुनुङ्पे इचः जदिञा ।

एना मोसाइङ हिया तिङ जना,
एंगा सिम फनादपे फदा जडिञा
एना मोसाइङ चका तिङ जना
रुली मुई तुनुङ्पे इचः जदिञा ।

अइ ंगारे हिया तिङ दो
सिरमा रेगे टेकद जान
अइ ंगारे चकातिङ दो
ओते रेगे दालोब जान ॥

मैं बहुत दूर से आया हूँ ।
संयोग से मैं जदुर नाच पा गया ।
मैं बहुत दूर देश से पहुँचा हूँ
संयोगवश मुझे खेल मिल गया ।
संयोगवश जदुर नाच पा गया ;
लेकिन तुम लोग गदबदाई हुई मुर्गी की तरह मार रही हो ।
संयोगवश मुझे करम खेल मिला ;
लेकिन तुम लोग लाल चींटी के डँसने की तरह मुझे कोंच रही हो
इसके लिए मुझे दुख है कि तुम लोग
मुर्गी की तरह लात मार रही हो ।
इसके लिए मुझे चिन्ता हो रही है
कि तुम लोग लाल चींटी की तरह बींध रही हो ।
हमारी चिन्ता आकाश में अटक गई ;
हमारा सोच जमीन में गिर गया ।
(सोच-चिन्ता किसी काम नहीं आये ।)

१०३

दोलङ हिसी दोंलङ चड़रे
सुमुन को आयुम नमते

दोलङ हिसी दोङड़ चड़ूरे
करम को पयर नमते ।

कइञा हिसी कइञा चड़ूरे
कुंड़म रे रिचि तोला कना
कइञा हिसी कइञा चड़ूरे
सलंदीरे बेंसेरा नेवड़ा कना ।

कइञा हिसी कइञा चड़ूरे
रिचि गुगुरा जोडोए केना
कइञा हिसी कइञा चड़ूरे
बेसेरा टिड़िङ रिड़िङ केना ।

कइञः हिसी कइञः चड़ूरे
कुंडमरे एंगाइङ दुबा कान
कइञः हिसी कइञः चड़ूरे
सलन्दीरे आपुइङ जपा कान ।।

हे निसी, चलो, हे चाड़ू, चलो ।
अदुर गीत सुनने चलो ।
हे निसी, चलो, हे चाड़ू, चलो ।
करम का गीत याद करने चलो ।

हे निसी, मैं नहीं चलूँगा, हे चाड़ू, मैं नहीं चलूँगा,
पिछवाड़े सिकरा (बाज) बँधा हुआ है ।
हे निसी, नहीं चलूँगा, हे चाड़ू, मैं नहीं चलूँगा,
ओरी में बाज बँधा हुआ है ।

हे निसी, नहीं, हे चाड़ू, नहीं ।
बाज के पैर का घुँघरू बज रहा है
हे निसी नहीं, हे चाड़ू नहीं ।
बाज की घंटी आवाज कर रही है

हे निसी, मैं नहीं, हे चाड़ू, मैं नहीं ।
घर के पीछे माँ बैठी हुई है ।
हे निसी, मैं नहीं, हे चाड़ू, मैं नहीं ।
घर के आगे बाप भीत से उठँगा हुआ है ।

१०४

रासाल क्यो जरी बन्दु गुटु साटा साटी क्यों
रासाल क्यों जरी टेम्बासर जाड़ाम् जाड़ाम्
रासाल क्यों जरी ओकोरे को मापा तना
रासाल क्यों जरी चिमय रे को तुपुइङ तना ।
रासाल क्यों जरी बुण्डू रे कौ मापा तना
रासाल क्यों जरी टमाड़ रे को तुपुइङ तना
रासाल क्यों जरी बुण्ड़ राजा सिदा सार जना
रासाल क्यों जरी टमाड़ राजा तयोन गुली जना
रासाल क्यों जरी बुण्ङू राउड़ू जना
रासाल क्यों जरी टमाड़ राजा लंदुब जना
रासाल क्यों जरी दिशुम दो दुदुगार जना
रासाल क्यों जरी गगय दो कोंवासी जना ॥

हे रासाल, क्यों जरी बन्दु गुटु की तरह गुत्थम-
गुत्थी हो रही है। (और)
टेम्बासरी के समान झर-झर हो रहा है।
कहाँ पर मार-काट कर रहे हैं ?
कहाँ पर तीर छूट रहे हैं ?
बुण्डू में मार-काट हो रही है।
तमाड़ में तीर छूट रहे हैं !
बुण्डू का राजा पहले तीर से मारा गया।
तमाड़ के राजा को पीछे की गोली लगी।
बुण्डू का राजा गिर गया।
तमाड़ का राजा धराशायी हो गया।
देश में (लड़ाई के कारण) आँधी आ गई।
दुनिया में कुहासा छा गया।

१०५

हाय नाराङ गंगा नाराङ
हेड़े लेकम जलातिङ ताना
हाय नाराङ गंगा नाराङ
ड़लू लेकम बलातिङ तान ॥

हेड़े लेकम जला तिङ तान
कण्डा ताम जुले तान
डुलु लेकम बुलातिङ तान
पिरी ताम लिंगी तान।

कण्डा ताम जुले तना
सेंगले लेका जुले तना
पिरी ताम लिंगीं तना
दअः लेका लिंगी तना।

सेंगेल लेका जुले तना
तरा दिशुम लो तना
दअः लेका लिंगी तना
तरा गमय बुअल तना॥

हे गंगा नारायण, तुम
हेड़े पक्षी की तरह उड़ रहे हो!
हे गंगा नारायण, तुम
डुलू पक्षी के समान चक्कर काट रहे हो!
तुम (जो) हेड़े पक्षी के समान उड़ रहे हो
तो तुम्हारी तलवार चमक रही है।
तुम जो डुलू पक्षी के समान चक्कर काट रहे हो
तो तुम्हारी ढाल बह रही है।
तुम्हारी तलवार जो चमक रही है
आग के समान चमक रही है।
तुम्हारी ढाल जो बह रही है
पानी के समान बह रही है।
(तुम्हारी तलवार) जो आग के समान चमक
रही है (उससे) आधा देश जल रहा है
(तुम्हारी ढाल) जो पानी के समान बह रही है
(उससे) आधा देश बह रहा है।

१०६

सासांग हातु हले सासाँग हातु हो
बिण्डा गोर-नगोर हले विण्डा गोर-नगोर

सासांग हातु रेको मापा तना
विण्डा गोर नगोर रेको तुपुइङ तना ।

मुरूद बा कापी तेको मापा तना
इचः बा सार तेको तुपुइङ तना
हागा हागा रेको मापा तना
कुमा-गेड़े रेको तुपुइङ तना ।

तोबा लेकन पिडी रेको मापा तना
दही लेकन बादी रेको तुपुइङ तना
तोवा-लेकन पिड़ी रेको मायोम जना
दहीं लेकन वादी रेको दोड़े वियुर जना ।।

सासांग (नामक) गाँव है
(और) विण्डागोर (नामक) नगर है ।
सासांग गाँव में मार-काट हुई ।
विण्डागोर गाँव में तीर चला ।
पलास के फूलों के समान फरसों से मार-काट हुई
और ईचा फूल के समान तीर से लड़ाई हुई ।
भाई-भाई में मार-काट हुई
(और) मामा-भगिना में तीर चला ।
दूध के समान (साफ) मैदान में मारकाट हुई,
दही के समान (साफ) मैदान में तीर चला ।
वह दूध के समान मैदान लहूलुहान हो गया,
वही दही के समान मैदान गेरुवा रंग का हो गया ।
(इतनी मार-काट हुई—खून बहा ।)

१०७

डण्डा गुले गुले चिहो
होड़ो टेमा टासी
काचि गतिङ एम बोरो तेया

कापी बिंजिर बलं चिहों
सार सिड़ाय सोड़ोए
काचि सांगांडेम चिना तेया ।

एगाइ सें आपुइङ को सेंगेल लेका
काचि गातिङ ऐम बोरो तेया
होने बारे को दः गे लेका
काचि सागाइड़ेम चोरी तेया ।

एगाइङ आपुइङ को सेंगेल लेका
सेंगेल लेका गेको जुले तना
होने बारे को दः गे लेका
दः गे लेका गेको लिंगी तना ।

सेंगेल लेका गेको जुले तना
सेंगेल लेका गेको गोएः कोआ
दःगे लेका गेको लिंगी तना
दःगे लेका गेका अंजेद कोआ ।।

भयानक डंडे लिये लोगों की जहाँ पर ठसा-ठस भीड़ है
हे प्रिय, उसे देखकर क्या तुम्हें डर नहीं लगता ?
जहाँ चमचमाते हुए बलुवे और सन-सनाते हुए तीर हैं ।
हे प्रिय, उसे देखकर क्या तुम नहीं डरते ?
मेरे माँ-बाप आग के समान हैं ;
हे प्रिय, क्या तुम्हें भय नहीं लगता ?
मेरे भाई-बन्धु पानी (की धारा) के समान हैं ।
क्या तुम्हें डर नहीं लगता ?
जो आग के समान जल रहे हैं
वे आग ही की तरह बुझ जायेंगे ।
जो पानी के समान बह रहे हैं
वे पानी के समान सूख जायेंगे ।
मेरे माँ-बाप आग के समान हैं
और आग ही के समान चमक रहे हैं ।
मेरे भाई-बन्धु पानी के समान हैं
और पानी के समान ही बह रहे हैं ।

१०८

दिरी पनारोम
सेन्देरा कोदो

जलाकारी टोण्डाँनरे
कारेंगा कोदो

लीहा-लीहा गुटुरेको
लीहा लीहा गोरा किया
मारे धार बेड़ा ड़ा रेको
मारे धार किया ।

तुयु चिको नमाः कअः इया
लीहा लीहा जदा
सराम चिको नमा कअः इया
भारे धार जदा ।

सेन्देरा कोदो रेको
लीहा लीहा जदा
कारेंगा कोदो रेको
मारे धार जदा ।।

पथरीली नदी के उस पार शिकार खेलनेवालों ने,
(और) झुरमुटवाली झाड़ियों में शिकार खोजने-
वालों ने लीहा-लीहा करते हुए झाड़ी में
(उसको) मार डाला ।

धरो-पकड़ो कहते हुए पहाड़ की तराई में
उसे मार डाला ।
क्या उनलोगों ने सियार पाया है कि
लीहा-लीहा करके चिल्ला रहे हैं ?

क्या उनलोगों ने कोई बारहसिंघा पाया है
जो धरो-मारो कहकर शोर मचा रहे हैं ?
शिकारी लीहा-लीहा करके चिल्ला रहे हैं ।
शिकारी धरो-मारो-पकड़ो कहकर शोर
मचा रहे हैं ।

१०६

लं लं लङ चेड़े दो बोयो
ओको रेम आटा लिया
बेंगा वंगो गड़ा किकिर दो बोयो
चिमय रेम जुङ लिया ।

लं लं लङ चेड़ें दो बोयो
ककसा रेइङ आटा लिया
वेंगा बंगी गड़ा किकिर दो बोयो
रोरोंगा रेइङ जुड़ः लिया ।

ककसा रेइङ आटा लिया हो
चिलंचिका इया
रोरोंगा रेइङ जुड़ः लिया हो
मेरे लाङ चिका इया ।

ककसा रेइङ आटा लिया हो
मनी लाङ सुसुमिया
रोरोंगा रेइङ जुडः लिया हो
राई लाङ सासङीआ ।

मनी लाङ सुसुमिया हो
इसु होए सिवीला
राई लाङ सासाङीआ हो
कारे होए हेड़ेमा ॥

हे बेटा, (इस) लं-चिड़िया (लम्बी पूँछवाली)
को कहाँ बझाया ?
हे बेटा, इस चितकबरे किकिर पक्षी को कहाँ फँसाया ?
इस लं-चिड़िया को ककसा (एक झाड़ी) में बझाया ।
इस किकिर-पक्षी को रोरोंगा (एक झाड़ी) में फँसाया ।
(यह चिड़िया जिसे) ककसा में बझाया,
उसे हम लोग क्या करेंगे ?

(यह पक्षी जिसे) रोरेंगा में फँसाया,
उसे हमलोग क्या करेंगे ।
(जिसे) ककसा में बझ या, उसमें सरसों का तेल देंगे
(जिसे) रोरेंगा में फँसाया, उसमें राई का मसाला डालेंगे ।
सरसों का तेल डालने से वह (मांस बड़ा) स्वादिष्ट होगा ।
राई का मसाला लगाने से (वह मांस) बड़ा मधुर होगा ?

११०

हरे राजा नाग बसी को
कजी होपे बाइ लेदा
दिशुम राम भुइयरी को
कारे होपे उठाव लेदा ।

कजी होपे वाई लेदा
दिशुम पे चेच केंदा
कारे होपे उठाव लेदा
गमय होपे तम्बुर केद ।

निन्दाते नुम्बाते
कजी होपे बाइ लेदा
सिंगी ते मारे सालते
कारे होपे उठाव लेदा ।।

हे नागवंशी राजाओ, तुम लोगों ने
बात बनाई थी ।
ऐ भुइयारी राजाओ, तुम लोगों ने ठान
लिया था ।
तुम लोगों ने जो बात बनाई थी
(उससे) दुनिया को नष्ट-भ्रष्ट कर दिया ।
तुम लोगों ने जो ठान लिया था
(उससे) सारी दुनिया में उथल-पुथल मच गई ।
रात के अँधियाले में तुमने बात बनाई थी,
दिन के उजियाले में तुमने ठान लिया था ।

१११

नाइ दोगा ओकोरेन वण्डा सेता ।
नाइ दोगा टकाए टोण्डोमन: ।।
नाइ दोगा ओकोरेन डुण्डा सुकुरी ।
नाइ दोगा सिकाए चिपुदन ।।

नाइ दोगा बुण्डू रेन वण्डा सेता ।
नाइ दोगा टकाए टोण्डोमन: ।।
नाइ दोगा टमाड़ रेन डुण्डा सुकुरी ।
नाइ दोगा सिकाए चिपुदन ।।

मा ! यह जिसने रुपया बाँधा है
वह बंडा कुत्ता कहाँ का है ?
मा ! यह जिसने सिक्का पकड़ रक्खा है
यह बड़े सिर वाला सूअर कहाँ का है ?
मा ! यह रुपया बाँधे हुए बण्डा कुत्ता
बुण्डू का है ।
मा ! यह सिक्का पकड़े बड़े सिर
वाला सूअर तमाड़ का है ।

११२

बुरुआते हडागुन कोहो सोन्दारी
नाराते नोसोरेन को
सेके: सेके: हाड़ा गुन कोहो सोन्दारी
रोलो: रोलो: नोसोरेन को

निकु चिको तुला बुलुङा हो सोन्दारी
निकु चिको गंडा रासुड़ी
तुलाया को तुला बुलुङा हो सोन्दारी
गंडाया को गंडा रासुंड़ी

जोजो सुबा डेरा तेकोआ हो सोन्दारी
उली सुबा बसाने की आ ।

हे सोन्दारी, पहाड़ से उतरनेवाले,
(और) तराई से आनेवाले (ये राही)
हे सोन्दारी, ये सेके-सेके उतरनेवाले,
(और) रोलो-रोलो आनेवाले (राही)
हे सोन्दारी, क्या यही लोग नमक
तौलनेवाले हैं ?
क्या यही लोग लहसुन बेचनेवाले हैं ?
हाँ, यही लोग नमक तौलनेवाले हैं।
हाँ, यही लोग लहसुन बेचनेवाले हैं।
हाँ सोन्दारी, ये इमली के पेड़ के नीचे
डेरा डालनेवाले हैं।
ये आम के पेड़ के नीचे वास करनेवाले हैं।

११३

कलीकता तेलेंगा की राकब लेमा
ओकोरे नाजिनाको डेरा केदा
सारगाटी सायोव को ऊपर लेना
चिमय रे नाजिनाको वासा केदा

मेनः मेनः दो राँची पिड़ी
राँची पिड़ी रेको डेरा केदा
मेनः मेनः दो डुरुन्डा बादी
डुरुंडा बादी रेको वासा केदा

राँची पिड़ी रेको डेरा केदा
राँची पिड़ी बोले एकेला जना
डुरुंडा वादी रेको वासा केदा
डुरुंडा वादी बोले तायुर जना।

राँची पिड़ी बोले एकेला जना
दिशुम रटी एकेला जना
डुरुंडा बादी बोले तायुर जना।
गमय रटी तायुर जना॥

कलकत्ता के तिलंगे जो आये
हे आजी, उन लोगों ने कहाँ डेरा डाला है ?
शेरघाटी से जो साहब लोग आये थे,
हे आजी, उन लोगों ने कहाँ निवास किया ?

राँची में जो मैदान है (उस)
राँची मैदान में डेरा किया
डुरंडा में जो मैदान है (उस)
डुरंडा मैदान में वास किया ।

राँची में जो डेरा किया
राँची मैदान काँप गया ।
डुरंडा में जो वास किया
डुरंडा मैदान हिल गया

राँची मैदान जो काँप गया (उससे)
सारा देश काँप गया
डुरंडा मैदान जो हिल गया
(उससे) सारी दुनिया हिल गई ।

११४

अट्ठारह सौ छैयानबे सालरे
जोर्जो बादशाह हुकुम केनारे
टभाड़ा थाना, खूँटी डिबिजन
हातु हातु उमिन सोङ केदा

डोण्डो लोभ हागा होन को
रेपे-ए तना को ओते आड़ी को
तनाजा रेपे-ए घूस ओम ते
काबु जनाबु टाका ओम ते

दंगड़ा हाड़ाम होड़ो को
उड़ु: तनाबु आते आड़ी को
निदा सिंगी बु उड़ु: तना
सुकुते काबु दुड़ुम तना ।।

अठारह सौ छियानबे साल में
जार्ज बादशाह ने हुकुम किया ।

खूँटी सबडिवीजन के तमाड़ थाने के
गाँव-गाँव में अमीन पहुँचे।
(हमारे) मूर्ख तथा लोभी भाई लोग
दूसरों के खेत लूट रहे हैं।

घूस दे कर (अमीनों का) तनाजा किया और लूटा।
और हम लोग रुपया देने से थक गये।
हम सभी बूढ़े और जवान
खेत के विषय में चिन्ता में पड़ गये हैं।

दिन रात चिन्ता में रहते हैं।
और सुख से नींद नहीं आती है।

११५

तमाड़ परगना गरेड़े उली हातु
विरसा भगवान-ए जोनोम लेना
आटा माटा विरको तला चलेकाद रेदो
चलेकाद हातु रे उल गुलां लेदा

सारवादा गिरजारेसार थुइए लेना
खूँटी हातु रेदो हिल हिलाब लेना
डिपुटी कमिश्नरेन हिजु: लेना
विरसा भगवान ए पोचा केना

डोम्वारी बुरु रेको रकब लेना
गुणो ज्ञाना कन सोबेन होड़ो
बुरु चेतान रेको हिबी हिबी केदा
बेड़ा लतराते टोटे केद कोवा

गोंयआ कान एंगा तोवा होन नुनु केना
मेम सायोव इनि: ए लेलते जी विलक: किया
हों हों चिका जना-नेया दो का कटीकि जना

तमाड़ परगने के देरेड़ा उली हातु गाँव में
विरसा भगवान का जन्म हुआ।

घोर घने जंगल के बीच चलकद् गाँव में
हलचल मच गई।
सरवदा गिरजा में तीर चलाया।
और खूँटी गाँव में हलचल मच गई।
(तब) डिप्टी कमिश्नर आये
(और) बिरसा भगवान का पीछा किया
(तब) गुणी ज्ञानी सभी मनुष्य-
डुम्बारी पहाड़ पर चढ़ गये
(बिरसा के दलवाले) पहाड़ के ऊपर चिल्लाये
(डिप्टी कमिश्नर दल ने) पहाड़ के नीचे से
गोली चलाई।
(ऐसी गोली चली कि) एक बच्चा मरी हुई माँ
का दूध पी रहा था।
यह देख कर मेम साहब को अच्छा नहीं
लगा।
हाय, हाय, क्या हो गया। यह तो ठीक नहीं हुआ।

११६

अट्ठारह सौ निन्नबेरे मारे होकी रकब लेन
तेलेंगा चपरासी को
मारे होको ऊपर लेन विरसा भगनान को ॥

मारे होको डेरा केद सलगा सपरुम रे।
मारे होको वासा केद सोयको गुटुहातु रे ॥

मारे होको टोपोटेतन ठाले ठुले बन्दुकते
मारे होके हुरुदांग तन हरे हुरे हुरुदाँग ते।

तारा होको राउड़ू जन डोम्वारी बुरु चेतन रे
तारा होको निरे जन सिंगी तुरो होराते ॥

अठारह सौ निनाबे साल में अँग्रेज का चपरासी
यहाँ आया।
उसी समय बिरसा भगवान के दलवाले भी आये।

उन्होंने सलगा सपरोम में डेरा डाला।
उन्होंने बन्दूक से ठाँय-ठाँय गोली चलाई,
उन्होंने ढेलकुसी से दनादन ढेले फेंके।
आधे आदमी डुम्बारी पहाड़ के ऊपर ही गिर पड़े
आधे आदमी पूरब के रास्ते से भाग गये।

११७

छोटानगपुर बिरसाम एकेला केदाया विरसा
चुलु बुकुरा बिरसाम तायुर केदाया विरसा
कुन्दुरु गुटुरे बिरसा उकु केनाय। विरसा
बुदु बाबुवा बिरसा लेल केद मेयाया विरसा

राँची होराते बिरसा को इदि केद मेयाया विरसा
मेड़ेद गाड़ी रे बिरसा को लेने केद मेयाया विरसा
अमगः मयोमा बिरसा को अकरिङ केदाया बिरसा
सुनुम मेन्ते बिरसा को किरिङ केदाया बिरसा ॥

हे बिरसा, तुमने छोटानागपुर को हिला दिया।
हे बिरसा, चुलु बुकुरा (गाँव को) हिला दिया।
बिरसा कुन्दरु गुटू गाँव में छिपा था।
बुदु बाबू कहते हैं कि शत्रुओं ने बिरसा को
देख लिया।
हे बिरसा, राँची के रास्ते पर तुम को वे ले गये।
लोहे की गाड़ी से बिरसा को छिपे-छिपे
मार डाला
हे बिरसा, उन्होंने तुम्हारा खून बेंच दिया।
और तेल (समझ कर) लोगों ने खरीद लिया।

११८

अबुवः दिशुम रेन जोनोम लेन गांधी बाबा
होन चुटु सोबेन को इतुवान।

अमगः काजी नियम उनाव जना
अंग्रेज सरेकार बोले एकेलाजाना

गाँधी बाबा काजी काको बुझाव जना
डोण्डो तेगे दिशुम अकाल जना

कांग्रेस दल बाइ केदा
निन्दा सिंगी तेको निन्दा तना

हमारे देश में गाँधी जी का जन्म हुआ
उनको छोटे-से-छोटा बच्चा तक जान गया।
उनकी बात सब जगह फैल गई।
अंग्रेज सरकार भी हिल गई।
(लेकिन) लोग गाँधी जी की बात ठीक से समझ नहीं सके
और लोगों की मूर्खता से अकाल पड़ गया।
कांग्रेसवालों ने दल बनाया।
लोग रात-दिन उसकी निन्दा करते रहे।

११६

होरा हेसा दो सालु
ओकाय रोवा लेदा
डारे बड़े दो सालु
चिमय पोवा लेदा

होरा हेसा दो सालु
गातिम रोवा लेदा
डारे बड़े दो सालु
संगाम पोवा लेद्

तरा कोतो दो सालु
हातु हातु तेया
तरा दड़ा दो सालु
दिशुम तलारे।

तरा कोतो रे सालु
सादोम तोला काना

तरा दड़ा रे सालु
पैकी नेयोड़ा काना

हे सालू (मैना) ! रास्ते के पीपल को किसने रोपा था ?
हे सालू (मैना) ! रास्ते के बड़ को किसने लगाया था ?
हे सालू ! रास्ते के पीपल को (किसी) प्रेमी ने लगाया था ।
हे सालू ! रास्ते के बड़ को (किसी) प्रिय ने रोपा था ।
हे सालू ! उस (पीपल) की एक डाल गाँव के बीच चली गई है
हे सालू ! उस (बड़) की एक डाल देश के बीच चली गई है ।
एक ओर की डाल में एक घोड़ा बँधा हुआ है ।
एक ओर की डाल में पैकी सजा हुआ खड़ा है
बन्धे हुए घोड़े को कहाँ ले जा रहे हैं ?
सजे हुए पैकी को कहाँ ले जा रहे हैं ?
उस बन्धे हुए घोड़े को मारकाट में ले जा रहे हैं ।
उस सजे हुए पैकी को तीर-तलवार में ले जा रहे हैं ?

१२०

राजा दीसोरोथ राजाम
इया तना
रानीम कोसोइला रानीम
सायाद तान

राजाम इयाम तान
चिको में—ने—ते
रानीम सायाद् तान
मेरे को में ने ते

राम लोखोन किङ टोडाङ बासी जान
राजाम सायाद तान—
लोको कुवारी बिदेश जान
रानीभ सा—या तान ।

राजा दशरथ चिन्ता कर रहे हैं
(और) रानी कौशल्या अफसोस कर रही हैं ।
राजा किस लिए चिन्ता कर रहे हैं ?

रानी किस लिए अफसोस कर रही है।
राम-लखन चले गये, (इस लिए) राजा चिन्ता कर रहे हैं।
सीता विदेश चली गई (इस लिए) रानी अफसोस कर रही है।

१२१

रामे लाखोन साय लोंका लो तना।
रानी श्री सीता अयोध्या बाले: तना
ओकोए गे ओंडोर लेदा लोंका लो तना
चिमय गे जुडी लेदा अयोध्या वालें तना
हनुमान ओंडोर लेदा लोंका लो तना
कइकइ रानी जुडी लेदा अयोध्या वाले तना।

राम-लखन के कारण लंका जल रही है।
सीता के लिए अयोध्या जल रही है।
किसने आग लगा दी—कि लंका जल रही है
किसने आग सुलगा दी—कि अयोध्या जल रही है;
हनुमान ने आग लगाई (जिससे) लंका जल रही है
कैकेयी ने आग सुलगाई (जिससे) अयोध्या जल रही है।

१२२

राँची जिला चिरे सेलदअ: हातु
भैया राम मुण्डा दो-ए जोनोमा कना
खूँटी थाना चिरे जोजो हातु
मान की सिहराय दो-ए उपजान कना
भैयाराम मुण्डा दो-ए जोनोमा कना
हागा जाति कोअ: सेवा नगेंन
मान की सिहराय दो-ए उपजान कना
हागा जाति कोअ: सुसर नगेंन
सेवा नगेन गेए जोनोमा कना
आलोरे हागा कोपे येराइया
सुसर नगेन गेए उपजान कना
आलोरे हागा कापे सेगे दिया।

आलोरे हागा, कोपे येराइया
मुसियाँ दिन होराए उदुबा बुआ
आलोरे हागा कोपे सिगे दिया
मुसिआँ दिन डारे चुण्डु ला बुआ ।

राँची जिले के सेलदा गाँव में
श्री भइयाराम मुण्डा का जन्म हुआ
खूँटी थाने के जोजोहाव गाँव में
श्री सिंहराय सिंह मानकी का जन्म हुआ
श्री भइयाराम मुण्डा का जन्म
जाति-भाइयों की सेवा के लिए हुआ
श्री सिंहराय मानकी का जन्म
जाति-भाइयों की सुश्रूषा के लिए हुआ ।
हे भाई, उन्हें गाली मत दो
वे सेवा के लिए ही पैदा हुए हैं
हे भाई, निन्दा मत करो
सुश्रूषा के लिए ही पैदा हुए हैं ।
भाई, गाली मत दो
एक दिन वे हमें रास्ता बतायेंगे
भाई, निन्दा मत करो
एक दिन पथ-प्रदर्शन करेंगे ।

१२३

पिडगीरे पितल रुतु
अलो जुगीम ओरोङ्‌या
चौरा रे रंगा बनम
अलो सन्ताम बनामेया
अलो जुगीम ओरङ् या
अम लोःते सेनोः मोनिङा
अलो सन्ताम बनामेया
अम लोंः ते विरीदे सनाइआं
अइं दोरे जुगी जाति
अइं लोः चि सेनो मोनेमा

अम दोरे मुण्डा होन
अइं लोः चि बिरीद सनामा
अइंङ दोरे टोड़ोम बोतोए
अइंङ लोः चि सेनो मोनेमा
आम दोरे पाड़िया किचिरो
अइंङ लोः चि बिरीद सनामा
आलो जुगीम ओरोङया
पिड़गीरे ले तुकुई सकामा
आलो सन्ताम बनामेया
चौरा रेले चरिः चढाःगा ।

बरामदे में पीतल की बाँसुरी है।
हे जोगी, मत बजाओ।
चबूतरे पर रंगा की सारंगी है।
हे संताल, मत बजाओ।
हे जोगी, मत बजाओ।
तुम्हारे साथ चले जाने की इच्छा होती है।
हे संताल, मत बजाओ।
तुम्हारे साथ चल देने का जी चाहता है।

मैं तो करया (कोपीन) पहननेवाला हूँ
और तुम लहँगावाली हो
हमारे साथ क्यों जाना चाहती हो ?
हमारे साथ क्यों उठना चाहती हो ?
हे जोगी, बाँसुरी मत बजाओ
हमलोग बरामदे में दोना-पत्तल बना लेंगे।
हे सन्ताल, सारंगी मत बजाओ
चबूतरे पर हमलोग खरिका चीरने का काम करेंगे।

ओर जदुर

✣

हेसः सुबा लेसे लेसे

अमे चि मइना तिंगु केना ।

बड़े सुबा जिरपी जलं

अमे चि मइना जपः केन ।

पीपल की झिलमिल छाया में

हे बालिके, क्या तुम्हीं खड़ी थी ?

बरगद की झिरमिर छाँह में

हे बालिके, क्या तुम्हीं ठढ़ँगी थी ?

१२४

बुरु सोंगा सोंगा ते दो
होयो चिगा सरजोम बा
नारा जोड़ेन जोड़ेन ते दो
रम्पी चिगा सुड़ा साँगेन

दोला तेबु लेले लेया
होयो चिगा सरजोम बा
मेरे रेबू चिना लेया
रम्पी चिगा सुड़ा साँगेन

बुरु सोंगा सोंगा ते दो
होयो गेगो सरजोम बा
नारा जोड़ेन जोड़ेन ते दो
रम्पी गेगो सुड़ा साँगेन

अले दोले ले ले लेदा
होयो चिगा सरजोम बा
अले दोले चिना लेदा
रम्पी चिगा सुड़ा साँगेन

पहाड़ की घाटियों में हवा बह रही है
या साखू झड़ रहा है ?
ढलवानों के जोड़ पर आँधी चल रही है
या पत्तियाँ खड़खड़ा रही हैं ?
चलो तो देख आवें, हवा है या साखू का फूल ?
चलो तो देख आवें, आँधी है या पत्तियों का खड़खड़ाना ?
पहाड़ की घाटियों में हवा ही है जिसमें साखू झड़ रहा है।
ढलवानों पर आंधी ही है कि पत्तियाँ खड़खड़ा रही हैं ?
हमने तो देखा कि हवा ही है जिसमें साखू झड़ रहा है।
हमने तो देखा आँधी ही है जिससे पत्तियाँ खड़खड़ा रही हैं।

१२५

बुरु मागो चेतन रेदो
कुदा सुड़ा दोंगोब् केना
नारा मागो लतर रेदो
बारु सुड़ा जिपिड़ी केना

कुदा सुड़ा दोंगोब केना
लइअ: जीदो लिटिब केना
बारु सुड़ा जिपिड़ी केन
अइअ: जीदो दीपो केना

हियातिङ मोनिङारे चकातिङ सनाइं आरे
अंइ अ: जीदो लिटिब केना
हियातिं मोनेङारे चकातिं सनाइं आरे
अइअ: जीदो दीपोल केन

पहाड़ के ऊपर तो
जामुन की घनी कोपलें निकलती हैं।
ढलवान के नीचे
बारु के घने पत्ते लगे हैं।
जामुन में जो सघन कोपलें निकली हैं,
उनसे हमारा हृदय धक्-से हो गया।
बारु में जो घनी कोपल फूटी हैं,
उन्हें देखकर तो हमारा हृदय दहल गया।
हम को आश्चर्य होता है कि
हमारा हृदय धक्-से हो गया!
हमको आश्चर्य होता है कि
हमारा हृदय दहल गया।

१२६

सेरेङ चेतन चेतन तेदो अमे चिमई सेने लेदा
अमे चिमई सेने लेद्
नाराए रुगुड़ी डडी तेदो अमे चिमई मण्डा लेदा
अमे चिमई मण्डा लेदा

अइङ गेचा सेने लेदा-एंगाइं कोइंङ दाँड़ातना
एंगाइं कोइंङ दाँड़ा तान

अइंङ गेया मण्डा लेदा-अपुइं कोइङ खोजार केना
अपुइं कोइङ खोजार केन्

कोरे मइनम नाम कोआ-दिरी तेको तेनेन जना
दिरी तेको तेनेन जान्

चिमय रे मइनम खोजार कोआ-जानुम तेको रमेन
जाना जानुम तेको रमेन जान्

मोदे अटल बारे अटल-दिरी-तेको तेनेन जाना
दिरी तेको तेनेन जान्

मोदे कोतो बारे कोतो जनुम तेको रामेन जाना
जनुम तेको रामेन जान्

हे लड़की, पहाड़ के ऊपर-ऊपर क्या तुम्हीं चल रही थी ?
पथरीली डाडी के नीचे-नीचे क्या तुम्हीं जा रही थी ?
हाँ, मैं ही चली थी, अपनी माँ को खोज रही थी।
हाँ, मैं ही गई थी, अपने बाप को ढूँढ रही थी।
हे बेटी, उनको तुम कहाँ-कहाँ पाओगी ? वे पत्थर के नीचे चले गये।
हे बेटी, उनको तुम कहाँ खोजोगी ? वे कांटे के नीचे ढँक गये !
एक तह— दो तह पत्थर के नीचे चले गये।
एक डाल-दो डाल, काँटों से ढँक गये।

१२७

हेसा सुबा लेसे लेसे अमे चिमइना तिंगु केना
बड़े सुबा जिरपी जलं अमे चिमइना जपःकेन्

अइङगे चोवा तिंगु केना तीरे मुन्दाम उयुः जना
अइङगे चोवा जपः केना-जंगार पोला नो सोरजान

नेका नेका सेंड़ा तेमा-तीरे मुन्दाम चिटातना
नेका नेका बुद्धि तेमा जंगारे पोलाम सुवा तान

पीपल की हिलती छाया में
हे लड़की, क्या तुम्हीं खड़ी थी ?
बरगद की चमकीली छाँह में
हे लड़की, क्या तुम्हीं उठँगी थी ?
हाँ, मैं ही (खड़ी) थी, हाथ की अँगूठी गिर गई !
हाँ, मैं ही थी, पैर की अँगूठी फिसल गई।
ऐसी बुद्धिमान हो कि हाथ की अँगूठी का
बहाना बना रही हो !
ऐसी समझदार हो कि पैर की अँगूठी का
बहाना कर रही हो।

१२८

सेयाड़ीरे सेयाड़ीरे, सेयाड़ीरे हुन्दी बादो
बकाइनीरे वकाइनीरे, बकाइनीरे वाँगुरबा

सेयाड़ीरे हुन्दी बादो, ओकोय मइरे पोटे केदा
बकाइनी रे बाँगुर वादो, चिमाय मइरे चंगड़ा केद

सेन्देरा को जिलीब जिलीब, सेन्देरा को-बा पेटे केदा
कारेंगा को जोलोब जोलोबा, करेंगा को डाली चंगड़ा केद

सेन्देरा को पेटे: केदा
चुटी रेको पेटे: केदा
कारेंगा को चंगड़ा केदा
सुबा रेका चंगड़ा केद

सेयाड़ी में (एक प्रकार का कँटीला पौधा) हुन्दी फूल था।
बकाइन में बाँगुर-फूल था।
सेयाड़ी में काला हुन्दी फूल किसने तोड़ लिया ?
बकाइन में काले बंगुर फूल को किसने छिनगा दिया ?
चमकीले शिकारियों ने फूल को तोड़ लिया ?
झमझमाते हुए शिकारियों ने फूल को छिनगा दिया।
शिकारियों ने जो तोड़ लिया सो ऊपर से ही तोड़ लिया
शिकारियों ने जो छिनगा दिया सो जड़ से ही छिनगा डाला।

१२९

डाड़ी लंङ दो डाड़ी लङ दो नौ नगर डाड़ी लंदो
चुवाँ लङ दो चुवाँ लङ दो रतन पुरे चुवाँ लं

ओकोय माइरे गेले: लेदा नौनगरडडी लङ दो
चिमय माइरे सोड़ा लेदा रतनपुरे चुवाँ लङ

दिरी लेका कुड़ाम तिया इनी माइरे गोले: लेदा
पड़ंगा लेका सुपु तिया इनी माइरे पोड़ा लेद

हेलो गेया, पोन्डे गेया, नौ नगर डडी लङ दो
लोसोद गेया, गादेद् गेया रतनपुरे चुवांलङ

हम लोगों की डाँड़ी, (नहर) नव नगर की डाँड़ी !
हम लोगों का चुँवा (सोता), रतनपुर का चुँवा ।
हे बेटी, हम लोगों के नवनगर की डाँडी को किसने खोदा है ?
हे बेटी, हम लोगों के रतनपुर के चुँवें को किसने कोड़ा है ?
हे बेटी, पत्थर के समान छातीवाले (किसी आदमी) ने खोदा है
हे बेटी, मोटी डाल के समान बाँहवाले (किसी आदमी) ने कोड़ा है।
नव नगर की डाँड़ी हिलकोर दी गई और गँदली हो गई ।
रतनपुर का चुँवा कीचड़ से भर गया, सेवार से भर गया ।

१३०

कुँम् सिसीपिड़ी दो हले कुँम लोतना
कुँम् तिलाए बादी दो हले कुम बलेतना
आकोए गे जण्डी तदा कुँम लोतना
हले कुम् चिमयगे अतर तदा
कुँम बाले तना

कुँम महरा कोड़ा जुण्डी तदा
कुँम लो तना
कुँम चेंडेया कोड़ा अतर
तदा कुँम बाले तना

कुँम काड़े गोड़ा राटा पाटा
कुँम लो तना
कुँम लुपुतियम चिटीपिटी
कुँ बाले तना

खिसिपिड़ी धुआँधर जल रही है।
(और) तिलइबादी जोर-जोर से धधक रही है।
किसने आग सुलगा दी कि धाँय-धाँय जल रही है
किसने आग लगा दी कि जोर-जोर से धधक रही है।
यह जो धुआँ है, महरा के लड़के ने सुलगाया।
(जिससे) धाँय-धाय जल रही है।
यह आग ग्वाला छोकरे ने लगाई (जिससे)
जोर-जोर से धधक रही है।
काँसी का खेत रटपट की आवाज में
धुँआधार जल रहा है।
लुपुतियम (एक घास) चरपट की
आवाज में धधक रहा है।

१३१

वरुदः दो सेके सेके,
काचि गाडिम नुवा-नादो
काचि गाडिम नुवाना
नारादःदो रोलो रोलो
काचि सरम जेम्बेदान दो,
काचि सरम जेम्बेदान ॥
कागे चोवाइङ नुवा-नादो,
बुरु लिण्डुँग आतुतना,
बुरु लिण्डुँग आतु तना।
कागे चोवाइङ जेम्बे दान दो,
बेड़ा मरमर बुवाल तना,
बेड़ा मरेमर बुवाल तान ॥
नाका नाका सेड़ा तेमा
बुरु लिण्डम चिटा तना,

बुरु लिण्डुम चिटा तना,
नाका नाका बुढ्रि तेना
बेड़ा मरमरम सुवा तना
बेड़ा मरमरेम सुवा तना ।।

पहाड़ से टलमल-टलमल बहते हुए पानी को
हे बन्दर, क्या तुमने नहीं पिया है ?
ढाल के रिलमिल-रिलमिल पानी को
हे बन्दर, क्या तुमने नहीं पिया है ?
मैं ने नहीं पिया है, (क्योंकि उसमें)
पहाड़ी कीड़ा बह रहा है ।
मैं ने नहीं पिया है, (क्योंकि उसमें)
ढलवान का गोंजर उतर रहा है ।
तुम्हें ऐसी बुद्धि है कि
पहाड़ी कीड़े का बहाना कर रहे हो ।
तुम्हें ऐसी समझ है कि
ढाल के गोजर का बहाना कर रहे हो ।

१३२

बुरु रे बुरु रे मनी दो
बेड़ा रे बेडारे राई
लिमङ लोमोङा मनींदो
किदार कोदोरा राई

सिद लेगेमोनिङा मनी दो
टोटः लेगे सनाइङ राई

अलो कुड़ी-किंबेन सिदेमा मनी दो
अलो कुड़ी किंबेन टोटःया राई

तीरे मुन्दम गोनोङते मनी दो
जगा रे पोला साही ते राई

पहाड़-पहाड़ पर सरसो है
और घाटी-घाटी में राई है।
सरसों गहगहाई हुई है।
(और) राई गनगना रही है।
मैं सरसो (साग) खोंटना चाहती हूँ
मैं राई (का साग) तोड़ना चाहती हूँ।
हे स्त्रियो, सरसो मत खोंटो।
हे स्त्रियो, राई मत तोड़ो।
सरसो हाथ की अँगूठी की कीमत की है।
राई पैर की अँगूठी के मूल्य की है।

१३३

पिड़ी पिड़ी पिड़ी मेरा लिंदो
गाड़ा गाड़ा गाड़ा कुदा लिंदा

लिमाङ लोमोङा पिड़ी मेरा लिंदो
पिड़ी मेरा लिं
गिदार कोदोरा गाड़ा कुदा लिंदा
गाड़ा कुदा लिं

ओकोएगे रोवा लेदा पिड़ी मेरा लिंदो
पिड़ी मेरा-लिं
चिमयगे पोवा लेदा गाड़ा कुदा लिंदो
गाड़ा कुदा-लिं
दासी कोड़ा रोवा लेदा पिड़ी मेरा लिं दो
पिड़ी मेरा लिं
कमिडी कुड़ी पोवा लेदा गाड़ा कुदा लिं दो
गाड़ा कुदा-लिं

प्रत्येक टाड़ में आँवला है
और प्रत्येक नदी में जामुन है।
टाड़ का आँवला हरा-भरा है
(और) नदी का जामुन खूब गहगहाया हुआ है।
टाड़ के आँवले को किसने रोपा था ?
नदी के जामुन को किसने लगाया था ?
धांगर लड़के ने टाड़ के आँवले को रोपा था
धंगरिन स्त्री ने नदी के जामुन को लगाया था।

गेना

•

आकोरे तमः मई रासिका
चिमय रे तमः मई चएला।
बाबा-बा तमः मई रासिका
कसोम-बा तमः मई चएला।

हे बेटी, तुम्हारी प्रसन्नता किस बात मे है!
हे बेटी, तुम्हारा शृंगार किस बात में है!
हे बेटी, आनन्द तो धान के फूल में है!
हे बेटी, शृंगार तो कपास के फूल में है!

१३४

श्री जाटी ओड़: रेमा गतिङ
पटः गोड़ा रोसोम रे
बालेकाम डड़ंु लेना गतिङ
डाली लेकाम पयार लेन

बा लेकाम उड़ुङ लेना गतिङ
बा लेकाम गोसो जान
डाली लेकाम पयार लेना गतिङ
डाली लेकाम मैला जान

ओते लोलो तेचि गतिङ
सिरुमा सितुम ते
बा लेकाम गोसो जान
डली लेकाम मैला जान

ओते लोलो तेमो का
सिरमा सितुम तेयो का
सोमय सेनो: तना गतिङ
नुसाड़ा बिरिद जान

हे प्रिये, तुम झाड़ी से घिरे हुऐ घर में हो।
हे प्रिये, तुम पटरी से बन्द किये हुए घर में हो।
हे प्रिये, तुम फूल के समान निकली
और फूल के ही समान सूख गईं।
हे प्रिये, तुम फूल के समान खिली
और फूल के ही समान मुरझा गईं।
हे प्रिये, तुम फूल के समान विकसी
और फूल ही के समान सूख गईं।
हे प्रिये, तुम जमीन की गर्मी से
फूल के समान मुरझा गईं ?
या आकाश की ठंड से
फूल के समान सूख गईं ?

जमीन की गर्मी से नहीं
हे प्रिये, समय बीत गया (इसलिए मुरझा गई) ।
आकाश की ठंड से नहीं,
हे प्रिये, जवानी चली गई (इसलिए कुम्हला गई) ।

१३५

ओको मुली रेया हो मेतम
जुड़ी दारु गोलाँची
चिमय मुली रेयाहोमेतम
पाँतिदारु अटल बा

सिंगी तुरोः रेया हो मेतम
जुडी दारु गोलाँची
चण्डुः मुलुःरेया हो मेतम
पाँति दारु अटल बा

सिंगी तुरतन लेका हो मेतम
गुडी दारु गोलाँची
चण्डु मुलु तन लेका हो मेतम
पाँति दारु अटल बा

हे प्रिये, गुलइची का जोड़ा पेड़ किस तरफ है ?
हे प्रिये, अटल-फूल के पेड़ों की पंक्ति किधर है ?
गुलइची का जोड़ा पेड़ पूरब की ओर है ।
अटल-फूलों की कतार पच्छिम ओर है ।
गुलइची का जोड़ा पेड़ उगते हुए सूरज के समान है ।
अटल फूलों की कतार चमकते हुए चाँद की तरह है ।

१३६

सिसी बा कोतो कोतो ते
सिसी नाम चालेन तान
नारी बा दड़ाय दड़ाय ते
नारी बाम (हरीबाम) हिगाड़ान तान



मुण्डा-युवतियाँ



कुछ मुण्डा छात्र—'दा-सोम' प्रपात के नीचे

सिसीवा ओकोए काजी ते
सिसीबाम चालेन तान
नारीबाम चिमय बकाँड़ाते
नारी बाम हिगाड़ान तान

सिसी बा गातिम काजी ते
सिसी बाम चालेन तान
नारीबासंगाम बकाँड़ाते
नारी बाम हिगाड़ान तान

सिसी बा गातिम काजी दो
सिसी बा रनुवान गे
नारीवा संगामा संकाँड़ा दो
नारी बा जियाड़ानगे

हे सिसिबा, तुम डाल-डाल चल रहे हो।
हे हरिबा, तुम टहनी-टहनी पर बिखर रहे हो।
हे सिसिबा, किसके कहने से चल रहे हो।
हे हरिबा, किसके कहने से तुम बिखर रहे हो।
हे सिसिबा, संगी के कहने से चल रहे हो।
हे हरिबा, प्रिय के कहने से बिखर रहे हो।
हे सिसिबा, तुम्हारे साथी की बात तो दवा खाने जैसी है।
हे हरिबा, तुम्हारे प्रिय की बात तो जान डाली हुई सी है।

१३७

दः पिसिर पिसिरा
दः जड़ाम जड़ाम
कुडुम्बा बुरु रे दः दो
माइल बुरु दनँगरे

चिबु चिकाए दः दो
दः पिसिर पिसिरा
मेरेबु रिकाए दः दो
दः जड़ाम जड़ाम

कुडुम्बा बुरु रे दः दो
माइला बुरु दनँग रे
चौली चापी तेदः दो
दः पिसिर पिसिरा

कुडुम्बा बुरु रेदः दो
माइल बुरु दनँगरे
ताबेन बुरमुते दः दो
दः जडाम जडमाम

फिस-फिस पानी फिसफिसा रहा है।
झम-झम पानी झमझमा रहा है।
कुड़ुम्बा पहाड़ पर (फिस-फिस) पानी बरस रहा है।
माइल बुरु के पीछे (झमाझम) पानी बरस रहा है।
पानी फिसफिसा रहा है, हमलोग क्या करें ?
पानी झमझमा रहा है, हमलोग क्या करें ?
कुड़ुम्बा पहाड़ पर पानी जो फिसफिसा रहा है,
वह चावल धोने का पानी फिसफिसा रहा है।
माइल बुरु के पीछे जो पानी झमझमा रहा है,
वह चिउड़ा फुलाने लायक है।

१३८

उपल बा पुकुरी दो गुले-गुले
तड़ाया बा बंदेला दो बीजिरा वालंग
ओकोए देराङ रेयाड़ान तेया
चिमय देराङ उनूमेनते

से कारी सरेगा रेयाड़ान तेया
बमड़े बगौति उनूमेनते
उपल बा इकिर दोरे अंजेद जान
तड़ाय बा बंदेला दो डुडा अ जान

सिकारी सरेगा नियाम तनाए
बमड़े बगौति सयद तना

चेतान रिम्बिले दो गुले गुले,
लतर लारी दो अलाय बलाय

तिकिन सिंगी गमा लेदा
तरासिंगी बेड़ारे राम्पी लेदा
उपल बा इकिर दोरे पेरेए जाना
तड़ाय बा वंदेला दो चड़ाँजान

सेकारी सदोगा रे रासिका तना
बमड़े वगौति दो लंदा तना

उपल (कमल) फूलवाली पोखरी लबालब भरी है।
तड़ाय फूलवाला बाँध झलमल कर रहा है।
(उपल फूलवाली पोखरी) किसके नहाने के लिए है?
(तड़ाय फूलवाला बाँध) किसके स्नान के लिए है?
(पोखरी) माझी के नहाने के लिए है।
(बाँध) ब्राह्मण के स्नान के लिए है।
उपल फूलवाली पोखरी सूख गई।
तड़ाय फूलवाला बाँध सूख गया।
मांझी रो रहा है।
ब्राह्मण अफसोस कर रहा है।
ऊपर बादल घुमड़ने लगे
नीचे लहरें (बादल की) झुक आईं।
दोपहर में पानी बरसा,
तीसरे पहर तूफान चला।
उपल फूलवाली पोखरी भर गई।
तड़ाय फूलवाला बाँध उमड़ चला।
माँझी प्रसन्न हो रहा है।
ब्राह्मण खुशी से हँस रहा है।

१३९

श्री बृन्दा बिररे कुटीबा हो मेताम
कुटी वा रिबी रिबी
हाय-हाय नारी बा हो मेताम
नारी बा गसागसा

हलङ लेकाम तुम्बल लेकाम कुटी वा हो मेताम
कुटि बा रिबी रिबी
हाय हाय नारी बा मेताम
नारी बा गसा गसा
हलङ केदाइङ तुम्बल केदाइङ हो मेताम
कुटी बा रिबी रिवी
हायहाय नारी वा हो मेताम
नारी ना गसागसा
गुतु लेकाम गलङ लेकाम कुटी बाहो मेताम
कुटी वा रिबीरिबी
हाय हाय नारी बा हो मेताम
नारी बा गसा गसा
गुतु लेकाइङ गलङ केदाइङ हो मेताम
कुटी वा रिबी रिबी
हाय हाय नारी बा हो मेताम
नारी बा गसा गसा
बा लेकामे डाली लेकामे कुटी वाहो मेताम
कुटी बा रिवी रिवी
हाय हाय नरीबा हो मेताम
नरीबा गसा गसा !
बा केदाइं डली केदाइं हो मेताम
कुटी बा रिबी रिबी
हाय-हाय नरीबा हो मेताम
नारी बा गसागसा

वृन्दावन में कुटी-फूल का क्या कहना !
घनघोर कुटी फूल !
हाय, हाय ! नारी-फूल का क्या कहना !
गहगहाया हुआ नारी-फूल !
उठा लो, बटोर लो, कुटी-फूल का क्या कहना !
घनघोर कुटी फूल !
हाय, नारी फल का क्या कहना !

गहगहाया हुआ नारी फूल ।
कुटी फूल को उठा लिया, बटोर लिया, क्या कहना !
घनघोर कुटी फूल ।
हाय, हाय ! नारी फूल का क्या कहना !
गहगहाया हुआ नारी फूल !
कुटी फूल को गूँथ लो ! बीन लो क्या कहना !
घनघोर कुटी फूल !
हाय, हाय ! नारी फूल का क्या कहना !
गहगहाया हुआ नारी फूल
गूँथ लिया, बीन लिया, क्या कहना ।
घनघोर कुटी फूल !
हाय, हाय ! नारी फूल का क्या कहना !
गहगहाया हुआ नारी फूल !
कुटी फूल को पहन लो ! खोंस लो ! क्या कहना !
घनघोर कुटी फूल !
हाय, हाय ! नारी फूल का क्या कहना !
गहगहाया हुआ नारी फूल !
कुटी फूल को पहन लिया, खोंस लिया ! क्या कहना !
घनघोर कुटी फूल !
हाय, हाय ! नारी फूल का क्या कहना !
गहगहाया हुआ नारी फूल !

१४०

नी चिया को गोरोणेया हो
नी चिया को सुड़ियाम
इचा वा रेको गोरोणेया हो
मुरुद बा रेसुड़ियामा
इचा गे जोमे तना हो
मुरुद बागे नाबे तना ।

क्या यही पत्ती है जिसको गौरैया कहते हैं ?
क्या यही पक्षी है जिसको सुड़ियामा कहते हैं ?
यह गौरैया पत्ती पलाश फूल में रहता है ।
यह सुड़ियाम पत्ती पलाश के फूल का रस चूसता है ।
यह गौरैया पत्ती इचा-फूल का रस लेता है ।
(और) यह गौरैया पत्ती इचा-फूल में रहता है ।

१४१

बुरु चेतन सोखी लुदाम बा
नारा लतर सोखी नाराइन
पेटे: लेम सोखी लुदाम बा
चंगड़ा लेम सोखी नाराइन

अम जुड़ी सोखी-लुदाम बा
अम जोता सोखी नाराइन
पेटे: लेम सोखी लुदाम बा
चगड़ा लेम सोखी नाराइन

हे सखी, पहाड़ के ऊपर लूदम फूल है।
हे सखी, नाले के नीचे नारायन फूल है।
हे सखी, लूदम फूल को तोड़ लो !
हे सखी, नारायन फूल को छिनगा लो,
हे सखी, लूदम फूल तुम्हारा जोड़ी है,
हे सखी, नारायन फूल तुम्हारा संगी है।
हे सखी, लूदम फूल को तोड़ लो।
हे सखी, नारायन फूल को छिनगा लो।

१४२

डुंबा डोडो वा ओकोतिजानारे
ताड़ाय बा तापिरसः चिमयतिजनः
डुंवा डोडो वा सुसुंनतिजानारे
ताड़ाए बा तापिरसा करमतिजान
डुँबा डोडोबा इशुई रासिकारे
ताड़ाय बा तापिरसा कारे चायला

सिर निकाला हुआ फूल कहाँ गया ?
बिखरा हुआ तराय फूल कहाँ गया ?
सिर उठाया हुआ डुं-आ डुं-फूल नाचने गया।
बिखरा हुआ तड़ाय फूल करम खेलने गया।
सिर उठाया हुआ डुं-फूल बड़ा रसिक है।
बिखरा हुआ तड़ाय फूल बड़ा रंगीला है।

१४३

मोदे कोतो हो सराजोम बा
मोदे कोतो सारे गाइङ में
बरे दड़ा हो सुड़ा साँगेन
बरे दड़ा नेंड लाइङ में
मोदे कोतो होइङ सरेगा मेरे
चिहो चिकाया
बरे दड़ा होइङ नेंडेला मेरे
मेरे होय रिकाया
मोदे कोतो होम सरेगाइङ रे
बाँ होइङ गुतूया
वरे दड़ा होम लेंडेलाइंङरे
डाली होइं गलंगे ।

तुम हमारे लिए साखू के फूल की एक डाली बचा दो ।
तुम हमारे लिए कोपलों की दो टहनियाँ छोड़ दो ।
एक डाली बचा दें तो क्या करोगे ?
दो टहनियाँ छोड़ दें तो क्या करोगे ?
एक डाली छोड़ दोगे तो फूलों को गूथेंगे;
दो टहनियाँ बचा दोगे तो कोंपलों का गुच्छा बनायेंगे ।

१४४

श्री जंगल जोवेलारे गतिङ
सालू किन गुड़िया ना
अम चिरेलन्दा लेदा गतिङ
अया चिरे जगर लेदा
अइङ गेचा लंदा गतिङ
अइङ गेचा जगरे लेदा
सान अगुइङ सेन केना गतिङ
सकम हे-एइङ विरिद केन

सान अगुम सेनोः रेदो गतिङ
सकस हेः एम विरिद रे
अलोरेम अयरेना गतिङ
अलोरेम तयो मेना

कोरचे कोण्डे कुला जना गतिङ
सकम कुड़ा तारुब जान
दासी कोड़ा हुवः किअः गतिङ
कमिड़ी कुड़ी-रे सोदोर की

हे प्रिये, क्या तुम्हीं जंगली जोंभी के
सुग्गा के समान हिल-मिल रही थी ! (किसी के साथ)
हे प्रिये, क्या तुम्हीं हँस रही थी ?
(और) क्या तुम्ही बातचीत कर रही थी ?
हे प्रिय, मैं ही हँस रही थी
और मैं ही बात-चीत कर रही थी,
हे प्रिय ! मैं लकड़ी लाने गई थी
औ पत्ती तोड़ने गई थी
हे प्रिय, तुम लकड़ी लाने जाना तो
आगे-आगे मत जाना ।
हे प्रिये, तुम पत्ती तोड़ने जाना तो
पीछे-पीछे मत जाना ।
हे प्रिये ! खोह-कन्दरा की लकड़ी
बाघ बन जाती है ।
और सिकुड़ी हुई पत्ती साँप बन जाती है ।
हे प्रिये, (बाघ ने) घांगर को काट लिया ।
हे प्रिये, (साप ने) धंगरिन को नोच लिया ।

१४५

डाडी होरा जोजो हेसः हो
हेसः गतिङ जारोमा कान
कोलोम जपः बारु हो
बारु सगइङ गदारा कान

हेसः गतिङ जारोमा काना हो
दोला गतिङ उयुगाइङ में
बारु सगइङ गदारा कना हो
दोला गतिङ नोसोराइङ में

उयु दोरेङ उयुगा मेया हो
गितिल रेगे उयु गोवा
नोसोर दोरेइङ नोसोरा मेया हो
सेरेइ रेगे नोसोरो वा

गितिल रेगे उयु गोवा हो
गितिल गितिल सोवाना
सेरेङ रेगे नोसो रोवा हो
सेरेङ सेरेङ सिड़ीया

हे प्रिय, डाडी के रास्ते का खट्टा पीपल
हे प्रिय, पका हुआ है ।
हे प्रिय, खलिहान के निकट का
मीठा कुसुम गदराया हुआ है ।
हे प्रिय, पीपल (जो) पका हुआ है,
हे प्रिय, चलो गिरा दो ।
हे प्रिय, कुसुम जो गदराया हुआ है,
हे प्रिय, चलो गिरा दो ।
गिराने को तो मैं गिरा दूँगा
(लेकिन) वह धूल में ही गिरेगा ।
झाड़ने को तो मैं झाड़ दूँगा
(लेकिन) वह पत्थर में गिरेगा ।
धूल में गिर जायेगा तो
धूल-धूल महकेगा ।
पत्थर में गिरेगा तो
पत्थर-पत्थर गमकेगा ।

१४६

सेरेङ जपः ओते दोरे दादा
अलो दादाम-बन्दारेया

मेयोद गेयाए सियु: केड़ा दादा
अलो दादाम कुन्दारीया

रिड़ी यलङ कड़ी यलङ दादा
अलो दादाम बन्दारेया
पैंचा यलङ उधारे यलङ दादा
अलो दादाम कुन्दारीया

मोदे तिलय नतिन दादा
अलो दादाम बन्दा रेया
चापू सुनुम मोचा नतिन दादा
अलो दादाम कुन्दारीया

हे दादा, चट्टान के निकट की जमीन
हे दादा, बन्धक मत रक्खो।
हे दादा, जोतने के लिए एक ही जमीन है,
उसे मत दे दो।
हे दादा, हम हल उधार लेंगे,
पर बन्धक नहीं धरेंगे।
हे दादा, हम ऋण उधार लेंगे,
पर उसे नहीं देंगे।

१४७

जनुम जनुम गो शिशि गोरजनुमगो
नाड़ी-नाड़ी गो बले: सेयाड़ी नाड़ी

जनुम जनइगो शिशिगोर जनुमते
सुदी जनई गो बले: सियाड़ी नाड़ी ते

हासु तेगे गोइङ चिरी बिरिया
बबता तेगे गोइङ डुन्डांग केन्दे

एगाइङ मेनाइरे कोयोङ्गेन मोनिङा
अपुइङ मेनाइरे सयारेन सनाइङ।

खिखिगोर काँटा बड़ा कँटीला है
बाले सेयाड़ी लता बहुत छितराई हुई है।
खिखिगोर काँटा गड़ गया,
बाले सेयाड़ी लता से
खरोंच लग गई।
(काँटा) दर्द से परपरा रहा है।
(लता की) खुजलाहट से छटपट छूट रही है।
माँ रहती तो उसकी गोद में चले जाते।
पिता रहते तो वे बहला देते।

१४८

मरं गाड़ा दो गुले गुलेया हुड़िङ्गाड़ा दो लेबे लेबे
चिहोम अतु लंगाचि, चिहोम बुआल लँ

काहोइ अतु लङा हो, का होइ बुआल लँ
सोजे दारु बंका होइ इतुवाना, बंकादारु सोजे होइ सरियाना

काहोइ अतु लङा कहोइ बुआल लँ
कुला वो:रे चिगुड़ी होइ ल: केना, एयाबुरु मर: होइ द: केना

बड़ी नदी आर-पार उमड़ी हुई है।
छोटी नदी लबालब भरी हुई है।
हे (बड़ी नदी), क्या हमें बहा ले जाओगी?
हे (छोटी नदी), क्या हमें उतरा ले जाओगी?

नहीं, तुम को नहीं बहाऊँगी।
नहीं, तुमको नहीं बहाऊँगी।
मैं सीधे पेड़ को टेढ़ा करना जानती हूँ।
और (टेढ़े पेड़) को सीधा करना जानती हूँ।

नहीं, मैं नहीं बहाऊँगी
नहीं, मैं नहीं उतराऊँगी।
मैं बाँध के सिर पर सहिंगा छीलकर आ रही हूँ।
मैं सात पहाड़ों को पानी करके आ रही हूँ।

१४६

अम जुड़ी तिङा चिना दाई
मरंग चटुम दुपिल रिकाइआ
अम जोता तिङा चिना दाई
खण्डी गुड़लम मण्डि रिकाइआ

काना दाई काइ रिरुमेना
अलो दाई रेम दुपिल रिकाइआ
काना दाइ काइ गोङनारे
अलो दाइ रेम मण्डि रिकाइआ

अलो ताइ मेनः इयाना दाई
सुकु बा सेपेड़ेद
अइओ ताइ मेनःइया दाई
तयर नाड़ी बिजिर बलें

सुकु बा लेका सेपेड़ेद नादाई
खलोम केन खलोम केन
तयर नाड़ी विजिर बलंङना दाई
सतोम सतोम केन

हे दीदी, क्या तुम्हारी जोड़ी हूँ
कि मुझ से बड़ा-सा घड़ा ढुलवाती हो !
हे दीदी, क्या मैं तुम्हारी बराबर हूँ
कि तुम मुझसे खाँड़ीभर (आधामन) गोंदली का भात पकवाती हो !
हे दीदी, मैं तुम्हारी सौत नहीं बनूँगी,
मुझसे (बड़ा घड़ा) मत ढुलवाओ !
हे दीदी, मैं (तुम्हारे पति से) विवाह नहीं करूँगी,
मुझसे खाँड़ी भर भात मत पकवाओ !
हे दीदी, मेरा भी कद्दू के फूल के समान
खिलता हुआ (प्रेमी) है।
हे दीदी, मेरा भी खीरे की लता के समान
लहलहाता हुआ (प्रेमी) है।

कद्दू के फूल के समान खिलता हुआ (के साथ)
हे दीदी, अगले साल (उससे मेरी शादी होगी)।
खीरे की लता के समान लहलहाते हुए से।
हे दीदी, दूसरे साल (मेरा विवाह होगा)!

१५०

ओकोरे तम: मई रासिका
चिमय रे तम: मई चैला
बाबा बा रेगा मई रासिका
कसोम बा रेया मई चैला

हेड़ेद तुसङ लेरे मई रासिका
रिद तकुइङ लेरे मई चैला
लाई पेरे: जोम-तारे रासिका
मयं पेरे: तोल-तारे चैला

जलातिङ तना मई रासिका
बुलातिङ तना मई चैला

हे बेटी, तुम्हारी, खुशी किस बात में है?
हे बेटी, तुम्हारा शृंगार किस बात में है?
हे बेटी, खुशी तो धान के फूल में है!
हे बेटी, शृंगार तो कपास के फूल में है!
हे बेटी, घास निकाने में ही खुशी है।
हे बेटी, सूत कातने में ही आनन्द है।
हे बेटी, भर पेट खाने में ही खुशी है।
हे बेटी, कमर भर कपड़ा पहनने में ही आनन्द है।
हे बेटी, तुम तो रसिक बनी हुई घूमती फिरती हो।
हे बेटी, तुम तो छैला बनी डोलती फिरती हो।

१५१

सेन दल: दुलु:रे
लेल लेद-मा
सुपिद बड़ाए बुड़ईरे
चिना लेद-मा

लेलमे लेलमे दोना मई
सुकु जम्बड़ा जान
चिनामे चिनामे दोना मई
ल:सा लंदिड़ी जान

सुकु जम्बड़ा लेकाना मई
जुमकु जुम्बड़ा जान
तयर नाड़ी लेकाना मई
ल:सा लँदिड़ी जान

ओकोरेबु गोंगे मेयाना मई
जुमकु जूम्बड़ा जान
चिमय रेबु चले मेयाना मई
ल:सा लँदिड़ी जान

मैं ने तुमको डुगुर-डुगुर चलते देखा था।
मैं ने तुमको चंचल नटखट अवस्था में देखा था।
हे बेटी, देखते-देखते तुम गहगहा गई।
हे बेटी, देखते-देखते तुम गदबदा गई।
हे बेटी, तुम कद्दू के भमरे के समान गहगहा गई।
हे बेटी, तुम खीरे की लता के समान, गदबदा गई
हे बेटी, तुम तो गहगहा गई,
हम लोग कहाँ शादी करेंगे?
हे बेटी, तुम जो गदबदा गई
(सो) हम लोग कहाँ तुम्हारा विवाह करें ?
[इसकी चिन्ता हो रही है]

१५२

दोलङइच: बा मुरुच
बालङ गुतुया
दोलङ तड़ाय बातपिरस:
डालिलङ गलङा
रंगामा चटि: रे मुरुचु
बालङ गुतुया

मौलेमा सुतमरे तपिरसः
डालीलङ गलङा

मौद् चरि दो मुरुचु
गातिम-लङ ओमाइया
बारे सुतम दो तपिरसः
सँगाम लङ चेदाइया

ओमाई ओमाई दो मुरुचु
चुटि रोनो पोद रे
चेदाई चेदाई दो तपिरसः
जनारे सुनुपित रे

हे मुरुचू ! चलो, ईचा फूल गूँथेंगे।
हे तपिरसा ! चलो, तडाय फूल की माला बनायेंगे।
रंगीन तीली में, हे मुरुच ! फूल गूथेंगे।
नीले सूत में, हे तपिरसा, माला बनायेंगे।
हे मुरुच ! एक तीली का फूल तुम्हारे साथी को देंगे।
हे तपिरसा, दो सूत की माला तुम्हारे मित्र को देंगे।
हे मुरुच, देंगे तो खोपे में खोंस देंगे।
हे तपिरसा देंगे तो जूड़े के चारों ओर लगा देंगे।

१५३

अम दोरे लोबो धोनी गातिङ
लोबो लोबोम जगारे
अम दोरे मोचो कोली संगाई
मोचो मोचोम लंदाया

ओकोए काजीं ते लोवो धोनी गातिङ
लोबो लोवोम जगारे
चिमय वंकड़ा ते मोचो कोली सगाइङ
मोचो मोचोम लंदाया

गातिम काजी ते लोवो धोनी
लोवो लोबोम जगारे

संगाम वंकाड़ाते मोची कोली
मोचो मोचोम लंदाया

गातिम काजी दोलोवोधोनी गातिङ
रनुवान गेया दो
संगाम वंकाड़ा दो मोचो कोली संगाइ
जियां डान गेया

हे बकवासिनी प्रिये, तुमतो बक-बक करके बात करती हो।
हे मुसकानेवाली संगिनी, तुम तो मुसका-मुसका कर बात करती हो।
किसके कहने से हे प्रिये, तुम बक-बक करके बात करती हो।
किसके कहने से हे मुसकानेवाली, मुसका-मुसका कर बात करती हो
प्रिय के कहने से बक-बक करके बात करती हो।
प्रिय के कहने से मुसका-मुसका कर बात करती हो।
हे बकवास करनेवाली, तुम्हारे साथी की बात तो
दवा के समान जान पड़ती है।
हे मुसकरानेवाली, तुम्हारे संगी की बात तो
जान डालने जैसी लगती है।

१५४

होड़ो तेदोए लेलो तना
रिम्बिल लेकाए लेलो:तना
तीन वांकाए तींगुवा काना
इनि: लो:ते जींगे लो तना

तिकिन सिंगी ताई केना
अङ अतेइङ लेल बेड़ाई
निनंगते कए ले: लोगा
ओकोतिया वंसी धारी

आदमी जो दिखाई दे रहा है,
बादल की तरह दिखाई दे रहा है।
तीन जगह झुककर खड़ा है
उसके लिए हृदय जल रहा है।

दो पहर को तो था,
सबेरा होने पर मैं खोजती-फिरती हूँ।
अभी तक दिखाई नहीं देता।
वंशी-धारी कहाँ चला गया ?

१५५

अम चिना माई अम बोंगा लेदारे
अम चिना माई इचः सकम लेद
सकम हेः रें अम वोंगा लेदारे
सान आगुरे अम इचः सकम लेद

ओकोए नंगेनगे अम वोंगा लेदारे
चिमय नंगेन गे इचः सकम लेद
गतिम नंगेनगे अम वोंगा लेदारे
संगम नगेन गे इचः सकम लेद

हे बेटी, तुमने क्या पूजा की थी ?
क्या तुमने पत्ता तोड़कर पूजा की थी ?
तुमने पत्ता तोड़ने में पूजा की थी !
तुमने जलावन लाने में पूजा की थी !
तुमने किसके लिए पूजा की थी ?
तुमने किसके लिए पत्ता तोड़कर पूजा की थी ?
तुमने अपने प्रिय के लिए पूजा की थी !
तुमने अपने प्रिय के लिए पूजा की थी !

१५६

तिरिल सकम लुलुयुद गतिङ
तेलेः दारु पर्पन्डेयद संगाम दो

ओकोते सेनोः जना लुलुयुद गतिङ
चिमय ते बिरिद जान पर्पण्डेयद संगाम दो

सुसुनते सेनोः जाना लुलुयुद गतिङ दो
करम ते बिरिद जान पर्पण्डेयद संगाम दो

तुम्हारा केवद के पत्ते के समान उदास साथी !
तुम्हारा तेले के वृक्ष के समान रूखड़ा मित्र !
तुम्हारा उदास साथी कहाँ चला गया ?
तुम्हारा उदास साथी नाचने गया।
तुम्हारा रूखा-सूखा मित्र करम खेलने गया।

१५७

एगाइङ अपुइङ दुलाड़ारे
हागा मिसी सुगाड़ारे
हुड़िङ सुकुइङताइ केनारे
बुगिन कुमुइङ कुमुइ निदारे

जोबे मराङ जाना सेड़ाँ जनाते
काइंङ तुड़म जान अमः उड़ुः ते
जी तइङ दोंम कुम्बुडु किदिङा
उपाए होड़मो परकोम रेः गिङा

अलाए बलाएजीं होइङ बलाए तान
माण्डी उतु काहोइं जोमाना
जी ताइङ दोम कुम्बुडु किदिङा
एषाय होड़मो परकोम रेगिया

हाय विधि मोन पुरा तम
नेया कामिरे होरअङः तम
मेद्दः ते कुड़म लुम तान
बिलका तनाए राम लेलेते

माँ-बाप के दुलारे थे।
भाई-बहनों के प्यारे थे !
बचपन में बहुत सुख किया !
और रातों में सुख का सपना देखा;
अब बड़ा हुआ और कुछ बुद्धि हुई
तो तुम्हारी चिन्ता में नींद नहीं आती।
तुमने मेरा दिल चुरा लिया;

मेरे मन में बेचैनी हो रही है।
मुझसे कुछ खाया नहीं जाता,
तुमने मेरा दिल चुरा लिया।
केवल शरीर खाट में पड़ा हुआ है।
हे विधाता, मेरे मन की इच्छा पूरी करो।
इस काम का रास्ता निकालो।
आँखों के पानी से छाती भींग रही है।
(इस दशा को) देखकर राम को दया आती है।

१५८

अमागा काजी दोना माई
तिते हो तेलाए लेका
आमागा: बकंड़ा दोना माई
कांसा-पितल दले लेका

ओकोए काजी तेना माइ
तिते हो तेलाए लेका
चिमाए बकंड़ा तेना माई
कांसा पितल दले लेका

गतिम काजी तेना माई
तिते हो तेलाए लेका
संगाम बकँड़ा तेना माई
काँसा पितल दले लेका

गति काजी दोना माई
रनुवान गेया दो
संगम बकड़ा दोना माई
जियाड़ांन गेया दो

हे लड़की, तुम्हारी बात हाथों में लोकने के समान है।
हे लड़की, तुम्हारी बात काँसा-पीतल ठोकने के समान है।
हे लड़की, किसके कहने से तुम्हारी बात
हाथ में लोकने के समान है?

हे लड़की, किसके कहने से तुम्हारी बोली
काँसा-पीतल ठोकने के समान है ?
हे लड़की, साथी के कहने से
हाथ में लोकने लायक है।
हे लड़की, मित्र के कहने से
काँसा-पीतल ठोकने के समान है।
मेरे साथी का कहना तो
दवा के समान है।
मेरी साथी की बात तो
जड़ी-बूटी के समान है।

१५६

लं लं लं धोती दो बोयो
मुण्डा कोची मड़ाकी को
नंगाली पोयता दो बोयो
राजा कोची मंझी को

ओकोरेम लेले लेद को बोयो
मुण्डा कोची मंड़ाकी को
चिमय कोरेम चिना लेद को बोयो
राजा कोची मांझी को

अइङ दोइङ लेले लेद को बोयो
चेतन टोला सुसुन रे
अइङ दोइङ चिना लेदको बोयो
लतर टोला करम रे

हे मित्र, फहराती हुई धोती
मुण्डा की है या मानकी की ?
हे भाई, मोटा-मोटा जनेऊ
राजा का है या माँझी का (जमीन्दार)
तुमने कहाँ देखा था
कि मुण्डा की है या मानकी की ? (ऐसा कहते हो ?)
तुमने कहाँ पहिचाना था
राजा का या माझी का ? (ऐसा कहते हो ?)

हे भाई ! मैंने ऊपर टोले
के नाच में देखा था।
हे भाई ! मैंने नीचे टोले
के करम में पहिचाना था।

१६०

जोजो को जुम्बुलाए रे हो
उली को अम्बराए रे
डुलकी दुमंग बिनु साड़ी लेना हो
मेतम गोपिन को सुसुन तन

दोला तेबु लेल अगुवा
दोला तेवु चिना अगुवा
डुलकी दुमंग बिनु साड़ी लेना हो
मेतम गोपिम को सुसुन तन

अले दोले लेल केना हो
अले दोले चिना केना
डुलकी दुमंग साड़ी लेना हो
मेतम गोपिन को सुसुन तन

इमली की झाड़ियों में
और आम की झुरमुटों में
ढोलक मांदर और वेणु बज रहे हैं।
हे मित्र, गोपियाँ नाच रही हैं।
चलो देख आवें।
चलो देखने चलें।
ढोलक माँदर और वेणु बज रहे हैं,
और गोपियाँ नाच रही हैं।
हम तो देख आये
हम तो देख आये
(जो) ढोलक माँदर और वेणु बज रहे हैं
(और, जो) गोपियाँ नाच रही हैं।

१६१

चेतन टोला सुसुन कोदो
हे हो मेताम कुदा सुड़ा
लतर टोला करम कोदो
हे हो मेताम बारु सुड़ा

सुसुन कोदो हिजुवा कना
बाना माई एकेलाए मे
करमे कोदो सेटेरा कना
डालीना माई ताईयुरे मे

काची दादाम लेले जदा
चुटी रेगे एकेला तान
काची दादाम लेले जदा
लतर रेगे ताईयुरे तन

लेले दोरेइङ लेले जदा
होयो तेगे एकेला तान
चिना दोरेइङ चिना जदा
रम्पी तेगे ताईयुरे तान

ऊपर टोला के नाचनेवाले
जामुन की कोपलें खोंसते हैं।
नीचे टोले के करम खेलनेवाले
कुसुम की कोपलें पहनते हैं।

नाचनेवाले तो आ गये,
हे लड़की! अपनी कोपलें लाओ।
करम खेलनेवाले तो आ गये।
हे बेटी! अपना-अपना फूल हिलाओ

हे दादा! क्या नहीं देखते
आगे हिल रहा है।
हे दादा! क्या नहीं देखते
पीछे हिल रहा है।

देखने को तो देखता हूँ ;
लेकिन हवा से हिल रहा है (तुम्हारे हिलाने से नहीं)
देखने को तो देखता हूँ,
लेकिन आँधी से हिल रहा है ।

१६२

सेतः दो गुरिः गिड़ी लंडियाते
सेतः दोम तरसु बसुना
निमतं दो डुलकी दुम सड़ीते
निमतं दोम चली बली ना

ओकोए काजी तेना माई
सेतः दोम तरसु बसुना
चिमय बंकड़ा तेना माई
निमतं दोम चली बली ना

सबेरे गोबर फेंकने के आलस्य से
ढीली-ढाली रहती हो ।
और अभी तो ढोलक और मांदर की
आवाज से छटपटा रही हो ।

हे लड़की ! किसके कहने से
सबेरे ढीली-ढाली रहती हो ?
हे लड़की ! किसके कहने से
अभी छटपटा रही हो ?

१६३

अमागः सुनुपीद दोना माई
बण्डा मयलो पड़ागोवा
अमागः पैला दोना माई
सगिड़ी सान थोलोवा

ओकोए काजी तेना माई
बण्डा नयलो पड़ा गोवा
चिमय वंकड़ा तेना माई
सगिड़ी सान थोलोवा

गतिम काजी तेना माई
बण्डा नयलो पड़ागोवा
संगाम बंकड़ा तेना माई
सगिड़ी सान थोलोवा

हे लड़की ! तुम्हारा जूड़ा तो इतना बड़ा है
कि उसको फाड़ने से छोटा-मोटा हल निकल सकता है
तुम्हारा आँचल तो इतना बड़ा है
कि इसमें गाड़ी भर लकड़ी बाँधी जा सकती है ।

कौन कहता है कि खोंपा,
फाड़ने से हल निकलने लायक है ?
कौन कहता है कि आँचल
गाड़ी भर लकड़ी बाँधने लायक है ?

तुम्हारा साथी कहता है कि
खोंपा फाड़ने से छोटा-मोटा हल बनाने लायक है ।
तुम्हारा संगी कहता है कि
आँचल एक गाड़ी लकड़ी बाँधने लायक है ।

१६४

दा तइङ दो टुइला
दा तइङ दो डिन्डा केन्देरा
ओकोरेया-टुइला
चिमय रेया डिन्डा केन्देरा

गितिः ओङः रे टुइला
जारु रोसोम रे डिन्डा केन्देरा
गितिः ओड़ः दो लो तान
जारु रोसोम दो डिन्डा बाले तान

हाय टुइला लो तना
हाय डिन्डा केन्देरा बालेतान
टुइला किसान इयाम तना दो
केन्देरा किसान दो सयाद तान

हमारा टुइला दे दो।
हमारा जवानी के समय का केन्द्रा (सितार) दे दो।
टुइला कहाँ है ?
सितार कहाँ है ?

टुइला शयन-गृह में है।
सितार विश्राम-गृह में हैं।
शयन-गृह तो जल रहा है।
विश्राम-गृह तो धधक रहा है।

हाय ! टुइला जल रहा है।
हाय ! सितार जल रहा है।
टुइला का मालिक रो रहा है।
सितार का मालिक आह भर रहा है।

१६५

डाड़ी होरा गोड़ा सियु: कोड़ा को
रेला डाड़ी द: आगु को
नेते सेने कुड़ी होन दोपे
लेलाइची बानो: गे

लेले दोले लेला:इया हो
डुबा रे मानी सुनुम
चिना दोले चिनाइया हो
थाड़ी रे राईबा ससाङ

डुबा रे मानी सुनुम हो
गंगा तें रेड़ानतिई
थाड़ी रे राई बा ससङ्ग
समुद्र ते बुवालेन तिई

हे डाड़ी के रास्ते पर हल चलाने वाले लड़को !
और हे रेला डाड़ी से पानी लानेवाली लड़कियो !
इधर से जानेवाली लड़की को
देखा है या नहीं !

देखने को तो देखा था,
कटोरे में सरसों का तेल (लिये थी)
देखने को तो देखा था,
थाली में राई के फूल के समान हल्दी (लिये थी)

कटोरे में सरसों का तेल (लेकर)
गंगा नहाने गई ।
थाली में पीली हल्दी (लेकर)
समुद्र में तैरने गई ।

१६६

ओको कोतेम सेनोः तना दादा
जुड़ी जुड़ी बोण्डोलान गे
चिमय कोतेम बिरिद तना दादा
जोता जोता बोतोरान गे

अइङ दोइङ सेनोः तना बाबु
चेतन टोला सुसुन ते
अइङ दोइङ बिरिद तना बाबु
लतर टोला करम ते

चेतन टोला सुसुन दोरे दादा
कारेम इतुवान
लतर टोला कोरम दोरे दादा
कारेम मरीयान

चेतन टोला सुनन दोरे दादा
चेतन तेको कुड़ी लेया
लतर टोला करम दोरे दादा
देया तेको उसारेना

चेतन तेको कुड़ीलेरे बाबु
अइञो बाबुइङ कुड़िलेया
दोया तेको उसारेन रे बाबु
अइञो बाबुइङ उसा रेना

हे दादा ! जोड़ा-जोड़ा पिछौटा लटकाये हुए
कहाँ जा रहे हो ?
हे दादा ! जोड़ा-जोड़ा लटकन लटकाये हुए
कहाँ चल रहे हो ?

हे बाबू ! मैं ऊपर टोला
नाचने के लिए जा रहा हूँ।
हे बाबू ! मैं नीचे टोला
करम खेलने जा रहा हूँ।

हे दादा ! ऊपर टोले के नाच को
तुम नहीं जानोगे।
हे दादा ! नीचे टोले का करम
तुमसे नहीं होगा ?

हे दादा ! ऊपर टोले के नाच में (छोकरे)
ऊपर को उछलते हैं।
हे दादा ! नीचे टोले के नाच में (छोकरियाँ)
पीछे को खिसकती हैं।

हे बाबू, जब (लड़के) ऊपर को उछलेंगे
तो मैं भी उछलूँगा।
हे बाबू, जब (लड़कियाँ) पीछे को खिसकेंगी
तो मैं भी खिसकूंगा।

१७६

बुरु चेतन चिरियाँ किङ्
नारा लतर असाकाल किङ्
चिया चितिरी कम अड़ागुना हो
चिया असाकाल कम नोसोरेन

गातिम दो अड़ान्दीन तनारे
संगाम दोए कोंड़ादिन तान
इचा बागे पेरेड़ेद मे तना
मुरुद बागे नर सिंगा तान

डुगु मगु चौडाल ते हो
अड़ादीन तना हो गतिम दो
गजा बजा बजुणीया ते हो
कोड़ान्दीन तना हो संगाम दो

पहाड़ के ऊपर दो तीतर हैं।
ढाल के नीचे दो आसाकल हैं।
हे तीतर! क्यों नहीं उतरते?
हे आसाकाल तुम क्यों नहीं आते?
तुम्हारे प्रिय की शादी हो रही है।
तुम्हारे संगी का विवाह हो रहा है।
ईचा-फूल की भेरी बज रही है,
और धतूरा-फूल का सिंगा बज रहा है।
डगमड चंडूल (एक डोली) पर
तुम्हारे संगी की शादी हो रही है।
गाजा बाजा बजा कर
तुम्हारे संगी का विवाह हो रहा है।

करमा

✤

आयुब-सिगी बा जाना
तिकिन सिगी गोसो जाना
ओहो जुगी चेंड़े
आमो चेड़ेम गोसो चबा जान !

सायंकाल फूल खिला
और दो पहर को मुरझा गया।
हे जोगी पक्षी ! तुम भी मुरझा गये !

१६८

ने दिसुम तला रे
जोनोमा कन आबुरे
रेंगे तेतङ दुकु सुकु
जमारे - गेया

जेता इमिनङ पुंजी पाटी
कामियन रेओ
एना दोजा बराबारीं
कागे तैन गेया

चिलका काड़ेबा बातना
एनका पुंजीहिजुः तना
चिलका काड़ेबा उरुड़ु तना
एनका पुंजी सेनोः तना

इस धरती पर हम लोगों का
जन्म हुआ है।
यहाँ सुख-दुःख और भूख-प्यास
सभी-एक साथ हैं।
(यहाँ) जितना भी धन कमायें
वह नहीं ठहरता।
जिस प्रकार काँस फूलता है।
इसी प्रकार धन आता है।
(और) जिस प्रकार काँस झड़ जाता है,
उसी प्रकार धन चला जाता है।

१६६

अटा-मटा बिरको तलारे
बुरु जतः रेबुआ, चिकायाबु ङोः
जेता लेकारे नेरे-गेबु तइना
चिकायाबु ङोः

कुरु मुटूबु कमिया
सुकु सुकबु जोमेया, चिकायाबु ङोः
जेता लेकारेमेरे-गेबु तइना
चिकयाबु ङोः

अबुअः मोलोङ रे
दुकु सुकु सोबेन विधि आलाकाद् चिकायाबु ङोः
चिका लेरे बईयोगा नेरे गेबु तइना
चिकायाबु ङोः

घने जंगल के बीच में
पहाड़ के निकट (रहते हैं, इसके लिए) क्या किया जाय ?
किसी तरह (हमें) यहीं रहना है। क्या किया जा सकता है।
हम तेजी से काम करेंगे।
और अच्छी तरह खायेंगे-पीयेंगे।
जैसे-तैसे हमें यहीं रहना है
क्या किया जा सकता है?
विधाता ने हमारे भाग्य में
दुःख-सुख सब लिख दिया है।
जैसे-तैसे हमें यहीं गुजर करना है।
क्या किया जा सकता है।

१७०

ने दिसुम रिंगा जना
हियातिङ ते चबा जना
दोलङ गतिङः सेनोः लील-बाड़ी
किरिंगेयालङ बुगिन लील साड़ी

सेनो बालङ जुड़ी जुड़ी
गोओयालङ मरंङ कापी
दोलङ गतिङ सेनोः लील-बाड़ी
किरिंगेयालङ बुगिन लील साड़ी

दोलङ गतिङ सेनोः लील बाड़ी
हुगा होन मेनाः कोवा भारी

दोलङ गतिङ सेनोः लील बाड़ी
किरिंगेयालङ बुगीन लील साड़ी

बुदु बाबु काजी तना
एना काजी सुकु जना
दोलङ गतिङ सेनोः लील बाड़ी
किरिंगेयालङ बुगीन लील साड़ी

इस देश में अकाल पड़ गया।
दुःख सहते-सहते थक गये
हे प्रिय! लील - बाड़ी चलो।
हम वहाँ सुन्दर - नीली साड़ी खरीदेंगे।
हम दोनों साथ-साथ चलेंगे।
हम बड़ा फरसा ले लेंगे।
हे प्रिय! लील - बाड़ी चलो।
वहाँ सुन्दर नीली साड़ी खरीदेंगे।
बुदू बाबू कहते हैं (कि)
इस बात से आनन्द होता है।
हे प्रिय! लील - बाड़ी चलो।
वहाँ सुन्दर नीली साड़ी खरीदेंगे।
हे प्रिय! लील - बाड़ी चलो।
वहाँ (हमारे) बहुत से भाई-बन्धु हैं,
हे प्रिय! लील - बाड़ी चलो।
वहाँ सुन्दर नीली साड़ी खरीदेंगे।

१७१

कुईडीह् रे जडूवा
जानुम पिड़ी चिबिड़ी
कारेइङ ताइना
अइङ दो जेता तेगेइङ सेनोगा कागेइङ ताइना

हातु रेदो मुण्डा मेनाई
बीर रेदो कुला मेनाई
कारेइङ ताइना
आइङ दो आसाम तेगेइङ सेनोगा, कागेइङ ताइना

बुदु बाबु काजी तना
एना काजी सुकुजना
कारेइङ ताइना
अइङ दो आसाम तेगेइङ सेनोगा, कागेइङ ताइना

कुई डीह में जडुवा (नामक आदमी) है।
और कटीले डाँड़ में झाड़ झंखाड़ है
मैं नहीं रहूँगा।
मैं कहीं भी भाग जाऊँगा।
मैं (यहाँ) नहीं रहूँगा।
गाँव में मुण्डा है
और जंगल में बाघ है।
मैं (यहाँ) नहीं रहूँगा।
मैं आसाम चला जाऊँगा
मैं (यहाँ) नहीं रहूँगा।
बुदू बाबू कहते हैं।
इस बात से हमें खुशी होती है।
मैं यहाँ नहीं रहूँगा।
मैं आसाम चला जाऊँगा।
मैं (यहाँ) नहीं रहूँगा।

१७२

मे हातु तला रे
जीनोमा कन सुगा रे
दुकु सुकु सोवेन मेना:
विधि ओल तदारे

नेला रे तइङ नोवोधनी
नेला रे तइङ चोओलेमा
नेका गे संसार मेनाः
विधि ओल तदा रे

नोवोधोनी जी दो दिरीते थेना कना
अयार तयोम उड़ः केते
दुरङ बाई तनारे
विधि ओल तदा रे

हे सुग्गा, इस गाँव में
हम लोग पैदा हुए हैं।
(हमारे जीवन में) दुःख और सुख दोनों रहते हैं।
(क्योंकि) भगवान ने (ऐसा ही) लिख दिया है।
हे मेरी नोवोधोनी
आओ तुम्हें चूम लूँ।
संसार ऐसा ही रहता है,
क्योंकि भगवान ने (ऐसा ही) लिख दिया है।
नोवोधनी का हृदय पत्थर से ढका हुआ है।
वह आगे-पीछे सोच कर गीत बना रहा है।
क्योंकि भगवान ने लिख दिया है।

१७३

नोरो जोनोम बरसिङ नांगिन
लंदा जगर हृति-प्रीति
ने जीवोन गतिङ
ने जीवोन का हो नमोगा

कासा पीतल पोवाः जानरे
कासा पीतल बदला नमोगा
ने जीवोन गतिङ
मे जीवन का हो बदलाओ

कुम्बर चाटु पोवा जानरे
कुम्बर ताते का रुवाड़ा
नै जीवोन गतिङ
ने जीवोन का हो नमोगा

मनुष्य जन्म दो दिन के लिए है।
इसलिए इसमें प्रेम के साथ हँस बोल लेना चाहिए।
हे प्रिय, यह जीवन फिर नहीं मिलेगा।
काँसा पीतल फूट जाने पर
बदला जा सकता है।
(लेकिन) हे प्रिय! यह जीवन
नहीं बदला जा सकता।
कुम्भार का घड़ा फूट जाने पर
कुम्भार के पास लौट नहीं आता।
(उसी तरह) हे प्रिय! यह जीवन
लौट नहीं सकता।

१७४

हुडिङ हुडिङम ताई केना
मेरोम कोगेम गुपी केना
मता जनाम साराम दुपिल जान

सेने को होरा रे
पीटी को पालान रे गतिङ रे
होरा काजी आड़ागाइङ पे

अयारोना लेले मे
तयोमोना हेतय मे
कामोल बारे मइना जलातिङ तान

(जब) तुम बहुत छोटी थी,
(तब) बकरी चराती थी।
(अब तुम) बढ़ गई
(और) माँद ढो रही हो
जाने के रास्ते में,

हाट बाजार में
हे प्रिये ! तुम मेरे लिए रास्ता छोड़ो।
तुम आगे देखो।
तुम पीछे देखो।
तुम कमल फूल के लिए उड़ रही हो।
(कमल फूल रूपी युवक के लिए पागल बन गई हो)

१७५

ने जोनोम बारसिङ नंगेन
हिरिति पिरित सलाई तेबु
दुराङया दुरङ नेदो ओकोए
पूंजीयकन गतिङ ठोरेपे

होड़ो हिसिंगा मोचा चेण्टा
ने जोनोम कागे बुगीना
एना मेन्ते - दिसुम
तम्बावः कन गतिङ ठोरेपे

हसा चटु पोवाः जानरे
कुम्बर ताते कागे सेनोः
एन लेका ने सोमोय
पावते सेनोः तना गतिङ ठोरेपे

कांसा पीतल बदला नामोः
ने सोमोय कागे नामोः
एना मेन्तै सिङ बोंगा
ताबु गतिङ ठोरे पे

यह जन्म दो दिन के लिए है।
इसलिए मिल-जुल कर एक साथ
गीत गायेंगे। भला गीत से
कौन धनी हो गया है ?

(जिस तरह) मिट्टी का घड़ा (जब) फूट जाता है
(तब) कुम्भार के पास फिर लौट कर नहीं जाता ।
इसी तरह यह समय व्यर्थ जा रहा है ।
हे प्रिये ! समझो ।
काँसा-पीतल बदला जा सकता है ।
लेकिन यह समय फिर नहीं मिलेगा ।
इसलिए हे प्रिय, तुम लोग
ईश्वर का ध्यान करो ।

१७६

डिडा सोमय तईकेना
फुलाई तेगेम चबा जाना
पोला तम् दोना माइना
निरल साड़ी—तान
माइनम् लन्दा तान—गे

बो: रेदो सुतम बिण्डा
बिण्डा चेतन हसा चाटु
सेन तदम ना माइना
जिड़िब जिड़िब तान
माइनम लन्दा तान गे

मयङ रेदो नील साड़ी
साड़ी तदम ओर तानगे
लेलो: तनम् ना माइना
कदल दारु लेका--
माइनम् लन्दा तानगे

(तुम्हारा) कुवाँरेपन का समय है ।
तुम (अपने रूप के) मद में फूल रही हो ।
तुम्हारे पैर की अँगूठी से
मधुर ध्वनि हो रही है ।
(हे) बालिका, (तुम) हँस रही हो ।

(तुम्हारे) सिर पर सूत का विंदा है,
(और) विंदा के ऊपर मिट्टी का घड़ा।
तुम चली जा रही हो।
(और, तुम्हारे पैर की अँगूठी से)
जिड़िब-जिड़िब की ध्वनि निकल रही है।
हे बालिका, तुम मुसका रही हो।
(तुम्हारी) कमर में नीले रंग की साड़ी है।
(जो) भूमि तक फहरा रही है।
तुम कदली—के वृक्ष की तरह दिखाई दे रही हो
हे बालिका, तुम मुसका रही हो।

१७७

ने डिडा सोमोय रेगे
सुसुननानमे करमान मे
माइना तयोम तेदो
सुसुन करम वाले तोलोगा

ओड़: जान-रेम दुबर जानरे
चाटु: जानरे लुण्डी: जानरे
माइना निदा सिंगी दो
लंदा जगर कम नमेया

हियातिङ रेओ माइना चकातिङ रेओ
रागे रेओ—गेराँङे रेओ
सिदा लेका डिडा सोमोय—
माइना काम नामेया—

हे लड़की (तुम) इसी जवानी के समय में
नाच लो—और करम खेल लो।
पीछे तो नाच और करम
बन्द हो जायेगा।
जब तुम्हारा घर-द्वार हो जायेगा।
और भात-पानी का प्रबन्ध स्वयं करना पड़ेगा
(तब) यह रात दिन की हँसी बोली खतम हो जायगी
तुम चाहे (जितना भी) सोचो और चिन्ता करो।

चाहे जितना भी रोओ, पछताओ।
पहिले के समान यह कुँवारी का समय
हे लड़की, नहीं पाओगी।

१७८

कर्म रे मेनः कोवा
एना विधि होबाव गेया
ओभाई एना ब्रेथा कारे सेनोवा
पापो-पुन्यो आम साः ते सेनोवा

बेदरे ओला कना विचारो-ओवा धर्मपूरे
एन दिपली आम साते, उदुबे मे अन्तोरे ओकोए मेनाई

जे लेका संकटो मेनाः
उड़ुः तेगे जी ओटङ जना

ओभाई जेतय अमः बंगाइया
अखिर एन दिपली—

विपद रे काल हिजुःगा
एन दिपली उड़ुई में अन्तोरे

विधि जे लेका विपदो
नोकोरे तइना जो दो

ओभाई आम डुबाओवा संसारे
ओहे मोवोधन काजी तान

जेतय बंगाई विपद समय रे
एन समय उड़ुई मे अन्तोरे

जो कुछ कर्म में है,
वह तो होगा ही।
हे भाई! वह व्यर्थ नहीं जायेगा।
पाप-पुण्य सब तुम्हारी ओर जायेगा।

वेद में लिखा हुआ है कि धर्मपुर (स्वर्ग) में विचार होगा।
अपने अन्तर में सोचकर बताओ
कि उस समय तुम्हारा कौन होगा ?
जिस तरह का संकट है,
उसे सोचकर जान चली जाती है।
हे भाई ! तुम्हारा (इस दुनिया में) कोई नहीं है।
आखिर इस समय
विपत्ति में काल आयेगा।
उस समय, अपने हृदय में सोचो
कि तुम्हारा कौन होगा ?
हे विधाता ! जिस तरह की विपत्ति है,
(उसमें) जान कहाँ रहेगी ?
हे भाई, तुम संसार में डूब जाओ।
नवघन कहते हैं कि विपत्ति के समय
कोई नहीं (साथ देता)।
उस समय अपने मन में सोचो
कि तुम्हारा कौन होगा ?

१७६

जोनोमा कन आबुरे
आधा सर्गी मञ्चीपुरे
ड़पाय तेगे नेया मानोवा जनोम सेनोगा
जे दिऩ ते काल हिजु,गा

जेतान बोंगा काहङा हागा
मुसिङ दिन रे नामोगो दगा
बोंगा बुरु सोबेन बागेमा
जे दिन ते काल हिजुःगा

एंगा आपु हगा-होन
जेतय काको दरान
जेतय काको सेनोमा
जे दिनते काल हिजुःगा

हम लोग स्वर्ग और पाताल
के मध्य में पैदा हुए हैं।
हमारा मानव-जीवन मृत्यु आने के पहले
व्यर्थ जायगा।
हे भाई! मैं किसी देवता की
पूजा नहीं करूँगा।
(क्योंकि) किसी दिन आफत आयगी।
(और हमारे) देवता मृत्यु आने पर
छोड़ देंगे।
माँ, बाप, भाई और बेटा—कोई अपना नहीं होगा।
मृत्यु के आने पर कोई कहीं साथ नहीं जा सकता है।

१८०

मोनरे हियातिङ तना-ए
इपा-ए गे जानोमा कना, गोजो: गेया
जे दिन ते काल हिजू:गा गोजो: गेया

गोजो: गेया—
जे दिन तें मेयाद पुरा: ओवा, गोजो: गेया
जे दिन ते काल हिजु:गा, गोजो: गेया

ने दिसुम रे संसार
जेतय लोओ अलोम प्रीति, गेजो: गेया
ने मोचारे सेंगेल को ओमेया, गोजो: गेया

नोवोधोन काजी मोनरे
अच्छा लेका उड़ुउ लेम गोजो: गेया
ने देहो हसारे मिलाओवा,गोजो: गेया

मन में सोच रहा है कि
यह जन्म व्यर्थ हुआ।
जिस दिन काल आयगा,
उस दिन मृत्यु हो जायगी।
जिस दिन समय पूरा हो जायगा,

उस दिन मृत्यु श्रा जायगी।
जिस समय काल श्रायगा,
उस दिन मृत्यु हो जायगी।
इस दुनिया में किसी से प्रेम मत करो
लोग इस मुँह में श्राग देंगे।
'नवघन' कहता है कि मन में
श्रच्छी तरह सोच लो।
यह शरीर मिट्टी में मिल जायगा।

१८१

डोड़ो बाओ बा लेमा
जिंगा बाओ बा लेना।
ओ जुगी चेंडे,
ओको बारे जीगे सुकुजान॥

आयुब सिंगी बा जाना
तिकिन सिंगी गोसो जाना।
ओ जुगी चेंड़े
आमो चेंड़ेम गोसो चबा जाना॥

रामायण दो काजी तना,
झुमारि बनाइरे मोने।
ओ जुगी चेंड़े
आमो चेंड़ेम गोसो चबा जान॥

गोंगरा (घिउडा) भी फूलने लगा,
झींगी भी फूलने लगी।
हे जोगी पची!
किस फूल में तुम्हारा मन लगता है?

शाम को फूल खिला
और दोपहर को मुरझा गया।
हे जोगी पची!
तुम भी मुरझा गये।

'रामायण' कहता है
झूमर नाचने की इच्छा होती है।
हे जोगी पक्षी !
तुम भी फूल की तरह मुरझा गये।

१८२

आबु असुल नंगेन
बाबा सुड़ा नंगेन।
जरगी दः हो
तेबः लेना बुगिन।

मेन्ते काजी तना
कामी पे सोबेन॥
साड़ी तना रिम्बिल
उयुः तना अरिल

सोबेन दिसुम
होबा जना बेरेल
मेनते काजी तना
'राम' हेरेल॥

गोजोः तन को जंटेते
तेतङः तन को दआःते
सोबेन को नगेन अउतदा
दः सोंगे ते

मेन्ते काजी तना
कामी पे सोबेन॥

हम लोगों को पालने-पोसने के लिए
धान पनप रहा है।
बरसात का सुन्दर दिन पहुँच गया।
कवि कहता है कि सब लोग काम करें

बादल गरज रहा है (और)
ओला गिर रहा है ।
सारी दुनिया हरी-भरी हो गई ।
ऐसा 'राम' कह रहा है ।
जो धूप से मर रहे थे,
और पानी के लिए प्यासे थे,
उनके लिए पानी लेकर (बरसात) आ पहुँचा
इस लिए सब लोग मिम-जुलकर काम करें ।

१८३

ओकोसारे होयो लेद
चिमय सारे रम्पी लेद् ।
माइना गुड़् गुड़्—
रीम्बिल साड़ी तान ।।

खुखरा रे गमा लेद्
ढोंयसारे रम्पी लेद् ।
माइना गुड़् गुड़्
रीम्बिल साड़ी तान ।।

चेतनाते होयो लेद्
लतराते रम्पी लेद् ।
मइना गुड़् गुड़्
रीम्बिल साड़ी तान ।।

दे गतिङ चातोमिङ में
दे संगाइङ चोतोंरिङ में ।
दे रे सुरु सुटूइङ
लुमे छाबा तान ।।

किधर से हवा आई ?
किधर से धूल उड़ी ?
हे लड़की ! बादल गुड़-गुड़ की आवाज में
गरज रहा है ।

खुखरा (राज) में पानी बरसा
(और) टोयसा में आँधी चली
हे लड़की ! इसी लिए बादल गरज रहा है ।
ऊपर से हवा आई
और नीचे से धूल चली ।
हे बालिका ! बादल गरज रहा है ।
हे प्रिये ! मुझे छाता से बचाओ ।
हे प्रिये ! मुझे छतरी से बचाओ ।
भींगकर लथपथ हो रहा हूँ ।

१८४

दअः दो गमा तना
रीम्बिल साड़ी तना
कोरे चिका जान आइङ दोइङ
दंदा गिड़ी जान—रे ।

बेंगड़ा दारु रे
हका गो-एना
भला ने दिशुम तला रे काइङ ताइना
भला ने दिशुम तला—रे ।

लोटा दअः रेइङ
डुबरा गोएना
भला ने दिशुम तला रे, काइङ ताइना
भला ने दिशुम तला—रे !

पानी बरस रहा है
और बादल गरज रहा है ।
मुझे आश्चर्य है कि मैं
कहाँ क्या हो गया !
मैं बैगन के पेड़ में
फाँसी लगा लूँगा ।
मैं इस देश में नहीं रहूँगा ।
मैं लोटा-भर पानी में
डूब कर मर जाउँगा ।
मैं इस दुनिया में नहीं रहूँगा ।

१८५

करम चण्डुः मुलुः लेना, करम ओड़ः साल बाल
करम बोंगा की ध्यान धोरोम तान
हाई-जीलू काको जोम तान
करम दारु को आगु लेदा, रचा रेको विद् केदा
चुमन-सिंदुरी धुना धूप केदा
करम बोंगा पुंजोई ओमा को तना
कटब कड़ी को हिजुः लेना, चड़द चुड़ुद चुरिन लेका
करम दारु को दुब बियुर केदा
लेलोः तना को चुरिन लेका
कहनी गुरु काजी तना, साबेपेगो करम कोतो
करम बोंगा पुजोई ओमा पेया
बूढ़न सिंह दोरे-ए मनातिङ तान

करम का चाँद उग गया।
करम के घर में चहल-पहल है।
(लोग) करम देवता का ध्यान कर रहे हैं।
और उन्होंने मांस-मछली खाना छोड़ दिया।
(लोग) करम की डाल ले आये हैं,
और उसे आँगन में गाड़ दिया है।
आरती, सिन्दूर-दान और धूप-जलाना सब हो गया।
करम देवता (लोगों को) धन दे रहा है।
उपवास करनेवाली स्त्रियाँ आ गईं।
वे चमक-दमक-वाली भूतिनी के समान
दिखाई दे रही हैं।
वे करम वृक्ष के चारों ओर बैठ गईं।
वे भूत-भूतिनी के समान दिखाई दे रही हैं।
कहानी कहनेवाला गुरु कहता है—
कि करम डाल को पकड़ो
और करम देवता का ध्यान करो।

१८६

गुटुहातु सुसुन करम
निदा सिंगी दुमंङ साड़ी

ओहोरी सांगी भाई दोलङ संगी सुसुन अगुते
होरा रेदो बीर मेना:
बीररेदो कुला मेनाई
ओहोरी संगी भाई बुचा कापी गोओ वालङ में
तरा तीरे खण्डा मेना:
तरा तीरे ढाल मेना:
ओहोरी संगी भाई हिजु: रेदो हेसे गोई-या

गुटुहातु में नाच और करम हो रहा है।
रात-दिन माँदर बज रहा है।
हे संगी ! चलो हम लोग नाचने चलें।
(मगर) रास्ते में जंगल है,
(और) जंगल में बाघ है।
(इसलिए) हे भाई, (अपना) भोथा बलुवा पकड़ लो।
हमारे हाथ में तलवार है
हे भाई ! अगर बाघ आयगा,
(तो) उसे काट देंगे।

१८७

दोला दोला बृन्दा बीर रास लेलते
रास वितर राधा किष्टो सुसुने तन
दोला दोला बृन्दा बीर रास लेलते
रास चुड़ा जुले तन
सिंगी चन्दु: जुलो लेका
हीरा - मुनि को दिया जुले तान
सिंगी चन्दु: तुरो: तान लेका
सोलो सय गोपिन को होरी होरी को
दुरङ तना सारी सारी गतिया कना
नीत् बौरा फूल जुल तना तको
निदा राटी सिंगी जना रुतु साड़ी तान
आंदू सकोम तड़ाका मान्दूली
रुपा साड़ी को पैला तदा

बुढ़न सिहौं - ए सुसुन बेड़ा तना
रिगी मिगी सांगी इपिल जुली: तान लेका

चलो वृन्दावन में रास देखने चलें।
रास के भीतर कृष्ण और राधा नाच रहे हैं।
चलो वृन्दावन में नाच देखने चलें।
रास में मुकुट चमक रहा है।
सूरज उगने और चाँद उगने से समान
(उसके) हीरा और मणि दीपक के समान जल रहे हैं।
जो उगते हुए सूरज और चाँद के समान दिखाई देते हैं।
सोलह सौ गोपियाँ हरि-हरि ! नाम लेकर
गा रही हैं, और एक पंक्ति में जुटी हुई हैं।
(उनका) फूल (इस तरह) चमक रहा है (मानों)
रात में दिन हो गया हो।
(और) बाँसरी बज रही है।
पैरी, पहुँची, तरड़ी और हँसुली, सभी चमक रहे हैं।
और सफेद साड़ी का आँचल फहरा रहा है।
बूढ़न सिंह कहता है कि जब नाचते फिरते हैं
तब ऐसा लगता है मानों बहुत-से तारे
एक साथ झिलमिला रहे हैं।

१८८

बीर बितार प्रभु गोपाल
बाई तमाए निला चोमोत्कार
जिकी मिकी जुले तना हो
बाई तना को लीला हो
एला एला एलाबु दोला
दोला दोला, दोला दोलाबु हो
बिङ होड़ो को हड़ागुवा कना!
बोंगा मुनि बीर को दुबा कना हो
तोल तना को लीला जोतो—
ओजो धोनी राधाबिनोन्दिनी जोतो को हियाकना हो
एला एला एलाबु - लेला
दोला दोला दोला दोलाबु हो

प्रभु शिरोमणि रुतुई ओरोङ तना
तावु तलारे सुसुन तना हो
जोतो गोपिन को इपिला कना
एन लेका निला शोभा कना रे
एला एला एलाबु लेला
दोला दोला दोला दोलाबु हो
जोतो होड़ो को उड़ुङा कना
निदा सिंगी याबू सेनेयाबु ताबु
बुदु बाबु ताबु तयोमा कना
इपा - ए डोन्डो लेको गे हो
एला एला एलाबु लेला
दोला दोला दोला दोलाबु हो

जंगल के बीच गोपाल कृष्ण हैं (और)
लीला चमत्कार कर रहे हैं।
उनका मुकुट झिलमिल-झिलमिल चमक रहा है।
चलो-चलो, देखें, चलें, चलो-चलो, जल्दी चलें।
शेष-नाग उतरे हैं।
देवता-मुनि बैठे हैं,
तथा सारी लीला देख रहे हैं।
राधा भी अपनी सभी सखियों के साथ आई हैं।
आओ देखने चलें, चलो-चलो-चलो, जल्दी चलें।
जो बाँसुरी बजा रहे हैं,
वे ही हमारे प्रभु शिरोमणि हैं।
(वे) बीच में नृत्य कर रहे हैं।
व्रज की गोपियाँ तारों के समान चमक रही हैं।
उस लीला में उनकी शोभा दिखाई दे रही है।
आओ, देखने चलें, चलो-चलो-चलो, जल्दी चलें।
हम जितने आदमी निकले हैं, दिन-रात चलेंगे।
बुदू बाबू तो मूर्ख आदमी की तरह पीछे छूट गया है।
आओ-आओ, देखने चलें; चलो-चलो-चलो, देखने चलें।

१८६

गोल तुरी सय गोपिन को सिङ बोंगा सुसुन तान
दो, दो, दो, दोला दोलाबु लेला

जी तइङ दो गोरे गिड़ी तान
दो, दो, दो, दोला, दोलाबु लेला
रसिकान को, सुसुन तानको सेवा तान को
दो दो दो दोला, दोलाबु लेला
बीर बितर तलारे, नीला तान को
दो दो दो दोला, दोलाबु लेला
कृष्ण रुतुई ओरोङ तना ब्रज गुपी लोः
दो, दो, दो, दोलाबु लेला

सोलह सौ गोपियाँ शिव का नाच नाच रही हैं।
चलो-चलो, हे भाई! देखने चलें।
मेरे मन में गुदगुदी अनुभव हो रही है।
चलो चलो चलो, देखने चलें।
वहाँ पर रसिक लोग, नाचनेवाले और भक्त लोग हैं।
चलो-चलो-चलो, देखने चलें।
कृष्ण ब्रज गोपियों के साथ बाँसुरी बजा रहे हैं।
चलो-चलो-चलो, देखने चलें।

१६०

तीरे रानी रुतुम ताल
सुसुन तना प्रभु नन्द लाल
छिनी छिनी छिनी साड़ी तान पैजनी
राजा रानी लेल तना को सोबेन गवालिनि ॥१॥
बंका बुंकु सुसुन तना
मिली मिली मिली जुले तान
काजी तान रानी सुसुन में नीलमणि
राजा रानी लेल तना को सोबेन गवालिनि ॥२॥
चण्डु: मोचारे राजा रानी
चूम तना किङ घाड़ी घाड़ी
ओमे तना किङ तोवा, दहि, छिनी
राजा रानी तोल तोल तना को सोबेन
गवालिनि ॥३॥

मोलोङः रेः टीका चन्दन
तुरतान बोंगा लेका लेलोः तान
काजी तान ताबु बुदु बाबु काजी
राजा रानी लेल तना को सोबेन गवालिनी ।।४।।

हे रानी, प्रभु नन्दलाल बाँसुरी को आवाज में हाथ से
ताल (लय) देकर नाच रहे हैं।
उनकी पैजनी भिन-भिन-भिन करके बज रही है।
राजा-रानी और ग्वालिनें—सभी देख रहे हैं।
वे भुकभुक कर नाच रहे हैं,
और उनका वस्त्र झिलमिल-झिलमिल चमक रहा है।
रानी कह रही है कि हे नीलमणि, और नाचो।
राजा-रानी और गोपियाँ, सभी देख रहे हैं।
राजा-रानी उनके चन्द्र-मुख को बार-बार चूम रहे हैं।
दूध-दही और मक्खन दे रहे हैं।
राजा-रानी और गोपियाँ, सभी देख रहे हैं।
उनके भाल पर चन्दन की टीका है।
वे उगते हुए सूर्य के समान दीख रहे हैं।
बुदू बाबू कह रहे हैं कि
राजा-रानी और गोपियाँ, सभी देख रहे हैं।

१६१

ओहोरे छैला दोलाबु लेना
बीर बितर प्रभुई सुसुन तना रे, छैला
दोलाबु लेल आउअः ।।
नाकिदेन पे सुपिदेन पे
पड़ियाते कीचिरिन पे छैला
दोलाबु लेल आउअः ।।
होंटोः रेदो मुंगा माला
तीरेः साकोम पोलोरे साड़ी छैला
दोलाबु लेल आउअः ।।
रासिकन कोदो रेको अयारेन जना
बुदु बाबू एनागे दुरङः तना रे, छैला
दोलाबु लेल आउअः ।।

हे छबीली लड़कियो, चलो, देखने चलें ।
वन में प्रभु नाच रहे हैं ।
चलो, देखने चलें ।
कंघी लगालो, खोपा बाँध लो, पड़िया साड़ी पहन लो
चलो, देखने चलें ।
गले में मूंगे की माला है ।
हाथ में चूड़ी है, पैर की अँगूठी बज रही है ।
चलो, देखने चलें ।
जितने रसिक थे, वे निकल गये ।
बुद्दू बाबू इसीलिए गीत गा रहा है ।
चलो, देखने चलें ।

१६२

आमो डिंडा आइंयो डिंडा
किता चिरेम गलङ तना
किता गलङ हाय हाय किता गालङ
किता गालङ बागे ताम, सुसुनालङ

अकाड़ा रेको सुसुन तान
जुड़ी दुमङ साड़ी तान
जुड़ी दुमङ, हाय हाय, जुड़ी दुमङ
जुड़ी दुमङ साड़ी तान, सुसुनालङ

विनन्दोसिंह काजी तान
झुमारि बनाइरे मोन
अकाड़ारे हाय हाय अकाड़ारे
जुड़ी दुमड़ साड़ी तान, सुसुनालङ

तुम भी जवान हो, हम भी जवान हैं ।
तुम खजूर की चटाई बुन रही हो ।
हाय ! हाय ! अभी तक चटाई बुन रही हो ।
चटाई बुनना छोड़ो ; चलो, नाचने चलें ।

अखरा में (लोग) नाच रहे हैं ।
जोड़ा मांदर बज रहे हैं ।

हाय ! हाय ! जोड़ा मांदर बज रहे हैं ।
चलो, नाचने चलें ।

'नन्द सिंह' कहता है कि (हमको चलकर)
झूमर गाना चाहिए ।
हाय ! हाय ! अखरा में जोड़ा मांदर बज रहे हैं
चलो, नाचने चलें ।

१६३

समड़ोम लेका सुगड़ा तइंयो
दुड़ा रे बटिया कना
ससङ सुनुम ताए ओतेरे हुलाकना
अइंअः दोइङ दंदा गिड़ी जना, अइङ दोइङ
कोन्का गिड़ी जना

चिका जना चिका जना
रोगो जना चिरे दुःकु जना
दें बड़ा ए इतुवाना
अइङ दोइङ दंदा गिड़ी जना अइङ दोइङ
कोंका गिड़ी जना

चिका जना-चिका जना
बुरु बोंगा होए ओंड़ा जना
चावली जंग रे अएगे नमोःतना
अइङ दोइङ दंदा गिड़ी जना, अइङ दोइङ
कोन्का गिड़ीजना ।

बुदु बाबु काजी तना
रानु उरेः पे रीदेपे जुना
हरिः कष्टो को किष्टो मेन्ते रानुइपे
अइङ दोइङ दंदा गिड़ी जना, अइङ दोइङ
कोंका गिड़ी जना

हमारा सोने के समान सुन्दर कान्हा धूल में
पड़ा हुआ है। उसका हल्दी तेल (सारा शृंगार)
सब जमीन में गिरा हुआ है।
मुझे बहुत ही आश्चर्य्य है कि क्या हो गया ?
कौन-सा रोग या कौन-सा दुःख हुआ ?
वह झाड़ना-फूँकना भी जानता है।
मुझे आश्चर्य्य है कि उसे क्या हो गया ?
पहाड़ का देवता बिगड़ गया है।
चावल दिखाने से कहीं प्रकट हो गया है।
हमको आश्चर्य्य है कि क्या हो गया ?
बुदू बाबू कह रहे हैं कि जाओ
दवा थोड़ा और पीसो।
भगवान कृष्ण का नाम लेकर दवा करो।
मुझे आश्चर्य्य है कि उसे क्या हो गया ?

१६४

समाड़ोम लेका राधा तइङ रे
मैला गिड़ी जना
एन लेका सुगड़-तइङ रे
दुड़ा रे बाटी गिड़ी जान
अइङ दोइङ कोन्की गिड़ी जान

सुनुम ससङ कोना तइङ
ओतेरे दुला कन
नोलिता चम्पोक लता
देंवड़ा राआई विङ जुना
अइङ दोइङ कोन्की गिड़ी जान

गीदा कना-ए चि गो-ए जान
रानु रोदे विङ जुना
कोन्की जनाए चि दुःकुजना
देंवड़ा राआई विंङ जुना
अइङ दोइङ कोन्की गिड़ी जान

बुदु बाबू काजी तना
रानु रोदाई विङ जुना
हरे कृष्ण हरे कृष्ण, कृष्ण मेन्ते
नुनाई विङ जुना
अइङ दोइङ कोन्को गिड़ी जान

हमारी सोने के समान राधा उदास हो गई।
ऐसी सुन्दरी (राधा) धूल में गिर पड़ी।
मैं तो बेवकूफ बन गई हूँ।
हल्दी तेल आदि सब कुछ धूल में मिल गया।
हे चम्पक लता ! किसी देवता को बुलाओ।
मैं तो बेवकूफ बन गई हूँ।
दवा पीस लो।
यह गूँगी हो गई या किसी कष्ट में है ?
किसी देवता को बुलाओ।
मैं तो बेवकूफ बन गई हूँ।
बुदू बाबू कहते हैं कि दवा पीस लो।
और हरे कृष्ण, हरे कृष्ण ! कहकर दवा पीस लो।
मैं तो बेवकूफ बन गई हूँ।

१६५

उरि: गुपियाते गोपाल
हिजु: लेना-ए अकल बकल
एला बछा सुगा रे, चोओ लेमा
अम: सुगड़ा मिरू मोचा रे चोओ लेमा

हिजु: लेनाए डगर डुगुर
ओड़ा राटि शोभा जना
अम: नातिन दोवा कना रोका तोवा लोटारे चोओ लेमा
अम: सुगड़ा मिरू मोचा रे चोओ लेमा

यशोदा जी काजी तना

उरि: गुपो अलोम सेना:
कंस राजा मेनाई मुदाई मुरकटारे चोओ लेमा
अम: सुगड़ा मिरू मोचा रे, चोओ लेमा

गोपाल कृष्ण गाय चराकर थके-माँदे आये हैं।
(यशोदा कहती है) हे सुग्गा के समान बच्चे ! आओ, चूम लूँ।
सुग्गे के समान तुम्हारे सुन्दर मुँह को चूम लूँ।
तुम डुगुर-मुगुर आये जिससे घर सुशोभित हो गया।
(मैंने) तुम्हारे लिए लोटा में ताजा दूध रखा है।
आओ, सुग्गा के समान तुम्हारे सुन्दर मुँह को चूम लूँ।
यशोदा जी कहती हैं कि तुम गाय चराने मत जाओ।
वहाँ पर जानी दुश्मन कंस राजा है। आओ, चूम लूँ।
तुम्हारे मीरू के समान सुन्दर मुँह को चूम लूँ।

१६६

बुरू चेतन बा सुबा
गड़ा गितिल कादोम सुबा
ओहोरे ओको बीर रुतु-ए ओरोङया
रुतु अयुम सेनो: मोने तना

ओते रेंचि सिरमारे
सिरमा रेगे साड़ी तना
ओहोरे जुड़ी बिंगुल लेका साड़ी तना
रुतु अयुम सेनो: मोने तना

सोबेन को लेल तना
ओहोरे प्रभु गेचि ओकोम ओरोङया
मेकान होड़ो काहोइङ ठोराना
रुतु अयुम सेनो: मोने तना

पहाड़ पर फूल के नीचे (अथवा)
नदी के किनारे कदम्ब वृक्ष के नीचे
कौन वीर बाँसुरी बजा रहा है ?
बाँसुरी सुनकर वहाँ जाने की इच्छा होती है।
(यह बाँसुरी) जमीन में अथवा आसमान में है।

(बाँसुरी) ऊपर बज रही है ।
वह जोड़े बिगुल के समान सुनाई देती है ।
बाँसुरी सुनकर जाने की इच्छा होती है ।
सभी पशु और जन्तु देख रहे हैं ।
प्रभु ही होंगे, और कौन बजायगा ?
ऐसा आदमी मैं नहीं जानती ।
बाँसुरी सुनकर जाने की इच्छा होती है ।

१९७

बोर वितर कुदा सुड़ा
सुड़ा कना उगुल दुगुल
एन रेकिङ दुबा कना
सिदामें सुदाम
आको बोलोराम बोलोराम
रुतुए ओरोङ घनश्याम
नेते नेते एतु को ओरोङ
नेते नेते बाको गुतुई
जेतय जेतय डडिदे
नोकोए बो:ए सुड़ा संगेन
ओड़ो बोलोराम बोलोराम
रुतुए ओरोङ घनश्याम
किष्टो दोए निलाकना
उरि: गई कोए गुपितना
अतिङ तान को अतिङ तना
आतोम आतोम
ओड़ो: बोलोराम बोलोराम
रुतुए ओरोङ घनश्याम

जंगल के अन्दर जामुन का वृक्ष है,
जिसमें कोमल-कोमल कोपलें लगी हैं ।
उसपर दो आदमी बैठे हुए हैं ।
और 'बलराम बलराम' की आवाज में
कृष्ण (बाँसुरी) बजा रहे हैं ।

एक ओर बाँसुरी बजा रहे हैं
और दूसरी ओर फूल गूँथ रहे हैं। (उसे सुनकर)
कोई अपने सिर पर कोंपल खोंस रही है।
और कृष्ण 'बलराम बलराम' की आवाज में
बाँसुरी बजा रहे हैं।
कृष्ण नीला वस्त्र पहने हैं,
और गाय-बैल चरा रहे हैं।
चरनेवाली गायें किनारे-किनारे चर रही हैं।
और वे 'बलराम बलराम' की आवाज में
बाँसुरी बजा रहे हैं।

१६८

दोला बु बाई सोंगी को
बीर तेबु सेनोगा बाबु गुतुया
धोनी प्रभु बातेबु तोपाइया बाबू गुतुया

नाकिदेन पे सुपीदेन पे
पड़ियाते किचिरेन पे, बाबु गतुया
धोनी प्रभु बातेबु तोपाइया बाबू गुतुया

हे सखियो, जंगल चलें।
जंगल चलो और फूल गूथें।
प्रभु को फूल से ढँक देंगे।
चलो, फूल गूँथने चलें।
कंघी लगाकर बाल सँवार लो।
साड़ी-वस्त्र पहन लो।
प्रभु को फूल से ढँक देंगे
चलो, फूल गूँथने चलें।

१६९

राधा मुनि काजि तना
प्रभु काजि तेबु हिड़ी जना
ओधोन गतिङ ओधोन संगाइङ
निमिन साज सोबेन ओकारोन

तला निदा होबा लेना
सीम रनः को बकड़ा ताम
ओघोन गतिङ ओघोन संगाइङ
बा उरु को होनोर बियुर तनाना

सोबेन बीर होबा जना
सिंगी तुरोः लेका अला जना
ओघोन गतिङ ओघोन संगाइङ
बा कन बा गोसो चबा जाना

चि मेन्ते चिका जना
हिजुः गाचि का-ए हिजुः गा
आगो दुति आगो दुति
बुदु बाबू दुरंग बाई तना

राधा मुन्नी कह रही है
कि प्रभु की बातों से हमलोग ठगा गईं।
हे सखियो और हे सहेलियो !
हमारा इतना साज-शृंगार अकारथ (व्यर्थ) चला गया।
आधी रात हो गई।
फिर मुर्गी भी बोलने लगी।
हे साथियो और हे सहेलियो !
भँवरा भी फूलों पर घूमने लगा।
सारे जंगल में फूल खिल गये।
वे उगते हुए सूरज के समान प्रकाशित हो गये।
हे सखियो और हे सहेलियो !
खिला हुआ फूल मुरझा गया !
(कृष्ण के लिए गूंथे हुए या शृंगार में खोसे हुए फूल मुरझा गये)
क्या से क्या हो गया ?
वह आयगा या नहीं आयगा ?
हे सखी ! बुदू बाबू गीत बना रहे हैं।

२००

ओकोसाःरे छैला मैला
ओको रेगे होए दुबे जना

दुबे दुबे रुतुए ओरोङ तना
रुतुए ओरोङ्या राधा राधा कतु भाई राधा राधा कतु

मांडी उतु बागे तमे
ने घाड़ी दोलङ सेनोगा
कुड़ाम बितर इम रे गेदे तान धोनी भलारे हियातिङ
राधा नुतुम रुतुई ओरोङ्या, धोनी भलारे हियातिङ

चिलका रूतु साड़ी तान
एनका जीरे रुतु गुतु तना
हियातिङ ते जीरे रूडुङ तनारे भाई भलारे हियातिङ
राधा नुतुम रूतुई ओरोङ्या धोनी भलारे हियातिङ

वह छोकरा कहाँ का है ?
(वह) कहाँ पर बैठा है ?
वह बैठे-बैठे बाँसुरी बजा रहा है
और बाँसुरी में राधा-राधा की पुकार मचा रहा है।

खाना बनाना छोड़ दो। इस समय चलो, हम चलें।
छाती के भीतर हृदय फट रहा है।
हमें आश्चर्य्य हो रहा है कि
राधा ! राधा ! करके बाँसुरी के स्वर में कौन बुला रहा है !

जैसे-जैसे बाँसुरी बज रही है,
वैसे ही मेरे हृदय में बाँसुरी (की आवाज) गड़ती जा रही है।
मुझे आश्चर्य्य है कि मेरे हृदय में चोट लग रही है।
मुझे आश्चर्य्य है कि बाँसुरी में (कोई)
राधा ! राधा ! करके पुकार रहा है।

२०१

सेन जनाइङ मथुरा ते
हिजु: तानरे आनन्दिते
रासिका नागोर होराते
बा किङा-ए हो प्रभु गतिङ
बा किङा-ए बा कन मालाते

हेडेम हेड़ेम जगरते
हिड़ी किङा-ए काजीते
रासिका नागोर होरा रे
चुमा किङा-ए हो प्रभु गतिङ
चुमा किङा-ए बाते जोवा रे

हिड़ी किङा-ए सोंगी मेन्ते
दुबे किङा-ए लेंगाती पन्तीरे
चोओ किङा-ए हो गतिङ मेन्ते
प्रभु गतिङ चोओ किङा-ए
मोचाते जोवा रे

मैं मथुरा गई थी।
(वहाँ से) आते समय हमको बहुत आनन्द मिला।
रास्ते में कृष्ण (मिले)
प्यारे प्रभु ने मुझे फूल पहना दिया।
मुझे खिले हुए फूलों की माला पहना दी।
(उन्होंने) मीठी-मीठी बातों से बहलाया।
रास्ते में प्रभु (मिले)।
प्यारे कृष्ण ने हमारे फूल जैसे गालों
का चुम्बन किया।
(प्रभु ने) संगी कहकर मुझे लुभाया
और अपनी बाईं ओर (बैठाया)
प्रिया समझ कर (उन्होंने) मुँह चूमा।
प्रभु ने (अपने) मुख से हमारे गाल का चुम्बन किया।

२०२

सेन जनाइङ बुदाबिर ते
उरिः गाई को गुपी मेन्ते
कोदोम दारु बंका दड़ा रे
रुतुइङ ओरोङ दुब केयाते
कोदोम दारु बंका दड़ारे, रुतुइङ ओरोड़ ओरोड़
दुब केयाते
सुगड़ा सुगड़ा मरेल कुड़ी को

डाड़ी दाःते हिजुः आ को
अइङाअ दुरङ रुतु आयुमते
एन घाड़ी घाड़ी हिजुःआको गड़ाते
कोदोम दारु बंका दड़ारे, रुतुइङ ओरोङ ओरोङ
दुब केयाते

पड़िया पाचोलो किचिरी
जेतय आंगी जेतय ससंङ साड़ी
एन लेका हो पैला कना को
एन घाड़ी घाड़ी हिजुःआको गड़ाते
कोदोम दारु बंका दड़ारे, रुतुइङ ओरोङ ओरोङ
दुब केयाते

प्रीत कजी कुली मेन्ते
दो दो सुफोल दोया हानते
बुदु बाबू नेचा जगारे
बड़ाय बूड़ूई नुपुड़ी कुड़ी हातुरे
कोदोम दारू बंका दंड़ारे, रुतुइङ ओरोङ दुब केयाते

मैं वृन्दावन गाय-बैल चराने जाता हूँ,
और कदम्ब वृक्ष की टेढ़ी डाल पर बैठ कर
बाँसुरी बजाया करता हूँ।
वहाँ सुन्दर-सुन्दर सलोनी स्त्रियाँ
डाड़ी के पानी के लिए आती हैं।
वे मेरी बाँसुरी और गीत सुनने के लिए
बार-बार नदी की ओर आती हैं।
मैं कदम्ब वृक्ष की टेढ़ी डाल पर बैठ कर
बाँसुरी बजाया करता हूँ।
कोई पड़िया साड़ी कोई अंगी
और कोई नीली साड़ी पहने हुए हैं।
इस प्रकार आँचल फहराते
वे बार-बार नदी में आती हैं।
मैं कदम्ब वृक्ष की टेढ़ी डाल पर बैठकर
बाँसुरी बजाया करता हूँ।
हे सुकल ! प्रेम की बात पूछने के लिए

उस ओर चलो ।
बुदू बाबू कहते हैं कि गाँव की छोटी
नटखट लड़की गाँव में हैं ।
मैं कदम्ब वृक्ष की टेढ़ी डाल पर बैठे-बैठे
बाँसुरी बजाता रहता हूँ ।

२०३

नोको कोरे छैला मैला
नोको कोरे हो दुबा कना
नोलिता दः आगु सेनाः भाई
राधा राधा रूतुई ओरोङ तना ॥१॥
बागे तम उतु मांडी
सेनोः कोवअलङ ने घाड़ी
कुड़म बितर जीरे रूङुन तना भाई
राधा राधा रूतुई ओरोङ तना ॥२॥
जीरे रूतु गुतु जना
मुटु दंगा लेका जुलोः तना
निदा सिंगी इमरे गेदे तनारे भाई
राधा राधा रूतुई ओरोङ तना ॥३॥
जी दोना ऐला मैला
इलो बुला लङ बुलाकना
बुदु बाबु नेयागे दुरङ तना भाई
राधा राधा नुतुम रूतुई ओराङे तना भाई
राधा राधा रूतुई ओरोङ तना ॥४॥

(राधा ललिता से कह रही है)
वह छोकरा (न जाने) कहाँ है ?
वह कहाँ बैठा हुआ है ?
हे ललिता ! हम पानी लाने चलें ।
वह 'राधा राधा' करके
बाँसुरी बजा रहा है ।
खाना पकाने का काम छोड़ दो,
हम दोनों इसी समय चलेंगी ।

छाती के भीतर हृदय तड़प रहा है।
वह 'राधा राधा' करके बाँसुरी बजा रहा है।
हृदय को बाँसुरी की आवाज छेद रही है।
हृदय भीषण आग के समान जल रहा है।
रात-दिन हृदय फट रहा है।
वह 'राधा राधा' करके बाँसुरी बजा रहा है।
जी व्याकुल हो रहा है।
हम 'हड़ियाँ' पिये हुए के समान पागल हो रही हैं।
बुदू बाबू यही गा रहा है कि
वह 'राधा राधा' करके बाँसुरी बजा रहा है।

२०४

हेन्दे हेन्दे दुतियाना
उरि: गाई कोए गुपी तना
आ हो बिर् बितर गोलोरे दुबा कना भाई
रुतु तेदो आमगे नुतुम तना

इच: बाते बाकना।
समाड़ोम ते माला कना
आहो सेर मेड़ेद लेका होड़मो जुले तना भाई
रुतु तेदो आमगे नुतुम तना

फरका तेहोइङ लेल केना
एनाते राधा हिया कना
आहो पुरा चण्डु बिररे तुरा: कना भाई
रुतु तेदो आमगे नुतुम तना

बदु बाबु काजि तना
नेकान होड़ो काइङ लेलान
आहो सिङ बोंगाचि बोंदाय दुबा कना
रुतु तेदो आमगे नुतुम तना

वह नीली-पीली धोती पहने है।
वह गाय बैल चरा रहा है।

वह जंगल में गड्ढे के किनारे बैठा है
और बाँसुरी में तो तुम्हारा ही नाम ले रहा है।
इचा-फूल पहने है
और सोने की माला धारण किये है।
उसका शरीर पिघले हुए लोहे के समान चमक रहा है।
वह बाँसुरी में तुम्हारा ही नाम पुकार रहा है।
हे राधा, मैंने दूर से ही देखा था।
इसी से (कहती हूँ) कि वह आया हुआ है।
वह बाँसुरी में तुम्हारा ही नाम पुकार रहा है।
बुदू बाबू कहते हैं कि
मैंने ऐसा आदमी कभी नहीं देखा,
या कोई देवता बैठा हुआ है,
या स्वयं भगवान ही बैठा हुआ है।
वह बाँसुरी में तुम्हारा ही नाम लेकर
पुकार रहा है।

२०५

गड़ा जपाः रे प्रभु दुबा कना
दो बोदे दो,
आए लोः कषाजी हो सनाः
दो बोदे दो।

कोदोम सुबारे रुतुई ओरोङ तना
दो बोदे दो
रुतु आमग नुतुम तना
दो बोदे दो।

जो तइङ दो बलाय गिड़ी तना
दो बोदे दो।
आए लोः जी हो जेरेदा कना
दो बोदे दो।

बुदु बाबु देयारे उदुर तना
दो बोदे दो
दोना दोना दोना
दो बोदे दो।

नदी के किनारे प्रभु (कृष्ण) बैठे हैं,
चलो चलें।
चलकर उनसे बात करने की इच्छा होती है,
चलो चलें।
वे कदम्ब वृक्ष के नीचे बाँसुरी बजा रहे हैं,
चलो चलें।
बाँसुरी में तुम्हारा ही नाम ले रहे हैं,
चलो चलें।
मेरा दिल व्याकुल हो रहा है,
चलो चलें।
बुदू बाबू कहते हैं कि (वह) धकेल कर कह रही है,
(कि) चलो चलें।
चलो, जल्दी चलो,
चलो चलें।

२०६

गाड़ा गितिल कोदोंम सुबा
हेन्दे आँगी दुति याना
ओहोरे जुही चमेली गुतुतना
ओकोरे तइङ प्रभु दुबा कना

हेन्दे हेन्दे दुतियाना
उरि: गाई कोए गुपीतना
ओहोरे जुही चमेली गुतुतना
ओकोरे तइङ प्रभु दुबा कना

बुदु बाबु काजि तना
एना काजी सुकु जना
ओहोरे जुही चमेली गुतुतना
ओकोरे तइङ प्रभु दुबा कना

नदी की रेत में कदम्ब के नीचे
काली आँगी और धोती पहने हुए हैं
और जुही चमेली गूँथ रहे हैं।
हमारे कृष्ण कहाँ बैठे हुए हैं?

नीली-नीली धोती पहने हुए हैं
और गाय-बैल चरा रहे हैं।
वे जूही-चमेली गूँथ रहे है।
हमारे प्रभु कहाँ बैठे हैं ?
बुदू बाबू कहते हैं कि
इसी बात से खुशी होती है।
आह ! वे जूही-चमेली गूँथ रहे हैं।
हमारे प्रभु कहाँ बैठे हैं ?

२०७

कलीयुगे जोनोम लेना
जेतन ज्ञान वानो: तइअ:
आपे सोबेन हुडिग मरङ
प्रेमा कुल कटा रे जोहार तना
अइङ दो सोबेन होड़ो सभारे, जोहर तना ॥१॥
संसारे सोबेन मरङ
अइङ इशु हुडिङ दरङ
खेने मोती इशु नेया
अपान मोने बिचारे जोहार तना
अइङ दो होड़ो सभारे जोहार तना ॥२॥
नेया काजी ओड़ा जना
यदि जेतन दोषी मेना:
बाई तपे सोबेन कोते
काजी केदाइङ सिदारे, जोहारतना
अइङ दो सोबेन होड़ो सभा रे जोहार तना ॥३॥
गियु: सोरोम बानो: तइअ:
जाति कुल सेनो: जना
किष्टो प्रेमो ओड़ो: कइङ बागेयारे जोहार तना
अइङ दो सोबेन होड़ो सभा रे, जोहार तना ॥४॥

मैंने कलियुग में जन्म लिया है।
मुझको कुछ भी ज्ञान नहीं है।

आप सब छोटे-बड़ों के बीच
मैं प्रेम-विह्वल होकर प्रणाम कर रहा हूँ।
इस संसार में सब लोग बड़े हैं।
लेकिन मैं बहुत छोटा हूँ।
मैं बार-बार इस बात को
अपने मन में सोचा करता हूँ।
मैं सब लोगों को सभा में प्रणाम कर रहा हूँ
यह बात तो बिगड़ गई
यदि मुझमें कोई दोष है
तो सब मिलकर बता दो।
मैंने पहले ही कहा था, मैं प्रणाम करता हूँ।
सब लोगों को सभा के बीच प्रणाम करता हूँ
इसमें लाज-शर्म नहीं है।
मेरी जाति-कुल नष्ट हो गये।
कृष्ण का प्रेम मैं कभी नहीं छोड़ सकता।
मैं लोगों की सभा में प्रणाम करता हूँ।

२०८

बिर बितर कुदा उम्बुल
सुड़ा कना उगुल दुगुल
एन रेकिङ दुबा कना
सुदामे बसुदाम किङ
बचा बोलोराम बोलोराम
रतु किङ ओरोङ गोनोङ तान

जेतय जेतय बा को गुतू
जेतय जेतय डाली को गलङ
बा को बो: रे ओड़ो:
सुगड़ा मिरु मोचारे
बचा बोलो राम बोलो राम
रतु किङ ओरोङ बोरोङ तान

होरा होरा किङ सेन जदा
अइङ दो सफोल लेल जदा

आउ तईया अइङ गेकिङ लेलतना
नि दोरे ओको नोड़ा विरिनी
कि बचा बोलो राम बोलो राम
रुतु किङ ओरोङ गोनोङ तान

जंगल में जामुन के हरे-हरे वृक्षों में
कोंपलें लगी हुई हैं।
उसके नीचे ये दोनों बैठे हैं।
हे बलराम ! वे दोनों बाँसुरी बजा रहे हैं।

कोई फूल गूँथ रहा है,
कोई फूल का हार बना रहा है।
उन्होंने सिर पर फूल पहने हैं
और उनका मुँह मीरू के समान सुन्दर है।
हे बलराम ! वे दोनों बाँसुरी बजा रहे हैं।

वे रास्ते-रास्ते जा रहे हैं।
मुझे देख रहे हैं।
मुझे आश्चर्य्य है कि वे मुझे देख रहे हैं।
हे सखी ! वे किस घर के हैं ?
हे बलराम ! वे बाँसुरी बजा रहे हैं।

२०६

दः अगुइङ सेन केना
जमुना गड़ाते ओरे भाई
कोदोम सुबा ओकोए दुबाकानरे

चिलका गड़ा दः हेंन्दे मेनः
एनका होड़मो हेन्दे मेना ओरेभाई
कोदोम दारू बंका-ए लेलानारे

बुदु बाबु काजी तना
राधा किष्टोए दुबा कना, ओरे भाई
राधा राधा रुतुई ओरोङ तना रे

मैं जमुना नदी में पानी लाने गई थी।
कदम्ब के नीचे कौन बैठा हुआ है?
जिस तरह नदी का पानी काला है,
उसी तरह उसका शरीर भी काला है।
कदम्ब की टेढ़ी डाल को देख रहा है।
बुदू बाबू कहते हैं कि हे भाई!
राधा-कृष्ण बैठे हुए हैं।
वे 'राधे-राधे' के स्वर में बाँसुरी बजा रहे हैं।

२१०

गड़ा को जोबेला
गड़ा गितिलकोदोम सुबा
कोदोम सुबा ओकोय दुबा कना
जुही चमेलो गुतु तना

× × × × ×

बुदु बाबु-ई काजी तना
होपोर जपा: अलोम सेना
सेनो: जनरे हिजुओ का मोने
निदा सिंगी बागेए गुतु तना।

नदी के दलदल के किनारे,
नदी की बालू में कदम्ब के नीचे,
कदम्ब के नीचे कौन बैठा हुआ है
(जो) जुही-चमेली गूँथ रहा है?

× × × × ×

बुदू बाबू कहते हैं कि
उसके निकट मत जाओ।
जाने से फिर लौटने की इच्छा नहीं होती है।
वह रात-दिन फूल ही गूँथता रहता है।

२११

अना सुगी को दोलाबु समोड़ेना, बाबु गलङा
तिसिङ गतिङ दोरे हिजुआ बाबु गलङा

अना सुगी को दोलाबु रेयाड़ाना, बाबु गलङा
बालम बा तेबु तोपाइया बाबु गलङा
ऊना सोंगी को सोबेन तेबु तलइया बाबु गलङा
याची तेबु जिरियो टपाइया बाबु गलङा
अना सींगो को ओड़ो: काबु बागेया बाबु गलङा
बुदु बाबु लोओ किङ हिजुआ बाबु गलङा

हे सुन्दरियो, चलो तैयार हो जाओ ! हम फूल गूँथें।
आज प्रिय आयेंगे, हम लोग फूल गूँथें।
हे संगिनियो ! नहाने चलो, हम लोग फूल गूँथें।
हम लोग बालम को फूल से ढक देंगे। चलो फूल गूँथें।
हे सहेलियो, सब उन्हें घेर लेंगी, हम लोग फूल गूँथें।
आँचल से उसको हवा करेंगी, हम लोग फूल गूँथें।
हे सहेलियो, फिर (उनको) नहीं छोड़ेंगी,
चलो हम फूल गूँथें।
वे बुदू बाबू के साथ आवेंगे, चलो फूल गूँथें।

२१२

सोवेन गुपिन को दुबलेना
बड़य बुड़ूई रअ: किङा
नेरे सुफोल रूतु आद जना
जोतो गूपिन कोलाइङ दुबकेना
बाई, नेरे सुफोल रूतु आदजना।

सोबेन गूपिन को केसेद केना
तला रे होइङ सुसुन केना
नेरे सुफोल रूतु आद् जनां
रासिकाते का होइङ ठोराना
वाई, नेरे सुफोल रूतु आद्जना।

फुड़ी को तलारे अदा कना
नामोगा चि का हो नामोगा
नेरे सुफोल रूतु आद् जना

हियातिङते काहोइङ जोमतना
बाई, नेरे सुफोल रूतु आद जना।
बूदु बाबु कभजी तना
बड़य बाबुई इतुवाना
नेरे सुफोल रूतुआद् जना
निदा सिंगी जीरे रूड़ङ तना
बाई, नेरे सुफोल रूतु आद् जना

सभी गोपियाँ बैठी हुई थीं
(यहाँ) नटखट लड़की ने हमको बुला लिया।
हे सुफल ! यहीं पर (मेरी) बाँसुरी खो गई।
सभी गोपियों के साथ मैं बैठा था,
हे भाई सुफल, यहीं मेरी बाँसुरी खो गई।
सभी गोपियाँ घेरे हुई थीं
और बीच में मैं नृत्य कर रहा था।
हे सुफल ! मेरी बाँसुरी यहीं पर खो गई।
खुशी के मारे (इतना विह्वल था) कि
मैं नहीं जान सका।
हे भाई सुफल ! मेरी बाँसुरी यहाँ खो गई।
स्त्रियों के बीच खो गई।
(पता नहीं, मिलेगी या नहीं ?)
हे सुफल ! यहीं बाँसुरी खो गई।
चिन्ता के मारे मुझे खाना (पीना) अच्छा नहीं लगता
हे भाई ! यहाँ बाँसुरी खो गई।
बुदू बाबू कहते हैं कि वह
नटखट लड़की जानती है।
बाँसुरी यहीं पर खो गई,
(जिससे) रात-दिन हृदय में शोच लगा रहता है।
हे भाई सुफल ! यहीं बाँसुरी खो गई है।

२१३

द: आगुइङ सेन केना
जमूना गड़ा ते,
दुति भाई किना शोभा (शोभा)
दुबा कना होरा रे

साय साय ते लेल किङ
माड़ी तेगे लंदा केदा
दुनि भाई वा तेगे
बूदु बाबु-ई काजी तना
एना काजी सुकु जना
दुति भाई एना काजी
ताई जना सोबेन दिन रे

मैं पानी लाने जमुना नदी गई थी।
हे सखी! चलो देखें वह
रास्ते में बैठा हुआ है।
उसने तिरछी नजरों से देखा
और धीरे से मुसकरा दिया।
हे सखी! उसने मेरी छाती में
फूल मारा।
बुदु बाबू कहते हैं कि
उस बात से बड़ा आनन्द मिला।
हे सखी! यह बात
सदा के लिए रह गई।

२१४

ओको तीया ञोजो बाला
सुगड़ा सुन्दोर काला
इदि केदाए सोबेन निला खेला
ओ भाई दोति सेनेयाबु दोला
नकि:देनपे सुपीदेनपे,
पडियाते किचिरेन पे
इदि केदाए सोबेन निला खेला
ओ भाई दोति सेनेयाबु दोला

अइङ दो भाई चिका जना
निदा सिगी नुबा जाना
तिः इदिं पे भाई दोति दोला
ओ भाई दोति सेनेयाबु दोला

हे व्रजबालाओ, सखियो,
सुन्दर साँवले कृष्ण कहाँ चले गये ?
वे हमारी सारी आनन्द-क्रीड़ा लेते गये ।
चलो, अब हमलोग (वापस) चलें ।
बाल सँवार लो, खोंपा बाँध लो ।
(अपना) कपड़ा वस्त्र सब पहन लो ।
(वे) हमारी सारी आनन्द-क्रीड़ा लेते गये ।
चलो, अब हमलोग (लौट) चलें ।
हे सखी ! मुझे तो क्या हो गया ?
(मेरे लिए) रात-दिन अँधेरा जान पड़ता है
हे सखी ! मुझे हाथ पकड़कर ले चलो ।
चलो अब हमलोग (लौट) चलें !

२१५

ओको साते होयो लेदा
चिकन काजी हिजुः लेना
कुड़ाम बितर जीगे लिपिर केना
अइअः जी दोरे कोरे ताइन तना

हाय बिधिम चिका किङा
ने दिशुम रिडिङ केदा
सोबेन सुकु प्रभु-ई इदि केदा
अइजः जी दोरे कोरे ताइन तना

आगो विधिम चिका किङा
ने समय रेम दुःकु किङा
गड़ा गितिल इकिर ओकोरे मेनाः
डोबे रेयो होइड़ डोबे गोएना

किधर से हवा आई
और कौन-सी बात आई
कि छाती के भीतर मेरा हृदय काँप उठा।
मेरा हृदय कहाँ टिका हुआ है ?
प्रभु सारा सुख लेते गये।
(और) इस देश को भूल गये।
हे विधाता ! तुमने यह क्या किया ?
(उनके बिना) मेरा प्राण कहाँ टिका हुआ है ?
हाय विधाता ! तुमने यह क्या किया ?
इस समय तुमने (हमको) दुख दिया !
नदी के किनारे गहराई कहाँ है
जहाँ मैं डूबकर मर जाऊँ ?

२१६

नोलिता वृन्दा दोती
सेनोपेना कुड़ी को मथुराते
चिको मेन्ते, प्रभु का-एहिजु: नेते चिको मेन्ते।

बिर होंराइड़ सेना जाना
चेंड़ रन: को रागे तना, प्रभु हिया तिङते
चिको मेन्ते, प्रभु का-ए हिजु: नेते चिको मेन्ते।

ने हातु हपानुम को
रानु तेको बुला कना एना मेन्ते
प्रभु काए हिजु: नेते एना मेन्ते।

हे ललिता ! वृन्दावन की सभी स्त्रियाँ
मिलकर मथुरा चलो !
न जाने क्यों प्रभु नहीं आ रहे हैं ?
जब मैं जंगल के रास्ते जा रही थी,
(तब देखा कि) प्रभु के सोच में जंगल के सभी
पक्षी शोक मना रहे हैं।
पता नहीं, प्रभु क्यों नहीं आ रहे है ?
इस गाँव की स्त्रियाँ मानों
कोई दवा पीकर मतवाली-जैसी हो गई हैं।
(क्यों कि) प्रभु इधर नहीं आ रहे हैं।

२१७

तिसिङ निदा इङ कुमु केना
प्रभु गतिङ हिया-कना
नोलितारे नोलिता रे
सामो नीला नोला केना सोजोनीरे

ससङ दुति-ई दुति तदा
समाड़ोम ते-ए माला कना
नोलितारे नोलिता रे
सामो नीला नील केना सोजोनीरे

अंका बंका-ए तिंगुआ कना
तीरे रुतुई सबाना
नोलितारे नोलिता रे
राधा राधा रुतुई ओरोङ तानरे

(राधा ललिता से कह रही है)
हे सजनी, आज रात में मैंने सपना देखा
कि प्यारे कृष्ण आये हुए हैं
(और) हे ललिता, वे लीला रचाये हैं।
पीले रंग का वस्त्र पहिने हैं।
सोने की माला धारण किये हैं।
हे ललिता ! वे लीला रचाये हुए हैं।
वे बाँकी अदा में खड़े हैं।
हाथ में बाँसुरी लिये हुए हैं।
हे ललिता ! 'राधा-राधा' की ध्वनि में
बाँसुरी बजा रहे हैं।

२१८

अंकुरे उकु कियः प्रभु शिरोमणि ओकोय नतिन
ब्रोजो गोपिन आबु तइना, सोबेन दोलाबुना
दुति गड़ा रेबु आतु गोजेना, सोबेन दोलाबुना

ने दिशुम तलारे-अथा जिना-चिह्ना
नोलिता चोम्पोक लता, आगो वृन्दा
बुरु जोला रेबु साञ्जु गोजेना, सोबेन दोलाबुना

जाति पाति, सुकु-दुकु, सोबेन उकु जना
कुल रे कलंको जना एना गे ताइन जना
दुति होटोः रेबु हाका गोजे ना, सोबेन दोलाबुना

बुदु बाबु काजी तना; सिंगी नुबा जना
दोला दोलाबुना, दोलाबु सेनोगा
प्रभु कटा तोला रे जीगु हादेना सोबेन दोलाबुना

प्रभु शिरोमणि को किसने अपने अंक में छिपा लिया ?
हम व्रज की गोपियाँ किसके लिए जीवित रहेंगी ?
चलो सब चलें।
हमलोग नदी में डूब मरेंगी, चलो सब चलें।
इस दुनिया में जीवित रहना और जान-पहचान
करना व्यर्थ है।
हे चम्पकलता (के समान रूपवती) ललिता ! चलो,
वृन्दा के पहाड़ की किसी कन्दरा में गिरकर हम
मर जायेंगी। चलो सब चलें।
जाति-पाँति-सुख सब कुछ मिट गया।
कुल में कलंक लग गया। केवल कलंक ही रह गया।
हे सखी, गले में फाँसी लगाकर मर जायेंगी।
चलो, सब चलें।
बुदू बाबू कहते हैं कि अब शाम हो गई।
चलो, जल्दी चलें !
कृष्ण के चरणों में प्राण दे देंगी।
चलो, सब जल्दी चलें।

२१६

कुब्जी रानी उकु किया
ने जोनोम रे दुकु किङा
हेन नागोरे हेड़ेम जीरे रूड़ुङ तान
हियातिङ ते जलातिङ तान

हाय विधिम चिका किङा
ने सोमोय दुकु किङा
निदा सिंगी आगो दुति नुबा लेलो तान
हियातिङ ते जलातिङ तान

नेका मेन्ते काइङ ठो-राना
इङ दो होनङ आए लो: सेनो:हो
सोबेन सुकु बुरु लेका हानरे दुलाकान
हियातिङ ते जलातिङ तान

बुदु बाबु काजी तना
नेया काजी ताई जना
ने धाड़ी कुब्जी रानी आए गे सुगड़ा जान
हियातिङ ते जलातिङ तान

कृष्ण को कुब्जा रानी ने छिपा लिया
(हमको) इस जन्म में दुख दे दिया।
वही मधुरता के सागर (की याद) हृदय को कूट रहे हैं।
दिल दु:ख से उड़ता रहता है।
विधाता ! तुमने क्या किया कि इस समय दु:ख दे दिया।
हे सखी ! रात-दिन अँधेरा दिखाई देता है।
हृदय चिन्ता से उड़ता फिरता है।
ऐसा है (होनेवाला है), मैं नहीं जानती थी।
मुझे उन्हीं के साथ जाने की इच्छा होती है।
सारा सुख पर्वत के समान वहीं पर जमा है।
(उन्हीं के निकट सारा सुख है)
(उनके विना) मन चिन्ता से उड़ रहा है।
बुदू बाबू कहते हैं कि यह बात रह गई। (सदा के लिए)
इस समय तो कुब्जा रानी ही (सबसे अधिक) सुन्दरी है।
(उनके विना) हृदय चिन्ता से जल रहा है।

२२०

हातु जहर कोड़ा कुड़ी
इयम तना को राजा रानी
तङय कटा बोंगा मेन्ते
आको हो बलाय तना
सेनाम चिकाम सेना
आहो गोम्के सेनाम चिकाम सेना

निदा सिंगी सराधामुएिा
आम नतिन बियुर तानी हो
आयः गः काजी कुली मेन्ते
अलिङ हो हिया कना

जे दिन ते हिया कना
एना दिन ते कायेः लेलाना
जीदा कना चिकाम सेना
सेनाम चिकाम सेना
आहो गोम्के सेनाम चिकाम सेना हो

बुदु बाबु काजी तना
चिना आबेन चिम्ताङ सेना
आनेर व्याकुल तना
सोबेन होरारा लेल तना
आहो गोम्के सेनाम चिकाम सेना हो

[कृष्ण को बुलाने कोई मथुरा गया है, वही कृष्ण से कह रहा है]
गाँव और देश के सभी स्त्री-पुरुष
और राजा-रानी (दुख से) रो रहे हैं।
तुम्हारी पूजा के लिए व्याकुल हो रहे हैं।
हे स्वामी! तुम चलोगे या नहीं चलोगे?
राधा रानी, तुम्हारे लिए रात-दिन
चक्कर काटा करती हैं।
उन्हीं की बात कहने के लिए मैं आया हूँ।

तुम जाओगे या नहीं जाओगे ?
जिस दिन से तुम आये
वह कहीं नहीं दिखाई पड़ी।
मुझे चिन्ता है कि वह जीवित है या नहीं ?
हे स्वामी ! तुम चलोगे या नहीं चलोगे ?
बुदु बाबू कहते हैं कि
तुम दोनों कब चलोगे ?
वहाँ व्याकुल हो रहे हैं ?
और सब लोग राह देख रहे हैं।
हे प्रभो, तुम चलोगे या नहीं चलोगे ?

२२१

कुइली कुहु तान
बोछोर मुराडी जान
तौ का-ए लेलो अः
मोडे तुरी मा नेन्डा तुकादा
हायरे गातिङ ओको तिया हो

मुरुद बाबाजाना
मदुकम सुड़ा जान
आगो वृन्द ओकोय नतिन
बा लङ गालाङा
हायरे गातिङ ओको तिया हो

आहो होरा लेल लेलते
हियातिङ ते जोम का जोमोना
हिजुअः चि ताइङ
काए रे हिजुःगा
हायरे गतिङ ओकोतिया

सोबेन गोपिन लोओ
बुदु दोला बु नामिया
निदा सिंगी ताबु
एनाबु कामिया
हायरे गतिङा ओकोतिया हो

कोयल कूक रही है।
वर्ष भर बीत गया,
तो भी दिखाई नहीं देता।
पाँच-छः दिन का वादा कर गया था।
हाय! हमारा साथी कहाँ चला गया?
पलाश के फूल फूलने लगे।
महुए में कोपलें निकलने लगीं,
हम किस के लिए फूल गूँथेंगे?
हाय! हमारा संगी कहाँ चला गया?
हाय! राह देखते-देखते
और सोच के मारे खाना भी नहीं पचता।
(पता नहीं) वह आयेगा या नहीं आयेगा?
हाय हमारा प्रेमी कहाँ चला गया?
चलो, सभी गोपियाँ मिलकर खोजेंगी।
हम रात-दिन यही काम करेंगी।
हाय! हमारा प्रिय कहाँ चला गया?

२२२

१

पयार—आगो आगोआगो दुति
ओकोतिया: ब्रोजो पोति
मागे मागे ते बोछर मुराड़ी जाना
ओड़ो, गतिङ काए हिजु:गा
अइड़: दोइड़: ठोर किया
ओको रेहो लेठा गिड़ी जान

रंग—हाय गतिङ ओकोतियः
हिजुः वाए चिका-ए हिजुःगा
होरा लेल-लेल हियातिङ ते
मेन्दाः जोरो तान अरिल लेका
जी आ-ए नतिन दो
लेमा गिड़ी तान

२

पयार—अइङ दो होइङ गितिई केना
माड़ी माड़ी ते विरिद जना
कुम्बु डू लेका कुडुङ गिड़ी जना
इशु खोन रेइङ ठोर किया
हाय गतिङ ओको तिया
एन निर गे निर गिड़ी जान

रंग—अबेन दोबेन लेलाना
ओको मुली उडुङ जना
दोला दोला दोलाबु दोला नामिया
गतिङ हियातिङ ते
आए नतिन जीगे उडुङ तान
गतिङ हियातिङ

३

पयार—मथुरा रे राजा जना
राधा कोलोंकिनी जना
नेया काजी बेद रे ओला कान
कुब्जी कुड़ी मुली किया
दिशुम रेयअः रानी तइयाः
आम लोते प्रोतितुद् गिड़ी जाना

रंग—बुदु बाबु काजी तना
मथुरा रे राजा जना
कुब्जी कुड़ी सुगड़ा जना
भाई आइङ दोइङ इतुबाना
आबेन आलबेन सेना एन गतिङ
आ-ए लोः लोला ताना,
आ-ए लोते आलबेन सेना

१

हे सखी ब्रजपति कहाँ चले गये ?
माघ से माघ तक वर्ष भर बीत गया, तो भी प्रिय नहीं आये।
मैं जान गई कि वे कहीं पर उलझ गये।
हाय, हाय, प्रिय कहाँ चले गये ? वे फिर आयेंगे या नहीं।
राह देखते-देखते और सोच करते-करते आँसू झर रहे हैं
और उनके लिए हृदय ओला के समान पिघल रहा है।

२

मैं सोई हुई थी कि चुपके से उठी,
और चोर के समान निकल पड़ी (लेकिन) बहुत देर में समझ पाई
हाय ! प्रिय कहाँ चले गये ? जो गये सो चले ही गये।
तुम दोनों ने तो देखा है वे किधर निकल गये ?
चलो-चलो, हम उनको खोजने के लिए चलें।
प्रिय की चिन्ता में (उनके लिए) जान निकल रही है।

३

वे मथुरा में राजा बन गये और राधा कलंकिनी बनी।
यह बात वेद में लिखी है कि कुब्जा ने उन्हें वश में कर लिया।
(कृष्ण ने) उसी को देश की रानी बना दिया और तुम्हारे साथ जो प्रीति थी, वह टूट गई।
बुदू बाबू कहते हैं, वे मथुरा के राजा हो गये।
हे भाई, मैं जान गया कि कुब्जा सुन्दरी बन गई।
इसलिए तुम लोग वहाँ मत जाओ।
वे उसी प्रियतमा के साथ लीला कर रहे हैं।
इसलिए तुम लोग वहाँ मत जाओ।

२२३

सेन जनाइङ मथुराते, हिया कनाइङ एनाते हो
आनरेअः जोतो नीला-खेला लेल केना, प्रभु दोरे गोम्के जना
कुब्जी कुड़ी रानी जना, ब्रजेर कन्हाई तावु राजा जना
आइङ दोइङ लेल केना

रुतु तान को रुतु तना, सुसन तान को सुसुन तना हो
दिशुम रेन जोतो होड़ो को हिया कना हो, बामडे मुनि दुबा कना
पुथी पाँजी लेल तना हो, देवान सिपाही को खड़ा कना
अइङ दोइङ लेल केना

रुतु माला बंका चुड़ा नेया को जोतो को बा कना हो
टुपी सोनोः ते सिंगार कना, पान्ती रेकिङ दुबा कना
बंका तेकिङ लेपेल तना, सालु सुगा लेका जुडियाना
अ ङ दोइङ लेल केना

आगी राधा विनोन्दिनी-काए हिजुःगा नीलमणि हो
ने दुःकु कुड़ाम वितर गुतु जना, वुदु बाबु काजी तना
मोलोङ तावु चटाअः जना-इयम नेकिङ हिया कना
अइङ दोइङ लेल केना

मैं मथुरा गया था (और) वहीं से आया हूँ।
वहाँ का जितना क्रीडा-कौतुक था, मैंने देख लिया।
प्रभु (कृष्ण) वहाँ के राजा (बने) और कुब्जा रानी बनी।
हमलोगों के व्रज के कन्हैया (वहाँ) राजा बन गये हैं।
मैं सब कुछ देख आया।
(वहाँ) बाजा बजानेवाले बाजा रहे हैं और नाचनेवाले नाच रहे हैं। देश में जितने भी आदमी हैं सब आये हैं। सब ब्राह्मण मुनि बैठे हैं और पोथी-पत्रा देख रहे हैं। दरवान और सिपाही खड़े हैं। मैं सब-कुछ देख आया।
(वे) बाँसुरी (लिये हैं) माला, तिरछा मुकुट, सब कुछ पहने हैं। टोपी और आंगा से शृंगार किये हैं। दोनों एक पांत में बैठे हैं।
वे कनखियों से (एक दूसरे को) देख रहे हैं। सालू सुगा के समान जोड़ी बन गये हैं। मैंने देख लिया।

हे राधा, वे नीलमणि कृष्ण फिर नहीं आयेंगे।
यह दुःख छाती को वेध रहा है। बुदू बाबू कहते हैं।
सखियाँ कहती हैं कि हमलोगों का भाग्य फूट गया।
वे (बुदू बाबू) रो-रोकर आये हैं।
हमने देख लिया।

२२४

इयम इयम काजी तना
सोबी श्रीमोति आगो दुति
पोचो जना सोंगोति, आगो दुति

दुकु सुकु छबा जाना
ताइन जना श्रीमोति, ओगो दुति
पोचो जना सोंगोति, आगो दुति

चिमेन्ते चिका जना
हाँडा जनाए भगवति, आगो दुति
बागो कियान्ए जी हिती, आगो दुति

बुदु बाबु काजी तनाए
नोलिता सोंगोति, आगो दुति
ओला कना ने रीति, आगो दुति

(मथुरा का राही)—
रो-रोकर कह रहा है कि
हे सती श्रीमती, हे सखी,
हे सखी, साथी हाथ से छूट गया।
सारा सुख-दुःख समाप्त हो गया।
केवल शरीर ही रह गया।
हे सखी, साथी हाथ से निकल गया।
क्या से क्या हो गया !
भगवती अप्रसन्न हो गईं।
हे साथी ! जो प्राण से चाहनेवाला था, उसने छोड़ दिया।
बुदू बाबू कहते हैं।
हे साथी ललिता !
हे साथी, इसी ढंग से (भाग्य में)
लिखा हुआ है।

२२५

नोलिता सुन्दरी दुति
राजा जनाए ब्रोजोपोति
आलोम काजिया
नेया काजी आयुमते जी हो ओटङ तान
काजी अलोम काजिया।

अइङ दो हो मोने लिङा
मोदे तेबेन हिजुःगा
काजी चबा गिड़ी जान
नेया काजी आयुमते जी हो ओटङ तान
काजी आलोम काजिया

बुदु बाबु काजी तना
नेया काजी सुकुवाना
काजी वेद् रे ओलाकान
नेया काजी आयुमते जी हो ओटङ तान
काजी आलोम काजिया

हे सुन्दरी सखी ललिता !
कृष्ण राजा हो गये।
(इस बात को) मत कहो।
इस बात को सुनते ही जी उड़ जाता है।
यह बात मत कहो।
मेरे मन में था कि
तुम दोनों एक साथ आओगे।
लेकिन बात खतम हो गई।
यह बात सुनकर प्राण उड़ रहा है।
यह बात मत कहो।
बुदू बाबू कहते हैं कि
यह बात अच्छी लगी। (!)
यह बात वेद में लिखी है।
यह बात सुनकर हृदय उड़ रहा है।
यह बात मत कहो।

२२६

इञा सुन्दर नोटोवोर
ओको-तिया
कालिया नागोर
दुति ओको तिया

इं दोहोइङ जीदः कना
जी हो उडुङ जान
ओको नतिन-गतिङ
दुति ओको तिया कालिया

दारु दड़ा रे हाका गोजोना
ने दिशुम तला रे
कारेइङ-ताइना
दुति ने दिशुम तलारे
कारेइङ तइङ

सुगड़ा सोमोय तइङ
बासी गिड़ी तना
बुदु बाबु ताबु
दुरङ बाई तान
बुदु बाबु ताबु दुरङ बाई तान

हमारा सुन्दर नटवर कहाँ गया ?
हे सखी, हमारा साँवला नटनागर कहाँ चला गया ?
मैं तो जीवित हूँ; लेकिन जान निकल गई।
हे सखी ! मैं किसके लिए जी रही हूँ ?
हे सखी ! वह साँवला-सलोना कहाँ चला गया ?
मैं किसी पेड़ की डाली पर फाँसी लगा लूँगी।
मैं इस दुनिया में नहीं रहूँगी।
हे सखी, मैं इस दुनिया में नहीं रहूँगी।
मेरी सुन्दर जवानी बासी हो गई।
बुदू बाबू गीत बना रहा है।
हे सखी ! बुदू बाबू गीत बना रहा है।

२२७

पृथ्वी रेलङ जोनोमा कान
बोंगा चण्डु: लेका होलङ तुरा: कान
जी तालङ जीद: कना
गोजो: बालङ मोचाते
अम: क्रिया काइङ बागेमेया धोनी रे काइङ
रड़ामेया

चेड़े लेका होलङ जुड़ियाना
बा लेका होलङ डालिया कना
अम: क्रिया काइङ बागेमेया
जीरे जीरे थोला कना मेंड़ेदते
अम: क्रिया काइङ बागेमेया धोनी रे काइङरड़ामेया

आम नतिन अइङ दो गतिङ
बैला लेकाइङ बुला कना
अम: क्रिया काइङ बागेमेया
नीला खेला इनुङालङ मोसाते
अम: क्रिया काइङ बागेमेया धोनी रे काइङ रड़ामेया

बुदु बाबु गेम के ताबु
हेना काजी हो सुकु जना
दोलङ राक्षा बृन्दा बिरते
नीला खेला इनुङाब मोसाते
अम: क्रिया काइङ बागेमेया धोनी रे काइङ रड़ामेया

इस पृथ्वी पर हम दोनों का जन्म हुआ।
हम चन्द्रमा के समान उगे हुए हैं।
हम (एक साथ) जी रहे हैं
और एक ही साथ मरेंगे।
तुम्हारी कसम, मैं तुमको नहीं छोड़ूँगा।
पक्षी के समान हम दोनों की जोड़ी हुई
और फूल के समान हम खिले।

तुम्हारी कसम मैं नहीं छोड़ूँगा।
(हम दोनों का) दिल लोहे से बँधा हुआ है।
तुम्हारी कसम मैं नहीं छोड़ूँगा।
हे प्रिये, मैं तो तुम्हारे लिए पागल बना।
तुम्हारी कसम मैं नहीं छोड़ूँगा।
हम सारा क्रीड़ा-कौतुक एक साथ करेंगे,
तुम्हारी कसम मैं नहीं छोड़ूँगा
बुदू बाबू कहते हैं कि यह बात अच्छी लगी।
हे राधे! बृन्दावन चलो।
हम एक साथ क्रीड़ा-कौतुक करेंगे।
तुम्हारी सौगन्ध मैं तुम्हें कभी नहीं छोड़ूँगा।

२२८

सोबेन गोपिन लाइने लाइनेन पे
दोही चाटु दुपिलान पे दोही चाटु हो
कुली लेरे काजी-याबु दोही मेन्ते।
सेनोवा बु मथुरा ते हो
कुली लेरे काजो याबु दोही मेन्ते।

सोलहो सिंगारेन पे
जेतय अंगी किचिरिन पे
कुली लेरे काजी याबु सोंगी मेन्ते
सेनोवा बु मथुरा ते हो
कुली लेरे काजी याबु दोही मेन्ते

दोला दोला दोला बोदे
सम्पोड़ेन जना बृन्दा दोति हो
कुली रे काजी याबु इशु दिन ते काइङ लेलावा मेन्ते
सेनोवा बु मथुरा ते हो
कुली लेरे काजी याबु दोही मेन्ते

सभी गोपियाँ एक साथ खड़ी हो जाओ
और दही के बर्त्तन सिर पर उठा लो।
पूछने पर कह देंगी कि दही है।

चलो, मथुरा को चलो ।
पूछने पर कह देंगी कि दही है ।
सोलहो श्रृंगार कर लो ।
और अंगी कपड़ा पहन लो ।
पूछने पर कह देंगी कि हम साथी हैं ।
चलो, मथुरा को चलो ।
पूछने पर कह देंगी कि दही है ।
'चलो, चलो' कहकर बृन्दावन की गोपियाँ तैयार हो गईं ।
पूछने पर कह देंगी कि बहुत दिन तक तुम्हें नहीं देखा ।
चलो, मथुरा चलो ।
पूछने पर कह देंगी कि दही है ।

२२६

आम नतिन अइं दो गतिङ मेन्दा जोरो तान हों
गातिङ आमदो संगाइङ कारेम हियातिङ दो

जी तइङ दो हियातिङ दीदी लेका जलातिङ
गतिङ ने सोमायरे कारेम हियातिङ दो

कइड़ जोम तान गोटा दिन, जी जुले तना निदादिन
गतिङ ने सोमायरे कारेम हियातिङ दो

विङ लेका हियातिङ चोके लेका जोमतान सोबेन दिन
गतिङ बुदु वावु दु'र बाई तान दिन दो

हे प्रिय, तुम्हारे लिए हमारे आँसू बरस रहे हैं ।
हे साथी ! तुम तो आते ही नहीं ।
हमारे दिल में दुःख होता है, वह गीध के समान
उड़ता फिरता है ।
हे प्रिय, ऐसे समय में तुम नहीं आते ।
मैं दिन-भर कुछ नहीं खाता,
रात-दिन जी जलता रहता है ।
हे प्रिय, इस समय तुम नहीं आते !
मैं साँप के मेढक खाने के समान
दिन-भर सोचता रहता हूँ ।
हे प्रिय, बुदु बाबू दिन-भर गीत ही गाते रहते हैं ।

२३०

तिरि रिरि रिरि रिरि रुतुई ओरोङ तान
राधा राधा राधा राधा-ए रुतु तान
एना!ते दुति इङदोइङ बलाय तान
आहो लेल लेरे, लेल लेरे
का हो-ए लेलोवा
मोने मोने मोनेरे लेलो: तान
एना ते दुति इङदोइङ बलाय तान
दिन दिन दिन सोबेन दिन तइङ
नेयागे रूतुई तान
नेयागे सिंगी तइङ जीरेरुडं़ तान
एनाते दुति इङदोइङ बलाय तान
दो-दो-दो बोदे-बोदे दो बोदेते काजी तान
बुदु वाबु ताबु नेयागे दुराङ तान
एनाते दुति इङ दोइङ बलाय तान

तिरिरिरि·········की आवाज में बाँसुरी बजा रहे हैं।
राधा-राधा करके बाँसुरी बजा रहे हैं।
इससे हे सखी ! मैं व्याकुल हो रही हूँ।
आह ! देखते-देखते
दिखाई भी नहीं देते।
(लेकिन) मन में दिखाई देते हैं।
इससे हे सखी ! मैं बेचैन हो रही हूँ।
प्रत्येक दिन, सब दिन
इसी तरह बाँसुरी बजाते हैं।
रात-दिन हृदय को कूटा करते हैं।
इससे हे सखी, मैं व्याकुल हो रही हूँ।
चलो, चलो, चलो ! जल्दी चलो ! यही कह रहा है।
बुदू बाबू यही गीत गा रहा है।
इससे हे सखी ! मैं बेचैन हो रही हूँ।

२३१

हायरे ओकोतिया, रुतुई ओरोङ तानी रे छैला
हाय रे ओकोतिया

निदा सिंगी आ-ए नतिन मेन्दाःजोरो तान रे छैला
हाय रे ओकोतिया

चन्दन कस्तुरी बा सोबेन गोसो जना
हाय रे ओकोतिया

बुदु बाबु हियातिङ ते दुरङ बाई तना रे
हाय रे ओकोतिया

हाय ! बाँसुरी बजानेवाला छोकरा कहाँ चला गया ?
हाय ! कहाँ चला गया ?
रात-दिन उसके लिए आँसू बरसा करते हैं।
हाय ! वह छोकरा कहाँ चला गया ?
चन्दन-कस्तूरी और सभी फूल मुरझा गये,
हाय ! बाँसुरी बजानेवाला छोकरा कहाँ चला गया ?
बुदू बाबू दुःख से गीत बना रहा है !
हाय ! वह बाँसुरी बजानेवाला छोकरा कहाँ चला गया ?

२३२

हातु हातुइंङ नाम कियाअः
काहोइंङ नाम ताइया हो
ओको हातु रियाआ चिरे ओकोतिया

हिड़ी ताइयां-ए ओको छैला
श्याम सुन्दर छैला हो
रानू ताइयां-ए चि चिकातिङा

इशु दिनते अपान मेद ते
कइङ लेल ताइया हो
एना मेन्ते काहोइङ जोमा हियातिङते

हिजु-वा चि का-ए हिजुःवा
ओको दिशुम रिया आ हो
बुदु बाबु सोंगी ताबु कुलीयाबु हो

गाँव-गाँव में मैंने (उसे) खोजा ;
लेकिन मैं नहीं पा सका ।
पता नहीं किस गाँव में है ? कहाँ चली गई ?
किस छोकरे ने उसे ठग लिया ?
श्यामसुन्दर ने (ठगा) ?
उसे कोई दवा दे दी गई या क्या कर दिया गया ?
बहुत दिन से अपनी आँखों से नहीं देखा
इसीलिए चिन्ता के मारे मैं नहीं खाता ।
पता नहीं, वह आयेगी या नहीं ?
किस देश में है ?
संगी बुदू बाबू से हम लोग पूछेंगे ।

२३३

हातु-हातु गड़ा-गड़ा
सुफोल लोकिङ होनोर बेड़ा
एनाते इयम बियुर केना
सुगड़ा तइङ ओकोय इदि किया

मोद रेलिङ दुब केना
एना काजी काए उङुवाना
एन गतिङ ओको हातु तिया
सुगड़ा तइङ ओकोय इदि किया

हाय गतिङ जी ताइङा
अयाः सुफोल ओकोतिया
अयाः सुफोल जीरेम बागे किङा
सुगडा ताइङ ओकोय इदि किया

बुदु बाबुई लेल तइया
कुब्जी कुड़ी इदि तइया
एन गतिङ नेरे काए हिजुःगा
सुगड़ा ताइङ ओकोए उकु किया

गाँव-गाँव और नदी-नदी
वे 'सुफल' के साथ घूमते-फिरते थे।
हमारे सुन्दर को कौन ले गया?
जिससे रोते-फिरते हैं।
हम एक साथ बैठते थे,
इस बात को उन्होंने नहीं सोचा।
वे प्रिय किस गाँव चले गये?
हमारे सुन्दर को कौन ले गया?
हाय प्रिय! जो हमारा हृदय था,
हे सुफल! कहाँ चला गया?
हे सुफल (किसी ने) हमारे हृदय को तोड़ दिया
हमारे सुन्दर को कौन ले गया?
बुदू बाबू ने उसे देखा है,
कुब्जी उसे ले गई।
वह प्रिय अब यहाँ नहीं आयगा।
हमारे उस सुन्दर को किसने छिपा लिया?

२३४

नोबोघोन काजो तना
बड़ी ओलो गोन सिविनाथ
जी दो ओटङ बियुर—
तान रे सिविनाथ

इश् दिन होबा जना
कारेम पिचाइंया सिविनाथ
जी दो ओटङ बियुर—
तान रे सिविनाथ

हातु दिशुम सांगिन जानरे
डाल डुम्बाः तान
जिदो दुम्बुर लेका
ओटङ बियुर तान

'नवघन' कहता है,
हे शिवनाथ ! मेरा मन उड़कर
(आकाश में) चक्कर काट रहा है।
बहुत दिन हुए,
हे शिवनाथ ! तुमने मेरा पीछा नहीं किया।
हे शिवनाथ ! मेरा मन चक्कर काट रहा है।
गाँव-देश दूर है
बीच रास्ते में मैं भटक रहा हूँ।
हे शिवनाथ ! मेरा मन चक्कर काट रहा है।

२३५

हसा टटी पीतल टटी
होड़मो रेदो तीते जागी
तिरि-रिरी-तिरिरिरी
रुतु दोरे साड़ी तान

पिड़ी रेदो चिकन कामी
ओड़ा रेदो हनर होंजार
तिरि-रिरी ; तिरि-रिरी
रुतु दोरे साड़ी तान

मिट्टी के दिया (से लेकर) पीतल के दिया (तक अपने)
शरीर में (तेल) लगा चुकी।
अपना सारा शृंगार कर चुकी।
बाँसुरी तिरिरिरि तिरिरिरि बज रही है।
(वह सोच रही है कि) मैदान में कौन-सा काम है ?
(जिसका बहाना कर बाहर निकलूँ) घर में सास-ससुर मौजूद हैं
बाँसुरी तिरिरिरि बज रही है।

२३६

हेड़ेम हेड़ेम काजी ते
हिड़ी किङाम गोमेन्ते
हिड़ी किङाम गतिङ
हिड़ी किङाम गतिङ
जाति पातियात ते
होटोः रेदो प्रेम माला
माला किङाम गोमेन्ते
माला किङाम गतिङ
माला किङाम गतिङ
चिमिनङ नीला-ते
होड़ो को तला-ते
इदि किङाम गड़ाते
आतु किङाम गतिङ
आतु किङाम गतिङ
इकिर दाः तलारे

मीठी-मीठी बातों से
(तुमने मुझे) ठग दिया।
हे प्रिय ! तुमने मुझे
कई तरह से ठग दिया।
(तुमने अपनी) मधुर मुसकान से
(मेरे गले में) अपने प्रेम की माला डाल दी।
हे प्रिय ! तुमने कितने प्रकार की चालों से
(मेरे गले में अपने प्रेम की) माला डाल दी।
तुम मुझे आदमियों के बीच से
नदी में ले गये।
हे प्रिय ! तुमने मुझे बहा दिया।
तुमने मुझे गहरे पानी में बहा दिया।



असुर शिकारी



एक असुर-परिवार

२३७

सेन दिला होरा रे
काजी लेदाम सुबारे
ओ सुबोधोनी रे
ओ सुबोधोनी रे
एना काजी कागे रिड़िङो

गूड़ चिरेम जोम लेदा
जी रटी हेड़ेम जना
ओ सुबोधोनी रे
ओ सुबोधोनी-रे
एना काजी जी रे गुतु जान

चलते समय, रास्ते में
वृक्ष के नीचे जो बात तुमने कही,
हे सुन्दरी !
वह बात नहीं भूलती।
क्या तुम गुड़ खाई हुई थी
कि (उस बात को सुनकर) हमारा हृदय मीठा (आनन्दित) हो गया।
हे सुन्दरी !
वह बात हृदय में गड़ गई है।

२३८

गातिम दो भाई हिया कना
टिकुरा रे दुबे जना
दुबे दुबे रुतुई ओरोङ तनारे
दुबे दुबे रुतुई ओरोङ तनारे
धोनी भाई अमः जीरे उडु बनोः जना

रुतु दोरे ओरोङ तना
सिरि-रिरी साड़ी तना
दुवार रेम नकिः सुपीदेन तनारे

दुवार रेम नकि: सुपीदेन तनारे
धोनी भाई अम: जी-रे उडु: बनो जना

तिरि रिरो साड़ी तना
मेट्: राटी जोरो तना
पिड़िगीरे किताम गलाङ तनारे
पिड़िगीरे किताम गलाङ तना रे
धोनी भाई अम: जी-रे उडु: बनो जना

तुम्हारा मित्र आया है
(वह) टीले पर बैठा है (और)
बैठे-बैठे बाँसुरी बजा रहा है ।
(लेकिन) तुम्हारे हृदय में कोई चिन्ता नहीं ।
वह तिरिरिरि बाँसुरी बजा रहा है ।
(लेकिन) तुम द्वार पर (बैठे-बैठे) कंघी चोटी कर
रही हो । तुमको कोई चिन्ता नहीं हो रही है ।
जैसे आँखों से आँसू टपकते हैं,
वैसे ही (दर्द-भरी आवाज से) बाँसुरी बजा रहा है,
और इधर तुम बरामदे में (बैठे-बैठे)
खजूर (की चटाई) गूँथ रही हो ।
तुम्हारे हृदय में जरा भी चिन्ता नहीं होती ।

२३६

ओह् गतिङ हो आम नतिन दो
दिशुम दिशुम गतिङ जुगी केना
गतिङ कारेइङ बागेमा
सुगड़ा सुगड़ा निराल निराल तइङ गतिङ दो

ओहो गतिङ हो आम नतिन दो
हुडिङ मरङ जोलाइङ दंड़ा लेदा
बिङो बिषी गतिङ बिषी लेना
कारे गतिङ कारेइङ बागेमा
सुगड़ा सुगड़ा निराल निराल तइङ गतिङ दो

हे प्रिये ! तुम्हारे लिए देश देश में
मैं जोगी की तरह घूमता फिरा ।
हे सुन्दरी प्रिये ! अब मैं तुम्हें नहीं छोड़ूँगा
हे प्रिये, मैंने तुम्हारे लिए
छोटे-बड़े पहाड़ों को पार किया ।
साँपों के विष को सहन किया ।
अब मैं तुम्हें नहीं छोड़ूँगा ।
हे सुन्दरी ! मैं तुम्हें नहीं छोड़ूँगा ।
हे प्रिये ! तुम्हारे लिए
आकाश के देवता को प्रसन्न किया ।
तुम मेरे निकट बैठी रहो ।
मैं तुम्हें तिरछी नजरों से देखता रहूँगा ।
अब मैं तुम्हें नहीं छोड़ूँगा ।

२४०

होरा तेगोम सेन जदा
होरा गेगोम लेल तना
गतिङ गोलांची बा
काचिम लेल जदा रे

बा सुवाम तेबा केदा
गोलांची बाम बा केदा
गतिङ पैला तेम
गुगुलान जना रे

ओको साते होयो लेदा
गुगुलादो ओटङ जना
गतिङ गोलांची बा
बा उयु: जना रे

तुम रास्ते से चल रही हो
(और) केवल रास्ता ही देख रही हो
हे प्रिये ! क्या तुम गुलाइची का फूल
नहीं देख रही हो ?

तुम फूल के वृक्ष के नीचे पहुँची
और गुलाइची का फूल पहन लिया।
और हे प्रिये ! आँचल से
अपना सिर ढँक लिया
(कि अचानक) किसी ओर से हवा आई।
(तुम्हारा) आँचल गिर गया।
(और) हे प्रिये ! पहना हुआ गुलाइची का फूल
भी गिर गया।

२४१

संसारे जोनोम लेन
माया प्रेम तेइङ तोला कान, बृन्दा दोति
धोनीरे दो तम तइङ बिन्ती, बृन्दा दोति

सोंगे रेयाअः हियातिङ
एना काजी इंग काजी तना, वृन्दा दोति
धोनीरे जोनोमो सोंगोतिया वृन्दा दोति

बुदु बाबू बिन्ती तना
हाय हाय तइङ वृन्दा दोति
धोनी रे नेया काजी दो तम वृन्दा दोति

हमने संसार में जन्म लिया
हे सखी, मैं माया और प्रेम से बँधा हुआ हूँ।
हे धनी, हमारी बिनती मान लो !
हमारे साथ जो चिन्ता लगी है,
वही बात मैं कह रहा हूँ।
हे सखी, हे जन्म की संगिनी !
बुदू बाबू बिनती करते हैं
कि हाय ! हमारी बृन्दावन की संगिनी।
हे सखी, यह हमारी बात रख लो (मान लो)

२४२

पृथ्वी रेलंङ जोनोमा कना
पुरा चण्डु: लेका होलंड तुरा: कान
इनु डालङ लिला-खेला मोसाते
अम: क्रिया काइङ बगेमेया धोनी
अम: क्रिया काइङ रड़ामेया

चेड़े लेका होलंङ जुड़ी जना
बा लेका होलंङ बा जना
अम नतिन दिसुम-दिसुम होइङ जुगिन जना
अम: क्रिया काइङ बगेमेया धोनी काइङ रड़ामेया

अम नगेन अइङ दो गतिङ
बउड़ा लेका होइङ बुला कना
जीरे जी तोला कना मेड़ेदते मेड़ेदते
अम: क्रिया काइङ बगेमेया धोनी काइङ रड़ामेया

इस पृथ्वी पर हम दोनों का जन्म हुआ।
हम दोनों पूरे चाँद की तरह उगे।
हम लोग एक साथ लीला-क्रीडा करेंगे।
हे प्रिये, तुम्हारी कसम मैं तुम्हें नहीं छोड़ूँगा
तुम्हारी कसम मैं अलग नहीं हूँगा।
पक्षी के समान हम दोनों की जोड़ी हुई
और फूल के समान हम खिले।
तुम्हारे लिए देश-देश मैं जोगी बना।
तुम्हारी कसम मैं नहीं छोड़ूँगा।
हे प्रिये! मैं अलग नहीं हूँगा।
हे प्रिये! तुम्हारे लिए मैं
उन्मत्त के समान नशे में चूर हो गया हूँ।
दोनों का हृदय लोहे से बँध गया है।
तुम्हारी कसम मैं नहीं छोड़ूँगा।
हे प्रिये! तुमसे अलग नहीं हूँगा।

२४३

एना लेका सुगड़ा ताइङरे
ओकोय इदी किया हो
हायरे हायरे-हायरे
ताइङरे ओकोय हिड़ो किङा
हायरे-हाय-रे-हाय-रे तइङरे

नोलिता रे इदि ताई रे
ओकोय लेल किया हो
हाय-रे हाय-रे-तइङरे
जीरे इदी केदा
हायरे-हाय-रे तइङरे

सोबेन गुपी सेनोवा बु
नामी-याबु दोलारे
हाय-रे-हाय-रे तइङरे
ओको दिसुम
हाय-रे-हाय-रे तइङरे

बुदु बाबू कुलीयाबु
लेल इदी ताइया हो
तइङ आयगे इदी बुआ
हायरे-हायरे तइङरे

(मेरे) इस तरह के सुन्दर-सलोने को
कौन चुरा ले गया ?
हाय ! हाय ! हमको किसने ठग लिया ?
हायरे, हायरे, हायरे !
हे ललिता ! जो ले गया है,
उसे किसने देखा है ।
हाय ! हाय ! हमारे प्राण को ही ले गया
हम सब गोपियाँ चलें
और चलकर उसे खोजें ।

हाय ! हाय । वह किस देश में है !
बुद्दू बाबू से पूछें (क्योंकि)
जाते समय उन्होंने देखा था ।
हाय ! हाय ! हम लोगों को
वही ले जायेंगे ।
(वही रास्ता बतायेंगे ।)

२४४

ओरे भाई सोंगी सुफोल
उब त-ए दो हो नीले हेन्दे
चाँवर लेका चण्डुः मोलोङरे हो
टिकली दो जुले तना

एन सुगड़ा कोतीई जान
लेल आऊ ली मे
सोंगी सुफोल बोओ दोरे
तिलिमि बा मू मोचा

पुरा चण्डुः रे हो
ने दिन मुण्डा साला तना
सिङ्ग कुला मयाङ दोरे
हाति ती हो-ए तीया कना
बा लेका सुगड़ा
ओमेते बा उसड़्

हे भाई ! संगी सुफल ! (एक लड़की के)
काले तथा नीले रंग के बाल
चँवर के समान हैं ।
(उसके) चाँद के समान ललाट में
टिकुली चमक रही है ।
(हे भाई) वह कहाँ गई ?
आओ, उसे देखो !
संगी सुफल के सिर

और तिल के फूल के समान
मुँह को देखो।
इस पूर्ण चाँद के दिन
यह मुण्डा
उस सिंह के समान कमरवाली
(और) हाथी की सूँड़ के समान बाँहवाली
(लड़की) की खोज कर रहा है।

२४५

ने हातु तला रे
वृथा जोनोम होबा लेना
हेला रे दोला रे
समाड़ोम सोमय सेनोः तानरे

किचरी तदाम कुइली साड़ी
पैला तदाम रंगा साड़ी
हेलारे दोलारे
सेना केदाम लेले कोयोः तान रे

तीरे मुन्दाम झरे झर
होटोः रे मन्दुली सोर सोर
हेलारे दोला-रे
पैला किचिरी ओटङ तान रे

इस गाँव में
व्यर्थ जन्म हुआ।
चलो, चलें।
सोने के समाम समय चला जा रहा है।
तुमने कोयल के रंगवाली साड़ी
पहन ली है।
हाय ! हाय ! तुम
देखते हुए चली जा रही हो।
(तुम्हारे) हाथ में अँगूठी झकझका रही है

(तुम्हारे) गले में मन्दुली चमचमा रही है।
चलो, चलें !
तुम्हारा आँचल हवा में उड़ रहा है।

२४६

लंका-पति-जपारे, सुरपनरवाए काजि तान
ओ दादा हाय-दादा-कनाइङ काजिया-मेया
बारिया कोडा होन-किङ लोःते इसु-सुगङ कुड़ो होन
मेनाई-सोंगेरे ।

बो रेदो-जोटो-किङ तोलाना किङ तीरे
तीरे दो अःसार-सार किङ सवाना
ओ दादा हाय-दादा बीर किङ होनोर तान
इनकिङ लोते-इसु सुगङ कुडी होन
मेनाई सोंगेरे ।।

रावोन राजा-ए लन्दा-तना सुरपोनखाए काजितना
ओ दादा हाय दादा-मूँ-किङ हादे किङा
इनकिङ लोते इसु सुगड़ा कुड़ी होन
मेनाइ-सोंगेरे ।।

बुदु बाबू काजी तना—बेस गोम-काजि लेदा
ओ दादा हाय-दादा जी किङ दुकु किङा
इनकिङ लोते इसु सुगड़ कुड़ी होन
मेनाई-सोंगेरे ।।

लंकापति के पास सूर्पणखा कह रही है।
हाय, हे भाई, मैं तुमको क्या बताऊँ।
दो युवकों के साथ एक बहुत सुन्दर स्त्री है,
(उनके) सिर पर जटा है (और) हाथ में धनुष-बाण पकड़े है।
हाय भाई ! वे जंगल-जंगल घूम रहे हैं।
उनके साथ एक बहुत सुन्दर स्त्री है।
(सूर्पणखा की बात सुनकर) रावण राजा हँस रहा है।

सूर्पणखा कह रही है—हाय ! भाई, उन्होंने मेरी नाक काट ली ।
उनके साथ बहुत सुन्दर एक स्त्री है ।
बुदू बाबू कहते हैं कि सूर्पणखा ने अच्छा ही कहा था ।
कि हे भाई, उन्होंने मेरे दिल को दुःख दिया ।
उनके साथ बहुत सुन्दर एक स्त्री है ।

२४७

गड़ा जपः लोवा–सुबा !
मेरोम को-ए गुपि तना
लेल जाई लेल जाई लोः
दोन्दो तोरसा किअः भाई नोलिता ।

ओकोय मेने मारे मारे
ओकोय मेने धारे धारे,
लेल जाई लेल जाई लोः
दोन्दो तोरसा किअः भाई नोलिता

बुदू बाबू-ई काजी तना ।
रावन सीता-ए इदी किअः
लेल जाई लेल जाई लोः
दोन्दोः तोरसा किअः भाई नोलिता ।

नदी के किनारे गूलर वृक्ष के नीचे,
(सीता) बकरी चरा रही है (थी) ।
देखते-ही-देखते,
हे सखी ! उसको उठा लिया ।
किसी ने मारो-मारो कहा ।
किसी ने धरो-पकड़ो की आवाज लगाई ।
(लेकिन) देखते-ही-देखते
हे सखी, उसको उठा लिया ।
बुदू बाबू कहते हैं,
रावण सीता को हर ले गया ।
देखते-ही-देखते
हे सखी ! (उसको) उठा लिया ।

२४८

जम्बुवोने काजी तना
जोतो गाड़ी को सेनेपे
हासा-दिरी-बुरु आगुते
समुन्दर तोले याबु एनाते हो
राम-लोखोन प्रभु हुकुमते

सोबेन बीर को खुशी जना
नेया काजी आयुम ते
सेनोवा बु सोबेन लंका ते
लेलेयाबु-लंका पुरी मेदते हो
राम-लोखोन प्रभु हुकुमते

जेता बीर कुड़िल तना
दो-दो-मेन्ते
सेनोः बाबु उतर दिशुम ते
आमुयाबु बुरु-दिरी-बोःते हो
राम-लोखोन प्रभु हुकुमते

हनु बीरे-ए बिरीद जना
राम-राम-मेन्ते हो
उतर दिशुम बुरु आगुते
बुदू बाबु दुरङ बाइतान एनाते हो
राम लोखोन प्रभु हुकुमते

वीर जामवन्त कह रहे हैं (कि)
सभी बन्दर समुन्दर बाँधने के लिए
मिट्टी, पत्थर और पहाड़ लाने चलें—
प्रभु राम-लक्ष्मण की आज्ञा से ।
इस बात को सुनकर
सभी वीर प्रसन्न हो गये ।
हमलोग सभी लंका पुरी जायेंगे
और अपनी आँखों से लंका को देखेंगे ।

प्रभु राम-लक्ष्मण की आज्ञा से
कोई-कोई वीर
चलो, चलो कहकर उछल रहा है। (वे कह रहे हैं)
सिर पर पहाड़-पत्थर लाने के लिए
उत्तर दिशा की ओर चलें।
प्रभु राम-लक्ष्मण की आज्ञा से
वीर हनुमान राम-राम का नाम लेते हुए
उत्तर दिशा से पहाड़ लाने के लिए उठे।
इसीलिए बुदू बाबू गीत बना रहे हैं
प्रभु राम-लक्ष्मण की आज्ञा से।

२४६

जेताय बुरु जेताय दिरी
दुपिलान को जोतो गाड़ी
मोदरे हुंडिन-जान,
धड़ी-घड़ी सोबेन गाड़ी
राम-राम को नुतुन तान बीर-बीर को आगुतान ॥१॥

मुइ लेका सेन तना
रीम्बिल लेका लेलो: तना
सींग बोंगा उम्बुल ते भाई
दपाल गिड़ी जान
राम-राम को नुतुम तान बीर-बीर को आगुतान ॥२॥

जेता बीर कुडिल तना
जेताय जेताय लंदा तना
खुश ते हिजु: तना
दोला-दोला भाई मेन्ते काजी तना
राम-राम को नुतुम तान बीर बीर को आगुतान ॥३॥

सोबेन बीर को सेटेर जान
दिशुम ताकों उम्बुल जान
भाई नुबा, लेलो: तान
बुदू बाबू ताबु लेलते दन्दा जान
राम-राम को नुतुन तान बीर-बीर को आगुतान ॥४॥

सभी बन्दर—कोई पहाड़ और कोई पत्थर
अपने सिर पर लिये हैं।
सभी इकट्ठे हो रहे हैं।
सभी बन्दर बार-बार
राम का नाम ले रहे हैं।
सभी वीर पहाड़ ला रहे हैं।
वे चींटी के समान (पंक्ति बद्ध) जा रहे हैं।
(और) बादल के समान दिखाई दे रहे हैं।
(वे) भगवान की परछाहीं से ढक गये है।
सभी वीर राम का नाम ले रहे हैं
(और) पहाड़ ला रहे हैं।
कोई वीर उछल रहा है,
कोई हँस रहा है,
(और) प्रसन्नता-पूर्वक आ रहा है।
चलो-चलो-चलो कहकर—
वीर राम का नाम ले रहे हैं।
और पहाड़ ला रहे हैं।
सभी वीर आ रहे हैं।
उनकी परछाईं से देश में
अन्धकार दिखाई दे रहा है।

२५०

रघुबरे खुश जान
नोले नीले हुकुम केन
बीर किङ सेनो: जान
द: चेतन रेकिङ तिगन जान।

बीर-बीर को तुल तान
बुरु दिरी ओम तान
लेंगा तीते नोले नोले तेला तान
दः चेतन बुरुऊपल जान

सोबेन बीर को भकुवा जान
हनु बीर मोनरे गोसा जान
बीर किङ तोले
समुंदर होरा किङ बाइ तान

हनुबीर-ए खींस जान
उतर दिशुमते रुवाड़ जान
मराङ मराङ बुरु को नाम तान
बीर किङ तोलेवान बुदू बाबू दुरङ बाई तान

रामचन्द्र जी खुश हो गये।
उन्होंने नल-नील को आज्ञा दी।
वे दोनों वीर चले
और पानी के ऊपर खड़े हो गये।
साथी वीर (पत्थर) उठा रहे हैं।
(सभी वीर) पहाड़ दे रहे हैं।
नल-नील बाएँ हाथ से (उसे) ले रहे हैं।
पत्थर पानी के ऊपर तैर रहे हैं।
(यह देखकर) सभी वीरों को आश्चर्य हुआ;
लेकिन वीर हनुमान उदास हो गया।
(पुल बाँधकर पार करने में क्या बहादुरी है)
दोनों वीर (पुल) बाँध रहे हैं,
और दोनों समुद्री रास्ता बना रहे हैं।
वीर हनुमान बिगड़ गये
और उतर दिशा की ओर लौट गये।
वे बड़ा-बड़ा पहाड़ खोज रहे हैं।
वे दोनों वीर उसे पकड़ रहे हैं।
बुदू बाबू गीत बना रहे हैं।

२५१

हनुबीर खींस जान,
उतर दिशुमते रुवाड जान,
मराङ मराङ बुरुको-एनामतान
उद लेका-ए तुद जदा सलुकद लेका-ए दो तान

बुरु चेतन बुरुई तिरीङ तान ॥
आतोम बुरु दुपिलाना
आतोम बुरु माला कना
ऊब ऊबते बुरुगे तोलाकना,

हनु उपुन हिसी लाख बुरु हो आगुतना,
भयंकर मुर्ती जना
हनुबीर बिरीद जना
नोल-नील खींस बुलाकना,

हनु उपुन हिसी लाख बुरु हो आगु तना
बीर उपुन हिसी लाख बुरु हो आगु तना ॥
खींसते बीर-ए हिजु: तना
उपुन कोसरे मण्ड़ा तना

होयो गमा लेका सड़ी तना
हनु उपुन हिसी लाख बुरु हो आगुतना
बीर उपुन हिसी लाख बुरु हो आगुतना ॥

राम दोला बीर को कजी ताना
ओको बीर को हिजु: तना
बुद्दू बाबू रामधुन दुरंड़ तना
हनु उपुन हिसी लाख बुरु हो आगुतना
बीर उपुन हिसी लाख बुरु हो आगुतना

हे सखी ! वीर हनुमान बिगड़ गये।
(वे) उतर दिशा की ओर लौट गये।
(वे) बड़े-बड़े पर्वत खोज रहे हैं।
(वे पहाड़ को) खुखड़ी (छत्रक) के समान उखाड़ रहे हैं
(और) कुमुद फूल के समान रख रहे हैं।
वे पहाड़ के ऊपर पहाड़ लाद रहे हैं।
(उन्होंने) अगल-बगल दोनों ओर पहाड़ ढोये हुए हैं।
और दोनों ओर (छाती पर) माला की तरह लटका रखा है।
(उन्होंने) सारे बालों में पहाड़ बाँध लिया है।
हनुमान अस्सी लाख पहाड़ ला रहे हैं।
वीर हनुमान ने भयंकर रूप बनाया है।
वे तैयार खड़े हैं (यह देखकर)
नलनील भी क्रोध से तिलमिलाये हुए हैं।
हनुमान अस्सी लाख पहाड़ ला रहे हैं।
वीर हनुमान अस्सी लाख पहाड़ ला रहे हैं।
वीर क्रोधित होकर आ रहे हैं
और चार-चार कोस पर अपना कदम रख रहे हैं।
आंधी-पानी के समान आवाज हो रही है।
हनुमान अस्सी लाख पहाड़ ला रहे हैं।
राम के दल के वीर कह रहे हैं
कि कौन वीर आ रहा है।
बुदू बाबू राम का गुण गा रहे हैं।
हनुमान अस्सी लाख पहाड़ ला रहे हैं।
वीर हनुमान अस्सी लाख पहाड़ ला रहे हैं।

२५२

हनुवीर आयुम केन, सोडोको दोरे तेयार जना
होयो होन एनरेः तिगुन जान, खींसते सिरमारे चकी केन
चकी जनते कोटन जान बुरु चेतन बुरु थेर तान
सोवेन गुण्डा गिड़ी जान ॥

हुंकार शब्दो केन आयोम तेको तोठधो जना
बोगा बिङ जोकी एकला तान
चमत्कार सुइन साड़ो जान
लुतुर थाली गिड़ी जाना ॥

जैतय जेतय काजी तान बुरु बोंगा हांड़ा जान
चौला जङ्गरे अयगे नामा कान जेतय जेतय काजी तान
ओको बीरे-ए गर्जन केन, जेतय जेतय सुइगे साड़ी जान
मेन्दे सोबेन काजी तान

नेया काजी कुली मेन्ते सेनो गाबु राजदुवार ते
बामड़े मुनि राजा को दुबा कान लेल तना को पोती पंजी
आयुमे याबु-काजी मेन्ते बुटू बाबू काजी तान
दिलरे मोनरे खुशी जान

जब बीर हनुमान ने सुना कि रास्ता तैयार हो गया,
(तब) वे पवन पुत्र उस पार खड़े हो गये और क्रोध से आकाश में उछल पड़े।
उछलकर झूम पड़े जिससे पहाड़ पर पहाड़ फेंका जाने लगा और सब टूट-फूट गया।
हनुमान ने जब हुंकार किया तब सुनकर (सब) स्तब्ध हो गये, सभी देवता और नाग डर गये।
चमत्कार से आकाश में आवाज होने लगी जिनसे कान सुन्न हो गये।
कोई-कोई कह रहा है कि बुरु बोंगा (पर्वत के देवता) ही बिगड़ गये हैं।
और कोई-कोई कह रहा है कि कौन वीर गर्जन कर रहा है, जिससे आकाश में आवाज हो रही है।
इस बात को पूछने के लिए राजद्वार चलेंगे। वहाँ ब्राह्मण मुनि, राजा आदि देखने के लिए बैठे हैं।
वहाँ कौन-सी बात कहेंगे, यह सोचकर बुटू बाबू अपने दिल में खुश हो रहा है।

२५३

पयार—श्रीराम रघुबीर, ओड़ो बीर लोखोन
कुताम बार हागा-बीर किङ हिया कान
शिव बोंगा स्थापना मेन्ते हियाकना किङ सोडोको
हहे हरे हरे नुतुम-तन ॥

रंग—बोंगा मुनि बीर को दुबाकन, राम लोखोनशिव सेवातन
घड़ी घड़ी घड़ी वो चेतन मुण्डी मघु गुड़को दुले तना हो
ओहो गुरु अबा, शिव बोंगा मेन्ते-ए सेवा तना हो ॥

आम प्रभु श्री भगवान अमा: उम्बुल तेजी जीदा कान
भुवनो-मण्डोले चेतनो पताले सोबेन को इतुवाना हो
ओहो गुरु अबा शिव बोंगा मेन्ते-ए सेवा तना हो ।।

नेया काजी प्रभुई विन्ती तान अइअ: मोनरा: आशा पुरातान
देवि सीता सोतो लंकापूर पति इदी तइया रावन हो
ओहो गुरु अबा शिव बोंगा मेन्ते-ए सेवा तान हो

श्री—राम रघुवीर और वीर लक्ष्मण
ये दो वीर आये हुए हैं।
वे शिव की स्थापना के लिए सड़क से आये हैं।
और 'हरे हरे' बोल रहे हैं।
वहाँ देवता-मुनि और (सभी) वीर बैठे हैं,
और राम-लक्ष्मण शिव की पूजा कर रहे हैं।
वे शिव की मूर्ति पर बार-बार मधु-गुड़ ढाल रहे हैं।
हे गुरु-पिता ! शिव-देवता ! यह कहकर पूजा कर रहे हैं।
आप ही श्री भगवान हैं और आपकी ही कृपा से हम जी रहे हैं।
(इस बात को) इस पृथ्वी-मंडल में आकाश-पताल में सभी जानते हैं।
हे गुरु पिता, शिव देवता ! ऐसा कहकर पूजा कर रहे हैं।
हे प्रभु ! मैं इसलिए प्रार्थना कर रहा हूँ कि मेरे मन की आशा पूरी कर दो।
लंकापति रावण ने देवी सती सीता को चुरा लिया है।
हे गुरुपिता, शिव देवता ! ऐसा कहकर पूजा कर रहे हैं।

२५४

पयार :–राम लोखोन दुबा कना मंत्री जम्बू लेल तान
सोबेन बीर को महा खुशी जना नुतुमेया बुरामराममेंते
सेनो: अबु मुली मुलीते हरे हरे हरे नुतुम तान

रंग—सोबेन वीरको सम्पोड़ जना
हनु बोरदो बिरीदा जना
दो भाई दो भाइ लंका ते
राम राम मेन्ते ।

अयर तयोम सोबेन बीर
एन बीतर रघुबीर
राम राम मेन्ते सीता माता पिचाते
भाई राम राम मेन्ते

जेता बीरे-ए कुड़िल तना
जेतय जेतय सबा कद ।
राम राम मेन्ते कुड़िल तना को मिसाते
दुरङ तानको मोसाते राम राम मेन्ते

रामायण रे ओला कना
बुदू बाबूई दुरङ तना रामराम मेन्ते
सेटेर जना को लंका ते
भाई राम राम मेन्ते ।

राम-लखन बैठे हैं और मंत्री जामवन्त देख रहे हैं ।
सभी वीर बहुत खुश हैं (और कह रहे हैं), हमलोग राम राम पुकारेंगे ।
हम लोग हरे हरे बोलते हुए सीधे चलेंगे ।
सभी वीर तैयार हो गये ।
वीर हनुमान (भी) उठ गये ।
हे भाई ! राम-राम कहते हुए लंका को चलो ।
सभी वीर आगे-पीछे चल रहे हैं,
(और) उनके बीच में रामचन्द्रजी हैं ।
हे भाई ! राम का नाम लेते हुए सीता माता की खोज में चलो ।
कोई-कोई वीर उछल रहा है ।
कोई-कोई कुछ धरे हुए हैं ।
वे राम-राम कहकर एक साथ उछल रहे हैं ।
राम-राम कहकर एक साथ गीत गा रहे हैं ।
रामायण में (जो कुछ) लिखा हुआ है,
(उसी को) बुदू बाबू गा रहा है ।
(वे वीर) राम-राम कहते हुए लंका को चले ।

२५५

अंगद बीर दुबाकना जम्बु मन्त्री कजी तना
नेया काजी अइङ दोइङ काजो तना
अंगद बीर हनुमान सोबेन बीरते किङ मरङ जना
एना मेन्ते अकिङ सरदार जना

अयुमे पे हो सोबेन बीर को
नेया काजी जे काजी ते हिया कना
एन काजी महा प्रभु हुकुमान ते
अइङ होइङ—काजी तना

अंगद-हनुमान सोवेन बीरते सुबा जना
एना मेन्ते अकिङ सरदार जना
सेनोः आबु लंकापूरी लड़ाई ते
सम्पोड़ेन पे ताबु सिंगरेन पे

दाली याबु—मागी याबु
सोबेन होन होपोनते
अंगद हनुमान सोबेन बीरते किङ मरङ जना
एना मेन्ते अकिङ सरदार जना

खुश जना हो नेया काजी अयुमते
कुड़िल तना को रसिका ते
दोला-दोला-दोलाबु
मोसाते-बिरीद आबु

अंगद हनुमान सोवेन बीरते किङ मराङ जना
एना मेन्ते अकिङ सरदार जना
काजी तना हो बुद्रू बाबू दुरङ ते

दाली याबु-मागी याबु सोबेन ते
हारी याबु—दिशुम ते
बीर को कजी तना
अंगद-हनुमान सोबेन बीरते किङ मरङ जना
एना मेन्ते अकिङ सरदार जना ।

वीर अंगद बैठा हुआ है, मंत्री जामवन्त कह रहा है (कि)
मैं यह बात बता देना चाहता हूँ कि
अंगद और हनुमान सभी वीरों में श्रेष्ठ निकले ।
इसलिए वे दोनों ही सरदार बने ।

सभी वीर सुन लें,
यह बात जो कही गई है ।
वह महाप्रभु की आज्ञा से कही गई है ।
इसलिए मैं बता दे रहा हूँ कि—

अंगद और हनुमान सभी वीरों के मूल हैं ।
इसलिए वे दोनों सरदार बने ।
अब लंकापुर की लड़ाई करने के लिए चलेंगे ।
अब सब तैयार हो जाओ और सज जाओ ।

सब छोटे-बड़े मिलकर उन राक्षसों को मारे-काटेंगे ।
अंगद और हनुमान सभी वीरों में बड़े हैं ।
इसलिए वे दोनों सरदार बने ।
इस बात को सुनकर सब खुश हो गये ।

और आनन्द के मारे उछलने लगे ।
सब साथ खड़े होकर
चलो-चलो की आवाज करने लगे ।
अंगद और हनुमान सभी वीरों में श्रेष्ठ हैं ।

इसलिए वे दोनों सरदार बने ।
बुदू बाबू गा रहे हैं कि वे वीर कहते हैं
सब मिलकर उन्हें मारे-काटेंगे ।

और देश से भगा देंगे ।
अंगद और हनुमान सभी वीरों में श्रेष्ठ निकले
इसलिए वे दोनों सरदार बने ।

२५६

जम्बुबोन काजी तना
हातु-मुण्डी काबु सेना
हेलारे लंका पुरी
कठिन दिशुमान दा

असुर तेगे दिशुमना
रावन राजा-ए राजा कना
एलारे बोंगा बुरु दो
काको मना तिङा दो

होड़ो-गाड़ी-सदोम-मिण्डी
ओड़ोः मेरोम-केड़ा उरीः
हेलारे-सोबेन-जीलु
सोबेन को जो जोजोमा

बुदू बाबू काजी तना
सोबेन बीर को गोसो जना
हेलारे जोतो गाड़ी कोदो
हापे गिड़िन जना दो

जामवन्त कह रहा है
कि गाँव की सीमा के बाहर नहीं जायेंगे।
लंकापुर बहुत भयानक देश है,
वह असुरों का ही देश है।
(और) रावण उनका राजा है।
वे पूजा-पाठ नहीं करते।
वे सभी आदमी, बन्दर, घोड़ा, बकरी,
भैंस और बैल
इन सारी चीजों का माँस खाते हैं
बुदू बाबू कह रहे हैं
कि यह बात सुनकर सब लोग डर गये।
सभी बन्दर चुप हो गये।

२५७

पयार:—जम्बुबोने काजी तना
इशु दिनबु होबा जना
असुर बहाँचो कोरे दुबा कना
निदा सिंगी बुला कना
इली जिलु जोम तना
आबु हियाकना काये इतुवना

रंग:—अंगद बीर दुबा कना
जम्बु मन्त्री काजी तना
बाबू सम्पोडेन मेड़े
समोड़ोम लंका पूरो ते
जुहो सम्पोडेन मे

इशु दिनबु होबा जना
जेताय काको इतुवना
बाबू सम्पोडेन मे
राजा दोरोजा ते इनते सेनमे
बाबू सम्पोड़ेन मे

निदा सिंगी बुला कना
इली जीलु जोम तना
बाबू सम्पोड़ेन मे
एनरेन कारगुणी को जोतो लेले में
बाबू सम्पोड़ेन मे

सीता देवि अगु तइया
मेनाइया—चि चिका किया
बाबू—सम्पोडेन मे
बुदू काजीते बाबू कुड़ी को कुली मे
बाब सम्पोडेन—मे

जामवन्त कह रहा है कि बहुत दिन बीत गये (पता नहीं),
वह बेहूदा असुर कहाँ बैठा हुआ है ?
रात-दिन मतवाला बना रहता है।
और मांस-मदिरा खाता है
हम लोग (यहाँ) आये हैं (इस बात को) जानता भी नहीं !
वीर अंगद बैठा है
और मंत्री जामवन्त कह रहा है।
हे बाबू, तैयार हो जाओ—
सोने की लंकापुरी में जाने के लिए
तैयार हो जाओ।
हम लोगों के आये बहुत दिन हो गये।
पर इस बात को कोई नहीं जानता
हे बाबू, तैयार हो जाओ।
तैयार होकर राजा के उस दरवाजे से जाओ।
(वह राक्षस) रात-दिन मतवाला बना रहता है।
मांस-मदिरा खाता है।
हे बाबू, तैयार हो जाओ।
और वहाँ की सारी कार्रवाई को जाकर देखो।
हे बाबू, तैयार हो जाओ।
वह जो सीता देवी को लाया है।
(सो) सीता है या क्या हुई ?
हे बाबू, तैयार हो जाओ।
बुरू बाबू कहते हैं कि जाकर स्त्रियों से पता लगाओ
हे बाबू, तैयार हो जाओ।

२५८

अंगद वीर सेनो जना
लंका पुरी सेटेर जना
होन कुड़ी को बोरोते नीर जना
मरङ होड़ो को काजी तना
होड़ो गाड़ी को हिजुः कना
राजा दोरोजा ते सेनोः जना

जे गाड़ो हिजु: लेना
लंका पुरी: ओण्डोर केन्ना
एन गाड़ी ओडो: हिया कना
दो भाई दोलाबु लेला
राजा दोरोजारे दुबा कना

नोकोरे हो चंकी केना
अबु दिशुम्ते हिया कना
गाड़ी जाति काको बोरो तना
दो भाई दोलाबु लेला
राजा दोरोजारे दुबा कना

सीता देवि आउ तइया
नेसोकन दो चिकाबुवा
सोबेन होड़ो को नेया काजी तना
दो भाई दोलाबु-लेला
राजा दोरोजारे दुबा कना

अंगद वीर दुबा कना
बुदु बाबु दुरंङ: तना
बोरो बोरोते होड़ो को हिजु: तना
दो भाई दोलाबु लेला
राजा दोरोजारे दुबा कना

वीर अंगद चला गया
वह लंकापुरी पहुँच गया।
स्त्रियाँ और बच्चे डर के मारे भाग चले।
बड़े लोग कह रहे हैं (कि)
(लंका में) आदमी और बन्दर आये हैं।
और राजा के द्वार में जा रहे हैं।
जो बन्दर (पहले) आया था,
(और) लंकापुरी को जला गया था,
वही बन्दर फिर आया है।
हे भाई! चलो देखें।

वह राज-द्वार पर बैठा हुआ है।
वह कहाँ से उछला था
कि हमारे देश में पहुँच गया ?
बन्दर की जाति बड़ी निडर होती है
चलो देखने चले,
वह राज-द्वार पर बैठा हुआ है।
वह (रावण) जो सीता देवी को लाया।
(इसके लिए) इस बार (यह बन्दर) क्या करेगा ?
सभी लोग इसी बात की चर्चा कर रहे हैं।
हे भाई चलो देखने चलें।
वह राज-द्वार पर बैठा हुआ है।
वीर अंगद बैठा हुआ है
बुदू बाबू गा रहा है कि
लोग डरते-डरते आ रहे हैं।
(वे कह रहे हैं कि) हे भाई, चलो देखने चलें।
वह राज-द्वार पर बैठा हुआ है।

२५८

पयार :—मंदोदरी अयुम केना, अंगद वीरेः ह्रिया कना
होड़ो गाड़ीते दिशुम् फेरे जना, नेया काजी कुली मेन्ते
सेनोः तनाय राजा ताः ते, मंदोदरी रानी बिन्ती तना।

रंगः—रावन राजा बीर दुबा कना, मंदोदरी रानी बिन्ती तना
ओहो प्रभु गोम्के लंकेश्वर नेया काजी प्रभु अयुमना
एना काजी गोम्केइङ ह्रिया कना, कुड़म रोड़ तना काजी अयुमते
ह्रिया कना राम लंका ते, सीता सोती देवि पिचाते।

राम लोखोन तते, लंकापोति इदितुकाइयालङ कुलो वोती
नेया काजी गोम्के अइङ दोइङ बिन्ती तना कलाङ प्रभु एपेराङा
योद्धा योद्धा बीर को ह्रियाकना, जीहो एकेला तना काजी अयुमते
ह्रिया कन राम लंकाते सीता सोती देवि पिचाते

अ ए हेके प्रभु भगवान, अयगा: नुतुम प्रभु रघुबीर राम
बोंगा होड़ो बिङ्ग सोबेन को इतुवान सोर्गो मोञ्चो पताल दिशुम
जोपे तना को राम नुतुम आ-ए खुश तान बिन्ती भोक्ति ते
हिया कन राम लंका ते—सोता सोति देवि पिचाते ।

नोलो-नीलो बीर जम्बुवोन-जोती गाड़ी को फेरेया कन
अंगद बीर सिंह दुवार रे-ए दुबा कन बुदु बाबु तबु दुरङ तान
लंका ओंडोर गाड़ी हिजु:रुवाड़ाकानहोड़ोकोनोरतान नुतम अयुमते
हिया कान राम लंकाते, सीता सोती देवि पिचाते ।

जब मंदोदरी ने सुना कि वीर अंगद आया हुआ है
(और) नर-वानरों से देश भर गया है (तब)
इस बात को पूछने के लिए वह राजा के पास जाती है
और रानी मन्दोदरी विनती करती है ।

वीर रावण राजा बैठा हुआ है (और) रानी मन्दोदरी विनती कर रही है
हे प्रभु लंकेश्वर, हे प्रभु, मैंने यह बात सुनी है ।
इसी बात को कहने के लिए मैं आई हूँ । इस बात को सुनकर मेरी छाती सूख रही है
(कि) राम सती सीता देवी की खोज में लंका आये हैं ।

हे लंकापति, हम लोग उस कुलवन्ती को राम लखन के पास पहुँचा दें ।
हे स्वामी, मैं उसी बात की विनती कर रही हूँ कि उनसे झगड़ा नहीं करेंगे ।
बड़े-बड़े वीर आये हैं, इस बात को सुनकर हृदय काँप रहा है ।
राम सती सीता की खोज में लंका आये हुए हैं ।

वे स्वयं प्रभु भगवान हैं और उनका नाम रघुवीर राम है
देवता, मनुष्य, नाग सभी इस बात को जानते हैं—
स्वर्ग पाताल और दुनिया के सभी लोग उनका नाम जपते हैं
और वे भक्ति-वन्दना से प्रसन्न होते हैं ।
राम सती सीता की खोज में लंका आये हुए हैं ।

नल-नील और वीर जामवन्त—सभी बन्दर (लंका में) भरे हुए हैं ।
अंगद सिंहद्वार पर बैठा है । बुदू बाबू—गा रहा है—
कि लंका जलानेवाला बन्दर फिर लौट आया ।

लोग उसका नाम सुनकर ही भाग रहे हैं ।
राम सीता की खोज में लंका में आये हुए हैं ।

२५६

रावन राजा लंदा केना
लंदा लंदा तेहो जगर तना
मंदोदरी अमदोम बोरो तना
अइङ दोइङ दंदा जान
ओको बीर लंकाते हिया कान

नलो नीलो जोतो गाड़ी
जोमतनाको बकर कुड़ीद्
नीकु चिरे बीरेम् काजीतान्
अइङ दोइङ दंदा जान
ओको बीर लंका ते हिया कान

होड़ो गाड़ी सदोम मिण्डी
एना लो: ते जोम तान मण्डी
दिनाकिहो अमगे उतु तान
अइङ दोइङ दंदा जान
ओको बीर लंकाते हिया कान

बुदु बाबु बिन्ती जाइया
कुड़ी काजी गोम्के हेके नेया
काजो तेचि राजा—ए बोरो तान
अइङ दोइङ दंदा जान
ओको बीर लंकाते हिया कान

रावण राजा हँस रहा है और हँस-हँसकर कह रहा है-
हे मन्दोदरी, तुम जो डर रही हो
इस बात से मुझे आश्चर्य हो रहा है।
कौन वीर लंका में आया है?
नल-नील जितने बन्दर हैं,
वे बेर खाते हैं।
क्या तुम उन्हीं को वीर कह रही हो?

मुझे आश्चर्य होता है कि
कौन वीर लंका में आया हुआ है ?
आदमी बन्दर घोड़ा और भेड़
इन्हीं (के मांस) से तो हम भात खाते हैं ।
प्रति दिन तुम्हीं तो (उन्हें) पकाती हो
मुझे आश्चर्य होता है कि
कौन वीर लंका में आया है ?
बुदू बाबू कह रहे हैं कि (मन्दोदरी जो) विनती कर रही है
वह स्त्रियों की बात है ।
राजा क्या इस बात से डरता है ?
मुझे आश्चर्य होता है कि
कौन वीर लंका में आया हुआ है ?

२६०

पयार:—मंदोदरी काजी तना रावन राजा-ए कोन्का जना
काजी अयुम ते कुन्की जान, जे प्रभु जोनोमना
होड़ो मेन्ते काजी जइया ठोर केदाइङ मोत सेटेर जान

रंग:—वेदरे ओला कना एन दिन तेबा जान
एना हियातिङ ते अइङ दोइङ बलाय तान
निदा सिंगो मेद्ते मेद्: जोरो तान

पयार:—रावन राज-ए खिस जना, गेल मोचाते मोसाते काजीतान
सोलोङ ताबु फलाव जना, होड़ो गाड़ी को फेरेयाकान
सीता सोती इदी को हिया कना

रंग:—काली देवि सत्या जना, एनाते हिया कना
आहो हुण्डिन पे सोबेन होन हागा
आहो जोमेयाबु होड़ो गाड़ी को दोगा

पयार:—मेघनाथ भष्माशुर, ओड़ो: बीर असुर
जोतो बीर को हुण्डिन जान, लेल तना को शोभारे
अंगद बीर तला रे लंका पति दुबा कान पान्तीरे

रंगः—ओकोय हेके मेन्ते हपेते काजी तना हो
ओको रिनीः ओकोय हेके ओकोते हिया कना हो
ओकोय हेके मेन्ते लंका पति पान्तीरे दुबा कना हो

मन्दोदरी कह रही है और रावण राजा चुप्पी साधे हैं।
मैं (तुम्हारी) बात सुनकर चकित हूँ कि जिस प्रभु ने जन्म दिया
तुम उसी को मनुष्य कहते हो। मैं जान गई, तुम्हारी मौत आ गई है।

(जो) वेद में लिखा हुआ है, वह दिन पहुँच गया।
इसी कारण मैं चिन्ता से आफत में पड़ी हूँ।
रात-दिन आँखों से आँसू झर रहे हैं।

रावण राजा क्रोधित हो गया और दसों मुख से एक साथ कह रहा है। (बोल उठा)
कि हमलोगों का भाग्य खुल गया (क्योंकि) आदमी और बन्दर जो

भरे है, और सीता देवी को ले जाने के लिए आये हैं।
काली देवी सत्य निकली, इसीलिए वे आये हैं।
सभी छोटे-बड़े भाई-बन्धु जमा हो जाओ !

चलो हम आदमी और बन्दरों को खायेंगे।
मेघनाथ और भस्मासुर और सभी वीर राक्षस
सभी वीर जमा हो गये और वह दृश्य देख रहे हैं।

अंगद वीर बीच में बैठा है और लंकापति कतार में बैठा है
लोग (यह बन्दर) कौन है, इस बात को जानने के लिए फुसफुसा रहे हैं।
कहाँ का है ? कौन है ? कहाँ आया है ? कौन है ?

(ऐसा कह रहे हैं)
लंकापति पंक्ति में बैठा है।

२६१

बीर वीर को हिजुः तना
समुन्दर को थोल तना
ओ ! प्रभु दोला रे दोलारे
सीता केलाङ इदि तुकाइया

नल नोल जोतो गाड़ो
सोबेन होकौ हिया कना
ओ प्रभु दोलारे दोलारे
सीता केलाङ इदि तुकाइया

आ-ए तानीई भगवान
कलाङ प्रभु एपेराङ
ओ प्रभु दोलारे दोलारे
सीता केलाङ इदि तुकाइया

वीर-वीर लोग आ रहे हैं।
समुद्र को बाँध रहे हैं
हे प्रभु ! चलो-चलो,
हम 'दोनों' सीता को पहुँचा दें।
नल-नील आदि सभी बन्दर
सभी आये हैं।
हे स्वामी ! चलो-चलो,
हम सीता को पहुँचा दें।
वे भगवान हैं।
हमलोग (उनसे) झगड़ा नहीं करेंगे।
हे स्वामी, चलो-चलो।
हम सीता को पहुँचा दें।

२६२

पयार-अंगद वीर-ए बिरिद जाना,
विरिद केयाते काजी तना,
ने सभा रेन वीर को अयुमेपेया,
जोतो को अइञा
काटा तुल गिड़ी तापेया,
लंका पति पन्तिरे दुबा कना।

बुदुबाबू काजी तना,
जुइया बिरिद पे
नेया रेगेलेलोःवा
पेड़े-एतापे ।
बोदे जुइया बिरिद पे
नेया रेगे लेलोःवा पेड़े तापे

वीर अंगद उठे और उठकर बोलते हैं (कि)
इस सभा के सभी वीर सुनो ।
सभी मेरा पैर उठाओ । लंकापति कतार में बैठा हुआ है
बुदु बाबू कहते हैं (कि रावण ने कहा)
जाओ उठो ।
इसी में तुमलोगों का बल मालूम होगा ।
जाओ उठो, इसी में हमलोगों की शक्ति मालूम होगी ।

२६३

सोबेन वीर को हुण्डिन जना
आको आको तेको कपाजी तना
गाड़ी काटा लेल मेदरे
चिका लेका सबेयाबु सभा रे
गाड़ी काटा लेल मेद रे ।

रावन राजा गोमके ताबू
नेया काजी कुली याबू
गाड़ी काटा लेल मेदरे
काको दुबा जाति कुपुल पान्तिरे
गाड़ी काटा लेल मेदरे ।

जानओ रे गाड़ी जाति
बानोआ ताको जाति-पाति
गाड़ी काटा लेल मेदरे
अइङदो काइङा लन्दायाको दिशु मरे
गाडी काटा लेल मेदरे ।

बुदु बाबू काजी तना
नेया काजी ताबु हेके तना
गाड़ी काटा लेल मेदरे
बिचारेपे मोंड़े होड़ो मोद्रे
गाड़ी काटा लेल मेद्रे ।

सभी वीर जमा हो गये ।
(वे) आपस में बातचीत करने लगे
(कि) बन्दर के पैर को देखते हुए,
किस तरह सभा में पकड़ेंगे ।
रावण राजा जो स्वामी है
उससे यह बात पूछेंगे
बन्दर के पैर को जानते हुए (यदि पकड़ेंगे)
तो जातिवाले साथ नहीं बैठेंगे ।
आखिर बन्दर की जाति !
जाति-पाति का ठिकाना नहीं है ।
बन्दर के पैर को देखकर
मैं तो नहीं पकड़ूँगा । (यदि पकड़ूँगा तो)
देश में हँसी होगी ।
बुदू बाबू कहते हैं
कि बात यह है कि
बन्दर के पैर का खयाल करके
पाँच आदमी मिलकर विचार करो ।
(कि बन्दर का पैर कैसे उठाया जाय ?)

२६४

रावण राजा-ए हुकुम केन
मेघ नाथ वीर बिरिद जान
काटा तुल काको दाड़ी जान
गियु: तेगे हेन्दे गिड़ी जान
काटा तुल काको दाड़ी जान

वीर-वीर को तुल केना
जेताय काको दाड़ी जान
काटा तुल काको दाड़ी जाना
मोनरे अंगद लंदा तना
सोबेन वीर को चबा जना

लंका राजा-ए बिरिद जान
काटा तुल काये: दाड़ी जान
बुदु बाबू दुरंग बाई तान
काटा तुल काये: दाड़ी जान
गियु: तेगे हेन्दे गिड़ी जान

रावण ने आज्ञा दी ।
(तब) मेघनाथ वीर उठ खड़ा हुआ ।
(लेकिन) कोई भी पैर नहीं उठा सका ।
सभी का चेहरा लाज से काला पड़ गया ।
कोई भी पैर नहीं उठा सका ।
प्रत्येक वीर ने उठाया (कोशिश की)
(लेकिन) कोई भी उठा नहीं सका—
पैर कोई भी उठा नहीं सका ।
अंगद मन ही मन हँसने लगे
कि सारे वीर समाप्त हो गये ।
(तब) लंका का राजा उठा
(लेकिन) वह भी पैर नहीं उठा सका ।
बुदू बाबू कहते हैं कि
(रावण का) मुँह (भी) लाज से काला हो गया ।

२६५

रावण राजा-ए माया केना
रावण तेगे फेरेया कना
अंगद वीर मोनरे बिचार तना
आये: हेके माया धोर
इतुआनाको देशान्तर
उपन वेद रे नेगागे ओलाकान

अंगद वीर-ए काजी तना
इशुइङ तोल केना
लेल तेइङ दंदा जाना
ओकोय हेके अमा: आबा
लंका महाराज बाबु आहो दुबराज

मंदोदरी आड़न्दी केनी:
आयगे नाम तना
ओको सा:रे दुबा कना
जोतो रावणेइङ लेलकेना
नेदे-नेदे साज बाबू आहो दुबुराज

नेका मनते कइङ ठोरना
मोयोद रावणेइङ नुतुमा कना
वेदरे ओलाकान
ओकोआ: ते हिया कान
चिकान कामी काज बाबु आहो दुबराज

मोयोद एंगा अनेक आपू
अइङ दोइङ लेल तान
बुदु बाबू दुरंग तान
चिका लेका सुसार तान
इमीनङ धिराज ।

रावण राजा ने माया फैलाई ।
(जान पड़ने लगा कि सारी लंका)
रावण से ही भरी हुई है ।
वीर अंगद मन में सोचता है
(कि) यही मायावी है
(जिसे) सारी दुनिया जानती है ।
(इसी के विषय में) चारों वेदों में लिखा हुआ है ।
अंगद कहता है—
कि मैंने बहुत पहचानना चाहा,

देख-देख कर हैरान हो रहा हूँ
(कि उनमें से) तुम्हारे पिता लंका के महाराज कौन हैं,
जिसने मन्दोदरी से शादी की है।
मैं उसी को ढूँढ़ रहा हूँ
वह कहाँ बैठा है ?
हे युवराज ! मैंने एक रूपरंग के
बहुत से रावणों को देखा
(युवराज कहता है) मैंने तो ऐसी बात नहीं सुनी है
मैं तो एक ही रावण को जानता हूँ
(वही) वेद में लिखा है।
तुम कहाँ से आये हो
और क्या काम है ?
अंगद कहता है कि
मैंने एक माँ और अनेक पिताओं को देखा।
बुदू बाबू गीत गा रहे हैं
कि एक रानी इतने राजाओं
की सेवा कैसे कर सकती है !

२६६

रावोण राजा-ए काजी तना
अइङ ओकोय का-ए ठोराना
एनाते अनाम काजी तना
साबीमेहो मेघनाथ
हुरङ गिड़ी ताइमे
गाड़ी बोर-ए बइयाकान

आ-ए हेके गाड़ी जाति
बनोः ताको जाति-पाति
हातुरे जोतो को सुसुन तान
साबी मेहो मेघनाथ
हु रङ गिड़ी ताइमे
गाड़ी बोर-ए बइयाकान

ओड़ाः दुआर, काको बाइया
बिर-बिर को होनोर बेड़ाः
दारू रे-ए चंकी बेड़ान तान
साबी मेहो मेघनाथ
हुरङ गिड़ी ताइमे
गाड़ी बीर-ए बइयाकान

हाटिइंयाबु जोड़ा जोड़ा
जोमीयाबु होन गांड़ा
बुदु बाबू दुरंग बाई तान
साबी मेहो मेघनाथ
दुरंग गिड़ी ताइमे
गाड़ी बीर-ए बइयाकान

रावण राजा कहता है
कि मुझको कौन नहीं जानता।
तुम एक-पर-एक कहते जा रहे हो
हे मेघनाथ (इसे) पकड़ लो
(और) उठाकर फेंक दो।
यह बन्दर वीर बनने आया है,
यह तो बन्दर जाति का है।
(जिसकी) जाति-पाँति का ठिकाना नहीं है
(जो) गाँव में नाचते रहते हैं।
हे मेघनाथ, इसे पकड़ लो
और उठाकर फेंक दो।
(यह बन्दर होकर) वीर बनने चला है।
ये घर द्वार तो बनाते नहीं
जंगल-जंगल घूमा करते हैं।
पेड़ पर उछलते-कूदते रहते हैं।
हे मेघनाथ, इसे पकड़ लो
और उठाकर फेंक दो।
बन्दर वीर बनने चला है।
हमलोग (सभी बन्दरों को) दो-दो करके बाँट लेंगे।

और सभी छोटे-बड़े मिलकर खायेंगे।
बुदू बाबू गीत बना रहे हैं।
हे मेघनाद, इसे पकड़ लो
और उठाकर फेंक दो !
यह बन्दर होकर वीर बनने चला है !

२६७

अंगद बीर ताली केना
रावण राजा ए तुम्बिद् जना
बो: रेयाअ: मुकुट चोलङ जान
अंगद बीर हलङ केते गिड़ी तान
बीर को लेल ते दंदा जान

होयो लेका सड़ी तना
बिगिर-बिजिर जुल तना
राम सभा तलारे उयु: जान
चिया चिकना: हेके मेन्ते काजी तान
बीर को लेलते दंदा जान

बिभिषण काजी तान
एन सोमयरे सेटेर लेन
रावन राजा हानरे लड़ाई तान
मुकुट नेरे उयु जान
बीर को लेलते दंदा जान

बुदु बाबु काजी तान
अंगद राम के जोवर तान
अनरेया: समाचार को
जोतो ए काजी तान
बीर को लेलते दंदा जान

वीर अंगद ने ताल ठोंका।
राजा रावण मुँह के बल गिर पड़ा।
और सिर के मुकुट जमीन पर बिखर गये।
वीर अंगद उन्हें उठा-उठाकर फेंक रहे हैं।
सभी वीर (बन्दर) यह देखकर चकित होने लगे

वे मुकुट हवा के समान बज रहे हैं
और झिलमिल चमक रहे हैं।
वे राम की सभा में गिरे
लोग कहने लगे कि हे भाई कौन-सी चीज है ?
वीर देखकर चकित होने लगे।

तब विभीषण कह रहे हैं—
जो उसी समय वहाँ पहुँचे थे।
रावण राजा वहाँ लड़ाई कर रहा है।
और उसकी टोपी यहाँ गिर रही है।
वीर लोग उसे देखकर चकित हो रहे हैं।

बुदू बाबू कहते हैं कि
अंगद राम को प्रणाम कर रहा है।
और वहाँ का समाचार
सभी को बता रहा है।
सभी वीर यह देखकर चकित हो रहे हैं।

२६८

बीरो कन्दार उतुड़ूं केते
गाड़ा ढोड़ा सोम केयाते
ओते आड़ी बु बाई केदा चिकानमेन्ते
रेंगे तनाबु आदिवासी को चिकानमेन्ते

कामी उदाम सियुऊ चालुः
चिमिन कोस्टोते केड़ा उरिः तेबु
कामी तना चिकान मेन्ते
रेंगे तनाब आदिवासी को चिकान मेन्ते

बाबा सुरगुंजा होड़े-ए राम्बाड़ा
मासुरी खसारी चिमिन गुणा ताबु
होबा तना चिकान मेन्ते
रेंगे तनाबु आदिवासी को चिकान मेन्ते

ने दिशुम रेन बलदेव सिंह
लेकान डोन्डो मुण्डा को
सीधा सादा गे मेनाआ बुवा एना मेन्ते
रेंगे तनाबु आदिवासी को एना मेन्ते

जंगल और कन्दराओं को घसा कर
और नदी-नालों को बराबर करके—
जमीन और डांड—मेड़ बनाया,
(लेकिन) हम आदिवासी न जाने क्यों भूखे हैं ?
काम, उद्यम, हल, कुदाल
कितने कष्ट से काढ़ा और बैलों की मदद से—
काम करते हैं।
लेकिन न जाने क्यों हम आदिवासी भूखे हैं ?
(हम) धान, सुरगुजा, कुल्थी, रहर
आदि कितना-कितना उपजाते हैं।
लेकिन न जाने क्यों हम आदिवासी भूखे हैं !
इस देश के सभी मुण्डा लोग
बलदेव सिंह के समान ही अज्ञान हैं
और सीधे-सादे हैं।
इसीलिए हम आदिवासी भूखे हैं।

२६६

हातु-हातु टोला टोला
बिरसा काजी बीरबल
बिरसा काजी लेटेम लुटुई तान
बिरसा काजी रनवान गे

ने दिशुम तलारे हो
सेड़ां ते समपोड़ोन पे
ओल पड़ाव ते होड़ोमो सिंगारेन पे
बिरसा काजी हेड़ेमान गेया

ने कलिकाले रे हो
कल ते दिशुम टेकवा कना
कल ते सेंड़ांते दिशुम सिंगारा कना
बिरसा काजी रेआड़ान गेया

बलदेव सिंह दो-ए काजी तना
डोन्डोते होड़ोमो पेरेया कना
मुण्डा जाति रे अइङगे तयोमा कना
बिरसा काजी गोनोङान गेया

गाँव-गाँव (में) टोला-टोला में,
—बिरसा की वीरता की बात
—बिरसा की मीठी-मीठी बात
दवा बन गई है !—
इस देश के बीच,
—विद्या से अपना साज करो,
—पढ़-लिखकर शरीर का शृंगार करो !
—बिरसा की बात दवा बन गई है।
इस कलिकाल में—
कल (मशीन) से देश टिका हुआ है।
मशीन की बुद्धि से देश का शृंगार हुआ है।
बिरसा की बात शीतल करनेवाली है।
बलदेव सिंह कहता है
मैं अज्ञान से भरा हूँ।
मुण्डा जाति में पीछे पड़ा हूँ।
बिरसा की बात मूल्यवान है।

२७०

रांची रे डिपु मेना:
सयोबे को जोम तना
दाईगो - दाईगो असाम दिशुम
सेनो: सना तान रे

रेलगाड़ी हिजु: लेना
होयो लेका - दौड़ी जदा
दाईगो - दाईगो असाम दिशुम
ने: गे तेबा तान रे

आसाम दिशुम तेबा जना
हुड़िङ ओड़ा: नाम जना
दाईगो दाईगो - सेताअते
कामी गेलङ उड़ुउ तानरे

राँची में डिपू है,
वहाँ साहब लोग रहते हैं।
हे दीदी, हे दीदी, आसाम देश
जाने की (मुझे) इच्छा होती है।
रेलगाड़ी आ गई,
हवा के समान दौड़ रही है।
हे दीदी, हे दीदी, आसाम देश
पहुँच रहा है।
आसाम का देश पहुँच गया,
एक छोटा-सा मकान मिल गया।
हे दीदी, हे दीदी, (वहाँ) सबेरा होते ही,
काम की ही चिन्ता लग गई।

२७१

अम दो माई ओको हातु कुड़ी होन
निरे सेने गो होराम सेना कदा
नेते दोरे होरागे-बानोगा

नेया दो माई बिर होरा
नेया दो माई डाड़ी होरा
निरे तान माई नेते दोरे होरा बनोगा

बिर रेदो कुला मेनाई
डाड़ी रेदो बिङ मेनाई
निरे तान माई नेते दोरे होरा बानोगा

हे लड़की, तुम किस गाँव की रहनेवाली हो ?
(कि) जल्दी-जल्दी दौड़कर रास्ता तय कर रही हो !
इस तरफ तो रास्ता ही नहीं है ।
हे लड़की, यह जंगल का रास्ता है ।
हे लड़की, यह डाड़ी का रास्ता है ।
ओ भागनेवाली लड़की, इधर तो रास्ता ही नहीं है ।
जंगल के रास्ते में बाघ है
(और) डाड़ी के रास्ते में साँप है ।
ओ भागनेवाली लड़की, इधर से तो रास्ता ही नहीं है ।

२७२

ने हातु तलारे
गुलंची बा बा लेना
छैला छोकड़ी दो बाए गुतुतान
लेल केतेइङ दंदा गिड़ी जना

कटा रेदो आंदू मेना:
मयंङ रेदो पड़िया किचिरी
पड़िया किचिरी दो ओटङ तना
लेल केतेइङ दंदा गिड़ी जना

होटो रेदो मुंगा मेना
बो: रेदो बा मेना:
सुपिद चेतन दोयबा बियुर तंदा
लेल केतेइङ दंदा गिड़ी जना

इस गाँव के बीच,
गुलाइची का फूल खिला हुआ है।
सभी छोकरियाँ फूल गूँथ रही हैं।
उनको देखकर हमें विस्मय हो रहा है।
उसके पैर में पैरी है
और कमर में पड़िया साड़ी है।
पड़िया साड़ी फहर रही है।
उन्हें देखकर हमें विस्मय हो रहा है।
उनके गले में मूँगा की माला है
और सिर पर फूल (खोंसे) हैं।
उन्हें देखकर हमें विस्मय हो रहा है।

२७३

लेलेमे सामन्तो हाले ने दोशा सङ्कटो काले
आईङगे चिका जना मराङ लेका चाआलोम मेना
मिली मिली तान चिकान इपिल तुराः कान

चिकाना ते चिका जना पीछे धर्मों हानि जना
अयगं सिदा जना राहेर पिरा ठोगा कान
फण्ड मृत्यु तान चिकान इपिल तुराः कान

नोको तेया सेनो बाबु चिका लेका बंचाबाबु
सिंग बोंगा ध्याना नुतुमे पे भाई
राम राम नुतुमते मराङ चिकान इपिल तुराःकान

आगो हरि, आगो आबा सिंगी आम सेवा
भरोसा अमागाः काजी तना-ए नोवोधोन
अमागाः ले ध्याना-चिकान इपिल तुराः कान

हे सामन्त देखो—इस संकट-काल में यह दशा है।
मैं तो क्या हो गया ; लम्बी पूँछवाला—
झिलमिलाता हुआ, कौन-सा तारा उगा हुआ है !

क्या से क्या हो गया ? पिछला धर्म मिट गया ।
(और पाप) अपने ही आगे आ गया । ग्रह की पीड़ा लगी है ।
(लोग) लगातार मर रहे हैं । (न जाने) कौन-सा तारा उगा है ?

हम लोग कहाँ जायेंगे ? और किस तरह बचेंगे ?
भगवान का ध्यान करो और भगवान का नाम लो !
राम-राम का नाम बहुत बड़ा है । कौन-सा तारा उगा हुआ है ?

हे भगवान, हे पिता, हम रात-दिन तुम्हारी सेवा करें,
तुम्हारा ही भरोसा है । नवधन कहते हैं—
तुम्हारा ही ध्यान है ! कौन-सा तारा उगा है ?

२७४

चि मेन्ते चिका जना
इपिल को चाआलोम जनारे
एना मेन्ते सोबेन होड़ो को विवाद जनारे
ने खलोम हाय चिका जनारे
ने खलोम हाय चिका जनारे

बेश बेकार बिचार बानो:
चेतन रेगे खिस मेना:रे
नोको नोको हातु रे जी को अपाउ तना रे
ने खलोम हाय चिका जनारे
ने खलोम हाय चिका जनारे

पुथी पाञ्जीरे राकब जना
ने खलोम बेजाइङ दुकु मेना: रे
ओ सिंग बोंगा आबा
आम गेम इतुवाना रे
ने खलोम चिका जनारे

हागा होनको विवाद जना
इशु आड़ो: अति जनारे
नोवोधोन ने खलोम
बेजाइङ बो-रो तना रे
ने खलोम चिका जनारे

क्या से क्या हो गया ?
तारों की पूँछ निकल रही है
इसलिए सब लोग (आपस में) लड़ रहे हैं।
इस वर्ष क्या हो गया ?

(लोगों को) भले-बुरे का विचार नहीं है।
ऊपर क्रोध भरा हुआ है।
किसी-किसी गाँव के लोग तो जान लेने को तैयार हैं
इस वर्ष क्या हो गया ?
इस वर्ष क्या हो गया ?

पोथी-पत्रा में लिख दिया गया है,
इस वर्ष बहुत दुःख है।
हे पिता, ईश्वर,
तुम्हीं जानते हो।
इस वर्ष क्या हो गया ?

भाई-बन्धु सब लड़ रहे हैं।
यह बात बहुत बढ़ गई है।
नवधन कहते हैं कि इस वर्ष
बहुत डर लग रहा है।
इस वर्ष क्या हो गया ?

२७५

सोड़ोको दो बाइया कना
मेड़ेदे आटेदा कना
रेल गाड़ी एन रे सेसेन तना
लेल लेल ते अका दन्दा जना

जलकरे जिली मिली
जहाज दो चलाव तना
दाआ चेतन रेगे उपाला कना
लेल लेल ते अकादन्दा जना

सिरमा रेदो होयो गाड़ी
हुंहुकारे साड़ी तना
चेंड़े लेका अपिर बियुर तान
लेल लेल ते अकादन्दा जना

टेली ग्राफ, टेलीफोन, रेडियो ते
काजो सेसेन तना आइङ दो
बलदेव सिंह इपाय डोन्डो गेया
लेल लेल ते अकादन्दा जना

सड़क बनी हुई है,
(उसपर) लोहा बिछा हुआ है ।
उसी पर रेलगाड़ी चलती है ।
उसे देख-देखकर आश्चर्य होता है ।
(समुद्र में) पानी झिलमिलाता रहता है ।
(उसपर) जहाज चलता है ।
वह पानी के ऊपर उतराता है ।
देख-देखकर अचरज होता है ।
आकाश में हवा-गाड़ी
हुंकार की आवाज करती है ।
चिड़िया के समान उड़ती-फिरती है ।
उसे देख-देखकर अचरज होता है ।
टेलीफोन, टेलीग्राफ, रेडियो से
बात आती-जाती है ।
बलदेव सिंह कहते हैं कि मैं तो बहुत मूर्ख हूँ ।
(मुझे) देख-देखकर आश्चर्य होता है ।

२७६

सेन लेनाइङ मोण्डोपोते
एना बोंगा सेवा मेन्ते
होसोड़ो काजो आहो गोम्के काहोइङ इतुवाना
बिंग तेइङ क्रियाना इपाये काजी को काजी तना

होड़ो कोदो रेको होसड़ो मेया
एना काजी तेचीम पातियाना
अमः क्रिया काहोइङ सेना कना
इपाये काजी कोम काजी तना

बुदु बाबु काजी तना
निदा सिंगी सेवा तना
होसड़ो काजी हो गोम्के काहोइङ इतुवाना
इपाये काजी कोम काजी तना

मैं मण्डप गया हुआ था—
इसी देवता की पूजा के लिए।
हे स्वामी, मैं झूठी बात नहीं जानता,
मैं साँप की कसम लूँगा, मैं झूठी बात नहीं जानता!
लोग तुमको ठगेंगे तो
क्या तुम उनकी बातों पर विश्वास कर लोगे!
तुम्हारी कसम, मैं नहीं गया।
तुम झूठी बात कह रहे हो।
बुदू बाबू कहते हैं कि
मैं रात-दिन सेवा करता हूँ।
हे प्रभु, मैं झूठी बात नहीं जानता!
तुम गलत बात कह रहे हो!

२७७

करम चण्डु लेल जना
इली हगाइङ लेलो तना
आइङ लेल हिजुः वा चि काको हिजुः वा

तिसिङ ते काको लेलो: अ:
ओना भाई मेन्ते जेतय काको उड़ुउअ:
तिसिङ ते काको ले लो: अ:

सांगी हागा मेनाआ कोआ
सेन कोबाआतेबु आगुलिया
मेन्तेओ जेतय काको उड़ुउअ:
तिसिंगाते काको लेलो: अ:
ओना भाइ मेन्ते जेतय काको उड़ुउअ:
तिसिंङाते काको लेलो अ:

करम का महीना आ गया,
हड़िया तैयार हो गया,
मुझे देखने आयेंगे या नहीं आयेंगे।
आज तक नहीं दिखाई पड़ा,
इस बात को कोई नहीं सोचता।
(वह) आज तक नहीं दिखाई पड़ा।
भाई लोग बहुत-से हैं ;
लेकिन कोई नहीं सोचता कि
जाकर (उसको) ले आवें।
वह आज तक नहीं दिखाई पड़ा,
इस बात को कोई नहीं सोचता।
वह आज तक नही दिखाई पड़ा।

जरगा

*

सिंगी तुरो होरा-रे सिंगी-बोंगा सी-तना
दुदुगारे तना-दुदुगारे तना
चण्डू मुलुः डारे-रे चण्डू-बोंगा खरा तना
कोंवांसी तना-कोंवांसी तना

सूरज उगने के रास्ते में सूरज देवता हल जोत रहे हैं,
(जिससे) धूल उड़ रही है।
चाँद निकलने के रास्ते में चाँद देवता खेत बना रहे हैं,
(जिससे) कुहासा छाया हुआ है।

२७८

जोनोम कोरोम दिपील रे
अंगिकार तदा दो
अंगिकार तदा दो ओहोरी

अमः नुतुम भगोवान
निदा सिंगी अगुइया
निदा सिंगी अगुइया ओहोरी

मेद लुतूर कटा ती
मूँ मोचाम बैताइञा
मूँ मोचाम बैताइञा ओहोरी

मेहनती केनाम भोगोमान
चिमिन चिमिन दो
चिमिन चिमिन दो ओहोरी

उम्बुलिङ्ग मे चतोमि मे
अलोमे बगीङा दो
अलोमे बगीङा दो ओहरी

हिराइं मे हिराइं मे
अलोमे राड़ाइङा दो
अलोमे राड़ाइङा दो ओहोरी

हे भगवान, जन्म देने के समय ही
हमको स्वीकार कर लिया।
हे भगवान, हम तुम्हारा नाम
रात-दिन लेते रहेंगे।
तुमने आँख, कान, हाथ, पैर,
नाक और मुँह बनाया है।
हे भगवान, तुमने कितना-कितना
परिश्रम किया।
हम पर छाया करो,
हमको अपनी छाया में रखो।
हे भगवान, हमको छोड़ मत दो।
तुम हमारी रक्षा करो
और हमारी देख-भाल करो।
तुम हमको मत छोड़ो।

२७६

सुकन बुरु होराते
संगा हो दिले दोंगोबा लेके लेयोना
संगा हो दिले दोंगोबा लेके लेयोना

मराङ सिली डारते
सारु हो रिसी रिसी रुबु बूआ
सारु हो रिसी रिसी रुबु बूआ

संगा हो दिले दोंगोबा
संगा हो उरालं मे
संगा हो उरालं मे

सारु हो रिसी रिसीया
सारु हो पटुबलं में
सारु हो पटुबलं में

संगा होइङ उरे केना
संगा हो कागे तेबागो
संगा हो कागे तेबागो

सारु होइङ पटुब केना
सारु हो कागे तेबागो
सारु हो कागे तेबागो

सुकन पहाड़ के रास्ते पर—
शकरकन्द की लम्बी-लम्बी लताएँ लहरा रही हैं
बड़े पहाड़ के रास्ते पर—
सारू की छितराई पत्तियाँ गनगना रही हैं।
शकरकन्द (जो) लहरा रहा है
(उस) शकरकन्द को कोड़ लो।
सारू (जो) गनगना रहा है
(उस) सारू को उखाड़ लो।

मैं शकरकन्द कोड़ रहा था,
लेकिन शकरकन्द नहीं मिलता ।
मैं सारू उखाड़ रहा था,
लेकिन सारू नहीं मिलता ।

२८०

लुबुजा बुरु चेतन रे
ने नुलुकुई जोनोः दो
ने नुलुकुई जोनोः दो
जनता बेड़ा लतार रे
नेलमः के केयोः दो
ने लमः के केयोः दो
ओकोए गे जोः जो तेया
ने नुलु कुई जोनोः दो
ने नुलु कुई जोनोः दो
चिमय गे केयोः तेयाः
ने लमः केयोः दो
ने लमः केयोः दो
मुण्डा कोगे जोः जो तेया
ने नुलु कुई जोनोः दो
ने नुलु कई जोनोः दो
सन्तड़ा कोगे केयो तेया
ने लमः केयोः दो
ने लमः केयोः दो

लुबुजा पहाड़ के ऊपर
झाड़ू बनाने की नुलुकुई (घास) है ।
जनता गाँव के नीचे
घर घिसनेवाला (जिससे रगड़कर चिकना किया जाता है)
लामा (फल) है ।
यह झाड़ू की नुलुकुई

किसके झाड़ू देने के लिए है ?
यह घर चिकना करनेवाला लामा
किसके चिकनाने के लिए है ?
यह झाड़ूवाली तुलुकुई
मुण्डाओं के झाड़ू देने के लिए है।
यह चिकनानेवाला लामा
संथालों के चिकनाने के लिए है।

२८१

नइगा नइगा नेयाङ
ओको होड़ो गोड़ तिंगुवा कना
नइगा नइगा अपाङ
चिमय प्रजा गोड़े जपा: गा कना

लेली लेली मेन्दो गोड़े
लखिया लक्ष्मी किङ
तिंगुवा कना

चिनाई चिनाई मेन्दो गोड़े
खेतिया कृषि किङ
जप:गा कना

रबङ्ग तना रेयाड़ा तना
लखिया लक्ष्मी किङ
एला बोलो बेन

जेटे तना तयूर तना
खेतिया कृषि किङ
नेला सोड़ोंबेन

हे मा, देखो तो,
कौन आदमी खड़ा है ?
हे पिता, पहचानो तो
कौन आदमी सटा हुआ है ?

देखने से मालूम होता है,
लक्ष्मी खड़ी है।
पहिचानने से मालूम होता है।
कृषि (की देवी) खड़ी है।
जाड़ा पड़ रहा है, धूप पड़ रही है,
इसलिए लक्ष्मी खड़ी है।
धूल और गर्मी पड़ रही है,
इसलिए कृषि सटी है।

२८२

कुण्डामेरे सलान्दीरे कदललेकन कुड़ी होन तिंगुवा कना
कुण्डामेरे सलान्दीरे जम्बीरा लेकन एरा जपागा कना
जम्बीरा लेकन एरा जपागा कना
लेली लेली मेन्दो गोड़े लखी आद् लक्ष्मी किङ तिंगुवाकना
लखी आद लक्ष्मी किङ तिंगुवाकना

चिनाई चिनाई मेन्दो गोड़े
खेतिया किरिसि किङ जपागा कना
खेतिया किरिसि किङ जपागा कना
रबङ्ग तना रेयाड़ा तना
लखी आद लक्ष्मी किङ एला बोलो बेन

रबङ्ग तना रेयाड़ा तना
खेतिया किरिसिकिङ एला सोड़ोबेन
गोड़ा दो बइया कना
लखी आद् लक्षीमी किङ एला बोलोबेन
कोटा दो अटेदा कना
किङ एला सोड़ो बेन।
खेतिया किरिसि

पिछवाड़े की पिण्डी पर केले के समान
एक स्त्री खड़ी है। केले के समान एक स्त्री खड़ी है।
पिछवाड़े की पिण्डी पर जम्बीरा (एक वृक्ष) के समान
एक स्त्री खड़ी है।

देखते-देखते पता चला कि लखी (लक्ष्मी खड़ी है)
पहिचानते-पहिचानते मालूम हुआ कि खेती
कृषि (की देवी) सटी है।
ठंढ और शीत पड़ रही है।
हे लखी (लक्ष्मी), घर में घुस जाओ।
ठंढ और जाड़ा लग रहा है।
हे खेती (कृषि), अन्दर चली आओ।
गोहार घर बना हुआ है
हे लखी (लक्ष्मी), घुस जाओ।
कोठा बिछा हुआ है।
हे खेती (कृषि) चली आओ।

२८३

बुरु रे गमा लेदा
अलो मैनम उदूबेया
अलो मैनम उदूबेया
बेड़ा रे रम्पी लेदा
अलो मैनम चुण्डू लेया
अलो मैनम चुण्डू लेया
अलो मैनम उदू बेया

मसूरी लं हेरेया
मसूरी लं हेरेया
अलो मैनम चुण्डू लेया
कलाड़ी लै पसिरेया
कलाड़ी लै पसिरेया

मसूरी लं हेरे लेदा
मसूरी दो चियो मियो तान
मसूरी दो चियो मियो तान
कलाड़ी लं पसिर लेदा
कलाडीं दो रेंयो चेयो तान
कलाडीं दो रेंयो चेयो तान

पहाड़ पर पानी बरसा
हे युवती, मत बताओ।
तराई में वर्षा हुई
हे युवती, मत इशारा करो।
हे युवती, मत बताओ
हमलोग मसूर बोयेंगे।
हे लड़की, इशारा मत करो
हमलोग कलाई (एक दाल) छींटेंगे।
मसूर बोये थे
मसूर अंकुर दे रहा है।
कलाई छींटी थी
कलाई जम रही है।

२८४

ओरे एयाङ ओरे अपङ
गड़ा दः तेइङ अतुतना
गड़ा दः तेइङ अतुतना
ओरे एयाङ ओरे अपं
नइमा दः तेइङ बुआले तना
नइमा दः तेइङ बुआले तना
ओरे एयङ ओरे अपङ
डुटु लेकाइङ अतु तना
डुटु लेकाइङ अतु तना
ओरे एयङ ओरे अपङ
मुटु लेकाइङ बुआले तना
मुटु लेकाइङ बुआले तना
मरे बाबु मरे बच्छा
गड़ा काड़े रे सबे दाड़िन मे
गड़ा काड़े रे सबे दाड़िन मे
मरे बाबु मरे बच्छा
नइमा नचल रे रुचब दड़िन मे
नइमा नचल रे रुचब दड़िन मे

ओरे एयङ ओरे अपं
गड़ा काड़े दो सिदे जना
गड़ा काड़े दो सिदे जना
ओरे एयङ ओरे अपं
नइमा नचल दो चोंगाम जना
नइमा नचल दो चोंगाम जना

हे मा, हे बाप,
मैं नदी की धारा में बह रहा हूँ।
हे मा, हे बाप,
मैं नदी के पानी में उतरा रहा हूँ।
हे मा, हे बाप,
मैं लकड़ी की कुन्दे की तरह बहा जा रहा हूँ।
हे मा, हे बाप,
मैं लकड़ी की गाँठ की तरह बहा जा रहा हूँ।
हे बेटा, हे बच्चा,
नदी के कास को पकड़ कर (अपने को) संभालो!
हे बेटा, हे बच्चा,
नदी की घास को पकड़ कर बचो।
हे मा, हे बाप,
नदी का कास तो टूट गया।
हे मा, हे बाप,
नदी की घास तो उखड़ गई।

२८५

मेतामा मिसिंग जा मेतामा को मिसिञा
किताव काए गलाँङ चरियो काए चटागा
मेतामा को मिसिग् आ

मेतामा को बारेंजा मेतामा को बारेंजा
अड़ीयो काए बइयाना कुन्डीयो काय बइयाना
मेतामा को बारेञा

उदुबा कोमा बारेंजा उदुबा कोमा बारंजा
पिड़गी चेतन किता बाँड़ी उदुबा कोमा बारेंजा
चुण्डूला कोमा मिसिञा
चूण्डुला कोमा मिसिञा
डीह लतर बाड़ी सोकोड़ा

चुण्डूला कोमा मिसिजा
बाब तसिम सेनो: रेदो मिसिञा
बाबातसिम-सेनोः रेदो मिसिञा

सिउते बिरिद रेदो बारेंञा
हाड़ा दोला गुण्डी दोला
मेने मेया बारेंञा

हे बहन, तुम्हारे बारे में तो कहते हैं (कि)
न चटाई बुनती है न तीली फाड़ती है।
हे भाई तुम्हारे, बारे में तो कहते हैं (कि)
न मेड़ बनाता है न 'दर' बनाता है।
हे भाई, (उनको) बतादो कि
बरामदे की दीवार पर चटाई की पट्टी रखी हुई है।
(इसी से हमारा काम समझ लें)
हे बहन, (उनको)
गाँव के नीचे की बारी सोकरा को दिखा दो।
(इसी से हमारा काम जान जाय)
हे बहन ! जब धान पसारने जाना
तब 'लीरे लीरे' (बकरियों को हटाने के लिए)।
और 'सोरे सोरे' (मुर्गियों को भगाने के लिए) कहना।
हे भाई, जब हल जोतने जाना (तब)
'चलो बैल, चलो बैल' बोलते हुए जाना।

२८६

डिण्डा तान जरमा तान
बो चेतन गोड़े सुनुम लिंगी तान
बो चेतन गोड़े सुनुम लिंगी तान

डिण्डा तान जरमा तान
कटा लतर गोड़ पोला साड़ी तान
कटा लतर गोड़े पोला साड़ी तान

ओड़: जान दुवर जान
किड़की दुवर गोड़े बोंगा बोलोवा
किड़की दुवर गोड़े बोंगा बोलोवा

ओड़: जान दुवर जान
राजा टका गोड़े देना दुकुवा
राजा टका गोड़े देना दुकुवा

ओड: जान दुवर जान
बो: चेतन गोड़े सुनुम अँजेदो:
बो चेतन गोड़े सुनुम अँजेदो:

ओड़: जान दुवार जान
कटा लतर गोड़े पोला नोसोरो
कटा लतर गोड़े पोला नोसोरो

(कौमार्य-काल)

जब कुंवारा था, जब अविवाहित था,
तब सिर से तेल चूता था ।
जब कुंवारी थी तब
पर की अँगूठी बजा करती थी ।
जब घर-द्वार हो गया,
तब खिड़की द्वार के रास्ते भूत घुसता है ।
जब घर-द्वार हो गया,
तब राजा का कर देने में कष्ट होता है ।
जब घर-द्वार हो गया,
तब सिर का तेल सूख गया ।
जब घर-द्वार हो गया,
तब पैर की अँगूठी खिसक गई (गिर गई) ।

२८७

एँगाम राचा अपुम राचा जोजोसकम उरुड़ु तना
जोजो सकम अरुड़ु तना

एँगाम राचा अपुम राचा उली सकम गसर तना
उली सकम गसर तना

मरे मइना जोगे लेकामे जोजो सकम उरुड़ु तना
जोजो सकम उरुड़ु तना

मरे मइना टपा लेकामे उली सकम गसर तना
उली सकम गसर तना

तरा कोचाई जोगे केना-तरा कोचा उरुड़ु तना
तरा कोचा उरुड़ु तना

तरा कोचाई टपा केना तरा कोचा गसर तना
तरा कोचा गसर तना

माँ के आँगन में, बाप के आँगन में,
इमली की पत्ती गिर रही है।
माँ के आँगन में, बाप के आँगन में,
आम की पत्ती झड़ रही है।
हे बेटी, इमली की पत्ती जो झड़ रही है,
उसको झाड़ू दे दो।
हे बेटी! आम की पत्ती जो झड़ रही है
उसको बुहार दो।
एक तरफ झाड़ू दिया तो
दूसरी तरफ (इमली की पत्ती) गिरकर भर गई।
एक किनारे बुहारा तो
दूसरे किनारे आम की पत्ती झरकर भर गई।

२८८

गड़ा जपः जपःते कदल को रोवा तदा
कदल को रोवा तदा हयरीया

नइमा नसोब नसीबते जम्बिरा को पोवा तदा
जम्बिरा को पोवा तदा हयरीया

कदल को रोवा ताद् कदल डिण्डी जना
कदल डिण्डी जना हयरीया

जम्बिरा को पोवा ताद् जम्बिरा दो जरमा जना
जम्बिरा दो जरमा जना हयरीया

डिण्डा कुड़ी रोवा लेदा कदल दो डिण्डा जना
कदल दो डिण्डा जना हयरीया

जरमा कुड़ी पोवा लेदा जम्बिरा दो जरमा जना
जम्बिरा दो जरमा जना हयरीया

नदी के किनारे-किनारे केला रोपा गया है।
हाय ! केला रोपा गया है।
नाली के किनारे-किनारे जम्बीरा लगाया गया है।
हाय, जम्बीरा लगाया गया है।
केला जो रोपा गया है (वह) बंझा हो गया।
हाय, केला बंझा हो गया।
जम्बीरा जो लगाया गया है (वह) बंझा हो गया।
हाय, जम्बीरा बंझा हो गया।
कुँवारी लड़की ने लगाया था, इसलिए केला बंझा
हो गया। केला बंझा हो गया।
अविवाहित लड़की ने रोपा था, इसलिए जम्बीरा
बंझा हो गया। जम्बीरा बंझा हो गया।

२८६

ढोएसा होरा साने दो साने सेले बोलेया
कुकजा होरा सकम दो सकम रितीपितिया

साजें सेले बोलेया मगे लेगे मोनिङा
सकम रितिपितिया हेगे लेगे सनाइयां

सान सेले बोलेया दिया लेका जुलोवा
सकम रितिपितिया डुवा लेका पुडुगोवा

दिया लेका जुलोरे सुकुला को मेनेया
डुबा लेका पुडुगोरे जोरोवा को मेनेया

अइङ दुकु नगेन गे सुकुला को मेनेया
अइङ नन्दोड़ो नगेन गे जोरोवा को मेनेया

ढ़ोयसा के रास्ते में जलावन की लकड़ी कितनी
सीधी-सीधी है।
कुकज के रास्ते में पत्ती कितनी अच्छी-अच्छी है।
सीधी-सीधी लकड़ी को काट लेने की इच्छा होती है।
अच्छी-अच्छी पत्तों को तोड़ लेने को जी चाहता है।
(वह) सीधी-सीधी लकड़ी दिया के समान जलती है।
(वह) चिकनी-चिकनी पत्तों से कटोरा के समान
दोना बनाता है।
दिया के समान जलने पर भी कहते हैं कि धुँआ
निकल रहा है। कटोरे के समान दोना बनाने
पर भी, कहते हैं कि चू रहा है।
हमको दुःख देने के लिए ही धुँआ निकलता है,
ऐसा कहते हैं।
हमको सताने के लिए ही चू रहा है,
ऐसा कहते हैं।

२६०

जेटे सिंगी तेबा लेना जेटे दुड़ा ओटाङ लेना।
जेटे दुड़ा ओटांङ लेना

जारगी दः तेबा लेना जारगी लोसोद पसीरे लेना
जारगी लोसोद पसीरे लेना

ओकोएगे सीतना जेटे दुड़ा ओटांङ लेना
जेटे दुड़ा ओटांङ लेना

चिमायागे खरा तना जारगी लोसोद पासीरे लेना
जारगी लोसोद पसीरे लेना

गतियेगे सो तना जेटे दुड़ा ओटांङ लेना
जेटे दुड़ा ओटांङ लेना

संगाम गे खरा तना जारगी लोसोद पासीर लेना
जारगी लोसोद पासीर लेना

गर्मी का दिन पहुँच चुका, गर्मी की धूल
उड़ने लगी है।
गर्मी की धूल उड़ने लगी है।
बरसात का मौसम पहुँच गया,
बरसात की कीचड़ छिटकने लगी है।
बरसात की कीचड़ छिटकने लगी है।
कौन हल चला रहा है (जिससे)
गर्मी की धूल उड़ने लगी है।
कौन पट्टा मार रहा है (जिससे)
बरसात की कीचड़ उछलने लगी है।
तुम्हारा साथी ही हल चला रहा है (जिससे)
गर्मी की धूल उड़ने लगी है।
तुम्हारा संगी ही पट्टा मार रहा है (जिससे)
बरसात की कीचड़ उछलने लगी है।

२६१

सोमय सोमय रे हायरे सोमय सेनोः तना
हायरे सोमय सेनोः तना

नुसाड़ा नुसाड़ा रे हायरे नुसाड़ा बिरिद तना
हायरे नुसाड़ा बिरिद तना

ससाङ्ग सुनुम नाकि सुपिद, हाय रे सोमय
सेनोः तना

हाय रे सोमय सेनो तना
अन्दु सकोम सका साड़ी हायरे नुसाड़ा बिरिद तना

हाय रे नुसाड़ा बिरिद तना
एयाङ गोड़े बापारी गोड़े हायरे सोमय सेनोः तना
हायरे सोमय सेनो:तना
एयांङ गोड़े बापारी गोड़े हायरे नुसाड़ा
बिरिद तना

हायरे नुसाडा बिरिद तना
समय ! समय ! हाय, समय चला जा रहा है।
हाय, समय चला जा रहा है।
जवानी, जवानी, हाय जवानी बीत रही है।
हल्दी, तेल, कंघी, चोटी, हाय समय चला जा रहा है।
पयरी चूड़ी, सखा (गहना विशेष), साड़ी
हाय समय चला जा रहा है।
हाय मा, हाय बाप ! समय चला जा रहा है।
हाय, मा, हाय बाप ! जवानी बीत रही है।

२६२

सुकन बुरु होराते
चिको सेके सेके अजा बापूड़ी
चिको सेके सेके अजा बापूड़ी

मरंङ्ग सिली डारेते
मेरको रोलो रोलो अजा बापूड़ी
मेरको रोलो रोलो अजा बापूड़ी

सुकन बुरु होराते
जिकी सेके सेके अजा बापूड़ी
जिकी सेके सेके अजा बापूड़ी

मरङ्ग सिली डारेते
हरमू रोलो रोलो अजा बापूड़ी
हरमू रोलो रोलो अजा बापूड़ी

दोला तेबु लेलेलीया
जिकी सेके सेके अजा बापूड़ी
जिकी सेके सेके अजा वापूड़ी

दोला तेबु चिनालिया
हरमू रोलो रोलो अजा बापूड़ी
हरमू रोलो रोलो अजा बापूड़ी

सुकन पहाड़ के रास्ते पर, हे पिता
क्या 'सेके-सेके' (की आवाज में) बज रहा है ?
बड़ी चट्टान के मार्ग में हे पिता,
क्या 'रल-रल' की आवाज में बज रहा है ।
सुकन पहाड़ के रास्ते में हे पिता,
सेही 'सेके-सेके' करके बज रहा है ।
बड़ी चट्टान के मार्ग में हे पिता,
हरमू (एक छोटा जनवार) 'रल-रल' की आवाज में बज रहा है ।
चलो 'सेके-सेके' बजानेवाले
सेही को देख आवें ।
चलो 'रल-रल' बजानेवाले
हरमू को देख आवें ।

२६३

बुरु दिसुम कूड़ी को
बुरु लमः खण्डा तेकोवा
बुरु लमः खण्डा तेकोवा

गड़ा दिसुम कोड़ा को
दिरी कड़ाकोम फिरी तेकोआ
दिरी कड़ाकोम फिरी तेकोआ

दोला तेबु लेले लेकोआ
बुरु लमः खण्डा तेकोवा
बुरु लमः खण्डा तेकोआ

दोला तेबु चिना लेकोआ
दिरी कड़ाकोम फिरी तेकोआ
दिरी कड़ाकोम फिरी तेकोआ

आले दोले लेले लेद कोवा
बुरु लमः खण्डा तेकोआ
बुरु लमः खण्डा तेकोआ

अले दोले चिना लेद कोवा
दिरी कड़ाकोम खण्डा तेकोआ
दिरी कड़ाकोम खण्डा तेकोआ

पहाड़ी देश की स्त्रियाँ,
पहाड़ी लमः को तलवार बनाये रहती हैं।
नदी किनारे के पुरुष
पहाड़ी केकड़े को ढाल बनाये रहते हैं।
चलो तलवार के समान
पहाड़ी लमः को देखने चलें।
चलो ढाल के समान
पहाड़ी केकड़े को देखने चलें।
हमलोगों ने तो
तलवार के समान पहाड़ी लमः
को देख लिया।
हमलोगों ने तो
ढाल के समान पहाड़ी केकड़े
को देख लिया।

२६४

बिरदो बिरदो लो तना
कुला बेगा निरे निरे मे
कुला बेगा निरे निरे मे

गड़ा दो गड़ा दों अंजेद तना
अयरा बेगा होजोर होजोर मे
अयरा बेगा होजोर होजोर मे

सार कापी मेया को
कुला-बेगा निरे निरे मे
कुला-बेगा निरे निरे मे

ढाकी ढटोम मेया कोवा
अयरा बेगा होजोर होजोर में
अयरा बेगा होजोर होजोर में

जंगल तो जल रहा है।
हे बाघ, जल्दी-जल्दी भागो।
बाघ, तुम जल्दी-जल्दी भागो।
नदी तो सूख रही है।
हे अयरा (एक मछली) ! जल्दी-जल्दी भागो।
हे अयरा, तुम जल्दी-जल्दी भागो।
हे बाघ, (लोग) तुमको छेद-काट देंगे।
जल्दी-जल्दी भागो।
हे अयरा (लोग) तुमको पानी उलीचकर मार देंगे।
जल्दी-जल्दी भागो।

२६५

सिसिका बुरु रे
सिसिकाए गमाया
सिसिकाए गमाया हायरी
जमजमका बेड़ा रे
जमजम्काए रम्पीया
जमजम्काए रम्पीया हायरी
सिसिकाए गमाया

ओकोरेलं सुरुना
ओकोरेलं सुरुनाइरे
जमजम्काए रम्पीया
चिमय रेलं दनाँङेन
चिमय रेल दनांङेन

एंगाम रचा तुड़ुसी
तुड़ुसो रेलं सुरुना
तुड़ुसी रेल सुरुना नाइरे

अपुम रचा बराँगू
बराँगू रेलं दनाँङेन
एंगाम रचा तुड़ुसी
जोजोरो गेया, जोजोरो गेया नाइरे
अपूम रचा बराँगू
लिलिगो गेया
लिलिगी गेया

पहाड़ पर जोर से पानी बरस रहा है।
घाटी में जोर से आँधी चल रही है।
पानी बरस रहा है तो हम दोनों कहाँ बचेंगे !
आँधी चल रही है तो हम दोनों कहाँ छिपेंगे !

तुम्हारी मा के आँगन में तुलसी है।
तुलसी के नीचे हमलोग बचेंगे।
तुम्हारे बाप के घर में बराँगू है (एक फूल)
बराँगू के नीचे हमलोग छिपेंगे।

मा के आँगन का तुलसी चूता है
हाय रे! चूता है।
बाप के आँगन का बराँगू झुक जाता है
हाय रे, झुक जाता है।

२६६

हेसा चुटी गोंगोर सालु
रिदे लेकाए ओरोङेया
बाड़े लतारे बड़ेजा पियूँ
तकुई लेकाए बनामेया
रिदे याचि ओरोङेया
रिदे लेकाए ओरोङेया
तकुई याचि बनामेया
तकुई लेकाए बनामेया

दोला तेबु लेले लीया
रिदे लेकाए ओरोङेया
दोला तेबु चिना लीया
तकुई लेकाए बनामेया
अले दोले लेले लीया
रिदे लेकाए ओरोङेया
अले दोले चिना लिया
तकुई लेकाए बनामेया

पीपल के ऊपर का सालु (पक्षी)
पीसने की आवाज-जैसा बजाता है।
बड़ के नीचे का मीरु (पक्षी)
तकुआ के समान भनभनाता है।
पीसने के समान जो बजाते हो (तो)
पीसते हो या बजाते हो ?
तकुआ के समान जो भनभनाते हो
(सो) तकुआ चलाते हो या भनभनाते हो ?
चलो तो, हमलोग पीसने के समान जो
बजा रहा है (उसे) देख आवें।
चलो तो हमलोग तकुआ चलाने के समान जो
भनभना रहा है (उसे) देख आवें।
हमने पीसने की आवाज के
समान बजाना देख लिया।
हमने तकुए के समान भनभनाना देख लिया।

२६७

बोलोमे उरु बोलोमे
ओड़: लेम लेम निरजा बोलोमे
सोड़ोमे उरु सोडोमे
चतोम रोसोमड़: चाम चाम नोजोर सोड़ोमे

बोलो दोरेइङ बोलोवा
चिका लेका गोईइङ बोलोवा
सोड़ो दोरेइङ सोड़ोवा
मेरे को लेका होइङ सोड़ोवा

चिका लेकाइङ बोलोवा
तरा कोना कोमिनिग दो
मेरे को लेकाइङ सोड़ोवा
तरा कोचा होंजारी दो

उस लकड़ी की छपरी में जल्द घुस जाओ।
उस बाँस की छतरी के समान घर में जल्द घुस जाओ।
घुसने को तो घुसेंगे, लेकिन किस तरह घुसेंगे!
समाने को तो समायेंगे, लेकिन किस तरह समायेंगे?
किस तरह घुसेंगे उसके कोने में छोटे भाई की पत्नी है!
किस तरह घुसेंगे उसके कोने में मेरा ससुर है!

२६८

कुन्दुरु कुन्दुरु रे कुन्दुरु ओमोन लेना
कुन्दुरु ओमोन लेन
सेयाड़ी सेयाड़ी रे सेयाड़ी बुसाड। लेना
सेयाड़ी बुसाड लेना

चिको द:ते कुन्दुरु ओमोन लेना
कुन्दुरु ओमोन लेना
मेरे को द:ते सेयाड़ी बुसाड लेना
सेयाड़ी बुसाड लेना

जरगी द: ते कुन्दुरु ओमोन लेना
कुन्दुरु ओमोन लेना
असाड़ा द:ते सेयाड़ी बुसाड लेना
सेयाडी बुसाड़ लेना

जुड़ी जुड़ी गे कुन्दुरु ओमोन लेना
कुन्दुरु ओमोन लेना
जोता जोता गे सेयाड़ी बुसाड लेना
सेयाड़ी बुसाड लेना

झाड़ी-झाड़ी में कुन्दरू जमा था
साफ-साफ जगहों में सेयाड़ी उगा था।
किस पानी से कुन्दरू जमा था।
किस पानी से सेयाड़ी उगा था!
बरसात के पानी से कुन्दरू जमा था।
आसाढ़ के पानी से सेयाड़ी उगा था।
कुन्दरू जोड़ा-जोड़ा जमा था।
सेयाड़ी जोड़ा-जोड़ा उगा था।

२६६

ओकोरे लिपीरे लीपी ओङ लं दो
लिपी ओङ लं
चिमाए रे लिपी रोशोम लं दो
लिपी रोशोम लं

नयल गड़ा रे लिपी ओङ: लं दो
लिपी ओङ लं
डेला बुरु रे लिपी रोशोम लं
चेतन रिंबिल दो लिपी गुले



मुण्डा-युवक—करमा-नृत्य की भावमयी मुद्रा में



कुछ मुण्डा-ग्रामीण

लतार लारी दो लिपी अलाय बलाय
लिपी अलाय बलाय
गपाए गमाया लिपी
गपाओ बानोः लिपी गपाओ बानोः
तिकिन सिंगी दो लिपी
गमा लेदा लिपी गमा लेदा
तरा सिंग बेड़ारे लिपी
रम्पी लेदा लिपी रम्पी लेदा
नयल गड़ा दो लिपी
पेरेः जना लिपी पेरे जान
डेला बुरु दो लिपी
लेयांग जान लिपी लेयांग जान

हे लिपि, (कुररी) हमलोगों का घर कहाँ है ?
हे लिपि, हमलोगों का आश्रय कहाँ है ?
हे लिपि, हमलोगों का घर हराई (हल चलने से जो नाली बनती है) की नदी में है !
हे लिपि, हमलोगों का आश्रय (खेत के) ढेले के पहाड़ पर है ।
हे लिपि, ऊपर बादल उमड़-घुमड़ रहा है ।
हे लिपि, नीचे बदलियाँ व्याकुल हो रही हैं । (बरसने के लिए) ।
हे लिपि, आज दोपहर में ही पानी बरस गया ।
हे लिपि, आज तीसरे पहर वर्षा हो गई ।
हे लिपि, हराई की नदी भर गई ।
हे लिपि, ढेले का पहाड़ गल गया ।

३००

निकु दोरे दो निकु दोरे दो अगामारी को-चिको
गेयोन गेयोना ? अगामारी कोचिको गेयोन गेयोना
निकु दोरे दो निकु दोरे दो दरोमदा कोचिको

लेपा लडिया, दरोमदा को-चिको लेपा लडिया
उदुबाकोपे उदुबाकोपे जोजो को जुम्बुलय
उदुबा कोपे, जोजो को जुम्बुलय उदुबा कोपे ।

चुण्डूला कोपे चुण्डूला कोपे
उली को अम्बाराय चुण्डूला कोपे
उली को अम्बाराय चूण्डूला कोपे

काको सुकु जान काको सुकु जान
जोजो को जुम्बुलय काको सुकु जान
जोजो को जुम्बुलय काको सुकु जान

काको नपाय जान काको नपाय जान
उली को अम्बाराय काको नपाय जान
उली को अम्बाराय काको नपाय जान

ये सब कौन हैं ? घों-घों करनेवाले घाँटो पक्षी हैं ।
ये सब कौन हैं ? फदफदाते हुए बरसाती
दारोम पक्षी हैं ।
इनको बता दो, इमली का झुण्ड बता दो ।
इनको बता दो, आम की अमराई बता दो ।
इनको इमली का झुण्ड पसंद नहीं आया ।
इन्होंने आम की अमराई को पसंद नहीं किया ।

३०१

एकासी को पिड़ी रे सेंगेल दः दोए गमा लेदा
सेंगेल दः दोए गमा लेदा

तेरासिको बादी रे बंडा जेटे दोए रम्पी लेदा
बंडा जेटे दोए रम्पी लेदा

इचा बा कुड़ी किं सेंगल द: तेकिं लोचोटे: लेना
सेंगेल द: तेकिं लो चोटे: लेना

मुरुद बा कोड़ा किं बँडा जेटे सेंगेल तेकिं
लो चोटेए लेना
बँडा जेटे सेंगेल तेकिं लो चोटेए लेना

एकासी मैदान में आग की वर्षा हुई थी।
तेरासी की धूप में मृगशिरा की धूप बरसी थी।
इचा फूल (सी) दो युवतियाँ उस आग में झुलस गईं।
पलाश फूल (से) दो युवक उस ज्वाला में अधजले हो गये।

३०२

होराते ओको कुड़ी सेना कदा
पीपी गोड़े पोला सड़ी तान
पी पी गोड़े पोला सड़ी तान

डारेते चिमय कोड़ा नोजोर कदा
जाम जाम गोड़े टुइला सड़ी तान
जाम जाम गोड़े टुइला सड़ी तान

होराते गतिं कुड़ी सेना कदा
पीपी पोला-सड़ी तान

पी पी पोला सड़ी तान
डारेते सँगाम कोड़ा नोजोर कदा
जाम-जाम टुइला सड़ी तान
जाम-जाम टुइला सड़ी तान

ओतोङीगे मोनिङा पी पी पोला सड़ी तान
पी पी पोला सड़ी तान
जारेने सनाइञा जाम जाम टुइला सड़ी तान
जाम जाम टुइला सड़ी तान

रास्ते से कौन लड़की चली है ,
जिसके पैर की अँगूठी बज रही है !
रास्ते से कौन युवक चला है ,
जो टुइला बज रहा है !

रास्ते से प्रेयसी चली है,
जिससे अँगूठी बज रही है ।
रास्ते से प्रिय चला है,
जो टुइला की आवाज हो रही है ।

अँगूठी तो बज रही है,
उसका पीछा करने की इच्छा होती है ।
टुइला तो बज रहा है,
उसके पीछे जाने का जी चाहता है ।

३०३

सिंगी तुरोः होरा रे ओको होड़ो सी तना
दुदुगारे तना—दुदुगारे तना

चण्डू मुलुः डारेरे चिमाय प्रजा खरा तना
कोवाँसी तना—कोवाँसो तना

सिंगो तुरो होरारे सिंगी बोंगा सी तना
दुदुगारे तान—दुदुगारे तना

चण्डू मुलुः डारे रे चण्डू बोंगा खरा तना
कोवाँसी तना—कोवाँसी तना

दोला तेबु लेले लीया सिंगी बोंगा सी तना
दुदुगारे तना—दुदुगारे तना

मारे तेबु चिना लीया चण्डू बोंगा खरा तना
कोवाँसी तना—कोवाँसी तना

सूरज उगने के रास्ते में कौन आदमी हल
जोत रहा है ? जो धूल उड़ रही है।
चाँद उगने के मार्ग में कौन आदमी
खेत बना रहा है ? जो धूल छायी हुई है।
सूरज उगने के रास्ते में सूरज देवता हल
जोत रहे हैं ! (जिससे) धूल उड़ रही है।
चाँद निकलने के रास्ते में चाँद देवता
खेत बना रहे हैं ! (जिससे) धूल छा रही है !
चलो, चलकर देखें (कि) सूरज देवता हल जोत
रहे हैं, (जिससे) धूल उड़ रही है।
चलो, चलकर देखें (कि) चाँद देवता
खेत बना रहे हैं, जिससे धूल छा रही है।

३०४

बुरु तेइङ सेन केना बुरु चेतन लुदाम बा
गोले दुराङा
बुरु चेतन लुदाम बा गोले दुराङा

हातु तेइङ रुवाड़ा लेना हातु तला केओरा
लन्दा जागरा
हातु तला केओरा लन्दा जगारा

दोला तेबु लेले लीया बुरु चेतन लुदाम बा
गोले दुराङा
बुरु चेतन लुदम बा गोले दुराङा

मर तेबु चिना लीया हातु तला केओरा
लन्दा जगारा
हातु तला केओरा लन्दा जगारा

मैं जंगल गया था, पहाड़ पर लुदम फूल
सिसकारी मारता और गाता है।
मैं गाँव में लौट आया, वहाँ गाँव के बीच
केवड़ा फूल हँस-बोल रहा है।

चलो चलकर देखें (जो) पहाड़ पर लुदम फूल
सिसकारी मारता और गाता है।
चलो चलकर देखें (जो) गाँव में केवड़ा
फूल हँस-बोल रहा है।

३०५

दाईना नीरादाई कुईली सड़ीते सड़ीन मे
कुइलो सड़ीते सड़ीन मे

दाईना नीरादाई रंगा सड़ीते पायलान मे
रंगा सड़ीते पायलान मे

दाईना नीरादाई संगाम को बिरिद् तना
संगाम को बिरिद् तना हायरी

दाईना नीरादाई गतिम को सेनो: तना
गतिम को सेनो: तना हायरी

दाईना नीरादाई-इन्दी दोको रकाब केदा
इन्दी दोको रकाब केदा हायरी

दाईना नीरा दाई-जतरा दोको हाड़गू केदा
जतरा दोको हाड़गू केदा

हे नीरा दीदी, कुईली साड़ी पहनो।
हे नीरा दीदी, लाल साड़ी का आँचल लगाओ।
हे नीरा दीदी, तुम्हारी सखियाँ जा रही हैं।
हे नीरा दीदी, तुम्हारी सहेलियाँ आ रही हैं।
हे नीरा दीदी, लोग इन्द चढ़ा रहे हैं।
हे नीरा दीदी, लोग यात्रा उतार रहे हैं।

३०६

बोंगा बुरु रेगा एयङ बोंगा बा
दोगा एयङ बोंगा बा
राजा बेड़ा रेगा अपङ राजा डाली
दोगा अपंङ राजा डाली

तारा मोय तेया एयङ बोंगा बा
दोगा एयंङ बोंगा बा
तरा डाली तेया अपंङ राजा डाली
दोगा अपंङ राजा डाली

हलङ लेकामे माईना बोंगा बा
दोना माईना बोंगा बा
तुम्बाल लेकामे माईना राजा डाली
दोना माईना राजा डाली

गुतू लेकामे माईना बोंगा बा
दोना माईना बोंगा बा
गलङ लेकामे माईना राजा डाली
दोना माईना राजा डाली

हे मा, देवता के पहाड़ पर पूजा का फूल है।
हे मा, चलो पूजा का फूल है।
हे पिता, राजा की तराई में राजा फूल है।
हे पिता, चलो राजा फूल है।

हे मा, कुछ पूजा के फूल में कली लगी है।
हे मा, चलो पूजा फूल है।
हे पिता, कुछ राजा फूल खिला हुआ है।
हे पिता, चलो राजा फूल है।

हे बेटी, पूजा के फूल को चुनकर देखो।
हे बेटी, चलो पूजा का फूल है।
हे बेटी, राजा फूल को उठाकर देखो।
हे बेटी, चलो राजा फूल है।

हे बेटी, पूजा के फूल को गूँथ लो।
हे बेटी, चलो पूजा का फूल है।
हे बेटी, राजा के फूल का गुच्छा बना लो
हे बेटी, चलो राजा फूल है।

३०७

ओको कोरे माइनम इनुं केना किचिरी दो
दुड़ा जना
किचिरी दो दुड़ा जना

चिमायेरे माइनम खेलाड़ी केना गामेछा दो
रंगा जना
गामेछा दो रंगा जना

गाटे तलारे इनुंग केना किचिरी दो दुड़ा जना
किचिरी दो दुड़ा जना

कड़की तलारे खेलाड़ी केना गामेछा दो रंगा जना
गामेछा दो रंगा जना

हे लड़की, तुम कहाँ-कहाँ खेलती रही ?
(जो) तुम्हारा कपड़ा मैला हो गया।
हे लड़की, तुम कहाँ-कहाँ नाचती रही ?
जो तुम्हारा गमछा रंग गया।
जानवरों के झुण्ड में मैं खेलती रही,
(जिससे) मेरा कपड़ा धूमिल हो गया।
जानवरों के हार में मैं नाचती रही,
(जिससे) मेरा गमछा रंगा गया।

३०८

जरापी जरापी गतिङ को सेनो: तना
देना एरा पिटी उड़ुअङ मे
देना एरा पिटी उड़ुअङ मे

जरापी जरापी संगाइं को बिरिद् तना
देना एरा हड़का पयार मे
देना एरा हड़का पयार मे

पिटी रेदो ओनोल बोतोए मेना ताईं
देना एरा पिटी उड़ुअइं मे
देना एरा पिटी उड़ुअइं मे

हड़का रेदो रंगा साड़ी मेना ताई
देना एरा हड़का पयार मे
देना एरा हड़का पयार मे

पिटी रेयोइं लेले कैना
पिटी रेयो बनोआ
पिटी रेयो बनोआ

हड़का रेओ चिना केना
हड़का रेयो बनोआ
हड़का रेयो बनोआ

जरापी नाचने के लिए हमारे साथी जा रहे हैं,
हे प्रिये, पेटी निकाल दो !
जरापी नाचने के लिए हमारे साथी निकल रहे हैं।
हे प्रिये, हड़का (बाँस का बक्स) खोल दो !
पेटी में पाढ़वाला करया है
हे प्रिये, पेटी निकाल दो !
हड़का में रंगीन साड़ी है,
हे प्रिये, हड़का खोल दो !
पेटी को देखा,
पेटी में (पाढ़वाला करया) नहीं है।
हड़का को देखा।
हड़का में रंगीन साड़ी नहीं है।

३०६

सुकन बुरु डेरे सांगा, का-ना मिसिंग का-ना इपीसीन
का-ना मिसिंग का-ना इपीसीन

मरांग सीली सेतोम दः, का-ना मिसिंग का-नाबापासांग
का-ना मिसिंग का-ना बापासांग

सियुउ कोदो हिजुवा ऋना, का-ना मिसिंग का-ना इपीसीन
का-ना मिसिंग का-ना इपीसीन

चालुउ कोदो सेटेरा का-ना, का-ना मिसिंग का-ना बापासांग
का-ना मिसिंग का-ना बापासांग

हियातिङ सानाइंगा का-ना मिसिंग का-ना इपीसीन
का-ना मिसिंग का-ना इपीसीन

चकातिङ मोनींगा का-ना मिसिंग का-ना बापासांग
का-ना मिसिंग का-ना बापासांग

हे बहन, सुकन पहाड़ का डेरेसकरकन्द सीझता ही नहीं !
हे बहन, बड़े पहाड़ के झरने का पानी गरम होता ही नहीं।
हलवाहे तो आ गये हैं, (डेरे शकरकन्द)
बहन, सीझता ही नहीं !
कोड़नेवाले तो पहुँच गये हैं,
बहन, (झरने का पानी) गर्म होता ही नहीं।
मुझे चिन्ता होती है
(कि) सीझता ही नहीं।
मुझे सोच होता है
(कि) गर्म होता ही नहीं !

३१०

सेले कुटी:रे चौली
अमे चिमाई जोमे केदा
अमे चिमाई जोमे केदा

चन चड़िद रे हुआड़ा जिलू
अमे चिमाई नाबे केदा
अमे चिमाई नाबे केदा

सेता चोवाए बोलो केना
सेता चोवाए जोमे केदा
सेता चोवाए जोमे केदा

पुसी चोवाए सोड़ो केना
पुसी चोवाए नाबे केदा
पुसी चोवाए नाबे केदा

अमे गे माईना जोमे केदा
सेता रेगेम चिटा तदा
सेता रेगेम चिटा तदा

अमगे माइना जोमे केदा
पुसीरेगेम सुबा तदा
पुसीरेगेम सुबा तदा

ओखली में चावल था,
हे लड़की, क्या तुमने खाया ?
चंचरा के ऊपर हारिल (पक्षी) का माँस था,
हे लड़की, क्या तुमने लिया ?
कुत्ता घुसा था,
उसी ने खा लिया ।
बिल्ली ढूँढ़ रही थी,
वही ले गई ।

हे लड़की ! तुम्हीं ने खाया है ।
(लेकिन) कुत्ते को दोष दे रही हो ।
हे लड़की ! तुम्हीं ने लिया है
(लेकिन) बिल्ली को दोषी बना रही हो ।

३११

कुड़बय-कुड़बय रे दादा-कुड़बय कोरे ईंदी दो
कुड़बय कोरे ईंदी दो

मुड़मा-मुड़मा रे दादा मुड़मा कोरे जतरा दो
मुड़मा कोरे जतरा दो

कुंड़बय कोरे ईंदी दादा होलारे को ईंदी केदा दो
होलारे को ईंदी केदा दो

मुड़मा कोरे जतरा दादा होंदेर रेको बुरु केदा दो
होंदेर रेको बुरु केदा दो

होला रेको ईंदी केदा-पुड़ू कोले लेले लेदा दो
पुड़ू कोले लेले लेदा दो

होंदेर रेको जतरा केदा-मंडा कोले चिना लेदा दो
मंडा कोले चिना लेदा दो

हे दादा, कुड़बय में इन्दी होता है ।
हे दादा, मुड़मा में जतरा होता है ।
हे दादा, कुड़बय की इन्दी तो लोग कर चुके ।
हे दादा, मुड़मा का जतरा तो लोग कर चुके ।
हे दादा, कुड़बय की इन्दी तो बहुत पहिले ही कर चुके ।
हमलोगों ने पत्तलों को देखा था ।
हे दादा, मुड़मा में तो बहुत पहिले ही जतरा कर चुके,
हमलोगो ने मण्डा को देखा था ।

३१२

हातु मैना लिदी लिदी
हातु मैनम बागे जदा ।
हातु मैनम बागे जदा ।

दिसुम मैना लाया कोया
दिसुम मैनम राड़ा जदा ।
दिसुम मैनम राड़ा जदा ।

मोदे किया सिन्दूरी ते
हातु मैनम बागे जदा,
हातु मैनम बागे जदा,

बारे थाड़ी ससंग ते
दिसुम मैनम राड़ा जदा
दिसुम मैनम राड़ा जदा

हे बेटी, सुन्दर सलोना गाँव,
हे बेटी, गाँव को छोड़ दिया ।
हे बेटी, हरा-भरा देश,
हे बेटी, हरेभरे देश को तुमने छोड़ दिया ।
हे बेटी, तुमने एक कीया (सिन्धोरा) सिन्दूर से
गाँव को छोड़ दिया ।
हे बेटी, तुमने दो थाली हल्दी से
देश को छोड़ दिया ।

३१३

नकु नकु एयङ
ओको होड़ो को गोड़े हिजुवा कना
ओको होड़ो को गोड़े हिजुवा कना

नकु नकु अपङ
चिमय प्रजा को गोड़े जपागा कना
चिमय प्रजा को गोड़े जपागा कना

निकु दोना माइना
आम लेल को हिजुवा कना
आम लेल को हिजुवा कना

नकु दोना माइना
आम चिना को जपागा कना
आम चिना को जपागा कना
उकुताइं मेगा एयङ सिम कुमुली रे

उकु ताइङ मे
दनङ ताइङ मेगा अपङ मेरोम गुदुड़ी रे
दनङ ताइङ मे

देखो-देखो मा,
कौन आदमी आये हुए हैं ?
देखो पिता,
(ये) कौन प्रजाजन आये हुए हैं ?
हे बेटी, (ये लोग)
तुमको देखने आये हैं ।
हे बेटी, (ये लोग)
तुमको (तुम्हारे बारे में) जानने आये हैं ।
(तब) हे मा,
मुझको मुर्गी के घरौंदे में छिपा दो !
(तब) हे पिता,
मुझे बकरी के घर में छिपा दो ।

३१४

कुचा मुचा कुन्दुरु
कुचा केसेद तदिङा कुन्दुरु
कुचा केसेद तदिङा कुन्दुरु हायरी

नाड़ी-नाड़ी पलाण्डू
नाड़ी कोटोङ्ग तदिङा पलाण्डू
नाड़ी कोटोंग तदिङा पलाण्डू हायरी

चिको चिमका मेनेतेया कुन्दुरु
कुचा केसेद् तदिङा कुन्दुरु
कुचा केसेद् तदिङा कुन्दुरु हायरी

मेरे को मेने तेया पलाण्डू
नाड़ी कोटोंग तदिङा पलाण्डू
नाड़ी कोटोंग तदिङा पलाण्डू हायरी

जींगे बड़े सुकु जना कुन्दुरुम
कुचा केसेद् तदिङा कुन्दुरु
कुचा केसेद् तदिङा कुन्दुरु हायरी

कुड़ाम बड़े रेयाड़ा जना पलाण्डू
नाड़ी कोटोङ तदिङा पलाण्डू हायरी
नाड़ी कोटोङ तदिङा पलाण्डू हायरो

अलङ ओड़: तेया कुन्दुरु
दो दोलां सेनो: गेया कुन्दुरु
दो दोलां सेनो: गेया कुन्दुरु हायरी

अलङ रोसोम तेया पलाण्डू
मारे दोलां विरिदा
मारे दोलां बिरिदा हायरी

हे कुण्डली ! मारे हुए कुन्दुरू
(तुमने) हमको घेर रखा है।
हे लतराते हुए पलाण्डु,
(तुमने) हमको लपेट लिया है।
हे कुन्दुरू, हमको क्यों
घेर रखा है !

हे पलाण्डु, हमको क्यों
लपेट लिया है ?
हे कुन्दुरू, (शायद) तुम्हारे जी में यही अच्छा लगा
जिससे हमको घेर रखा है।
शायद इसी से तुम्हारा जी ठंडा हुआ,
जिससे हमें लपेट लिया।
(तो) हे कुन्दुरु ! चलो,
हमारे घर चलें।
(तो) हे पलाण्डु ! चलो,
हमारे निवास पर चलें।

३१५

श्रीरेन परगानरेन—श्रीरेन होड़ो को
श्रीरेन होड़ो को हायरी

श्रीरेन परगानरेन—परगानरेन प्रजा को
परगान रेन प्रजा को हायरी

श्रीरेन होड़ो को—माण्डी काको जोजोमा
माण्डो काको जोजोमा हायरी

परगान रेन प्रजा को—इली काको नुनुवा
इली काको नुनुवा हायरी

माण्डी काको जोओमा चाउली ओमाकोपे
चाउली ओमा कोपे हायरी

इली काको नुनुवा— माया तेगे चेदा कोपे
माया तेगे चेदा कोपे हायरी

श्री के (और) परगान (राज विशेष) श्री के आदमी।
हाय, श्री के आदमी !

श्री के (और) परगान के, परगान की प्रजा ?
हाय, परगान की प्रजा !
श्री के आदमी भात नहीं खाते हैं ।
हाय, भात नहीं खाते हैं ।
परगान की प्रजा, 'हड़िया' (चावल की शराब) नहीं पीती है ।
हाय, शराब नहीं पीती है ।
भात नहीं खाते हैं (तो) चावल ही दे दो ;
हाय चावल ही दे दो ।
शराब नहीं पीती है (तो) उबाल कर ही दे दो ;
हाय, उबाल कर ही दे दो ।

३१७

पिड़िंगी पिड़िंगी रे दादा
दिरी पिडिंगी चेतन रे
दिरी पिड़िंगी चेतन रे ओहोरी

चौरा चौरा रे दादा
हसा चौरा लतर रे
हसा चौरा लतर रे ओहोरी

अइञः सोमय तइं केन रे
दिरी पिड़िंगी चेतन रे
दिरी पिड़िंगी चेतन रे ओहोरी

अइञः नुसाड़ा तइ केन रे
हसा चौरा लतर रे
हसा चौरा लतर रे ओहोरी

अइञः सोमय सेनोः जना
दिरी पिड़िंगी हँदिड़ी जना
दिरी पिड़िंगी हँदिड़ी जना ओहोरी

अइञ्ग: नुसाड़ा बिरिद जना
हसा चौरा लन्दुब जान
हसा चौरा लन्दुब जान ओहोरी

हे दादा, (देखो) पत्थर का चबूतरा
(जिस पर आप बैठा करते हैं)
हे दादा, (देखो) मिट्टी का चौरा !
(जिस पर आप लेटा करते हैं)
जबतक मेरा समय था,
(तबतक) पत्थर का चबूतरा (देखने लायक था)
जबतक मेरी जवानी थी,
(तबतक) यह चौरा (कितना साफ था) !
मेरा समय चला गया, यह चबूतरा गिर गया।
मेरी अवस्था चली गई, यह चौरा टूट गया।

३१८

ओरे एयंङ ओरे अपंग
सोना काजी गोड़े काजीयइं बेन
सोना काजी गोड़े काजीयइं बेन
ओरे एयंङ ओरे अपंङ
रुपा बकंड़ा गोड़े बकंड़ाइं बेन
रुपा बकंड़ा गोड़े बकांड़ाइं बेन
ओरे एयंङ ओरे अपंङ
सेले कुटी रे गोड़े तिगु तुकाइं बेन
सेले कुटी रे गोड़े तिगु तुकाइं बेन
ओरे एयंङ ओरे अपंग
कड़बा डाँडो रे गोड़े जपा तुकाइं बेन
कड़बा डाँडी रे गोड़े जपा तुकाइं बेन

ओरे एयंङ ओरे अपंग
सेले कुटी दो बियूरे तना
सेले कुटी दो बियूरे तना
ओरे एयंङ ओरे अपंग
कडबा डांड़ी दो सेकोरे तना
कडबा डाँड़ी दो सेकोरे तना

हे माँ, हे बाप,
मुझे सोने की बात सुनाओ।
हे माँ, हे बाप,
मुझे रूपा का वचन कहो।
हे माँ, हे बाप,
मुझे ओखली के पास खड़ा कर दो (धान कूटने के लिए)
हे माँ, हे बाप,
मुझे हल की मूठ पकड़ा दो।
हे माँ, हे पिता,
ओखली घूम रही है।
हे माँ, हे पिता,
हल की मूठ उलट रही है।

३१६

कोचे कुड़म्बाए तिलाए लोसोर
द: दो द: सेके: सेके: बरेंग
द: दो द: सेके: सेके:

कोचे कुडुम्बाए तिलाए लोसोर
द: दो द: रोलो: रोलो: बरेंग
द: दो द: रोलो: रोलो:

द: सेके: सेके: बरेंग
द: दो चिबु चिकाया जा बरेंग
द: दो चिबु चिकाया

द: रोलो: रोलो: बरेंग
द: दो मेरे बु रिकाया जा बरेंग
द: दो मेरे बु रिकाया

द: सेके: सेके: बरेंग
द: दो चौली चापी तेजा बेरंग
द: दो चौली चापी ते

द: रोलो: रोलो: बरेंग
द: दो ताबेन कुरम् तेजा बरेंग
द. दो ताबेन कूरमु ते

हे भाई, कोचे कुड़ुम्बाय तिलाय नामक कीचड़मय
स्थान का पानी 'सेके-सेके' (करके) बहता है।
हे भाई कोचे कुड़ुम्बाय तिलाय नामक कीचड़ युक्त
स्थान का पानी 'रल रल' (की आवाज करके) बहता है।
हे भाई, पानी (जो) 'सेके-सेके' बहता है
हम उसे क्या करें !
हे भाई, पानी (जो) 'रल-रल' बहता है।
हम उसे क्या करें ?
हे भाई, (जो) सेके-सेके बहता है
(उससे) चावल धोया जाय।
हे भाई, (जो) रल-रल बहता है
उससे चिउड़ा धोया जाय।

३२०

जू जा जलिया जू सेनो: मे
भला जलिया जू सेनो: मे
मरे जा जलिया मरे बिरिद मे
भला जलिया मरे बिरिद मे

जू जा जलिया अङ तना
भला जलिया अङ तना
मरे जा जलिया तुरे तना
भला जलिया तुरे तना

जू जा जलिया एगाम एरां तना
भला जलिया एगाम एरां तना
मरे जा जलिया आपुम सेगेद तना
भला जलिया आपुम सेगेद तना

जू जा जलिया रचा जोगेमे
भला जलिया रचा जोगेमे
मरे जा जलिया गुरिः गिड़ीमे
भला जलिया गुरिः गिड़ीमे

जाओ, जलिया, जाओ !
उठो, जल्दी उठो !
जाओ जलिया, भोर हो रहा है।
उठो जलिया, सूरज उग रहा है।
जाओ जलिया, तुम्हारी माँ गाली दे रही है।
उठो जलिया, तुम्हारा बाप बिगड़ रहा है।
जाओ जलिया, आँगन बुहारो।
उठो जलिया, गोबर फेंको।

३२१

डण्डा ओड़ः लेम लेम नेतए लेका जोजोरो
नेतेए लेका जोजोरो हायरी

चातोम रोसोम चोम चोम नेतेए लेका लिलिगी
नेतेए लेका लिलिगी हायरी

साउड़ी ची बानोआ नेतेए लेका जोजोरो
नेतेए लेका जोजोरो हायरी

बड़ोवार ची बनोआ नेतए लेका लिलिगी
नेतए लेका लिलिगी हायरी

साऊड़ी हो तैकेना साऊड़ी हो अकिरिंग केद्
साउड़ी हो अकिरिंग केद हायरी

बड़ोवारो तैकेना बड़ोवार ले खेजा केद्
बडोवार ले खेजा केद्

मोद् बिता लाई नतिन साउड़ीले आकिरिंग केद्
साउड़ी ले अकिरिंग केद्

चपु नुतुम मोचा नतिन बड़ोवार ले खेजा केद्
बड़ोवार ले खेजा केद्

लम्बा-लम्बा घर ऐसा चू रहा है।
गोल-गोल घर इस तरह झर रहा है।
क्या खर नहीं है जो इस तरह चू रहा है!
क्या बड़वार (एक घास) नहीं है जो इस तरह झर रहा है!
खर था, लेकिन बेच दिया गया।
बड़वार था, लेकिन बेच दिया गया।
एक बित्ता (के) पेट के लिए खर बेच दिया।
बूँद भर तेल के लिए बड़वार बेच दिया गया।

३२२

लुदाम बा लुदुगुई ओकोतेम तना दो
ओकोतेम तना दो

तड़ाय बा तापिरसा चिमय तेम तना दो
चिमय तेम तना दो

लुदाम बा लुदुगुई सुसुन तेम तना दो
सुसुन तेम तना दो

तड़ाय बा तापिरसा करम तेम तना दो
करम तेम तना दो

लुदाम बा लुदुगुई आलोम एपेराङा दो
आलोम एपेराङा दो

तड़ाय बा तापिरसा आलोम कपाजी दो
आलोम कपाजी दो

लुदम फूल (एक फूल) के समान (फूले हुए) तुम कहाँ जा रहे हो !
तड़ाय फूल (पानी का एक फूल) के समान (खिले हुए) तुम कहाँ जा रहे हो !
लुदम फूल के समान (फूले हुए) नाचने जा रहे हो ।
तड़ाय फूल के समान (खिले हुए) करम नाचने जा रहे हो ।
लुदम फूल के समान (फूले हुए) तुम झगड़ा मत करो ।
तड़ाय फूल के समान (खिले हुए) तुम बखेड़ा मत करो ।

३२३

केरकेटा डिन्चुआ ओको मुली तेलंङा
ओको मुली तेलंङा

केरकेटा डिन्चुआ चिमय मुली तेलङ
चिमय मुली तेलङ

केरकेटा डिन्चुआ हातु हातु तला तेलाङाम मेनेया
हातु तला तेलाङाम मेनेया

केरकेटा डिन्चुआ दिसुम तला तेलाङाम मेनेया
दिसुम तला तेलाङाम मेनेया

हातु तला तेलाङाम मेनेया लिखालं ओलेयम मेनेया
लिखालं ओलेयम मेनेया

दिसुम तला तेलाङाम मेनेया पोथी होलं पढ़ावम मेनेया
पोथी होलं पढ़ावम मेनेया

केरकेटा और भुजंग पक्षी (राय कर रहे हैं)
हमलोग किस ओर जायेंगे ?
केरकेटा और भुजंग पक्षी (सोच रहे हैं)

हमलोग किधर निकलेंगे ?
केरकेटा भुजंग से कहता है कि
तुम गाँव में जाना चाहते हो।
भुजंग केरकेटा (से कहता है कि)
तुम देश में निकल जाना चाहते हो।
तुम कहते हो कि हमलोग गाँव में जायेंगे।
हमलोग (वहाँ) लिखेंगे (लिखने का काम करेंगे)
तुम कहते हो कि हमलोग देश में निकल जायेंगे।
और (वहाँ किताब पढ़ेंगे।)

३२४

लुकुजा बुरु चेतन रे-ने लुकुई जोनोओ दो
ने लुकुई जोनोओ दो

जन्ता बेड़ा लतर रे-ने लामा केयोओ दो
ने लामा केयोओ दो

ओकोए गे जोजो:ते ने लुकुई जोनोओ दो
ने लुकुई जोनोओ दो

चिमाये गे केयोओते ने लामा केयोओ दो
ने लामा केयोओ दो

मुण्डा कोगे जोजो:ते ने लुकुई जोनोओ दो
ने लुकुई जोनो ओ दो

सन्ता कोगे केयोओते ने लामा केयोओ दो
ने लामा केयोओ दो

लुकुजा पहाड़ के ऊपर यह झाड़ वाली लुकुई (घास है)।
जन्ता पहाड़ की तराई में चिकना करनेवाला लामा (है)।

लुकुई नामक घास से कौन साफ करेगा ?
लामा से कौन चिकना करेगा ?

लुकुई नामक घास से मुण्डा लोग (घर में) झाड़ करेंगे।
लामा से संथाल लोग (घर) चिकना करेंगे।

३२५

ओकोरे बिन्दीरे बिन्दीमं इनुंङ केना
बिन्दीम इनुंङ केना हायरी
चिमयरे बिन्दीरे बिन्दीम खेलाड़ी केना
बिन्दीम खेलाड़ी केना हायरी
हटीया तलारे बिन्दीम इनुंङ केना
बिन्दीम इनुंङ केना हायरी
गोंट तलारे बिन्दीम खेलाड़ी केना
बिन्दीम खेलाड़ी केना हायरी
टुपाअ होन ते बिन्दीम इनुंङ केना
बिन्दीम इनुङ केना हायरी
हटा होनते बिन्दीम खेलाड़ी केना
बिन्दीम खेलाड़ी केना हायरी
टुपाअ होन दो बिन्दी चेचआ जना
बिन्दी चेचआ जना हायरी
हटा होन दो बिन्दी रोचादे जना
बिन्दो रोचादे जना हायरी

हे बिन्दी, (एक बच्ची का नाम) तुम कहाँ खेलती थी ?
हे बिन्दी, तुम कहाँ खेलती थी ?
हे बिन्दी, तुम सड़क के बीच में खेलती थी ।
हे बिन्दी, तुम मवेशियों के झुण्ड में खेलती थी ।
हे बिन्दी, तुम एक छोटी टोकरी से खेलती थी ।
हे बिन्दी, तुम एक छोटे सूप से खेलती थी ।
हे बिन्दी, तुम्हारी छोटी टोकरी फट गई ।
हे बिन्दी, तुम्हारा छोटा सूप फट गया ।

३२६

होरा रे मेराली अमचा माई थेरे ताद मेराली दो
अमची माई थेरे ताद मेराली दो

डारे रे करेकटा अमची माई कोटे ताद करेकटा दो
अमची माई कोटे ताद करेकटा दो

अइङ गेचा तेरे ताद एंगाई को तेरे नाम तान
एंगाई को तेरे नाम तान

अइङ गेचा कोटे तदा अपुंई को कोटे नाम तन
अपुंई को कोटे नाम तान

काना माईना नमेकोआ-लिटी लिटी होराते कोआ
लिटी लिटी होराते कोआ

काना माईना चिना कोआ-लटा कोयम डारेते कोआ
लटा कोयम डारेते कोआ

काना माईंना नमेकोआ-दिरी तेको तेना कना
दिरी तेको तेना कना

काना माईंना चिना कोआ जनुम तेको रमाकना
जनुम तेको रमा कना

हे बेटी, क्या तुमने मेराली···को रास्ते में फेंक दिया ?
हे बेटी, क्या तुमने करेकटा···को रास्ते में फोड़ दिया ?
हाँ, मैंने (उसे) फेंका (क्योंकि) मैं अपनी माँ की खोज कर रही हूँ।
हाँ, मैंने (उसे) फोड़ा (क्योंकि) मैं अपने बाप को खोज रही हूँ।
हे बेटी, उनको तुम नहीं पाओगी, वे नरम-नरम रास्ते से चले गये।
हे बेटी, उनको तुम नहीं पाओगी।
वे कोमल, कोमल मार्ग से चले गये।
हे बेटी, उनको नहीं पाओगी, वे पत्थर से ढक गये।
हे बेटी, उनको नहीं पाओगी, वे काँटे से घिर गये।

३२७

मुदम दुदुलसेकेरा-तीरे मुदम दुलङ्गमेजा गतिमरे
तीरे मुदम दुलङ्गमेजा गतिमरे

नकी बाई दुलिया-बाई नकी बई मेजा संगम रे
बई नकी बई मेजा संगाम रे

दुल दोरे दुला मेया-गतिगरे कसा पीतल रोचोद जान
कसा पीतल रोचोद जान

बई दोरेइ बईया मेया-नाना चारी हुला जना
नाना चारी हुला जना

का ओमे सेंड़ा गे-कसा पीतल रोचोद जना
कसा पीतल रोचोद जना

का चेदे मोमे गे-नाना चरी हुला जना
नाना चरी हुला जना

हे अंगूठी बनानेवाले सेकरा, मुझे हाथ की अंगूठी दो।
हे प्रिय, मुझे हाथ की अंगूठी दो।
हे कंघी बनानेवाले दुलिया, मुझे कंघी बनाकर दो।
हे प्रिय, मुझे कंघी दो।
हे प्रिये, तुम्हे अंगूठी बनाकर तो दे दूँगा।
(लेकिन) काँसा पीतल चटक गया।
हे प्रिये, तुम्हे कंघी बनाकर तो दे सकता हूँ।
(लेकिन) पतली तीली टूट गई।
देने की इच्छा नहीं है (इसीलिए)
काँसा-पीतल चटक गया
देने का जी नहीं चाहता (इसी लिए)
पतली तीली टूट गई।

जापी

◆

ओकोतेको सेनो तना ।
कपि जिलिब जिलिबा ?
चिमय तेको विरिद तना
सार सिड़ाय सोंड़ाया ?

जो फरशा चमका रहे हैं, (वे) कहाँ जा रहे हैं !
जो तीर सनसना रहे हैं, (वे) किधर चल रहे हैं !

३२८

मरंग बुरु-दिया सेंगेल
जिलिब केन जिलिब केन
जिलिब केन जिलिब केन
हुड़िङ बुरु मादी मरे साल
जोलोब केन जोलोब केन
जोलोब केन जोलोब केन

ओकोएगे-दिया-तदा
जिलिब केन जिलिब केन
चिमय गे मरेसाल तदा
जोलोब केन जोलोब केन

बुरु बिङ दिया-तदा
जिलिब केन जिलिब केन
साङ-सुड़ी किङ मरे-साल तदा
जोलोब केन जोंलोब केन

बड़े पहाड़ पर दीये की रोशनी
झिलमिल-झिलमिल कर रही है।
छोटे पहाड़ पर ज्योति
टिमटिमा रही है।
किसने दीया जलाया ?
(जिसकी रोशनी) झिलमिल-झिलमिल कर रही है।
किसने रोशनी की,
जो टिमटिमा रही है ?
पहाड़ी साँप ने दीया जलाया है,
(जिसकी रोशनी) झिलमिल कर रही है।
समसुड़ी साँप ने रोशनी की है,
(जो) टिमटिमा रही है।

३२६

दादाया बुरु तिरिल दादाया
रुकुवलङ मे भई दादाया रुकुवलङ मे
दादाया बेड़ा तरोब दादाया
दँसियालङ मे—भई दँसियालङ में

दादाया इसु सिबिला दादाया
रुकुवलङ मे भई दादाया रुकुवलङ मे
दादाया पुराः हेड़ेमा दादाया
दँसियालङ मे भई दँसियालङ मे

हे दादा, पहाड़ के केवन्द (एक फल) को
झहरा दो !
हे दादा, तराई के तरोब (एक फल) को
भर-भरा दो !
हे दादा, केवन्द बहुत स्वादिष्ट है।
हे दादा, झहरा दो।
हे दादा, (तरोब) बहुत मीठा है,
भर-भरा दो।

३३०

सेन्देरा कोड़ा को,
कापी जिलिब जिलबा
भाई, कापी जिलिब जिलिबा।
कारेंगा कोड़ा को
सार सिड़ाए-सोंडोए
भाई सार सिड़ाए सोंड़ोए

ओको तेको-सेनोः तना
कापी जिलिब जिलिबा
भाई कापी जिलिब जिलिबा
चिमय तेको बिरिद तान
सार सिड़ाए सोंडोए
भाई सार सिड़ाए सोंड़ोए

सेन्देरा तेको सेनोः तान
कापी जिलिब-जिलिबा
भाई कापी जिलिब जिलिबा
कारेंगा तेको बिरिद तान
सार सिड़ाए-सोंड़ोए
भाई सार सिड़ाए सोंडोए

शिकारी लोग
बलुवा चमका रहे हैं।
हे भाई, बलुवा चमका रहे हैं।
घटवार शिकारी लोग,
तीर सनसना रहे हैं।
हे भाई, तीर सनसना रहे हैं।
(जो) बलुवा चमका रहे हैं।
(वे) कहाँ जा रहे हैं?
(जो) तीर सनसना रहे हैं।
(वे) किधर जा रहे हैं?
बलुवा चमकानेवाले
शिकार को जा रहे हैं।
तीर सनसनानेवाले,
शिकार को जा रहे हैं।

३३१

जो डुडरी जो लेना
बा पिन्दर बा लेना
भाई बा लेना

मोयोद गे जो लेना
बारिया गे बालेना
भाई बा लेना

सिपाई को गोद केदा
कोड़ा पई को चँगड़ा केदा
भाई कोड़ा को चँगड़ा केद्

फलनेवाला डुडरी (एक फला) फूल था।
फूलनेवाला पिन्दर (एक फूल) फूला था।
भाई फूला था।

एक ही फल फला था।
दो ही फूल फूले थे।
भाई फूला था।

सिपाहियों ने तोड़ लिया ।
···छिनगा लिया ।
भाई, छिनगा लिया ।

३३२

होनमे-दो-सेन्देराए सेने: केना
होनमे दो रुआड़ा लेना
भाई रुआड़ा लेना

होनमे दो सुकुरी बोरोते
होनमे दो रुआड़ा लेना
भाई रुआड़ा लेन

होनमे दो जिलू को चिरीते
होनमे दो नाचुर लेना
भाई नाचुर लेन

होनमे दो थुईं अिआङ मेन्दो बानो
होनमे दो रुआड़ा लेना
भाई रुआड़ा लेन

होनमे दो थेरियाइङ मेन्दो वानो:
होनमे दो नाचुर लेना
भाई नाचुर लेना

तुम्हारा लड़का शिकार को गया था ;
(लेकिन) तुम्हारा लड़का लौट आया ।
भाई, लौट आया ।
तुम्हारा लड़का सूअर के डर से
तुम्हारा लड़का लौट आया ।
भाई, लौट आया ।
तुम्हारा लड़का सेही के कांटो (के डर) से
लौट आया ।
भाई, लौट आया ।

(उसे) तीर मारें, सो तो नहीं (किया),
तुम्हारा लड़का लौट आया।
भाई लौट आया।
(उसे) पत्थर मारें सो तो नहीं (किया),
चला आया।
भाई चला आया।

३३३

गड़ा गड़ा ते लं-दो बियानाए बोयोना
भाई लं-दो बियानाए बोयोना
नाई-नाई ते दोवा दो तिपाराए तोपोरा
भाई दावा दो तिपाराय तोपोरा

थुंईंओपे-लं-दो बियानाए बोयोना
भाई लं-दो बियानाए बोयोना
थेरोंङीपे दोवा दो तिपाराय तोपोरा
भाई दोवा दो तिपाराए तोपोरा

थुइं कियाले लं-दो बियानाए बोयोना
भाई लंदो बियानाए बोयोना
थेर कियाले दोवा दो तिपाराए तोपोरा
भाई दोवा दो तिपाराए तोपारा

लं पक्षी नदी-नदी सनसना रहा है।
भाई, लं पक्षी सनसना रहा है।
दोवा पक्षी नदी-नदी थपक-थुपुक चला जा रहा है।
भाई, थपक-थुपुक जा रहा है।
सनसनाते हुए लं पक्षी को तीर मारो,
भाई, सनसनाते हुए लं पक्षी को।
थपकते हुए दोवा पक्षी को पत्थर मारो।
भाई, थपकते हुए दोवा पक्षी को।
हमने सनसनाते हुए लं पक्षी को बींध दिया।
भाई, सनसनाते हुए लं पक्षी को—
हमने, थपकते हुए दोवा पक्षी को पत्थर मार दिया।
भाई, थपकते हुए दोवा पक्षी को!

३३४

जितिया-जतरा-जितिया लेले केने को
भाई जितिया लेले-लेले केने को

जितिया जतरा-जतरा चिना केन को
भाई जतरा चिना केने को

जितिंया लेले-लेले ते, दः दोए गमा लेद
भाई दः दोए गमा लेद्

जतरा चिना चिना ते, होयो दोए राम्पीलेद्
भाई होयो दो राम्पीलेद्

लुमे जना दो लुमाम किचिरी
भाई लुमाम किचिरी

रेयाड़ा जना दो पाचोन पड़िया
भाई पाचोन पड़िया

तासी लेकामे सिंग को बिरेरे
भाई सिंग को बिरेरे

पिति लेकामे-काड़े को लदाड़ीरे
भाई काड़े को लदाड़ीरे

तासी तासी ते चेचः जना दो
भाई चेचः जना दो

पिति-पिति ते नियार जाना दो
भाई नियार जना दो

जितिया और जतरा-जितिया देखनेवाले (देख रहे हैं)
भाई देखनेवाले—
जितिया और जतरा-जतरा देखनेवाले (देख रहे हैं)
भाई देखनेवाले—
जितिया देखते-देखते पानी बरसने लगा,
भाई पानी बरसने लगा—

जतरा देखते-देखते आँधी चलने लगी।
भाई आँधी चलने लगी—
रेशम का कपड़ा भींग गया।
भाई, रेशम का कपड़ा भींग गया।
रंगीन कपड़ा भींग गया।
भाई, भींग गया।

३३५

सेन्देरा दोको केड़ा केदा गोसांईं
काइङ सेनो: सेन्देरा गोसांईं

कारेंगा दोको जोड़ा केदा गोसांईं
कारेंगा काइङ बीरिदा गोसांईं

उतुई रेदो उतुई मे कुड़ी
रोड़ो भिण्डी जिलू मे कुड़ी

हे गोसाँई, शिकार करने के लिए सबको कहा गया;
(लेकिन) हे गोसाँई, मैं शिकार को नहीं जाऊँगा।
हे गोसाँई, शिकार करने के लिए लोगों से विनती की गई;
(लेकिन) हे गोसाँई, मैं नहीं चलूँगा।
तुमको मांस पकाना हो तो
भेंड का मांस पका दो।

३३६

लेलोवा लेलोवा
चि दारू लेलोवा
भाई चि दारू लेलोवा

चिनावो चिनावो
मेरे दारू चिनावो
भाई मेरे दारू चिनावो

लेलोवा लेलोवा
किता दारू लेलोवा
भाई किता दारू लेलोवा

चिनावो चिनावा
ताड़ी दारू चिनावो
भाई ताड़ी दारू चिनावो

दिखाई दे रहा है, दिखाई दे रहा है।
कौन पेड़ दिखाई दे रहा है?
भाई, कौन पेड़ दिखाई दे रहा है?
दिखाई दे रहा है, दिखाई दे रहा है।
कौन पेड़ दिखाई दे रहा है?
भाई, कौन पेड़ दिखाई दे रहा है?
दिखाई दे रहा है, दिखाई दे रहा है।
खजूर का पेड़ दिखाई दे रहा है।
भाई, खजूर का पेड़ दिखाई दे रहा है
दिखाई दे रहा है, दिखाई दे रहा है।
ताड़ का पेड़ दिखाई दे रहा है।
भाई, ताड़ का पेड़ दिखाई दे रहा है।

जतरा

डिण्डा रे दो कुड़ी जरमा रे दो
बन्दारेन वुद् लेकाम मेचेर मेचेरा
हेबेअन रे दो कुड़ी हतरान रे दो
जो-अकन नाड़ी लेकाम लिड़ु जपुद तना

जवानी में हे युवती, तुम
तालाब की पोठी मछली की तरह फुदकती चलती थी।
गोद में जब बच्चा आ गया, और पीठ पर बंध गया
तब तुम फली हुई लता की तरह झुक गई।

३३७

उमाना उमा मण्डि रेंगे तना
चिकायइङ बोयो चटु रपुद्जान
उमाना उमा मण्डि रेंगे तना
चिकायइङ बोयो चट रपद जान

लेलेरे एई एई एई धीरेरे राधे रे
ओको तअःते पटि बबाए नम औलेदा

होन को दोको लन्द बड़ा तना
ओको तअःते पटि बबाए नम औलेदा

होन को दोको लन्दा बड़ा तना
लेलेरे एई एई एई धीरेरे राधे रे

हे माँ, भूख लगी है।
क्या करूँ ? बेटा, घड़ा फूट गया।
हे माँ, भूख लगी है।
क्या करूँ बेटा, घड़ा फूट गया।
देखो, देखो, हाय, हाय, राधे राधे रे !
कहाँ से चटाई का धान खोज कर ले आया ?
लड़के लोग हँस रहे हैं (उसे देख कर)
कहाँ से चटाई का धान खोज कर लाया ?
लड़के उसे देख कर हँस रहे हैं।
देखो, देखो, हाय (हाय) राधेरे !

३३८

गड़ा गेनारे कंकी, चोके ची बरुण्डाम लोड़ो तना
गड़ा गेनारे कंकी, चोके ची बरुण्डाम लोड़ो तना
लेलेरे एई एई एई धीरेरे राधेरे

नई पड़ारे कंकि चोके ची बरुण्डाम लोड़ो तना
नई पड़ारे कंकि चोके ची बरुण्डाम लोड़ा तना
लेलेरे एई एई एई धीरेरे राधेरे

नदी के किनारे हे कंकी पच्छी तुम, मेढकी या मेढक (बड़ा)
का घात लगाये हो।
नदी के किनारे हे कंकी पच्छी, तुम मेढकी या मेढक
का घात लगाये हो।
देखो देखो, ई ई ई राधे रे !
नाले के पास हे कंकी, तुम मेढकी या मेढक

का घात लगाये हो
नाले के पास हे कंकी, तुम मेढकी या मेढक का
घात लगाये हो
देखो देखो ई ई ई राधे रे

३३९

जनता टोडाङ रे किन्दु सिङ
बुगि लेका हिसिराकन सकोमाकन के वगे किया।
जनता टोडाङ रे किन्दु सिङ
बुगिलेका हिसिराकन सकोमाकन कुड़ि के वगे किया
लेलेरे एई एई एई धीरे रे राधे रे
जूमंइंइंरे जूबुइरे रुवड़ मे
बुगि लेकान हिसिराकन सकोमाकन कुड़िए बगेजना
जूमंइंरे जूबुइरे रुवड़ मे
बुगि लेकन हिसिराकन कुड़ि गोड़ेए बगे जना
लेलेरे एई एई एई धीरे रे राधे रे।
जनता टोडं (गाँव) में किन्दू सिंह ने—
माला और पहुँची पहनी हुई सुन्दर स्त्री को छोड़ दिया।
जनता टोडं में किन्दू सिंह ने—
माला और पहुँची पहनी हुई सुन्दर स्त्री को छोड़ दिया।
देखो देखो ई ई ई धीरे-धीरे राधे रे!··
बेटी, जाओ, बेटी लौट जाओ।
माला और पहुँची पहनी हुई सुन्दर स्त्री छोड़ दी गई।
जाओ बेटी, जाओ, बेटी, लौट जाओ।
माला और पहुँची पहनी हुई सुन्दर स्त्री छोड़ दी गई।
देखो देखो, ई ई ई, धीरे रे राधे रे!··

३४०

डिण्डा रेदो कुड़ि जरमा रेदो
बन्दारेन बुदु लेकाम मेचेर मेचेरा

डिण्डा रेदो कुड़ि जरमा रेदो
बन्दारेन बुदु लेकाम मेचेर मेचेरा
लेलेरे एई एई एई धीरे रे राधे रे
हेबेअन रेदो कुड़ि हतरान रेदो
जो अकन नाड़ी लेकम लिडु जपुद तना
लेलेरे एई एई एई धीरे रे राधे रे

हे युवती, जवानी में तुम
बाँध की बुदू मछली की तरह फुदकती चलती थी।
हे युवती, जवानी में तुम
बाँध की बुदू मछली की तरह उछलती फिरती थी।
देखो देखो ई ई इ धीरे रे राधे रे!......
(और अब) जब गोद में बच्चा आ गया और पीठ पर
बाँध लिया तब—
फलदार लता की तरह तुम झुक गई।
देखो देखो ई ई ई धीरे रे राधे रे!...

३४१

दोलाबु कुड़ि ओकोआ टोडाङ संगा बु उरा
दोलाबु कुड़ि ओकोआ टोडाङ संगा बु उरा
लेलेरे एई एई एई धीरे रे राधे रे
कबुआ कोड़ा कबुआ कुड़ि ओकोआ टोडाङ
कुला दुबाकना।
कबुआ कोड़ा कबुआ कुड़ि ओकोआ टोडाङ
कुला दुबा कना
लेलेरे एई एई एई धीरे रे राधे रे

हे युवती, चलो, किस जंगल में जाकर हम लोग कन्द कोड़ें?
हे युवती, चलो, किस जंगल में जाकर हम लोग कन्द कोड़ें?
देखो देखो ई ई ई धीरे रे राधे रे!...
हे युवक, हम लोग नहीं आयेंगे; हे युवती, हम नहीं आयेंगे।
(क्योंकि) जहाँ जाना है वहाँ बाघ बैठा हुआ है।
हे युवक, हम लोग नहीं; हे युवती, हम लोग नहीं आयेंगे।
उस जंगल में बाघ बैठा है।

३४२

नेते टोडाङ नेते मरचा कुला आर मिण्डी किङ
ओपोता तना
नेते टोडाङ नेते मरचा कुला आर मिण्डी किङ
ओपोता तना
लेलेरे एई एई एई धरे रे धीरे रे
तला निदा अदिङ निदा कुला आर मिण्डी किङ
ओपोता तना
तला निदा अदिङ निदा कुला आर मिण्डी किङ
ओपोता तना
लेलेरे एई एई एई धीरे रे राधे रे

इस जंगल में, इस मैदान में बाघ और भालू लड़ रहे हैं।
इस जंगल में, इस मैदान में बाघ और भालू लड़ रहे हैं।
देखो देखो ई ई ई धीरे रे राधे रे!·····
आधी रात तक मध्य रात तक, बाघ और भालू लड़ रहे हैं।
आधी रात तक, मध्य रात तक, बाघ और भालू लड़ रहे हैं।

३४३

नङ रेन होड़ो को नङ रेन होड़ो को
हातु को दुब केदा
नङ रेन होड़ो को नङ रेन होड़ो को
हातु को दुब केदा
लेलेरे एई एई एई एई धीरे रे राधे रे
हतु को दुब केदा हतु को दुब केदा
पिड़ी लोयोङ को बई केदा
हतु को दुब केदा हतु को दुब केदा
पिड़ी लोयोङ को बई केदा
लेलेरे एई एई एई धीरे रे राधे रे

पुरखे लोगों ने, पूर्वजों ने—
गाँव को बसाया।
पुरखे लोगों ने, पूर्वजों ने—
गाँव को बसाया।
देखो देखो ई ई ई धीरे रे राधे रे !
गाँव को बसाया, गाँव को बसाया।
टांड़-दोन को बनाया।
गाँव को बसाया, गाँव को बसाया।
टांड़ दोन को बनाया।

३४४

ने कुड़ि ओको तः तिया गुड़ुलु रुड़ुङ मेनः गेया
लेकोरे हो हो हो रे····
ने कुड़ि जतरा तिया गुड़ुलु रुड़ुङ मेनअः गेया
लेकोरे हो हो हो रे
लेकोरे हो हो हो रे····

यह स्त्री कहाँ चली गई, गोंदली कूटना बाकी ही है।
हाय रे हाय हो हो रे·····
यह स्त्री कहाँ चली गई, गोंदली कूटना बाकी ही है।
हाय रे हाय, हो हों रे······
यह स्त्री जतरा चली गई, इसी से गोंदली कूटना बाकी है।

३४५

हुड़िङ हुड़िङ बडिङ कुड़ि ओकोतः रे गोड़े
भेजाए सबेना
हुड़िङ हुड़िङ बडिङ कुड़ि ओकोतः रे गोड़े
भेजाए सबेना
लेलेरे एई एई एई धीरे रे राधे रे
ओकोए तः रे खण्डा जिलपीइनिः तः रे
भेजाए सबेना

ओकोए तः रे खण्डा जिलपीइनिः तः रे
भेजाए सबेना
लेलेरे एई एई एई धीरे रे राधे रे ।

मेरी छोटी भतीजी ! कहाँ इसका सहारा होगा ?
मेरी नन्हीं भतीजी ! कहाँ इसका सहारा होगा ?
देखो देखो ई ई ई धीरे रे राधे रे !
जिसके पास तलवार चमकती है, उसी के पास सहारा होगा ।
जिसके पास तलवार चमकती है, उसी के पास सहारा होगा ।
देखो देखो, ई ई ई धीरे रे राधे रे !

३४६

हय सोमय सोमय कोरे सोमय सेनोः तना
लेको रे हो हो रे
हय सोमय सोमय कोरे सोमय सेनो तना
हय डिण्डा सोमय कोरे सोमय सेनोः तना
लेको रे हो हो हो रे
हय डिण्डा सोमय कोरे सोमय सेनोः तना

हाय समय ! समय कहाँ चला जाता है ?
हाय रे हाय, हो हो रे.....
हाय समय ! समय कहाँ चला जाता है ?
हाय जवानी का समय ! समय कहाँ चला जाता है ?
हाय रे हाय, हो हो रे......
हाय जवानी का समय ! समय कहाँ चला जाता है ?

अड़न्दी

नुबः दिसुम रेगे दिया मसकल जना रे !
नुबः जना ओड़ा दिया तमः रे !
गोड़ा-ओड़ाः दुअर दिया एंड़ः जना रे !

अन्धकार के देश में दीया प्रकाशित हो गया।
तुम्हारे घर का दीया बुझ गया।
(अब तुम्हारे) गोहार घर और द्वार का दीया बुझ गया।

३४७

अइंङदो उमाइङ सेनोः तना उमा
लदेना कोलोःइङ सेनोः तना उमा लदना कोलोइङ
सेनो तन

अइङदो उमाइङ बिरिद तना उमा
लदेना कोलोःइङ बिरिद तना उमा लदेना कोलोइङ
बिरिद तन
कचि बेटिम बोरोया बेटी पुण्डी सदोम
बिजिर बिजिरा
मैला सदोम दोपोल दोपोला ।
कचि बेटिम बोरोया बेटी पुण्डि सदोम
बिजिर बिजिरा
मैला सदोम दोपोल दोपोला ।

हे माँ, मैं जा रही हूँ, हे माँ,
लदना बैलवालों के साथ जा रही हूँ ।
हे माँ, लदना बैलवालों के साथ जा रही हूँ ।
हे माँ, मैं जा रही हूँ, हे माँ,
हे माँ, घुमक्कड़ों के साथ जा रही हूँ ।
हे माँ, मैं जा रही हूँ, हे माँ !
क्या बेटी, तुम नहीं डरोगी ? सफेद चमकदार घोड़े (से)
भूरे मस्त घोड़े से ?
क्या बेटी, तुम नहीं डरोगी ? सफेद चमकदार घोड़े से ?
भूरे मस्त घोड़े से ?

३४८

इमिन दिन दो उमा
रसि पुड़ः रसि खलगिम मेन केदा
उमा रसि पुड़ रसि खलगिम मेन केदा
नाः दो उमा
मियद पुड़ः मियद खलगीगे
उमा मियद पुड़ मियद खलगीगे

इतने दिन तक तो हे माँ,
तुमने दोने में (हड़िया) रस माँगा ।
हे माँ, तुमने दोने में (हड़िया का) रस माँगा ।
अब तो माँ,
एक ही दोना एक ही दोना (रस शेष) रह गया ।
हे माँ, एक ही दोना (रस शेष) रह गया ।

३४६

का बाबु बले: तेमा का बाबु लिण्डिुङ तेमा
नयल मुटु लेका बाबुम हर चबा तन
का बाबु बले तेमा का बाबु लिण्डुङ तेमा
वियुर सेकोरे तेमा बाबु कुड़िम दंडा तन
का मंइ बले तेमा का मंइ लिण्डुङ तेमा
मण्डी उतु लुण्डा बण्डम हेचे हेचेना

हे बाबू, तुम छोटे नहीं हो, बाबू, तुम बच्चे नहीं हो।
तुम हल के समान घिस रहे हो (अधिक उम्र के हो)
हे बाबू, तुम छोटे नहीं हो, हे बाबू, तुम बच्चे नहीं हो।
चारों ओर घूम फिर कर तुम स्त्री की खोज में हो।
हे बेटी, तुम छोटी नहीं हो, तुम बच्ची नहीं हो;
लेकिन भात-सालन पकाने और घर लीपने-पोतने से
देह चुराती हो?

३५०

जुल तना दिया जुल तनारे
संगिन रेगे दिया जुल तनारे
मसकल जना दिया मसकल जनारे
नुबः दिसुम रेगे दिया मसकल जनारे
नुबः जना ओड़ाः दिया तमाःरे
गोड़ा ओड़ाः दुवर दिया एंड़ेः जनारे

दीया जल रहा है, (दीया) जल रहा है।
दूर में ही दीया जल रहा है।
दीया प्रकाशित हो गया, प्रकाशित हो गया।
अन्धकार के देश में दीया प्रकाशित हो गया!
अब तुम्हारे घर का दीया बुझ गया।
गोहाल घर और द्वार का दीया बुझ गया।
[लड़की घर में अन्धकार फैलाकर सुदूर ससुराल में
उजाला फैलाने चली गई]

३५१

जमड़ा बितर रे इपिड़ पियुङ जुले तना
जमड़ा बितर रे इपिड़ पियुङ जुले तना

जुलतनाए जुलतनाएरे जिलिमिलि जकामकाए जुलतना
जुलतनाए जुलतनाएरे जिलिमिलि जकामकाए जुलतना

जमड़ा बितर रे फूल विया रंगा साड़ी जुलतना
जमड़ा वितररे फूलविया रंगा साड़ी जुलतना

झमरा के नीचे जुगनू चमक रहा है।
झमरा के नीचे जुगनू चमक रहा है।
चमक रहा है चमक रहा है, झिलमिल। जगमग चमक रहा है।
झमरा के नीचे विवाह की फूलदार रंगीन साड़ी चमक रही है।
चमक रही है, चमक रही है, विवाह की रंगीन साड़ी चमक रही है।
चमक रही है, चमक रही है, विवाह की फूलदार
रंगीन साड़ी चमक रही है।

३५२

जुड़ी जुड़ी लङ तैकेना गतिङ
जुड़ी सुतम टोटः जना गतिङ
जुड़ी सुतम टोटः जन
तिसिङ दोरेम वगे किदिङ गतिङ
होरा गेड़ङ अरिदा
होरागे का अरिदोआरे गतिङ
होरा गे का अरिदो···
होरा गेइङ अरिदारे गतिइङ
मेद् द अः गे जोरोवा रे गतिङ
जोवा रेगे जोरोवारे।

हे प्रिये, हम दोनों जोड़ी-जोड़ी थे ,
हे प्रिये, जोड़ा सूत टूट गया ।
जोड़ा सूत टूट गया ।
हे प्रिये, आंज तो तुमने मुझे छोड़ दिया ।
हे प्रिये, मैं तुम्हारे लिए टकटकी लगाकर
रास्ता देखा करता हूँ ।
मैं रास्ता ही देखा करता हूँ ।
हे प्रिये, जिधर देखता हूँ अँधेरा ही अँधेरा है ।
(अन्धकार के कारण) हे प्रिये, रास्ता ही नहीं
दिखाई देता । रास्ता नहीं दिखाई देता ।
हे प्रिये, मैं रास्ता देखा करता हूँ ।
हे प्रिये, और आँख से आँसू गिरते रहते है ।
आँसू गाल पर बहते रहते हैं ।

३ ३ ३

जोमे बला को जोमेपे जोमे बला को जोमेपे ।
दिरी रुगुड़ो मण्डी बला को जोम लेकापे
दिरी रुगुड़ो मण्डी बला को जोम लेकापे
नुई बला को नूईपे नूई बला को नूईपे
कुण्डा रेअः इलि बला को नू लेकापे
जोम दोले जोमेया नू दोले नूइया
सोना लेका कजि तबु तइनोका
सोना लेका कजि तबु तइनो का

हे बाला, ये आये हुए मेहमानो, तुम खाओ तुम खाओ !
पत्थर के कंकड़ की तरह भात हे बाला के मेहमानो, खाओ ।
पत्थर के कंकड़ की तरह भात हे बाला के मेहमानो, खाओ ।
हे बाला, ये आये हुए मेहमानो, तुम लोग पीओ ।
कुण्डे में रखा हुआ हड़िया तुम लोग पीओ ।
कुण्डे में रखा हुआ हड़िया तुम लोग पीओ ।
खाने को तो खायेंगे, पीने को तो पीयेंगे ।
(लेकिन) सोने की तरह बात रहनी चाहिए ।
(लेकिन) सोने की तरह हमारी बात रहनी चाहिए ।



मुण्डा-युवतियाँ — जदुर-नृत्य की द्रुत गति मुद्रा में



मुण्डा-युवक — करमा-नृत्य की ताल देते हुए

३५४

ने पुतम रनः दो ने पुतम रनः दो
सेरेङ चेतन लतराते गुगुचुई मेनेया
ने पुतम रनः दो ने पुतम रनः दो
एंगा अपु वङकू लेका गुगुचुई मेनेया
ने पुतम रनः दो ने पुतम रनः दो
हगा मिसी बङकू लेका गुगचुई मेनेया
ने पुतम रनः दो ने पुतम रनः दो
होन होपोन बङकू लेका गुगुचुई मेनेया
ने पुतम रनः दो ने पुतम रनअः दो
कुटुम्ब कुपुल वङकू लेका गुगुचुई मेनेया

इस पण्डुक की बोली, इस पंडुक की बोली !
चट्टान के ऊपर और नीचे 'गुगुचु-गुगुचु' बोलता है।
इस पण्डुक की बोली, इस पण्डुक की आवाज !
बिना माँ-बापवाले की तरह 'गुगुचु' बोलता रहता है।
इस पण्डुक की बोली, इस पण्डुक की बोली !
बिना भाई-बहनवाले की तरह 'गुगुचु-गुगुचु' बोलता है
इस पण्डुक की बोली, इस पण्डुक की आवाज !
बिना बाल-बच्चेवाले की तरह 'गुगुचु' बोला करता है
इस पण्डुक की बोली, इस पण्डुक की आवाज !
बिना वंश-कुटुम्बवाले की तरह 'गुगुचु-गुगुचु' बोला करता है।

३५५

मेता मेया को मेता मेया
मंइ रे मेता मेया को
चरियो कम चटः पुड़ओ कम तुकुइया
मेता मेया को मेता मेया को
मेता मेया को मेता मेया को
मइ रे मेता मेता मेया को

रचाओ कम जोजो गुरि: ओ कम गिड़िया
मेता मेया को मेता मेया को

लोग तुम को कहते हैं, लोग तुम को कहते हैं।
हे लड़की, लोग तुम को कहते हैं।
तुम तीली भी नहीं चीरती हो, तुम दोना भी नहीं सीती हो
लोग तुम को कहते हैं, लोग तुम को कहते हैं।
हे लड़की, लोग तुम को कहते हैं।
तुम आँगन भी नहीं बुहारती और गोबर भी नहीं फेंकती।
लोग तुम को कहते हैं, लोग तुम को कहते हैं।

३५६

सिगी दोए तुर लेना उमा
कोड़ा होन दोए जनम लेना
उमा कोड़ा होन दोए जनम लेन

चण्डु: दोए मुलु: लेना उमा
कुड़ी होन दोए जनम लेना
उमा कुड़ी होन दोए जनम लेन

कोड़ा होन दोए जनम लेना उमा
गोंड़ां दो उजड़ जन
उमा गोंड़ां दो उजड़ जन

कुड़ी होन दोए जनम लेना उमा
गोंड़ां दो पेरे जना उमा
गोंड़ां दो पेरे जन

हे मा, (जब) सूरज उगा
(तब) लड़का पैदा हुआ।
हे मा, लड़का पैदा हुआ।
हे मा, (जब) चाँद उगा
(तब) लड़की पैदा हुई।
हे मा, लड़की पैदा हुई।

हे मा, (जब) लड़का पैदा हुआ ।
(तब) गोहाल उजड़ गया ।
हे मा, (जब) लड़की पैदा हुई
(तब) गोहाल भर गया ।
हे मा, गोहार भर गया ।

३५७

होरा र: डिम्बु बा दो होरा: डिम्बू बा दो
उमाना बा लेगे सनाईआ उमा बा लेगे सनाइआ

बा दोइङ बाया दोइङ बाया
उमाना बा गोनोङ तलङ बनो: आ
उमाना बा गोनोङ तलङ बनो: आ

बा दोरेम बाया बा दोरेम बाया
बाबु दिकु सिपइ को ससबा
बचारे राजा सिपई को ससबा

रास्ते का डिम्बु का फूल, रास्ते का डिम्बु का फूल—
हे मा, फूल खोंस लेने की इच्छा होती है ।
हे मा, फूल खोंस लेने की इच्छा होती है ।
खोंसने को तो खोंस लेंगे, खोंसने को तो खोस लेंगे
(लेकिन) हे मा, हम दोनों के पास फूल का दाम नहीं है ।
हे मा, हम दोनों के पास फूल का दाम नहीं है ।
खोंसने को तो तुम खोंस लोगे ;
खोंसने को खोंस लोगे ।
(लेकिन) हे बेटा ! दिकू सिपाही पकड़ेंगे ।
हे बेटा, राजा के सिपाही पकड़ेंगे ।

परिशिष्ट भाग

गीत-अनुक्रमणिका

मुण्डारी के कुछ शब्द

संज्ञा

अ

अपु—पिता
असकल—एक पक्षी
अटल-बा—चमेली
अयुब्—रात
अरिल—ओला
अपरोब—पंख

आ

आड़ी—मेंड़

इ

इली—हँड़िया (पेय)
इपिल—तारा

उ

उम्बुल—छाया
उरि:—बैल

ऊ

ऊब्—बाल

ओ

ओड़ः—घर
ओते—धरती
ओपद्—डाल

क

कटा—पैर
कमड़ा—कम्बल
कजि—बात
कलुटी—मुर्गी
कड़कोम—केंकड़ा

का

काड़े-बा—कास का फूल
कापी—बलुवा (फरशा)

कि

किचिरी—कपड़ा

कु

कुला—बाघ
कुदा—जामुन
कुड़ीहोन—लड़की
कुड़ी—स्त्री
कुड़म—छाती

को

कोवाँसी—कुहासा
कोदोम—कदम्ब

ग

गड़ा—नदी

गा

गाति—साथी, प्रिय
गाड़ी—बन्दर

गि

गितिल—बालू

च

चण्डुः—चाँद
चरिः—खारिका तीली
चतोम—छाता
चटु—घड़ा

चा

चाटु—घड़ा
चाउली—चावल

चि

चिरवी—पोठी मछली

चू

चूरिन—चुड़ैल

चे

चेड़ें—पत्ती

ज

जरगी—बरसात

जा

जानुम—काँटा

जि

जिलु—मांस

जी

जी—हृदय

जु

जुड़ी—साथी

जे

जेटे—धूप

जो

जोजो—इमली
जोबा—गाल
जोबिला—दलदल
जोला—चढ़ाई
जोनोः—झाड़ू

ट

टटी—दिया

टु

टुइला—एकतारा के समान एक बाजा

डु

डुलकी—ढोलक

डो

डोड़ो—गोंगरा (घेंघड़ा)

त

तयर—खीरा
तरोब—पियार (एक छोटा फल, जिसके बीज से चिरौंजी बनती है।)
तयन—मगर

ती

ती—हाथ

ति

तिरिल—केवंद (एक फल)

ते

तेतङ—प्यास

तो

तोवा—दूध

द

दः—पानी

दा

दारु—वृक्ष
दादा—बड़ा भाई

दि

दिरी—पत्थर

दु

दुड़ा—धूल
दुवार—दरवाजा
दुकू—दुख
दुमङ—मान्दर
दुदुगर—आँधी
दुरङ—गीत

दे

देया—पीठ

न

नयल—हल
नकिः—कंघी

ना

नाड़ी—लता

नि

निदा—रात

पि

पिड़ी—मैदान

पी

पीट—बाजार

पु

पुसी—बिल्ली

पुतम्—पण्डुक

पै

पैला—आँचल

पो

पोला—पैर की अंगूठी

ब

बबा—धान

बा

बा—फूल

बारु—कुसुम (वृक्ष, जिस पर लाह भी लगता है।)

बि

बिर—जंगल

बिराडा—नेठो

बु

बुरु—पहाड़

बुड़िया—बुढ़िया

बुलुङ—नमक

बो

बोण्डोल—पूँछ

बोंगा—देवता

बोः—सिर

म

मदुकम—महुआ

मंडी—भात

मरसल—प्रकाश

मनी—सरसों

मि

मिरु—सुग्गा

मिसी—बहन

मु

मुंदम—अंगूठी

मे

मेरोम—बकरी

मेद्—आँख

मेदमूड़ा—चेहरा

मेड़ेद्—लोहा

मै

मैनो—मैना

मो

मोंय—कली

मोचा—मुँह

मोलोङ—कपाल

र

रबड़—जाड़ा

रसी—रस

रम्बड़ा—उरद

रि

रिम्बिल—बादल

रु

रुतु—बाँसुरी

रे

रेंगेः—भूख

ल

लचो—ओंठ

लु

लुदम-बा—एक जंगली फूल

लुतुर—कान

लो

लोसोद्—कीचड़

स

सकम—पत्ती
सगिड़ी—सगड़ (शकट)
सरजोम—साखू
सदोम—घड़ा
ससङ—हल्दी
संगिन—कोंपल, नयी पत्ती

सा

सार—तीर

सि

सिम—मुर्गी
सिमहाने—मुर्गी का बच्चा
सिन्दुरी—सिन्दूर
सिरमा—आकाश
सिमबोंगा-सूरज देवता, भगवान
सिंगी—सूर्य, दिन

सु

सुपिद्—खोंपा
सुकु—कद्दू
सुकरी—सुअर
सुड़ा—कोंपल
सुनुम—तेल
सुतम्—सूत

सू

सूपिद्—खोंपा

से

सेता—कुत्ता
सेन्देरा—शिकार (शिकार करता)
सेंगेल—आग
सेपेड़ेद्—युवक

सो

सोसो—भेलवा (जंगल का एक फल
सोवन—गंध

ह

हड़म—बूढ़ा
हई—मछली
हपुः—एक तरह का पत्ती
हपानुम—युवती

हा

हातु—गाँव

हु

हुम्दी—एक फूल

हे

हेसः—पीपल

हो

होरा—रास्ता
होयो—हवा
होन—बच्चा
होंजर—श्वसुर,
होड़ो—आदमी
होटोः—गला, गर्दन

सर्वनाम

{ अइङ—इङ (उत्तम पुरुष) मैं
{ इङ

{ आलिङ—अलङ(उ० पु०
{ लिङ—लङ द्विवचन) हम दो

{ अले—अबु (उ० पु०
{ ले—बु बहुवचन) हमलोग

{ अम—(मध्यम पुरुष एक
{ म वचन) तुम

{ अबेन मध्यम पुरुष द्विवचन)
{ बेन तुम दो

{ अपे (मध्यम पुरुष बहुवचन)
{ पे तुमलोग

{ इनिः—अ-ए (अन्य पुरुष
{ ए एकवचन) वह

{ इनकिङ—अकिङ (अन्य पुरुष
{ किङ द्विवचन) वे दो

{ इनकु—अको (अन्य पुरुष
{ को बहुवचन) वे

ओकोए—कौन (प्राणी वाचक)

ओकोआ—कौन (अप्राणी-वाचक)

ओकोनिः—कौन (सांकेतिक प्रश्न)

ओको—कौन (विशेषण के रूप में)

ओकोएलिङ—(हममें से) कौन (अन्य से पूछते हुए)

ओकोएलङ—(हम दो में से) कौन (आपस में पूछते हुए)

ओकोएले—(हममें से) कौन (अन्य से पूछते हुए)

ओकोएबु—(हममें से) कौन (आपस में पूछते हुए)

नेया—यह

हेना—वह (कुछ निकट)

हना—वह (कुछ दूर दीखता हुआ)

एना—वह (जो सामने न हो)

विशेषण

अरः—लाल

अटामटा—घनघोर

कूबा—टेढ़ा

गोसो—सूखा हुआ

जिलिङ—लम्बा

निरल—अच्छा

पाण्डु—पीला

बुगिन—अच्छा

बंका—टेढ़ा

बेरेल—कच्चा

मपरङ—बड़ा

रेपो—चिपका हुआ

लण्डिया—आलसी

संगिन—दूर

सुगड़ा—सुन्दर

सोबेन—सब

सेंड़ाकन—होशियार

हड़द्—तीता

हेन्दे—काला

हेड़ेम—मीठा

हुड़िङ—छोटा

क्रिया

आतु—बह जाना

अतिङ—चरना

ओटङ—उड़ जाना

अकिरिङ—बेचना

अड़न्दी—शादी करना

अयुम—सुनना

अगु—लाना

ओरोङ—बजाना

अटा—लासा (गोंद) लगाकर पकड़ना

ओम—देना

ओचोः—छुड़ाना

अड़गु—उतरना

आसी—माँगना

ओल—खिलना

इतु—जानना

इनुङ—खेलना
उदुब्—बताना
उरुड्—झरना
उर—कोड़ना
उयुः—गिराना, गिरना
उड्:—सोचना
एकेला—हिलना
एरङ—गाली देना
कुदौ—दौड़ाना
कामी—काम करना
कुड़िल—उछलना
किरिङ—खरीदना
गोसो—मुरझाना
गो-ए—मरना
गोद्—तोड़ना
गामा—बरसना
गुलू—गूँथना
गुपी—चराना
चेचः—बरबाद करना
चुण्डुल—संकेत करना
चेपेः—चूसना
चिपुद्—मुट्ठी में रखना
चंगड—तोड़ना
जलातिङ—उड़ना
जुल—जलना
जोरो—चूना (पानी चूना)
जुंडी—आग लगाना
जोम—खाना
जोवर—नमस्कार करना
टेकाव—सँभालना
टोण्डोम—गाँठ बाँधना
तोल—बाँधना
तुर—उगना
तोपा—ढकना
तिंगु—खड़ा होना
दांढा—खोजना
दुरङ—गीत गाना
दुपिल—सिर पर ढोना
दुब्—बैठना
निर—भागना
पेटेः—तोड़ना
पटुब्—उखाड़ना
पण्डिल—बिखर जाना
फदा—लात मारना
बई—बनाना
बोरो—डरना
बोतोङ—डराना
बुल—उपलना (उतराना)
बिद्—गाड़ना
बगे—छोड़ना
बियुर—घुमना
बिरिदू—उठना
मः—काटना
माता—बढ़ना
रौड़—गिरना
रुवाड़—लौटना
रोवा—रोपना
रकब्—चढ़ना
लिंगी—पानी का बहना
लेल—देखना
लन्दा—हँसना
लो—जलना
सुसुन—नाचना
सातिङ—सहना
सेनोः—जाना
सम्पोड़ो—श्रृंगार करना
सेर—गलना
हड़ागुन—उतरना
हेर—बुनना
होनोर—टहलना, घूमना
होरो—रक्षा करना
हिजुः—आना

अव्यय

ओड़ोः—और	चिमिनङ—कितना
का—नहीं	चय—अथवा
कोतः—कहाँ	बद्कम—लेकिन
चियः चि—क्योंकि	मेन्दो—लेकिन
चि—क्या	लेका—तरह
चेनः—क्या	

विभक्तियाँ

ते	—से	(करण कारक)
आते	—से	(अपादान कारक)
नंगेन	—के लिए	सम्प्रदान कारक
मेन्ते	—के लिए	सम्प्रदान कारक
नंगेन्ते	—के लिए	सम्प्रदान कारक
अः	—का	सम्बन्ध कारक
रः	—का	सम्बन्ध कारक
रे	—में	(अधिकरण कारक)
हे	—हे !	सम्बोधन
हाई	—हे !	सम्बोधन
आ	—हे !	सम्बोधन

प्रत्यय

(धातु या शब्द के साथ क्रिया के रूप में)

तना, जदा —वर्त्तमान काल-सूचक
लः, लेदा, केना—पूर्ण भूत-सूचक
केदा —सामान्य भूत-सूचक
आकदा —आसन्न भूत-सूचक
इया, आ —भविष्यत् काल-सूचक

कृदन्त-प्रत्यय

१. (प्राणी वाचक के लिए)

निः —(जोमनिः—खानेवाला)
ईनिः —(जोमीनिः—खाया जानेवाला)
अयनिः—(मःअयनिः—काटनेवाला)

२. (अप्राणी वाचक के लिए)

एयः—(जोमेयः खाया जानेवाला पदार्थ)
यः —(मःयः—काटा जानेवाला पदार्थ)

तद्धित-प्रत्यय

निः—(दारुनिः—पेड़ बढ़ानेवाला)
(लादूनिः—रोटी बनानेवाला)
[यहाँ शब्द के प्रथम स्वर को दीर्घ कर दिया जाता है।]
यः —(दारुयः—बढ़ाया जानेवाला पेड़)
एयः—(लदेयः—रोटी बनाया जानेवाला पदार्थ)

ध्वन्यात्मक और गुणात्मक शब्द

केरो—केचो
गुले—गुले
गितिल—गितिल
गिदर—गोदोर
गिपल—गोपोल
गासा—गासा
चड़द्—चुड़ुदू
चिरी—चिरी
चपा—चुड़ी
चिरी—पिटी
जिड़िब—जिड़िब
जड़म—जड़म
जिलिब—जिलिब
जोलों—मोलों
जोलोब—जोलोब
जिरपी—जलङ
जोड़ेन—जोड़ेन
झर—झर
टियुल—टियुल
डंगुर—मुंगुर
डाले—काले
डएडांग—केन्दे
तिपर—तोपोर
तिजर—तोंजोर
ढोपोल—ढोपोल
दिले—दोंगोब
नुगुद—नपं
पिसिर—पिसिर
बलेः—बलेः
बारा—बांरी
बियम—बोयोन
बिजिर—बलं
बिजिर—बिजिर
मोगो—मोगो
मोचो—गोचो
मिलेद्—मिलेद्
मिलिद्—मिलिद्
रिती—पिती
रिसी—रिसी
रुबु—रुबु
रिबी—रिबी
रटा—पटा
रिगी—मिगी
रोलो—रोलो
लेके—लोयोंङ
लिदी—लिदी
लाया—कोया
लिटिब्—लिटिब्
लोबो—लोबो
लिमङ—लोमोङ
लेसे—लेसे
लेटेम्—लेटेम्
लिटीः—लोपोङ
लटङ—कोयोङ
लिटी—लिटी
लोपोङ—लोपोङ
लेबे—लेबे
सारी—सारी
सोर—सोर
सेले—बोले
सुरुः—सुद्रुः
सिड़यं—सोंड़ोयं
सेरेंङ—सेरङ
सोंगा—सोंगा
सिले—सिले
साटा—साटी

सहायक पुस्तकें

१ मुण्डाज एण्ड देयर कण्ट्री—श्री शरत् चन्द्र राय।
२ दी ब्लू-ग्रोव—डब्ल्यू० जी० आर्चर।
३ मुण्डा दुरंग—डब्ल्यू० जी० आर्चर।
४ इन्साइक्लोपीडिया-इण्डिका—श्री नगेन्द्र नाथ।
५ लिंग्विष्टिक सर्वे आफ इण्डिया—सर जार्ज ग्रियर्सन।
६ ट्राइबल आर्ट आफ मिडिल इण्डिया—डा० वैरियर एलविन।
७ रेस एलिमेण्ट्स इन इण्डियन पोपुलेशन—डा० बी० जी० गुहा।
८ दी बैगा—डाक्टर वैरियर एलविन।
९ ब्रजलोक-साहित्य का अध्ययन—डाक्टर सत्यन।
१० ग्राम-साहित्य—पं० रामनरेश त्रिपाठी।
११ हमारी आदिम जातियाँ—श्री भगवानदास केला और श्री अखिल विनय
१२ धीरे बहो गंगा—श्री देवेन्द्र सत्यार्थी।
१३ प्रतीक—श्री देवेन्द्र सत्यार्थी।
१४ पृथ्वीपुत्र—श्री वासुदेवशरण अग्रवाल।

पत्रिकाएँ—

१ मैन-इन-इण्डिया—राँची।
२ आज-कल—दिल्ली।
३ लोक-वार्त्ता—टीकमगढ़।
४ अवन्तिका—पटना।

दिनांक Date	उधारकर्त्ता की संख्या Borrower's No.	दिनांक Date	उधारकर्त्ता की संख्या Borrower's No.